श्री देवगुरुभक्तियुक्त वीरशासनप्रभावक पांच श्रीयुत शेठजी श्री

विशेष विनती के—परम प्रभावक सताए श्रीयुत " श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजी " साहेबना सदुपदेशथी पूर्वाचार्य प्रणीत 'षट्द्रव्य स्वभाव नय विचारादि प्रकरण संग्रह' नामनो अति उपयोगी बोधदायी ग्रंथ के जे कदि छपायेल नथी ते छपाइ बंधाइ संशोधन पूर्वक तैयार थयो छे तेनु कद सुरदीपिकादि प्रकरण संग्रह करतां सवायु छे छतां तेनुं लवाजम फक्त रु. १-०-० छे. (पोष्टेज अलग.) आशा छे के आप ए ग्रंथ माटे आश्रयदाताओनां मुबारक नाम धर्मव्यापारनी वृद्धि हितार्थ बनी शके तो आप पत्रमां लखी अत्रे मोकलवा कृपा करी अपूर्व लाभ प्राप्त करशोजी. एज अरज तस्दी माफ.

अमदावाद
शामळानी पोळ.

सदा अभ्युदय इच्छनार, श्री मं. ल. अने
श्री. जैनहठीसिंघ सरस्वती सभा.

श्रीमत्पूर्वाचार्यादिविरचित.

सुरदीपिकादि प्रकरण संग्रहः

समस्त जैन बंधुओने अवश्य उपयोगी जाणी

यथामति संशोधन करावी

श्री जैन हठीसिंघ सरस्वती सभा तरफथी

श्रावक मंगळदास लल्लुभाइए.

अमदावाद [illegible] प्रिन्टिंग प्रेस नामना मुद्रालयमां शा. मणीलाल उगरचंदे मुद्रित कर्यो.

संवत १९५९ कीमत रु. १-०-०

समर्पणपत्रिका.

श्रीमन्नागपुरीय बृहत्तपगच्छाधिराज युगप्रवराचार्य जंगमतीर्थराजतुल्य सद्भाग्य श्रीयुत् परमपूज्य सद्गुरु भट्टारक श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वर साहेब !

आप श्रीमान् सेवक जनमनवांछितपूरक कल्पवृक्ष सदृश छो, सत्यप्रवचनोपदेष्टा होनाथी भविजीवोद्धारक (भविजनतारक) प्रवहण रूप छो, प्राचीन जैनशैली मुजब विधिपरंपरा पद धारक शुद्ध क्रियानुष्ठानवंत छो, शांतरसना समुद्र , गुरूपगुणाकर, वचनातिशयवंत, चारित्रपात्रचूडामणि, कुमतांधकारनभोमणि छो, अने मुनिजनमनमानसहंस होइ उग्रविहार युक्त भारतभूमंडलमां विचरी स्वपरनुं सदा कल्याण कर्या करोछो. इत्यादि प्रातःस्मरणीय सद्गुणोथी लोभाइ आकर्षायेला मनोभावसह, आप परमोपकारी गुरुराजना सद्गुणोनुं सदैव स्मरण रहेवा हितार्थे आ " सुरदीपिकादिप्रकरणसंग्रह " नामक परम लाभदायि पुस्तक समर्पण करी अत्यानंद पामुंछुं ते आप सेवकश्रेयकारी स्वीकारी लइ आभरी करशोजी !

उपकार.

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय परमगुणान्वित स्वच्छ मति गति रति (भाग्य) यशवंत गच्छपति श्रीमान् भट्टारक श्री भ्रातृचंद्रसूरीश्वरजीना सुविनयी सुशिष्य साक्षर श्री सागरचंद्रजी मुनिमहाराज के जेओ साहेबे आ परम लाभकारी पुस्तकने प्रसिद्धिमां लाववा हितार्थ अलग अलग स्थळेथी परमोपयोगी लेख एकत्र करी सुधारी आपवामां अवर्णनीय काळजीपूर्वक ध्यान आपी पोताना पठन पाठन क्रियानुष्ठानादि करवाना महान् कीमती समयनो भोग आप्यो छे, अने भव्यजीवोना आत्मकल्याणनो मार्ग खुल्लो करवा खंत राखी छे, ते माटे शुद्धांतःकरण पुरःसर तेओश्रीनो उपकार मानी श्री जैन हठिसिंघ सरस्वतीसभा अत्यानंद पामे छे.

ली. सद्गुरु चर्णारविंद सेवक,

श्री हंसराज बच्छराज नाहटा
सरदारशहर निवासी
द्वारा
जैन विश्व भारती, लाडनूं
को सप्रेम भेंट –



वीर संवत २४३९ श्री विजय राज्ये

श्री भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र सू द्र चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र सू री सू द्र चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व र श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री

श्री भ्रा तृ चं द्र सू री श्व र स र श्व री सू द्र चं तृ भ्रा श्री

द्गु

रु

भ्यो

नमोनमः



शिवगंज नगरे आचार्य पद समये ॥ श्रीज्ञातृचन्द्रसूरीषट्पदी ॥ संवत. १९३७ ना वैशाख सुदी १२

" व्रजराज आज साँवरो बंसी बजा गयो " इत्यनेन रागेण गीयते ।

श्रीज्ञातृचन्द्र सूरिराजमर्थदायकं । भजस्व हे सखे गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेर ॥

संसारमेतमुज्झितुं समीहसे यदा । मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ १ ॥

प्रवेशमीहसे यदा श्रियो निवेशने । तदा मनःप्रसारये समोपदेशने ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ २ ॥

करालकाल एष संनिधौ समागतः । किमीहसे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ३ ॥

विहाय कर्म सावद्यमं धर्मकर्मणे । प्रहीतुमीहसे यदा तदा सुशर्मणे ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजवंशदीपकं । सुमुक्तिराजधानिकाध्वनः समीपकम्[1] ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ५ ॥

तपः प्रकर्षनिर्जितोरुपञ्चसायकं । महानिवेशनासुधारसप्रपायकम् ॥ श्रीज्ञातृचन्द्र० ॥ ६ ॥

नित्यानन्देन रचिता ज्ञातृबालेन गापिता । आचार्यज्ञातृचन्द्रस्य षट्पद्यास्तां मुखाम्बुजे ॥ १ ॥

---

१ समीपयतीति समीपकस्तं मुक्तिराजधान्याः सामीप्यदर्शकमिति भावः ।

भापाटीका । मित्र ! वाञ्छित अर्थको देनेवाले, गुरु मुनिराज आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥टेर॥

जो कि तु इस संसारको छोडना चाहता है, और जो मुक्तिको जाना चाहता है तो हर्पसे हे मित्र ! वांछित अर्थको देनेवाले ॥ १ ॥

तूं बुद्धिके घरमें जो प्रवेशको चाहता है तो मेरे उपदेशमें मन फैला । हे मित्र० ॥ २ ॥

यह भयंकर काल पासमेंही आया हुवा है, रागसे क्या अनित्य सुखको देख रहा है । हे मित्र० ॥ ३ ॥

जो कि तूं (सांसारिक) कर्मको छोडकर धर्म करनेके लिये शास्त्रके मर्मको लेना चाहता है तो मुक्तिके लिये हे मित्र० ॥४॥

(श्रीवृहत्तपागच्छीय) श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरजीके वंशके दीपक, मुक्तिरूप राजधानीके मार्गको समीप करनेवाले। हेमित्र०॥५॥

तपके प्रभावसे कामको जीतने वाले, व्याख्यानरूप अमृतरसके पानेवाले हे मित्र वांछित अर्थको देनेवाले गुरु मुनिराज आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रजी सूरिराज महाराजको सेवन कर ॥ ६ ॥

नित्यानन्दशर्मासे बनाई गई, और भाइलालजीसे गाइ गइ, यह आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र सूरीश्वरजीकी पदूपदी सुखरूप कमलपर रहो ॥ १ ॥

ली. आपश्रीजीथी जन्म पामेली. श्री जैन हठिसिंघ सरस्वती सभा अने सेवक मंगळदास.

॥ वांचनारने भलामण ॥

वांचनार ? हुं आजे तमारा हस्तकमळमां आवुंछुं. मने यत्नपूर्वक वांचजो, मारां कहेलां तत्वने हृदयमां धारण करजो, हुं जे जे वात कहुं ते ते विवेकथी विचारजो; एम करशो तो तमे ज्ञान, ध्यान, नीति विवेक, सद्गुण आत्मशान्ति पामी शकशो.

तमो जाणता हशो के केटलाक अज्ञान मनुष्यो नहि वांचवा योग्य पुस्तको वांचीने पोतानो वखत खोइ दे छे अने अवळे रस्ते चढी जाय छे, आ लोकमां अपकीर्ति पामे छे तेमज परलोकमां नीची गतीए जाय छे.

तमो कोइ पण प्रकारे आ पुस्तकनी आशातना करशो नहि ! तेने फाडशो नहि, डाघ पाडशो नहि, के बीजी कोइ पण रीते बगाडशो नहि. विवेकथी सघळुं काम लेजो. विचक्षण पुरुषो ए कह्युं छे के–ज्यां विनय विवेक त्यांज धर्म छे.

तमने एक ए पण भलामण छे के जेओने वांचतां नहि आवडतुं होय अने तेनी इच्छा होय

तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेने वांची संभळाववुं.

तमे जे वातनी गम पामो नहि ते माह्या पुरुष पासेथी समजी लेजो समजवामां आळस के मनमां शंका करशो नहि. तमारा आत्मानुं आथी हित थाय, तमने ज्ञान, शान्ति, आनंद मळे, तमो परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ एवी शुभ याचना अर्हंत भगवान् कने करी आ पाठ पूर्ण करवुं.

॥ पुस्तक प्रकट थवानुं प्रयोजन ॥

आ पंचम काळनी अंदर विषय कषायनी लोलुपताने लीधे के धन धान्यादिनो लाभ प्राप्त करवानी धामधूमने लीधे महान् पुस्तको (आगमो–सिद्धांतो) बे सांभळी विचारी मनन जेटलो अवकाश अने समजशक्ति हाथ न होवाथी जैनागमनी अंदरनुं रहस्य आपणने प्राप्त थइ शकतुं नथी. केमके सागर समान अगाध भाववाळां सूत्रोने ध्यानपूर्वक अवलोकवां ए कंइ न्हानीशूनी वात नथी. महान् भूमंडलमांनी दूर रहेली के आगमनी अगम सूक्ष्म वस्तुओनुं नि-

रीक्षण करवा माटे तो खास उमदा दुर्बीननीज जरूर पडे छे. परंतु तेवी दुर्बीनरूप ज्ञानचक्षुउ आपणां सतेज न होवाथी आपण तेवा सूक्ष्म विचारोने अंश मात्र पण जाणवा भाग्यशाली थता नथी.

आपणी आ अवचणने ध्यानमां लइ अगाउथी ते श्रुतसमुद्रनुं मंथन करी आपणे समजी शकीए तेवी भाषामां आपणा परोपकारी पूर्वाचार्योए पृथक् पृथक् सत्य वार्त्ताउनुं रहस्य जाहेरमां आणी सागरने गागरमां समावी दीधेल छे. जेथी गागरमां समायला सागर सम रहस्यनुं अवकाश पूर्ण अवगाहन करी शकवा वखते शक्तिमान् थइ शक्तिये. एज हेतुने अवलंबी आ विविध विषयविभूषित प्रथम प्रकरणगुच्छने प्रसिद्धमां लाववा यत्न आदरेलो छे.

महान् खुलासानी प्रमाणिक चर्चाउ आपणा अल्पमतिवंत अल्पसमयमां समजी शकीए एवां प्रकरणो रचवाना संबंधमां पूर्वाचार्योए उठावेलो अपार परिश्रम सफल थवा आपणे ए प्रकरणो भणवां–वांचवां–सांभळवां के मनन करवां ए अवश्य आपणुं कर्त्तव्य कर्म समजवुं

योग्य छे, आवी मान्यताने लीधे आपणी एज फर्ज अदा करवानेमाटे आ अमारो प्रथम प्रयास छे, ते तरफ सुलक्ष दाखवी आ ग्रंथपकवाननी वानगी चाखवा तत्पर रहेवुं अवश्यनुं छे.

आपणा पूर्वाचार्यो निष्प्रेही, निरभिमानी, निर्लोभी, अप्रमत्त, परोपकारी, अममत्ववादी, तत्त्वगवेषी, हितचिंतक, स्वपरोन्नतिकारक, शास्त्राज्ञानुगामी, निष्पक्षपाति, सत्यवक्ता, प्रमाणिक अने भवभीरु हता. जेथी शंकाने स्थान आपवानुं कारण नथी के तेमणे टाढा पहोरनां गप्पां जगतजीवोने वंचवा माटे हांक्यां हशे. तेउनां तो संटंकः वचनो अक्षरशः मान्य करवाज योग्य छे.

पूर्वाचार्योए विषयभोगनी लालसात्यजी, सरसनीरस अहार तथा प्राशुक पाणीनो उपयोग करी, वनमां, उपाश्रय, के भयंकर स्थलोमां रही, आपणा उपकार माटे ग्रंथा निर्माण करेला छे. तेउए पंथ वधारवा, किंवा शिष्य संततीनो झूमो, जमाववा के यशनी आकांक्षा आदि स्वार्थ-परायणताने अवलंबी वाक्यजालमां बाल जीवोने फसावा उद्यम आदरेल न हता. तो पछी तेवा

परोपकारी प्रमाणिक प्रभाविक पुरुषोनां वचनोने स्वार्थीवचनो मानवां ए आपणी भूल नहि तो बीजुं शुं गणाय ? एमनां विशुद्ध वचनोने हैयाना उमलकासाथ हीरा मोतीथी वधावी लेवांज जोइये छे.

आपणा मुख्य पूर्वाचार्यजी के जेमनां रचेलां प्रकरणो आ पुस्तकनी अंदर विशेष छे ते श्री पार्श्वचंद्रसूरीश्वरजी महान् प्रभावशाली पुरुष हता अने जैनशासनना उत्तमोत्तम उद्योतकारी होवाथी अद्यापि लगण तेमना वचनानुसार चालनार हजारो सेवक विद्यमान छे. तेउ साहेबजी आबुराजनी तलेटीमां आवेला हमीरपुरमां संवत १५३७ जन्म धरी पोरवाडवंशी, वेळगशाह पिता अने विमलादेवी माताने महत्तावंत कर्यां हतां. ते कुशाग्र बुद्धिवंत महत् पुरुषने विद्या तो सुप्रसन्नज हती, तेमज ते सुल्लभबोधी हता, जेथी गुरुराज श्री साधुरत्न पंडितराजना उपदेशथी बोध पामी संवत १५४६ नो सालमां फक्त नव वर्षनी किशोरवयमांज दीक्षाअंगीकार करी कुलनो उद्धार कर्यो हतो.

मरुधरना सुरतरु सदृश जनमनवांछित पूरक अने पुष्करावर्त्त मेघसमान हृदयक्षेत्रने रसाल करनार देशनावंत पंडितराज श्रीसाधुरत्नजीनी कृपाथी नवदीक्षित मुनि शास्त्रोना पारगामी थया अने तेथी हृदयक्षेत्रमांथी तत्वज्ञानांकुर स्फुरायमान थतां संवत १५५४ नी सालमां उपाध्याय पदना अधिकारी थया.

ए समयमां जैनसमुदायनी अंदर शिथिलाचार विशेष वधी पडतां क्रियानुष्ठान विधिविप-रीत थया करतां हतां. एथी शिष्टाचारनी प्रवृत्ति करावा त्यागी वैरागी सौभागी महदात्माए गुरुराजनी आज्ञा संपादन करी संवत १५६५ नी शालमां क्रियाउद्धार करी शिथिलाचारने धीरे धीरे दूर करवा भगीरथ प्रयत्न आदर्यो.

दरम्यान पोते योधपुर पधार्या त्यां श्री संघे अने जोधाणनाथे आचार्यपद स्वीकारवा वीनंती करी, जेथी भक्तजनोनी भावश्रेणीने वृधि साथे भेटाडवा सर्वानुमतनी ऐक्यता थतां पोते सूरिपद अंगीकार करी आचर्यताना गांभीर्य अर्थने शोभाववा लाग्या. प्रमादी बनेला साधु-

साध्वी श्रावक-श्राविकाउने सिद्धांतानुंसार धर्मोंपदेशना तत्ववडे जाग्रत करी शुद्ध क्रियानुष्ठान धारी बनाववा एक सरखो विचार राखी अमलमां आणता नारत नूमिना घणा नागोमां मिथ्यांधकारनो अनाव कर्यो. तेमज महान् सूत्र सिद्धांतोनुं दोहन करी साररुप बालावबोध अने नाषाना ग्रंथो तैयार करी नव्य जीवोने नवतारक मार्ग खुल्लो मुक्यो.

एउ सूरीश्वरजीमां उत्तमोत्तम काव्यशक्ति हती. तेथी संस्कृत, मागधी नाषामां अने प्राकृतमां विविधविषयमां काव्य रची चमत्कृती जाहेरमां लावी पोते आपणा उद्धारक थया. एटलुंज नहीं पण नारतवर्षनां दरेक शहेर अने बनतां लगे दरेक गामोमां विचरी असंख्य संकटो सहन करी नव्यजीवो हितार्थे जैन ज्ञाननंमारो तपासी जे जे तत्व प्राप्त थयुं ते ते परोपकार निमित्त जाहेरमां मूकी अनेक जीवोनुं श्रेय कर्युं.

मजकुर महदात्माश्रीए रचेलां प्रकरणो पैकी यत्किंचित् जे हाथ लाग्यां तेमानां थोडांक वानगीरुप प्रसिद्धिमां आणवा आ सुरदीपिकादि प्रकरणसंग्रह नामक पुस्तक प्रगट करवामां

आव्युं छे, अने एथी मानवाने कारण मले छे के तत्वग्राही पुरुषो तत्वसंग्रही पोतानी सद्भावना ज्यां ज्ञानमां वृद्धि करी स्वर्गमां बिराजेला तेओ महदात्माश्रीने आत्मानंद अर्पशेज !

आ पुस्तकमांनां प्रकरणोमां शुं शुं रहस्यो समायल छे ते जाणवा माटे कहेवानी जरुर छे के नीचे बतावेलां ३५ प्रकरणो पैकी प्रथम प्रकरण 'सुरदीपिका'नी अंदर सिद्धांतोनुं दोहन करी देव धर्मनो उत्तम प्रकारे निर्णय करी तेनी हेलना करनारने मना करवानी भलामण करी छे. बीजा प्रकरण 'सिद्धांताराधनैकोनचत्वारिंशतिका'नी अंदर जैन सिद्धांतोनुं केवी रीते आराधन करवुं ते स्पष्ट बनावेल छे. त्रीजा प्रकरण 'शीलदीपिका'नी अंदर पोतानुं शील शीरीते पालन करवुं ते प्रकाशमां लावेल छे. चोथा प्रकरण 'आगम बत्रीशी'नी अंदर श्लोक संख्या परिमाण आदि तथा आराधन कर्त्ताने लाभ शुं ते बतावेल छे. पांचमा प्रकरण 'गुरुबत्रीशी' नी अंदर गुरुना तत्वने सारी पेठे चर्चेल छे. छठा प्रकरण 'पाखी बत्रीशी' नी अंदर पाखी प्रतिक्रमण कइ तिथिये करवुं तेनो निर्णय सिद्धांतानुसार करेल छे. सातमा प्रकरण 'असज्झाइ विचार' अने 'असज्झाय सित्तरी' नी अंदर अ-

सज्झाय क्यां क्यां लागे अने ते केटली मर्यादा लगी असज्झाइ गणाय वगेरे आगमानुसार वर्णवी बतावेल छे. आठमा 'श्री ब्रह्मबावनी' नी अंदर अध्यात्मज्ञाननो खजानो खुल्लो करेल छे. नवमा प्रकरण 'कलिकाल स्वरुप कथन शतक' नी अंदर चतुर्विध संघनुं उत्तम प्रकारे वर्णन करेल छे. दशमा प्रकरण 'गुणस्थान पंचाशिका' नी अंदर चौद गुणस्थानकोनुं टुंकामां वर्णन करी बतावेल छे. अगीआरमा प्रकरण 'गणितप्रमाण' नी अंदर श्री भगवतीजीमां बतावेल गणितनी सविस्तर समज आपी छे. बारमा प्रकरण 'षट्‌द्रव्यविचार' नी अंदर द्रव्यविचार संबंधी संक्षिप्त व्याख्या छतां अति सरस आपेल छे. तेरमा प्रकरण 'अष्टकर्मबंध विचार' नी अंदर केवी रीते कर्म बंधाय छे अने केवी रीते ते भोगवाय छे तेनुं विवेचन करेल छे. चौदमा प्रकरण 'सद्दहणा द्वात्रिंशिका' नी अंदर श्री जिनोक्त सद्दहणा क्रियानुं वर्णन करेल छे. पंचदशमा प्रकरण 'आठमद परिहार पचीशी' नी अंदर सरलताथी आठ मदनो त्याग करवानुं कथन करेल छे. सोलमा प्रकरण 'प्रश्नोना उत्तर अजवालामां लावेल छे. सत्तरमा प्रकरण 'श्री जिन प्रतिमा स्थापन रास' नी

અંદર પ્રતિમા સ્થાપન સંબંધી ઘણી ઉત્તમ પ્રકારે વ્યાખ્યા પ્રરુપેલ છે. અઢારમા પ્રકરણ 'શ્રી શત્રુંજય રાસ' ની અંદર શ્રી તરણતારણ તીર્થાધિરાજની સ્તુતિ કરેલ છે. ઉગણીશમા પ્રકરણ 'એશણાશતક' ની અંદર ચતુર્વિધ સંઘને કંઠમણિ કરી રાખવારુપ ગોચરી સંબંધી દોષોનું સવિસ્તર વર્ણન કરેલ છે, વીસમા પ્રકરણમાં ખંધક મુનિ ચરિત્ર સતકની અંદર ઘણોજ ઉત્તમ બોધ દર્શાવેલ છે. એકવીશમા પ્રકરણ 'ઉપદેશ રહસ્ય' તથા ક્રિયાગુલ જિનસ્તુતિ' ની અંદર પરમાત્મ સ્તુતિ સુધાનું ઝરણ વહન કરી રહેલ છે. બાવીશમા પ્રકરણ 'પ્રશ્નોત્તરપત્ર' ની અંદર શ્રી પર્વનો પ્રકાશ પ્રકાશિત કરેલ છે. તેવીશમા પ્રકરણ 'ચાતુર્માસી નિર્ણય' ની અંદર આગમ અને શબ્દશાસ્ત્રથી ચાતુર્માસીનો નિર્ણય કરવામાં આવેલ છે. અને ચોવીશમા પ્રકરણ 'સામાયક બત્રીશ દોષ સ્વાધ્યાય' ની અંદર સામાયકમાં લાગતા બત્રીશ દોષનો વિચાર, ગુરુપરીક્ષા, અને દૃષ્ટિરાગ સ્વાધ્યાય વગેરેનું વર્ણન છે.

આ પ્રાચીન પૂર્વાચાર્ય નિર્મિતગ્રન્થોનું અવલોકન કરવાથી વાચકવર્ગને પ્રમોદ સાથ પ્રતીતિ મળશે કે આપણા ઉપર પૂર્વાચાર્યોનો કેટલો બધો (અગાધ) ઉપકાર ? ! ! અને એનો વદલો કોઇ પણ વાળી શકીએ તેમ નથી; તથાપિ એમના ગુંથેલા પુષ્પગુચ્છરૂપ આ ગ્રન્થગુચ્છની સુવાસનાના ભોગી ભ્રમર જો કે તત્વરૂપ મકરંદ ગ્રહણ કરી પોતાની આત્મોન્નતિ કરવા પ્રવર્ત્ત થઇ એ તો આપણે કંઇક સહસ્રાંસે પણ બદલો વાળવાવાળા ગણાઇયે અને તે પૂજ્યપાદના અમર આત્માને પુણ્યના ભાગી કરી શકિયે. અસ્તુ !

એ શિવાયના અન્યમહાન્ પુરુષોનાં કરેલાં પણ પ્રકરણો આ પુસ્તકમાં હોવાથી તેઉની, અને જંગમયુગપ્રવર આચાર્ય ભગવાન્ શ્રી ભ્રાતચંદ્રસૂરીશ્વરજીની કૃપાપ્રસાદીનો આસ્વાદ અનુભવી આનંદમાન થઇ ધર્મધ્યાનમાં તત્પર રહિયે તો સર્વના શ્રમની સફલતા હાજર રહેજ !

આ ગ્રંથમાં કોઇ પ્રુફ સુધારવામાં, લેખમાં સમજમાં અશુદ્ધિ રહી હોય તો તે સંબંધી હું મિચ્છામિદુક્કડં દઇ નિર્દોષતાનો સંગી થાઉં, અને ઇચ્છું કે–સદા સર્વ જૈનવીરો આવાં રહસ્ય ગર્ભિત પુસ્તકો પ્રકટ કરવામાંજ તલ્લીન રહે એવીજ શાસનદેવની પ્રેરણા થાઓ !

વીર સંવત ૨૪૩૭
ધનતેરસ.

મહાત્માના ચરણાંબુજનો મધુપ
મંગળદાસ.

धन्यवाद आ सुरदीपिका नामनो ग्रंथ; तथा (बीजो षद्रूद्रव्य नय स्वभावादि प्रकरण संग्रह नामनो ग्रंथ नीकलवानो छे) ते बंन्ने ग्रंथोमां आश्रय आपनार बिकानेर नीवासी. सुदेवगुरु भक्तिकारक सुद्ध धर्म आराधक ज्ञानवृद्धिरूप उत्तम कार्यमां आश्रय आपनार श्रीवीरशाशनरागी सुश्रावक.

रु. २००) बाबुसाहेब बाहादुरमलजी हजारीमलजी हीरालालजी रामपुरीआ

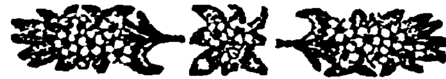
५०) ,, जेवतमलजी रामपुरीआ.

५०) ,, भेरुदानजी राखेचा.

२५) ,, उदयचंदजी रामपुरीआ.

उपरना ग्रहस्थो तरफथी बंन्ने पुस्तकोमां मदद आववाथी तेउ साहेबोनो आ सभा अंतःकरण पुर्वक आभार माने छे. ते दरेक पुस्तकनी कींमत रु. १। हती. तेमांथी रु. ०-४-० घटाडी दरेक कींमत रु. १)राखवामां आवी छे. अने बंन्ने पुस्तकनी कींमत रु. २) राखवामां आवी छे माटे जे ग्रहस्थोनी चोपडीउं प्रथम भराएली छे हवे पछी भरासे तेमने पण रुपीआ बेमां बंन्ने पुस्तको नो लाभ मलसे. ली. श्री जैन हठीसींगसरस्वती सभा. दा. मणीलाल वाडीलाल. सेक्रटेरी.

सुरदीपिकादि प्रकरणसंग्रहनी अनुक्रमणिका.



॥ श्रीजिनेन्द्रस्तुतिसंग्रहः ॥

आदित्यादिमहामहः समुदयायस्यैकदेशंश्रिताः ॥ श्रीकल्पद्रुमकामधेनुमणयोयद्दानदास्यंगताः॥ शुक्लध्यानधुराधृतां कथमपिश्रीयोगिनांगोचरः ॥ श्री आर्हत्यपदप्रदायिपरमज्योतिस्तदेवस्तुवे ॥१॥ दर्शनंदेवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ॥ दर्शनंस्वर्गसोपानं, दर्शनंमोक्षसाधनम् ॥ १ ॥ दर्शनेनजिनें-द्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्ठतिचिरंपापं, छिद्रहस्तेयथोदकं ॥ २ ॥ अद्यमेक्षालितंगात्रं, नेत्रेचविमलीकृते ॥ मुक्तोहंसर्वपापेभ्यो, जिनेंद्रतवदर्शनात् ॥ ४ ॥ दर्शनादेवतेनाथ दुस्तरोपि सुखोत्तरः ॥ अद्यागाधोपि मे जातो, जानुदघ्नो भवोदधिः ॥ ५ ॥ सर्वामरेंद्रसंपूज्यः, सर्वविज्ञान भास्करः ॥ सर्वसत्वहितानंदः, सर्वसौख्य नमोस्तु ते ॥६॥ मिथ्यांबुलहरीभूतं, निमज्जंतंभवार्णवे ॥ कुग्राहग्रसितंनाथः, मामुत्तारय तारय ॥ ७॥ जन्ममृत्युजरारोग, सोकसंतापवैरिणः ॥ पृष्टतोधावतो देव, मामुत्तारय तारय ॥ ८ ॥ अहोअमेघजावृष्टि रहोअकुसुमंफलं ॥ अहोपुराकृतंपुण्यं, यद्दृष्टो

नाथलोचनैः ॥९॥ नकोपोनलोभोनमानोनमाया, नहास्यंनलास्यंनगीतंनकान्ता ॥ नचापत्यशत्रुर्न मित्रंकलत्रं तमेकंप्रपद्येजिनंदेवदेवं ॥ १० ॥ भवबीजांकुरजनना रागाद्याःक्षयमुपागतायस्य ॥ ब्रह्मा वाविष्णुर्वा, हरोजिनोवानमस्तस्मै ॥ ११ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंद सरोराज-मरालायार्हतेनमः ॥ १२ ॥ जयतिकनकावदातः कृष्णजटामुकुटमंडितोवृषभः ॥ इक्ष्वाकुवं शतिलक-स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ १३ ॥ श्रीवर्द्धमानं करुणानिधानं, श्रेयो निदानं कुगतेः पिधानं॥शिवैकयानं सुगुणैःप्रधानं,गताभिमानं स्तुतिसावधानं॥१४॥वीरं भावारिवीरं प्रणतभयहरं, हेमरोचिः शरीरं, धीरं कामाग्निनीरं परमपदगतं प्राप्तसंसारतीरं ॥ ज्ञातं सिद्धार्थजातं विबुधबुधनतं भूपसिद्धार्थजातं, सिद्धंबुद्धं प्रबुद्धानमतनमततं सिद्धये बुद्धयेच ॥१५॥ कुंडग्रामेभिरामे त्रिभुवन जनता पावके पावकेवा, मोढेरे हस्तिकुंडी प्रवरतरपुरे वायडे नाणकेच ॥ नंदिग्रामेचमुंडस्थलग जपदयोस्तुंगवैभारशैले देवं श्रीवर्द्धमानं विपुलगुणगणैर्वर्द्धमानंनतोस्मि ॥ १६ ॥ मदनदहननीरं क्रोधयोधैकवीरं, मदजलदसमीरं दंभभूभेदसीरं ॥ जलधिगुरुगभीरं लब्धलोभाब्धितीरं, कनकरुचि

शरीरं श्रीजिनंनौमिवीरम् ॥ १७ ॥ हृतविषयविकाराः कर्मवल्लीकुठारा, नतसुरनरवाराः प्राप्तसंसार पाराः ॥ सुखमतुलमुदारा स्तीर्थपालोकसारा, ददतुशिववधूरोमंकनेतारहाराः ॥१८॥ नमदमरशुरेंद्रं प्रास्तसंमोहनिद्रं सुगुणमणिसमुद्रं यत्कषायारिसैंद्रं ॥ नमतविहितभद्रंसत्वपीडादरिद्रं, कुमत कमलचंद्रं शासनंजैनचंद्रं ॥ १९ ॥ दर्शनंग्यानसूर्यस्य, संसारध्वांतनाशनं ॥ बोधनंचित्तपद्मस्य, समस्तार्थप्रकाशकं ॥ २० ॥ दर्शनंजिनचंद्रस्य, सद्धर्मामृतवर्षणं ॥ जन्मदाघविनाशाय, वर्द्धनंसुख वारिधेः ॥ २१ ॥ जिनेन्द्रभक्तिर्जिनेन्द्रभक्तिर्जिनेन्द्रभक्तिर्दिनेदिने ॥ सदामेस्तु सदामेस्तु सदामेस्तु भवेभवे ॥ २२ ॥ जयत्वंप्रभोप्राप्तसंसारतीर ! स्फुरत्पापधूलीप्रणाशेसमीर ! महामानमायावनी सारसीर ! ज्वलक्रोध दावानलेमेघनीर ! ॥ २३ ॥ इतिश्रीमद्सहजकलानिधि सूरीश्वरचरण सरोरुहचञ्चरीकेणाब्धिचन्द्रेण संकलिताः श्रीजिनेंद्र स्तुतिश्लोकाः ॥



 शुद्धिपत्र. 

असुध्य.	सुध्य.	पानु.	लीटी.
साध्वीय	साध्वी	४	९
कर्युं	कर्यो	५	११
सू	सु	६	फीगरमां
प्रीतबोध	प्रतिबोध	६	७
ब्रतो	व्रतो	६	१२
दशो	देवा	१०	१
थभिं	थंभि	१०	१
गडं	गंड	१०	१
घरा	धरा	१०	२
त्रिराइ	त्रिराइय	११	२
गालवा	गालना	११	४
वुःख	दुःख	११	२१
वाले	वाले	१२	४
तत्थं	तत्थ	१२	१६
प्ही	व	१३	३
सावे	साथे	१४	४
दुवरा	दुवारा	१५	२५
ज्ञामादिक	ज्ञानादिक	१६	२०
मोंह	मोहि	१८	१०
लदद्दाओ	लब्धाओ	१८	१६

निरवाध	विरबाध	२०	२५	जीनधर्मनी	अने जैन धर्मनी	२८	२३
दाय	दोय	२१	१२	छेली	छेल्ली	२९	८
रज्रमय	व्रजमय	२२	१२	करणीनो	करणीना	२९	८
इम	एम	२२	१६	काउसग	काउस्सग	२९	९
चउसठ	चउसट्ठ	२२	१७	ठाणांगसूत्रनो	ठाणांगसूत्रना	३१	६
बहू	वहु	२३	२९	पुरे	पुरि	३१	२०
उद्देशाना	उद्देशाने	२४	२३	सूत्र	सूत्र	३४	६
वीर्यीवएज्जा	वीइवएज्जा	२५	९	पर्यासायी	पर्याप्तार्थी	३४	२५
वुच्चइ	वुच्चइ	२५	९	छठा	छट्ठा	३५	२
वीयीवएज्जा	वीइवएज्जा	२५	१०	प्ररभव	परभव	३५	८
”	”	२५	१०	षज्झीतीए	पज्झीतीए	३५	१३
सम्माणेयी	सम्माणेइ	२५	१३	एवंबयासी	एवंवयासी	३५	१८
वीयीवएज्जा	वीइव एज्जा	२५	१५	चिठंती	चिट्ठंती	३५	२०
”	”	२५	१५	णमंसामा	णमंसामो	३६	२४

पुजननो	पुजनना	१८	३	साधु	साचुं	५३	२३
नंदावर्त	नंदावर्त्त	१८	४	पाडकमणा	पडिकमणा	५५	१८
थविरें	स्थविर	३९	१	इणह	इणेह	५६	८
,,	,,	३९	२	।वचार	विचार	६३	१९
ज्यातिस	ज्योतासि	४०	१६	बिमास	विमासी	६६	१०
संकोपे	संकोचे	४१	२०	अैसें	अैसैं	७२	७
म.ये	माथे	४३	२०	मण्णइ	मणणइ	७९	११
उतपाति	उत्पात्ति	४४	३	वद्दामो	वदामो	८०	१०
कालें	काले	४७	५	आराद	आराह	८०	१२
आंतकमे	आंतिकमे	४७	७	घरिउण	धरिउण	८१	२
नाससमरण	नामसमरण	४८	१५	कुणहय	कुण हय	८२	५
बहुसुं	बहुशुं	४९	१२	धंतरानां	धंतुरानां	८१	४
झझयणे	झयणे	५०	१६	घनवंत	धनवंत	९१	४
सूरि	सूरिंद	५२	६	भावयण	भवियण	९४	१०

श्री	श्रि	९९	१२
छेहेड	छेहेडे	१००	८
संख्यातो	असंख्यातो	१००	१२
युक्ता	युक्त	१००	१३
दशकोटाकोटिं	सतकोटाकोटीं	१०९	६
गुाभ	गुण	११८	९
त	ते	१२६	९
ए	एक	१२६	१३
हियं	हिहें	१३३	९
दाष	दोष	१३६	१४
भरीयेर	भरीयेरे	१३७	९
गावंतां	गावतां	१४१	४
ाजम	जीम	१४५	१
भाखेर	भाखेरे	१४५	२०
दीघओ	दीयओ	१४५	२२
अपछंतो	अवछंतो	१४८	१०
ावमास	विमास	१४९	१
हेमचंद्रसूरी	हेमचंद्रसूरि	१५४	१८
हेमचंद्राचार्य	हेमचंद्राचार्या	१६२	८
पूनेम	पुनम	१६२	९
तासुं	तासु	१६२	१३
शीलुणे	शीलिंणे	१६९	१६
लोट	लोट्	१७०	२२
स्तसंबुद्धौ	स्तत्संबुद्धौ	१७१	१७
रतुतौ	स्तुतौ	१७३	४
नाप्य	नाटय	१८२	१२
वंधहेत	वंधहेतु	१८४	७
यिंनोति	यिनोति	१८६	९
कीर्निं	कीर्तिं	१८६	९

आ पुस्तक छपाती वखते जे जे सद्ग्रहस्थोये पुस्तक लेवा नकलो नरी ज्ञाननी वृध्धी करनार सहायकोनां मुबारकना नामो नीचे मुजब.

कच्छ देशमां विचरता पंडितप्रवर मुनिराजश्री श्री श्री १००८ श्री कुशलचंद्रगणी महाराजश्रीना साधु साध्वीओना उपदेशथी नकलो भरावी आवेल तेथी तेओ साहेबोनो आ सभा उपकार माने छे.

कच्छ देश–मु० कोडाय,

५ मोटी धर्मशालाना भंडार खाते.
५ नानी धर्मशालाना ज्ञान भंडार खाते,
५ शा. नथुभाइ मेघराज
५ शा. वजपार राणा हा. माकुबाइ
५ शा. वेलजी तेजसीह—गाम दुढा
५ शा. भाणजी भीमजी—गाम दुढा
५ शा. हीरजी भवानजी
४ शा. जेठाभाइ नथु हा. उमीबाइ
२ शा. कोरसी लाधा
२ शा. खेरु जसा
२ शा. राणा करमशी
२ शा. वेलजी आसु
२ शा. वेरसीह मालु
२ शा. लाधा मुरजी
१ शा. वेलजी हंसराज हा. वांछइबाइ

२ शा. ऊभाइआ कोरसी
१ शा. नरसी वेलजी
४० शेठ. मोणसी कानजी हा. पानबाइ–गाम नागलपुर
कच्छ–मोटी खाखर तथा नानी खाखर.
५० शेठ. रणसीभाइ देवराज
१५ शेठ. दुरपाळ खेराज मुंबाइ दाणाबंदर
५ शेठ. रवजी देवराज
१ शा. गगुभाइ लधा
५ शेठ. लधाभाइ गुणपत
५ शेठ. नागजी गुणवत
५० कच्छ देश मध्ये तुंबडी गामना शा. कोरसी जेठाभाइनी विधवा बाइ नागलबाइए पोताना पुन्यार्थे चतुर्विध संघने पठन पाठनने माटे आ पुस्तकनी नकल ५० अर्पण करी छे.

कच्छ–सुंथरी.

१ शेठ. भवानजी दामजी
१ शेठ. दोशाभाइ खीअसो
२ शा. भीमजी भोजराजदेहंजो
१ शा. पासवीर पानाचंद
१ शा. मुरजी मादण
१ शा. कांनजी थोभण
१ शा. हंसराज मुरजी
१ शा. वसनजी सीवसी
२ शा. रतनसी पीतांबर
२ शा. राजपार जेठा
१ शा. मेघजी कुरसी
५ शा. रूपसी मीतांबर

कच्छ-सुंथरी.

१ शा. करमसी गोवंदजी
१ शा. रामजी मणसी
२ शा. खीअसी नरपार
१ शा. राघवजी त्रीकम
२ शेठ. चांपसी भोजराज
१ शा. कल्याणजी खीमजी
३ शा. मादण शिवराज
१ शेठ. चुनीलाल दलछाराम हा. बेन चंदु गाम वीसनगर
१ शा. हरगोवनदास जीवराज वीसनगर
१ शा. जुहारमल शेषमल गाम. व्यापी जील्ले अजमेर

गुजरात गाम मांडल.

५ वोरा. मयाचंद मेघराज
१ गांधी. ठाकरसी कानजी
१ गांधी. जेठाभाइ पानाचंद
१ वोरा. चतुरभाइ धारसी
१ गांधी. मानचंद हरचंद
१ शा. मुळचंद हीराचंद खंभात बंदर.
२५ राजमान् राजश्री ठाकोरसाहेब. वीजयसींघजी शाहबान् जे. पी. एन्.
१ यति. श्रीमानचंद पुनमचंदजी गाम रीयां जल्ले-मेडता
१ श्री. श्री नारायणचंद किशनचंदजी जयपुर-सिटी.
१ शेठजी. जुठाभाइ सुंदरजी भरुच. धी मोफ्युसील कोटन मीलना मेनेजर

अमदावाद-शामळानी पोळ.

१ शा. मंगळदास लल्लुभाइ-छपावनार

१ शा. हरगोवनदास हीराचंद
१ शा. जमनादास छोटालाल
१ शा. डाह्याभाइ हीराचंद
१ शा. मणीलाल वाडीलाल समाना मास्तर
१ शा. साराभाइ चमनलाल
१ शा. छगनलाल उमेदचंद
१ शा. डाह्याभाइ हरीलाल
१ शा. चुनीलाल दीपचंद
१ शा. नाथाभाइ लल्लुभाइ
१ शा. पोपटलाल चुनीलाल
१ शा. चमनलाल मोहनलाल
१ शा. भोगीलाल चमनलाल
१ शा. पुजाभाइ चकुभाइ
१ शा. अमरतलाल हेमचंद

१ शा. वाडीलाल चकुभाइ देवशानो पाडो.
१ शा. भोगीलाल ठाकरसी
१ शा. सांकळचंद खेमचंद
१ शेठ. हठीसंग रायचंद सरस्वती सभा साथे नाम स्थापक
१ शा. लल्लुभाइ हठीसंग
५ बाइ गजरी (१). बाइ जीवी (१). बाइ गंगा (१).
बाइ आधारी (१). बाइ. केवली (१).
१ शा. मणीलाल घेहेलाभाइ लालाभाइनी पोळ
१ शा. अम्रतलाल मोकमचंद मदनगोपाळनी हवेलि
१ शा. सोमचंद नहानचंद गाम पेथापुर
१ मास्तर. हीराचंद ककलभाइ
१ शा. अमीचंद जेठाभाइ
१ झवेरी. केशवलाल गोकळभाइ ठा. रतनपोळ
१ मुनि महाराज श्री जीनवीजय मु० पेटलाद.

१ शा. जेसंगभाइ पोचाभाइ वकील. बी. ए. एल एल बी दलाल.
१ शेठ तेजकरणजी मूलचंदजी रामपुरीया विकानेर
१५ शेठ कुरपाळ खेराज मुंबाइ. दाणाबंदर.
१ शेठ. दोशाभाइ खीअसी. सुथरी.

विनंति–कोइ पण सद्ग्रहस्थनुं नाम भूलथी छापवानुं रही गयुं होय तेमणे पत्र लखी ग्रन्थ मंगावो लेवा कृपा करवी

अनुक्रमणीकामां भूलथी छपाएला विषयो रही जवाथी नीचे मुजब जाणी लेवा.

दश श्रावक संबंधी पा. १६४–१६५ चौरासी गच्छनां नाम पा. १६६–१६६ श्री सुभाषित स्लोक माळिका पा. १६६–१६८ श्री पुद्गल परावर्त स्तवन पा. १७९–१८१ सुरदीपिकादि प्रकरण संग्रह पा. १–४४ श्री सद्हणा क्रियानी सज्झाय द्वात्रिंशिका पा ९२–९४

अशुद्ध.	शुद्ध.	पानुं	लीटी.
जीनेंद्र स्तुति स्लोकमां			
ज्वल क्रोध.	ज्वलत् क्रोध	१	८
ग्राहकनो नाम मध्ये.			
साध्वीओ	साध्वीओ	३	१६
शेठ. दुरपाळ	शेठ कुरपाळ	६	५
खीअसो	खीअसी	६	३
वांचनारने भलामण.			
छे सांभळी	ते सांभळी	१	७
ग्रंन्था	ग्रन्थो	२	९
आचर्यता	आचार्यता	३	११
क्रियागुप्त	क्रियागुप्त	५	५

॥ अथ श्री सुर–दीपिका ॥

॥ उपजाति छंदः ॥

सुणंतु भो भो असुराइया सुरा, जे विंतरा जोइसियाय देवा ॥
वेमाणिया कप्पग कप्पतीया, जे संति सम्मत्त विशुद्ध चित्ता ॥ १ ॥

भावार्थ—सम्यक्त्ववडे करीने जेमनुं चित्त विशुद्ध (निर्मळ) थयुं छे एहवा भो (असुरकुमारादिक, व्यंतर, ज्योतषि अने वैमानिक एटले कल्पोत्पन्न अने कल्पातीत) देवताओ तमे सांभळो. १

नामारिहंते ठवणारिहंते, दव्वारिहंते जिण सासणम्मि ॥
हीलंति मन्नंति न पूयणिज्जे, नमन्निया भाव जिणावि तेहिं ॥ २ ॥

भावार्थ—जे मनुष्यो श्री जिनशासनने विषे जणावेला नाम, स्थापना, अने द्रव्य अरिहंतोने पूजवा योग्य मानता नथी, अने हीलना करे छे, तेओ भाव जिनेश्वर भगवानने पण मानता नथी एमज गणाय. २

देवाय बालाय असंजयाय, सुत्ता अधम्मी तह मंदबुद्धि ॥
असंवुडा नो विरइय तेसिं, किंचित्ति न्नासंति सन्ना समक्खं. ॥ ३ ॥

भावार्थ—तेओ एम कहे छे के देवो बाल छे, असंजति छे, सुत्ता (मोहमय) छे, अधर्मि छे, मंदबुद्धि छे, तथा असंवुडा छे (आश्रव नथी रोक्या जेणे) तथा अविरति छे, एवी जेओ सभा समक्ष प्ररूपणा करे छे. ३

वयंति नो किंचि विसेस नायं, सामन्न न्नावेणय पन्नवंति ॥
मिच्छत्त समत्त गुणेग बुद्धिं, कुणंति नेयाउय मेव नेयं ॥ ४ ॥

भावार्थ—तेओ कांइपण विशेष रीते दृष्टांत सिद्धांत बतावीने समजावता नथी. पण लोकोने भ्रममां नांखवा सामान्य भावे मिथ्यात्व अने सम्यक्त्वगुणमां एक सरखी बुद्धि दर्शावे छे. अने स्याद्वादशैलीथी समजावी शकता नथी. ४

गुरूण पासंमि सुयं सुणेमो, वयंनु[१] एयं न पडिस्सुणेमो ॥
सुत्तंपि मन्नंति न तेण तुम्हं, पुरो जिणुत्तं वयणं न्नणेमो ॥ ५ ॥

---

१ वयंतु. इति पाठान्तरम्.

भावार्थ—अमे गुरु परंपरा अने तेमनी समक्ष जे सूत्रो सांभळ्यां छे. तेमां एवी वात सांभळी नथी, तेथी तमो सूत्रोने पण मानता नथी एमज समजाय छे. तेथी अमे श्री जिनेश्वर भगवानना वचनो सूत्रानुसार कहीए छीए ते सांभळो. ५

देवा जिणंदे पडिबोहयंति, लोगंति याणाइ अणंति काले ॥
तित्थं पवत्तेह हियं जणाणं, नणित्तु सामी नयवंति सव्वे ॥ ६ ॥

भावार्थ—जुवो लोकांतिक देवताओ अनंता काळथी स्वयंबुद्ध एवा श्री जिनेश्वर भगवानने दीक्षाना काळनुं स्मरण करावबा प्रतिबोधे छे के हे भगवन् जगत्‌ने हितकर तीर्थ प्रवर्तावो. ६

अंगंमि एयं पढमंमि वुत्तं, पुणो दसाणं ज्झयणे ट्ठमंमि ॥
अंगंमि छट्ठंमिय तेण देवा, मन्नामि बुद्धाणय वोहगाणं ॥ ७ ॥

भावार्थ—प्रथम अंग (आचारांग सूत्रना द्वितीय श्रुतस्कंध) मां ए वात कहेली छे. वळी दशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययनमां तेमज छठ्ठा अंग ज्ञाताजीमां पण कहेली छे. तेथी करीने ते देवताओने हुं स्वयंबुद्ध श्री जिनेश्वर भगवानना समयोचित बोधक मानुं छुं. ७

सुद्धोवएसेण जिणा सुराणं, बुज्झंति मुज्झंति नते सुहेहिं ॥

जेठेण तम्हा गुरु कारणेणं, बाला जणिज्जंति कहं नु देवा ॥ ८ ॥

भावार्थ—जे देवताओना शुद्ध उपदेशवडे करीने श्री जिनेश्वर भगवान पण पोतानो दीक्षानो समय जाणे छे, अने संसारिक सुखमां मुंझाता नथी, एवा देवताओने कांइपण विशेष कारण शिवाय हे मुग्ध लोको तमे शाथी बाळ कोहो छो ? ८

॥ ढाल चोपाई. ॥

इम बोल्या वे छठे अंग, सोहम गणधर मनने रंग; तेतलिपुत्र मंत्रि बोहियो, कनकध्वज राजा मोहियो ॥ ९ ॥ बहु उपाय करि संयम दीध, आपण वाचा सफळी कीध; पोटिल देवे कर्यो उपकार, मुहुत्ते पास्यो केवळ सार ॥ १० ॥

॥ तेतलिपुत्र मंत्रि अधिकार ॥

छठा अंग (ज्ञातासूत्र) ना चौदमा अध्ययनमां श्री सुधर्मस्वामीए श्री जंबुस्वामी प्रत्ये घणा उमंग साथे एम कह्युं छे के:—पूर्वे तेतलीपुर नामनुं नगर हतुं. त्यांनो राजा कनकरथ नामे हतो, तेनी पट्टराणी पद्मावती देवी हती, अने तेनो प्रधान तेतलिपुत्र करीने हतो. एकदा तेतलिपुत्र प्रधान घणा आडंबरसहित तेज नगरमां थइने जतो हतो. तेवामां तेनी दृष्टिए

तेज नगरना रहीश एक कलाद नामना सोनारनी भार्या भद्रानी कुखथी उत्पन्न थयेली पोटीला नामनी नवयौवना कन्या के जे पोतानी अगाशीमां नाना प्रकारनी क्रिडा करती हती, ते जोवामां आवी. तेने जोइने प्रधानने कामराग उत्पन्न थयो, तेथी तेणे पोताना माणसो मार्फत सोनार पासे ते कन्यानी याचना करावी, अने घणुंज द्रव्य आपवा कह्युं. सोनारे ते द्रव्य नहि लेतां प्रधाननी मागणी स्विकारी, पोटीला नामनी पोतानी कन्याने प्रधानने त्यां मोकलावी आपी, अने प्रधाने पण विधिपूर्वक तेनी साथे पाणीग्रहण कर्युं. पछी नाना प्रकारना भोगविलासमां ते तेनी साथे निमग्न थयो. अने कामरागमां तथा अनेक प्रकारनी मदनक्रिडामां काल निर्गमवा लाग्यो.

अहीं कनकरथ राजा पोतानी राज्यलक्ष्मी अने कामविलासमां लीन थइ गयो तेथी तेणे राजकाज छोडी दीधुं. अने रणवासमां पडी रहेवा लाग्यो. राजा पोताना अंगथी जे जे पुत्रो उत्पन्न थाय तेमनां अंग छेदन राज्यलोभथी कराववा लाग्यो. अने पोताना राज्यसुखनो मालिक बीजो थाय नहि अने पोतानुं सुख कायम रहे. एवी इर्षाथी तेणे पोताना घणा पुत्रोनां अंग छेदावी राज्यपदने नालायक कीधा. ते उपरथी पद्मावती राणीए पोताना दक्ष प्रधान तेतलिपुत्रने एकांतमां बोलाव्यो, अने कह्युं के प्रधानजी राज्यना रक्षणार्थे अने मारा तथा तमारा अने प्रजाना सुखना अर्थे, मारा उदरमां जे गर्भ छे तेनुं कोइपण रीते रक्षण थवुं जोइए, प्रधाने ते वात कबुल करी.

हवे जे समये पद्मावती देवीने गर्भ रह्यो हतो, तेज समये तेतलिपुत्र प्रधाननी पोटीला भार्याने पण गर्भ रह्यो हतो. गर्भ-

काळ पूरो थवाथी राणीने पुत्रनो प्रसँव थयो. अने तेवाज समयमां प्रधाननी पोटीला स्त्रीने पुत्रीनो प्रसव थयो. आ उचित समय विचारी पद्मावती देवीना पुत्रने प्रधान पोताने घेर लाव्यो अने पोटीलाने सोंप्यो. पोटीलानी पासेथी मुवेली पुत्रीने लेइ जइ राणीने सोंपी. अने राजाने मुवेली दीकरी जनम्याना समाचार कहेवराव्या, अने प्रधाने राज्यपुत्रना जन्ममहोत्सवमां बंदीवानोने छोडी मूक्या.

केटलोक काळ वित्या बाद तेतलिपुत्र प्रधान अने तेनी भार्या पोटीला वच्चे जे निबीड रागनी ग्रंथी हती, ते कोइ कारणसर तूटी गइ, अने जे स्त्री पोताने अति प्रिय अने वल्लभा हती, ते आंखना पडदातुल्य अप्रिय बनी गइ. पोटीला घणोज खेद करवा लागी, तेथी प्रधाने तेने खेद नहि करतां एक रसोइ करावी तेमां अनेक भिक्षुको अने ब्राह्मणोने दान आपी काळ निर्गमन करवा कह्युं, तेथी पोटीलाए अनेक श्रमण माहणादिकोने दान आपी संतोष कर्या. ए प्रमाणे काळ व्यतित करवा लागी.

एकदा सुव्रता नामनां साध्वी ज्ञानगुणे करी अनेक भव्यजीवोने उपकार करतां घणी शीष्यणीओ सहित विचरतां एज नगरमां पधार्यां. पोटीलाए सन्मानपूर्वक तेमनी निमंत्रणा करी, अने वस्त्र, पात्र आहारादिके तेमनी रुडी भक्ति करी. पछी पोटीलाए विनयपूर्वक कह्युं के, हे भगवति, मारो नाथ प्रधानजी पूर्वे मारा उपर अति प्रसन्न हतो अने हमणां तेनी मारा उपरथी अरुचि थइ छे माटे कोइ कामणटुमण वशिकरणादि विलक्षण प्रयोगो करी मारुं पुनः सन्मान थाय तेम करी आपो. ए वात सांभळी बहुश्रुत साध्वीजीए पोताना कान बंध करी दीधा, अने मधुर स्वरे बोल्यां के हे कल्याणि श्री जिनेश्वरभगवाने

आगममां प्रतिनिषेधेला मुजब गृहस्थना आलाप संलापमां रही संसारनी वृद्धिना उपायो योजवा अने तेवा प्रयोगो करवा एवो साधु साध्वीनो बिलकुल आचार नथी. माटे जो तमारे संसारना दुःखथी विरमवानी इच्छा होय तो श्री जिनेश्वरभगवाने कहेली प्रव्रज्या लेवी.

साध्वीजीना धर्मोपदेशथी पोटीलाने संसारनी असारता जणाइ वैराग्य थयो अने तेणे पोताना पति तेतलिपुत्र प्रधानजी पासे दीक्षा लेवानी अनुमति मागी. प्रधाने कह्युं के हुं तने अनुमति क्यारे आपुं के तुं जिनराजे कहेली प्रव्रज्या पाळी, देवलोकमां जाय, अने त्यांथी आवी मने प्रतिबोधी जिनराजनो धर्म अंगिकार करावे एवी तुं प्रतिज्ञा करे अने ते पाळे तोज तने दीक्षानी अनुमति आपुं. पोटीलाए ते वात अंगीकार करी. पछी प्रधाने साध्वीजी पासे जइ विनयपूर्वक कह्युं के, हे भगवति, मारी स्त्री संसारथी उदाशीन थइ छे, तेथी हुं आपने शिष्यणीनी भिक्षा आपुं छुं. एम कही साध्वीजीने अर्पण करी.

पछी पोटीलाए ईशानकोणमां जइ पोताना अलंकारो उतारी पोतानी मेळे पंचमुष्टी लोच कर्यो, पछी सुव्रता साध्वी पासे आवी वंदन नमस्कार करी दीक्षा अंगीकार करी. पछी अग्यार अंग भणी, घणा वर्ष दीक्षापर्याय पाळी छेवटे एक महीनानी संलेषणा करी समाधिपूर्वक काळ समये काळ करी देवलोकने विषे पोटील नामना उत्कृष्ट देवपणे उत्पन्न थई.

अहीं तेतलिपुत्र प्रधान कनकरथ राजाना सन्मानपूर्वक राजकारभार करतो हवो. काळे करीने राजा कनकरथ मरण पाम्यो, राजा अपुत्रीओ मरण पामवाथी प्रजावर्गमां तथा सामंतोमां अत्यंत शोक थयो. राजानुं प्रेतकार्य करी सामंतवर्ग

तथा प्रजाना आगेवान पुरुषोने राज्यचिंता उत्पन्न थइ. तेथी तेओए तेतलिपुत्र प्रधानने कोइ योग्य राज्यकुमारने शोधी लावी राजा स्थापवा विज्ञापना करी. प्रधाने ए वात सांभळी घणाज हर्षपूर्वक कनकरथ राजा अने पद्मावती देवीना गुप्त राखेला खरा अंगज पुत्र कनकध्वज कुमारने बोलावी सामंतो तथा प्रजावर्गने तेनो अथथी ते इति सुधी अहेवाल संभळावी तेने राज्याभिषेक करवा तथा पोतानो राजा मानवा फरमाव्युं. आथी सामंतो तथा प्रजावर्गमां सानंदाश्चर्य उत्पन्न थयो. अने सर्वेए हर्षना आवेशमां तेने वधावी लेइ तेनी आण प्रवर्तावी. राज्याभिषेक कर्यो त्यारथी कनकध्वज कुमार राजा थयो. अने तेतलिपुत्र प्रधाननुं पण घणुंज सन्मान थयुं.

राजा कनकध्वज न्याय राज्य करे छे, अने तेतलिपुत्र प्रधान राज्यकारभार चलावे छे, ते समयमां पद्मावती देवीए पोताना कुमार कनकध्वज राजाने बोलावी कह्युं के, हे कुमार तमे आ राज्य पाम्या छो ते मात्र तेतलिपुत्र प्रधाननोज प्रभाव अने उपकार छे. एम कही अथथी इति सुधी तमाम वृत्तांत कही संभळाव्यो, अने कह्युं के हे कुमार प्रधाननुं घणुं मान साचवजो, तेने अर्धासन आपजो, तेना हुकम प्रमाणे वर्तजो अने ते उठे तो तमे उठजो तथा तेनी पाछळ चालजो. इत्यादि बहु प्रकारे आदरसत्कार करवा कह्युं. ते वात राजाए अंगीकार करी त्यारथी प्रधानजी साथे घणाज मोभाथी चालवा लाग्यो. राजानुं सन्मान वधवाथी सामंतो अने प्रजावर्गनुं पण घणुंज सन्मान थयुं. ए प्रमाणे तेतलिपुत्र प्रधान घणोज सुखमां कालक्षेप करतो हतो.

हवे पोटीलदेव पोतानी पूर्वे करेली प्रतिज्ञा पाळवा सारु पृथ्वि उपर आव्यो. अने अनेक प्रकारे संसारनी अनित्यता

दर्शावी तेतलिपुत्रने संसारथी विरमवा माटे प्रतिबोध करवा लाग्यो: पण राज्यमद, यौवन, अने ठकुराइना सुखमां निमग्न थएलो प्रधान विवेक रहीत थयो, अने घणा प्रकारथी समजावतां छतां तथा युक्ति प्रयुक्ति करतां छतां पण प्रधानने बोध लाग्यो नहि. अने आत्मा, पुण्य पाप विगरे कांइ नथी, अने प्रत्यक्ष छे तेज साचुं छे एम मानवा लाग्यो.

पोटीलदेवे विचार कर्यो के सुखमां उछरेलो जीवडो दुःखनी वात जाण्या शिवाय अनुकूळ उपसर्गथी बुझवानो नथी पण राजा प्रजाना तिरस्काररूप प्रतिकुळ उपसर्ग थशे तो ए जीवनुं कल्याण थशे. एम विचारी तेणे राजानुं मन परावर्तन कर्युं.

एकदा तेतलिपुत्र अश्वारूढ थइ घणा माणसो साथे परवर्यो थको राज्यकचेरीमां जवा लाग्यो. ते वखते सामंतवर्ग तथा प्रजावर्गना जयजयकार शब्द थया अने सर्वे नीचा नमी नमस्कार कर्यो तेथी प्रधानने घणोज हर्ष थयो. पछी हर्षपूर्वक जेवो कचेरीमां प्रवेश करे छे तेवोज पोटील देवना प्रभावे राजा कनकध्वजनो प्रधान उपर तिरस्कार थयो. प्रधाननी सलाम लीधी नहीं, अने राजा क्रोधयुक्त थइ मुख फेरवी बेठो. एकदम आवो अकस्मात बनाव बनवाथी प्रधान निस्तेज थयो, ते तरतज त्यांथी पाछो वळ्यो, अने "यथा राजा तथा प्रजा" ए न्याय मुजब राजाए अपमान करवाथी सामंतो तथा प्रजाए पण अपमान कर्युं, अने सर्वेए परांगमुख कर्युं. ए प्रमाणे बाहिर सभा तरफ अपमान थवाथी प्रधान घेर चाल्यो. त्यां अभ्यंतर सभा जे स्वजनवर्गनी ते पण उपरांठी थइ अने मात, पिता, भाइ, बेन विगरे कोइए पण प्रधानना सन्मुख जोयुं नहीं.

कुदरत तरणानो मेरु अने रंकने राजा करे छे. राजा भिखारी थाय छे. अने कामदेव जेवा स्वरुपवाळा होय ते पण

रोगी थाय छे, ए काळनी बलिहारी छे. एम विचारतो तेतलिपुत्र प्रधान मानभ्रष्ट थयोथको आर्त रौद्र ध्यानमां गुंथायो अने तेणे आत्मघात करवानो निश्चय कर्यो. तेणे तालपुट विष खाधुं, पण देवना प्रभावथी शरीरमां संक्रमण थयुं नहि, पछी गळामां तलवार मारी छतां ते पण निरर्थक गइ, पछी गळामां फांसो नांखी झाडनी डाळीए लटक्यो तो दोरडुं तूटी गयुं, त्यार पछी गळे पथ्थरनी शिला बांधी कूवामां पड्यो, तो त्यां जल पण रेतीनुं थल थइ गयुं. सूकां लाकडां लावी अग्निनी चिता खडकी अग्नि सळगावी तेमां पड्यो तो अग्नि पण बुझी गइ, ए प्रमाणे मरवाना अनेक उपाय कर्या ते बधा निष्फळ गया. त्यारे तेणे विचार कर्यो के, "घरना बळ्या रणमां गया तो रणमां लागी लाह्य" ए प्रमाणे यतोभ्रष्ट ततोभ्रष्ट थयो. एम अनेक संकल्प विकल्प करतो, आर्त रौद्रध्यान ध्यावतो रणमां उभो रह्यो तो तेनी आगळ एक मोटी खाइ थइ गइ छे, पाछळ एक विक्राळ हाथी उभो छे अने बीजी बंने बाजुए एक महा अंधकार व्यापी रह्यो छे अने माथा उपर बाणनी वृष्टी थइ रही छे; एवा समयमां अति दूर नहीं तेमज अति नजीक नहीं ए प्रमाणे पोटीलदेव पोताना मूळरूपथी (पोटीलाना रूपथी) आवीने उभी छे. ते तेने घणीज मधुर ध्वनिथी प्रतिबोधे छे.

आ वेळा प्रधाननुं शांत चित्त दुःखगर्भित वैराग्यमय थयुं. तेणे विचार कर्यो के अहो हुं एक समये मोटा राज्यनो प्रधान हतो, में मरवाना घणा प्रयोगो कर्या ते निष्फळ गया, ए मारी वात कोण मानशे. एकवार ते पण समय हतो के मने सौ खमा खमा करतुं, ते पण हुं हतो, अने एक आ पण समय छे अने हाल पण हुंज छुं. तेथी हुं जे विचार करुंछुं ते आत्मा छे, अने आत्मा छे तो पुण्य पण छे अने पाप पण छे अने छेवटे स्वर्ग अपवर्ग पण छे. अहा हुं भुल्यो, आथड्यो, एम

अनेक तर्क वितर्क करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी तेना जोवामां तथा अनुभववामां आव्युं के हुं पूर्वे जंबुद्विपमां महाविदेह क्षेत्रमां पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकगिणी नगरीमां महा पद्म नामे राजा हतो, त्यां दीक्षा लेइ चौद पूर्वधारी थइ घणा वर्ष दीक्षा पाळी छेवटे संलेपणा करी महाशुक्र देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यांथी आवी हुं अहीं तेतलिपुत्र प्रधान भद्रामातानी कुखे थयो. अहा! आटलो काळ में प्रमादमां गुमाव्यो. एम विचारी पोते पंचमुष्टी लोच करी प्रव्रज्या लीधी अने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. देवताओए वेप आप्यो अने केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो. राजा कनकध्वज आ वात सांभळी मुनिराजने वंदन करवा आव्यो. वंदन नमस्कार करी पोताना अपराध खमावतो केवलीना चरणकमळ प्रत्ये पड्यो. मुनिए धर्मदेशना दीधी तेथी राजा श्रावक थयो, अने श्रावकनां बार व्रत अंगीकार कर्यां, अने मुनि मोक्षे पधार्या.

आ कथानो सारः—कनकध्वज राजाना मोहमां पडेलो तेतलिपुत्र मंत्री तेने पोटिलदेवे बहु उपाय करी धर्मबोध आप्यो, तेथी तेणे जैन दीक्षा अंगीकार करी अने मुहूर्तमां केवळज्ञान पाम्यो. आवा उत्तम उपकार करनारा देवोनी हीलना करवी ए आपणुंज भारी कर्मपणुं छे.

को बीजो तसु गुरु नव मळ्यो, सुर वचने मिथ्या मत टळ्यो ॥ तेहज देव गुरु थानक हुवो, उदाहरण हिव सांभळी जुवो ॥ ११ ॥ निरयावलिया नाम उवंग, सोमिल [1]माहणतणो प्रसंग ॥

---

१ ब्राह्मण.

पंचरात्री देवे खप करी, मिथ्या छंडी विरती आदरी ॥ १२ ॥ इस्या देव किम कहीये बाल, ए अवर्णमे मोटो आळ ॥ चउविह सुर सांभलज्यो तुमे, कहेतां नितु वारुवुं अमे ॥ १३ ॥

सोमील श्रावकनो अधिकार.

निरियावलि सूत्रमां (नवमा अनुत्तरोववाइ अंगना पुष्फीया नामना उपांगना त्रीजा अध्ययनमां) श्री सुधर्मस्वामी श्री जंबुस्वामी प्रत्ये कहेता हवा के पूर्वे वणारशी नगरीमां एक सोमील नामे विद्वान ब्राह्मण रेहेतो हतो तेने पांचसें शिष्यो-नो परिवार हतो. एकदा श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेज नगरीमां समोसर्या. श्री संघ वंदन नमस्कारार्थे गयो. प्रभुए मधुरस्वरथी धर्मदेशना दीधी तेथी भव्य स्त्री पुरुषोने प्रीतबोध थयो. नगरमां ठाम ठाम प्रभुनां गुण कीर्तन गवायां ते सांभळी सोमील ब्राह्मण प्रभुनी पासे गयो, अने अनेक प्रश्नो कर्या, तेना युक्तिपूर्वक धर्मशास्त्रने अनुसरी स्याद्वाद शैलीथी उत्तर आपी ब्राह्मणने निरुत्तर कर्यो अने प्रतिबोध्यो. तेथी तेणे भगवाननी पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो अने बार व्रत उचर्यां. भगवान विहार करी अन्यत्र गया.

हवे पाछळथी जैन मुनीनां दर्शन नहि थवाथी मिथ्यात्वीओनी सोबत अने परिचय थवाथी जेवो संग तेवो रंग ए न्यायने अनुसरी तेणे श्रावकधर्मनो परित्याग कर्यो, अने उचरेलां बार व्रतो उपर अरुचि थइ, एकदा मध्यरात्रीए तेणे विचार कर्यो के अहो!

ब्राह्मणधर्म मूकी में श्रावकधर्म अंगिकार कर्यो; पण क्यां महारो ब्राह्मणनो शुचिधर्म अने क्यां ते धर्म. हुं अग्निहोत्री ब्राह्मण यज्ञनो करनार तेने ए धर्म घटे नहीं. एवो विचार करी तेणे वागवगीचा अने कुवा तलाव कराव्या अने भिक्षुकोने दान दीधुं. वळी एकदा फरीथी विचार करी ते वानप्रस्थ थयो अने तेणे तापसी दीक्षा लीधी. ए प्रमाणे श्रावकधर्मनी करेली प्रतिज्ञा तेणे भंग करी दिशोपोख्खिया नामनी तापसी दीक्षा लीधी अने छठ छठनां पारणां करवा लाग्यो. सूर्यनी आतापना लेवानुं तथा दिशीयोनुं परिभ्रमण करवानुं शरु कर्युं.

प्रथम दिवसे पूर्व दिशामां जाय अने ते दिशाना सोम महाराजाने हाथ जोडी नमस्कार करी आज्ञा मागे के मने कंद फल फूलनी रजा आपो. ए प्रमाणे आज्ञा लेई एक आंकडीथी कंद फल फूलने तोडी लावे; वळी वीजे दिवसे उत्तर दिशामां जई वैश्रमण महाराजानी एज प्रमाणे रजा मागी त्यांथी लावे, अने त्रीजे दिवसे पश्चिम दिशाना वरुणदेव महाराजानी आज्ञा मागी त्यांथी लावे; फरी चोथे दिवसे दक्षिण दिशाना यम महाराजानी आज्ञा मागी त्यांथी लावे. ए प्रमाणे कंद फल फूल लावी गंगा नदीमां जई पूजन करी आश्रममां आवे, अने अग्नि सलगावी होम करी अग्निवैश्यदेवनुं पूजन करे अने वली आपी अतिथीनुं पूजन करी तेने संतोषी पछी पोते भोजन करे.

एकदा ते अनित्य भावना भाववा लाग्यो. तेणे विचार कर्यो के,– अहो में ज्येष्टपुत्रने घरनो भार सोंपी संसार त्याग करी प्रव्रज्या लीधी, छठ छठनां पारणां करुंछुं, हुं एकलो आव्यो ने एकलो जवानो छुं, हुं कोईनो नथी ने मारुं

कोई नथी; आ बधुं जे दृष्टिगोचर थाय छे ते भ्रम छे. मारे पोताना निज स्वरुपमां ज रमवुं जोइए; एम विचारी तेणे मौन व्रत धारण कर्युं. अने एक नेतर जेवा कोमळ काष्टनी मुखमुद्रा बनावी मुखमां घाली तेना बंने छेडा काने परोव्या अने उत्तर दिशीमां जई मध्यरात्रिना समये अशोकवृक्ष नीचे पद्मासन लगावी ध्यानमां बेशी विचार करवा लाग्यो. ते समये एक देवताए प्रगट थई प्रतिबोध कर्यो के,—हे सोमील आ तारी प्रव्रज्या छे ते केवल दुःप्रव्रज्या छे, माटे श्री जिनेश्वर भगवाने कहेली सुप्रव्रज्या अंगिकार कर. ते उपर तेणे कांई लक्ष आप्युं नहि. ए प्रमाणे पांच रात्री सुधी उपदेश आप्यो. पांचमा दिवसे मध्यरात्रिए उत्तर दिशीमां ऊंबरवृक्ष नीचे पद्मासन लगावी सोमील बेठो छे, ते वखते देवताए प्रगट थई फरी फरीने कह्युं के, हे सोमील आ तारी दीक्षा जुठी छे ने आ तारुं कष्ट ते अज्ञान कष्ट छे, माटे तुं वारंवार विचार कर. ए प्रमाणे बे त्रणवार कहेवाथी तेणे मौननो त्याग कर्यो अने देवताने कह्युं के तमे कोण छो, अने मारी दीक्षा केम खोटी छे ? देवताए कह्युं के, हुं देव छुं, ने तने हितबुद्धिथी कहुं छुं के आ तारुं अज्ञान कष्ट अने दीक्षा जुठी छे ! पण श्री पार्श्वनाथजीए भाखेलो धर्म साचो छे अने तेमनी पासे तें जे व्रतो अंगिकार कर्यां छे ते पण साचां छे ने ते फरीथी आराधवा योग्य छे.

आ सांभळी सोमीलने सानंदाश्चर्य थयो, तेणे फरीथी द्वादश व्रत अंगिकार कर्यां अने व्रतमां स्थिर थयो. देवता नमस्कार करी स्वस्थानके गयो. पछी सोमीले घणो काळ चोथभक्त, छठ्ठभक्त अने अठ्ठमादिक पासखमण अने मासखमणादिक तपस्या

करी पोताना आत्माने भावतो स्वरूपमां लीन थयो. अने अंते पन्नर दिवसनी संलेषणा करी पूर्वे करेला मिथ्यात्वनुं दुष्कृत आलोवी काल करी महाशुक्र विमानमां ग्रहदेवतापणे उत्पन्न थयो. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणे उत्पन्न थशे अने दीक्षा पाळी मोक्षे जशे. ते शुक्र देवताए भगवान श्री महावीरस्वामी पासे आवी नाटक कर्युं. गौतमस्वामीए पूछयुं के, महाराज ए देव कोण छे ? ते उपरथी श्रीमुखे गौतमस्वामीने उपर मुजब तेनो संबंध कह्यो, एम श्री सुधर्म स्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं.

ए प्रमाणे अगीआरथी तेर सुधीनी गाथानो अर्थ छे अने ते एम सूचन करे छे के एवो शुद्ध उपदेश समकितीदेव शिवाय बीजो कोण करे ? एवा समकिती देवने जे बाळजीवो बाळ अने अज्ञ कहे छे तेने सूचना करे छे के एवो आळ तमे समकिती देवो उपर मूकशो नहीं, पण तत्त्वातत्त्वनो विचार करजो. आ वात गितारथ गुरुमुखे सूत्रमांथी विस्तारपूर्वक सांभळीने मनन करवी.

सप्तम अंगे पुरपोलासी, सद्दालपुत्र वसे तिहं वासी ॥ ते श्रावक [1]आजीवक तणो, तसु उपर बे आदर घणो ॥ १४ ॥ तसु अवसर [2]आवश्यकतणे, एक देव आडंबर घणे ॥ आवी वीरतणा गुण कहे, तिण ते [3]आजीवक सद्दहे ॥ १५ ॥ ते प्रभाते आवस्ये इहां, तुं वंदेवा जाये तिहां ॥

---

१ आजीवक–गोशाळो. २ संध्याना समये. ३ गोशाळानो श्रावक.

पीढ फलग सय्या संथार, निमंत्रणा करिजे सविचार ॥ १६ ॥ इम करते सूधो गुरु लह्यो, कह्यो बाल किम जाए ति कह्यो ॥ पंडित विणु जिन गुण कुण कहे, मिथ्याती मूरख शुं लहे ॥ १७ ॥

श्री उपासक दशांग अंगने विषे सद्दाल श्रावकनो अधिकार.

कोलासपुर नगरने विषे जितशत्रु नामनो राजा राज्य करतो हतो. ते नगर मध्ये सद्दालपुत्र नामनो एक धनाढ्य कुंभार रहेतो हतो, ते गौशालक मतनो उपासक अने तेना सिद्धांतोपर संपूर्ण श्रद्धावंत हतो. ते सद्दालपुत्र एक दिवस मध्य रात्रिए अशोकवाटिकाने विषे बेठो हतो ते प्रसंगे त्यां एक देव प्रगट थई कहेवा लाग्यो के, " हे देवानुप्रिय ! काले प्रभाते अत्रे महामाहण, महागोप, महासार्थवाह धर्माचार्य पधारवाना छे तेमने तमे भक्तिपूर्वक वंदन करजो, तेमनी पर्युपासना करजो अने पाट, पाटला, बाजोठ, संथारा विगेरेनी निमंत्रणा करजो. " ए प्रमाणे बे त्रण वखत कही ते देव अदृष्य थयो. आ उपरथी सद्दाले विचार्युं के म्हारो धर्माचार्य (गोशालो) काले पधारशे, तेथी ते प्रभातमां व्हेलो स्नान विगेरे करी आनंद-युक्त थयो थको सहकुटुंब परिवार सहित धर्माचार्यना वंदनार्थे नगर बहारना उद्यानने विषे गयो. परंतु त्यांतो गौशालकने बदले महामाहण भगवंत श्री वर्द्धमानस्वामी पधार्या हता, पण सद्दाले देवना कहेवाथी ते भगवंतने वंदन करी बेठो; तेने जोई भगवंत सद्दाल प्रत्ये कहेता हवा के " हे सद्दाल काले मध्यरात्रिना समये अशोकवाटिकाने विषे तारी पासे एक देव प्रगट

थयो हतो अने तेणे तने एम कह्युं हतुं के, काले महामाहण, महागोप धर्माचार्य पधारवाना छे, अने हे सद्दाल ते धर्माचार्यने तुं गौशालक समज्यो हईश परंतु ते तारी भूल थई छे." एम कही जगतउपकारक श्री भगवंते तेने सद्उपदेश कर्यो के जे उपदेशथी सद्दाल मिथ्यात्व दूर करी शुद्ध श्रद्धावंत श्रावक थयो. खरेखर पंडित शिवाय जिनेश्वर भगवंतना गुण कोण कथी शके अने मिथ्यात्वी मूर्ख शुं समजे.

माटे आ दृष्टांत उपरथी मिथ्यादृष्टि अने सम्यक्दृष्टि देवमां केटलो महान अंतर छे ते सहज समजाय छे.

आ कथानो सविस्तर अधिकार सप्तम अंगमांथी गुरुद्वारा जाणी लेवो.

छट्ठो श्रावक कुंडकोलीयो, देव वचनि ते नहु भोलीयो ॥ करे प्रसंस आजीवकतणी, जिनवरतणी क्रिया अवगणी ॥ १८ ॥ इम सांभली तिम कर्यो निपिट्ठ,[1] मुड्डा हवि गयो केणे न दीठ ॥ ते मिथ्याति कहीये[2] बाल, सरिखा कहेतां लागे आल[3] ॥ १९ ॥

॥ श्री सप्तम अंगने विषे छट्ठा कुंडकोलीया श्रावकनो अधिकार. ॥

कंपीलपुर नगरने विषे जीतशत्रु नामनो राजा राज्य करतो हतो, ते नगरने विषे एक महान् धनाढ्य कुंडकोलीया

१ निरुत्तर. २ अज्ञानी. ३ कलंक.

नामनो गाथापती रहेतो हतो. अने पुशा नामनी तेनी भार्या(स्त्री) हती.एक दिवसे भगवंत श्रीमहावीरस्वामी नगर बहारना सहस्र आम्रवन नामना ऊद्याननें विषे समोसर्या, ते प्रसंगे भगवंतनी देशना सांभळी कुंडकोलीयाए शुद्ध श्रावकधर्म अंगिकार कर्यो. एक दिवसे ते कुंडकोलीयो नगर बहारनी अशोकवाटिका प्रत्ये दिवसना पाछला प्रहरे आवी पोतानी नामांकित महान् मूल्यवान मणीमुद्रा अने ऊत्तरीय वस्त्र उतारी शिलापर मूकी, तेनी नजीकनी शिलापर बेसी सामायकव्रत धारण कर्युं. ते प्रसंगे एक मिथ्यादृष्टि देव त्यां प्रगट थई तेमनी मुद्रा अने ऊत्तरीय वस्त्र लई ऊर्ध्व आकाशमार्गे जई घुमरीओ विगेरेना ध्वनीथी कुंडकोलीया प्रत्ये कहेवा लाग्यो के, " हे देवानुप्रिय! गौशालकनो कहेलो धर्म अति श्रेष्ठ छे, कारण के तप, संयम अने चारित्र विगेरे पुरुषार्थ शिवाय, अने कोईपण प्रकारनी मुश्केली शिवाय स्वर्ग अने मोक्ष मेळवी शकाय छे. माटे भगवंत महावीरनो प्ररुपेलो धर्म योग्य नथी. कारण के ते तप, संयम, चारित्र विगेरे महान् पुरुषार्थ अने उपाधिमय छे. माटे हे कुंडकोलीया तुं ते धर्मनो त्याग करी में कहेला गौशालकना सत्य धर्मनो अंगिकार कर, अने आ महान् ऊपाधिथी मुक्त था. " मिथ्यात्वीदेवना आ वचनो श्रवण करी कुंडकोलीयो ते देव प्रत्ये कहेवा लाग्यो के, " हे देव तें कहेलो धर्म जो सत्य होय तो महान् ऋद्धि सिद्धिवाळी ऊत्तम देवगतीने तें प्राप्त करी छे, ते शुं कोईपण प्रकारना पुरुषार्थ अथवा प्रयत्न शिवाय प्राप्त करी छे के पुरुषार्थ के प्रयत्नथी प्राप्त करी छे ? " कुंडकोलीयानां आ वचनो श्रवण करी, देव कहेवा लाग्यो के, " में कोईपण प्रकारनो पुरुषार्थ किंवा प्रयत्न कर्यो नथी. " देवनां आ मिथ्यावचन सांभळी कुंडकोलीयो कहेवा लाग्यो के, " जो कोई पण प्रकारना

पुरुषार्थ शिवाय देवगति प्राप्त थती होय तो तारा शिवाय अन्य दरेक प्राणी तारी माफक देवगति केम न पाम्या ? " आ प्रकारना कुंडकोलीयाना न्यायपूर्वक जवाबथी ते देव निरुत्तर थयो थको अनेक प्रकारनी शंका धारण करी, मणीमुद्रा अने वस्त्र शिलापर नांखी ते त्यांथी चाल्यो गयो. उपर प्रमाणेना कुंडकोलीयाना सत्य वचनोथी निरुत्तर थया छतां पण ते वचनो प्रत्ये श्रद्धावंत थयो नहीं, कारण के ते मिथ्यात्वी होवाथी तेनुं मिथ्यात्व तो गयुं ज नहीं. आ कथानो तात्पर्य ए छे के आवा देवोने बाळ कहेवाय; परंतु कोईपण सम्यक्त्वीदेवनी सरखामणीमां नज मुकाय, अने जो ते बन्नेने समान कहीए तो मोटुं कलंक मूक्युं कहेवाय.

आ कथानो पण सविस्तर अधिकार सप्तम अंगमांथी गुरुद्वारा जाणी लेवो.

जिनवरे कह्या ते अविरति भणी, विणु विशेष आसातना घणी ॥ सूयगडांग सूत्र संभालिये, निरतो लही अविनय टालीये ॥ २० ॥

श्रीसूत्रकृतांगेद्वितीयश्रुतस्कंधे द्वितीयाध्ययन आलापकः ७४ ॥

" एगच्चाए पुणएगे भयंतारो भवंति अवरेगंपुण पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवताए उववत्तारोभवंति तंजहाः—महड्ढिएसु महज्जुत्तिएसु महापरिक्कमेसु महाजसेसु महाबलेसु महाणुभावेसु महासुखेसु तेणं

तत्थ दवो भवंति महड्ढिया महज्जुत्तिया जावमहासुखा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथीभंयभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडयलकन्न-पीढधारी विचित्तहत्याभरणा विचित्तमालामउलिंमउडा कल्लाणगंधपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुर-बोंदीपलंबवणमालधरा दिव्वेणंरूवेणं दिव्वेणंवन्नेणं दिव्वेणंगंधेणं दिव्वेणंफासेणं दिव्वेणंसंघाएणं दिव्वेणंसंठाणेणं दिव्वाए-इड्डिए दिव्वाएजुत्तीए दिव्वाएपभाए दिव्वाएछायाए दिव्वाएअच्चाए दिव्वेणंतेयणं दिव्वाएलेसाए दसादिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसि भद्दयाविभवंति एसठाणे आयरिए जावसव्वदुःखप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे सुसाहू दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए " ॥ ७४ ॥

अर्थ–(एगच्चाए के०) एम कोइ एक पुरुष (पुण के०) वली (एगे के०) एकज शरीरे एटले तेज एक भवमां (भयंतारो भवंति के०) सिद्धिगति गामि होय. (अवरेगं पुण के०) अपर एटले बीजा वली (पुव्वकम्मावसेसेगं के०) जेने पूर्वकृत कर्म अवशेष रह्यां होय तो तेवा पुरुष (कालमासे कालंकिच्चा के०) कालने अवसरे काल करीने (अन्नयरेसु के०) अन्यत्र (देवलोएसु के०) देवलोकने विषे (देवताए उववत्तारोभवंति के०) देवपणे उपजनार थाय (तंजहा के०) ते देवलोक केवा होय ते कहे छे (महड्ढिएसु के०) महर्द्धिक मोटी रीद्धिना धणी, (महज्जुत्तिएसु के०) मोटाद्यु-तिवान, (महापरिक्कमेसु के०) महोटा पराक्रमवाला, (महाजसेसु के०) महोटा यशना धणी, (महाबलेसु के०) महोटा बलवान, (महाणुभावेसु के०) महोटा अतिशयवान एवा महानुभाव वैक्रियादिक शक्तिये करी सहित होय. (महासु-

खेसु के०) महोटा सुखना धणी, एटला वाना जे स्थानकने विषे छे (तेणंतत्थदेवाभवंति के०) ते त्यां देवतापणें होय. ते देवता केवा होय ते कहे छे. महोटी ऋद्धिआदिक गुणे सहति यावत् महोटा सुख सहित, (हारविराइवच्छा के०) हारे करी विराजित शोभायमान छे हृदयकमळ जेना वली (कडगतुडियथंभियभूयाअंगय के०) कटक, केयूर, अंगदादिके करो स्तंभित छे भुजा जेनी, वली देदीप्यमान (कुंडलमठ्ठगंडयल के०) कुंडले करी घसाएला एवा गालना तट जेणे शोभित कर्या छे (कन्नपीढधारी के०) कुंडलना आधार माटे कान छे माटे कर्णपीठधारी कह्या, अथवा कर्णपीठ ते काननुं आभरण विशेष जाणवुं. ते आभरण कुंडल छे, तेना धरनारा, (विचित्तहत्थाभरणा के०) विचित्र प्रकारना मुद्रादिक आभरण जेना हाथमां रहेलां छे तेणे करी सहित (विचित्तमालामउलिमउडा के०) विचित्र प्रकारनी माला सहित मुकुटना धरनार, (कल्लाणगंध पवरवत्थपरिहिया के०) कल्याणकारी सुगंधित वस्त्रना पेरनार, तथा (कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा के०) कल्लाणकारी प्रवरमाल्य विलेपनना धरनार, (भासुरबोंदीपलंबवणमालधरा के०) देदीप्यमान शरीरप्रलंब एवी लटकती जे वनमालारूप आभरण विशेष, तेना धरनारा, (दिव्वेणंरूवेणं के०) प्रधानरूपें करी सहित, (दिव्वेणंवन्नेणं के०) दिव्यवर्णें करी सहित, (दिव्वेणंगंधेणं के०) दिव्य गंधे करी सहित, (दिव्वेणंफासेणं के०) दिव्य स्पर्शें करी सहित, (दिव्वेणं संघाएणं के०) दिव्य शरीरनो संघातन समुदाय तेणे करी सहित, (दिव्वेणं संठाणेणं के०) दिव्य संस्थान समचतुरस्ररूप तेणे करी सहित, (दिव्वाएइड्ढीए के०) दिव्य वैमानादिकनी ऋद्धि. तेणे करी सहित. (दिव्वाएजुत्तीए के०) दिव्यद्युति एटले प्रधान

अन्योन्य भक्तिए करी सहित, (दिव्वाएप्पभाए के०) दिव्य प्रभा एटले कांति तथाविधद्रव्य जोडवाने प्रभावे महात्मे करी सहित, (दिव्वाएछायाए के०) दिव्य प्रतिबिंब एवा रूपें करी सहित, (दिव्वाएअच्चाए के०) दिव्य अर्चा, (दिव्वेणंतेयणं के०) प्रधान एवी शरीरथकी निकलति जे तेजनी ज्वाला तेणे करी सहित, एटले दिव्य तेंजेंकरी सहित (दिव्वाए लेसाए के०) अभ्यंतरना परिणामरूप शुक्लादिक लेश्यायें करी सहित थका, (दस दिसाओ उज्जोवेमाणा के०) प्रधान शरीर माहेली कांतिये करी दशे दिशाओने उज्वल करता, (पभासेमाणा के०) दशे दिशाओने अलंकारता प्रकासता, (गइकल्लाणा के०) देवता संबंधिनी गतिये करी प्रधान (ठिइकल्लाणा के०) देवता संबंधिनी स्थितियें करी कल्याण एटले प्रधान, (आगमेसिभद्दयावि भवंतिके०) आगमिककालें भद्रक प्रधान मनुष्यभवरूप संपदा पामवा आश्री तथा रूडा धर्म प्रतिपत्ति सहित प्रत्ये पामवा आश्री आगमिककालें भद्रक कह्या छे. ए स्थानक आर्य यावत् सर्व दुःख थकी रहित थवानो मार्ग एकांते सम्यक्, सत्य, सुसाधुनुं स्थानक छे, एटले बीजुं स्थानक धर्मपक्षनो विचार एम कह्यो. ॥ ७४ ॥

विचार्या विना सर्व देवोने सरखा करी देवाथी आसातना घणी थाय छे, तेथी विचारी देवोने बाल कहेवा. श्री जिनेश्वरे जे "बाल" कीधेला छे ते अविरति मिथ्यादृष्टि आश्रिने "बाल" कीधेला छे, पण सम्यक्‌दृष्टि आश्रिने "बाल" कीधेला नथी, माटे विचार कर्या विना बोलवाथी घणी आसातना थाय छे, तेथी श्री सूयगडांग सूत्रनो अधिकार सारी रीते सांभळीने अविनय टालवानो खप करवो.

बालपंडित पंडित ने बाल, विरताविरत विरतगुण साल ॥ अविरत त्रण भंग ए जोइ, समकितधारी बाल न होइ ॥ २१ ॥

श्रीसूत्रकृतांगद्वितीयश्रुतस्कंधे द्वितीयाध्ययने ॥७८॥ आलापकः

अविरइं पडुच्च वाले आहिज्जइ विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ विरयाविरइं पडुच्च वाल पंडिए आहिज्जइ, तत्थणं जासा सव्वतो अविरइ एसट्ठाणे आरंभट्ठाणे अणारिए जाव असव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहू तत्थणं जासा सव्वता विरइ एसट्ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू तत्थणं जासासव्वओ विरया विरई एसट्ठाणे आरंभणोरंभट्ठाणे एसट्ठाणे आरिए जावसव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगंतसम्मे साहू ॥ ७८ ॥

हवे ए त्रणें स्थानकनें संक्षेपे करी सविशेष कहे छे, (अविरइंपडुच्च के०) अविरति एटले असंयम ते आहीं सम्यक्त्वने अभावें जो पण मिथ्यादृष्टिनी विरति छे, तो पण तेने अविरतिज कहेवाय; ते अविरति आश्री तेने (वाले आहिज्जइ के०) वाल कहिये, (विरइं पडुच्च पंडिए आहिज्जइ के०) अने विरति एटले सावद्य परित्यागरूप ते आश्री तेने पंडित परमार्थनो जाण कहियें, (विरयाविरइंपडुच्चवालपंडिएआहिज्जइ के०) तथा विरताविरत एटले कांइक संयम कांइक असंयम ते आश्री तेने वाल पंडित कहीये, (तत्थणंजासासव्वतो अविरइ के०) त्यां पूर्वोक्त त्रण स्थानकने विषे जे सर्व थकी अवि-

रति स्थानक छे एटले जेमां सर्वथा विरति परिणामनो अभाव छे. (एसट्ठाणे के०)ए स्थानक ते (आरंभट्ठाणे के०)आरंभनुं स्थानक, (अणारिए के०) अनार्य, (जावअसव्वदुक्खप्पहीणमग्गे के०) यावत् सर्व दुःख थकी मूकाववानो मार्ग नथी. (एगंतमिच्छेअसाहु के०) एकांत मिथ्यात्व मार्ग असाधु एटले ए सारो मार्ग नहीं. हवे बीजुं धर्मपक्षनुं स्थानक कहे छे. (तत्थणंजासासव्वता विरइ के०) त्यां जे सर्व थकी विरति सम्यक् पूर्वक आरंभ परित्यागरूप (एसट्ठाणे के०) ए स्थानक (अणारंभट्ठाणे के०) अनारंभनुं स्थानक (आरिए के०) आर्य (जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे के०) यावत् सर्व दुःख थकी मूकाववानो मार्ग, (एगंतसम्मेसाहु के०) एकान्त सम्यक्त्व साधु मार्ग जाणवो. हवे त्रीजुं मिश्रपक्षनुं स्थानक कहे छे. (तत्थणंजासासव्वओविरयाविरइ एसट्ठाणेआरंभणोरंभट्ठाणे के०) त्यां जे सर्वथकी विरताविरत एटले संयमासंयमरूप स्थानक ते आरंभ अने अनारंभरूप स्थानक जाणवुं. (एसट्ठाणे के०) ए स्थानक (आरिए के०) आर्य यावत् सर्व दुःख थकी मूकाववानो मार्ग एकांत सम्यक् भलो मार्ग जाणवो. ॥ ७८ ॥

आ प्रमाणे त्रण भेद कहेला छे. (१) लो बालपंडित. (२) जो पंडित. (३) जो बाल. १ विरताविरती, २ विरति, ३ अविरति, ए त्रण त्रण भांगाने विचारवा, अने योग्य रीते समजी समकिति देवोने "बाल" कहेवा नहि.

मिथ्यादृष्टि पाले क्रिया, जिनवर वचन मिश्र ए थया ॥ पद्म अधर्म छे एहनो, नाम विराधक छे जेहनो ॥ ११ ॥

अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंग एव माहिज्जइ जे इमे भवंति आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया कण्हुई-रहस्सिता जाव ते तओविप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयत्ताए पच्चायंति एसठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीण-मग्गे एगंतमिच्छे असाहु एसखलु तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगे एव माहिए ॥ ६० ॥

अर्थ—हवे अपर त्रीजुं स्थानक जे मिश्रपक्ष तेनुं स्वरुप आवी रीते कहेवाय छे. जे ए मिश्रस्थानक छे, ते एने मिश्रस्थानक शा कारणे कहीये ? ते माटे विशेष कहे छे. अधर्मपक्षे मिश्रित जे धर्मपक्ष, ते कारणे एने मिश्रपक्ष कहीयें. परंतु अधर्मना बाहुल्यपणाथकी, ए अधर्म पक्षज जाणवो. यद्यपि मिथ्यादृष्टि पण केटलीएक विरति करे छे, तथापि ते चित्तने अशुद्धपणे, अने परमार्थने अजाणपणे, तथा अभिनवपित्तना उदयें, साकर मिश्रित दूधपाननी पेठें, तथा उखर क्षेत्रमां मेघवृष्टिनी पेठें ते धर्म पण तेनो फलदायक न थाय. ते कारणे मिश्रपक्ष, विशेषअधर्मपक्षने मलतोज छे. (जेइमेभवंति आरण्णिया के०) कंदमूल फलाहारी, वृक्षने मूले वसता (आवसहिया के०) कोइएक पानडानी झुंपडी करीने रहे, (गामणियंतिया के०) आजीविका चलाववा निमित्ते ग्रामने समीपे रहे, (कण्हुईरहस्सित्ता के०) कोइएक कार्यने विषे रहस्यना करनार, एवा तापसादिक पूर्वोक्त जे होय ते मिश्र पक्षवाला जाणवा. (जावतेतओविप्पमुच्चमाणा के०) यावत् यद्यपि ए कांहीएक कायक्लेश करे तथापि ते आसुरी किल्विषियाओने स्थानके जइ उपजे. ते स्थानकथकी आयुष्यने क्षयें

चवीनें, (भुज्जो के०) वली मनुष्यभव पामें. तो (एळमूयत्ताए के०) बहेरा, मुंगा, आंधळा, जन्मान्ध, (पच्चायंति०) एवा थाय. ए रीतें चातुर्गतिक संसारमांहे परिभ्रमण करे. ए कारणे ए स्थानक अनार्य एटले महापुरुषने अनाचरणीय छे, एने विषे केवलज्ञान नथी. यावत् सर्व दुःखना क्षयनुं कारक ए स्थानक नथी. ए मार्ग एकान्त मिथ्यात्वनुं स्थानक, माटे ए असाधुनो पंथ जाणवो.आवी रीते त्रीजा मिश्रपक्षनो विचार कह्यो. ॥ ६० ॥

तापसादि मिथ्यादृष्टिओ तप, जप, आतापनादि क्रिया करवाथी तेमनो मिश्रपक्ष भगवाने कहेलो छे. तेनो मिश्रपक्ष विराधक होवाथी प्रभुए आ पक्षने अधर्म पक्षमांहि गणेलो छे. ॥ २२ ॥

समकित सहित बार व्रतधार, देशविरतिनो एह आचार ॥ ते पण सूत्रे मिश्रज कह्या, धर्म पक्ष मांहे संग्रह्या ॥ २३ ॥

श्रीसूत्रकृतांगेद्वितीयश्रुतस्कंधद्वितीयाध्ययने आलापकः ॥ ७५-७६ ॥

अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मिसगस्स विभंगे एव माहिज्जइ इह खलुपाईणंवा संतेगतिया मणुस्सा भवंति तंजहा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिकप्पेमाणा विहरंति सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहू एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरता जावजीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरया जाव जेयावण्णे तहप्पगारा सावज्जा

अबोहिया कम्मंता परपाणपरितावणकरा कज्जंति ततोवि एगच्चाओ अप्पडिविरया. ॥ ७९ ॥

अर्थः-अथ हवे अपर त्रीजुं स्थानक मिश्रपक्ष तेनो विचार कहियें छैयें; यद्यपि ए स्थानक धर्म अधर्म करीने मिश्रित छे, तथापि एमां धर्मनुं बाहुल्यपणुं छे, ते माटे ए धर्मपक्षज जाणवो. आ जगत्मांहे निश्चें पूर्वादिक दिशिने विषे कोई एक मनुष्य एवा छे, ते कहे छे. अल्प इच्छावाला, अल्पारंभी एटले थोडेज आरंभे व्यापारादिक साथे संबंध छे जेने, अल्प परिग्रही एटले थोडोज परिग्रह संग्रह करवानी मूर्च्छा संबंधी बुद्धि छे जेनी, धर्मानुगामि एटले धर्म जे श्रुत चारित्ररूप तेनी केडे चालनार, यावत् देशथकी चारित्रने अखंड पालवे करी, श्रुतने आराधवे करी आजीविका करताथका विचरे छे. भलो छे आचार जेनो, भलां व्रत छे जेने, सुप्रत्यानंद, साधु एटले सुखसाध्यसाधु, तथा साधुने विषेज आनंद हर्ष सहित वर्त्ते छे, तथा (एगच्चाओपाणाइवायाओ के०) एकेक प्राणी जे बेइंद्रियादिक त्रस जीवो छे, तेने हणवाथकी निवर्त्या एवा, तथा एकेक स्थूल प्राणातिपात थकी, अत्यंतपणे विरम्या छे, विरक्त थया छे, जावजीवसुधी एकेक प्राणी जे पृथिव्यादिक द्वार तेने हणवाथकी अत्यंत विरम्या नथी, ओसरया नथी एटले एक सूक्ष्म प्राणातिपातथकी अविरता इत्यादिक सर्वपद, जेवां अविरतने आलावे कह्यां छे, तेवां आहीं पग जाणी लेवां, परंतु एटलुं विशेष छे जे; एक पक्षें विरति, अने एक पक्षें अविरति, (जावजेयावण्णे के०) यावत् जे कांइ अनेरा तथाप्रकारना पूर्वोक्त सावद्य अबोधिनां कारण एवा कर्मरूप व्यापार, बीजा जीवोने परितापना करनार नीपजावीयें, ते थकी पण एकपक्षें विरति अने एकपक्षें अविरति, ते विरताविरत कहियें ॥ ७९ ॥

से जहा णामएसमणोवासगा भवंति अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसंवरवेयणाणिज्जरा किरियाहिगरण-बंधमोक्खकुसला असहेज्ज देवासुरनागसुवन्न जक्खरक्खस किंनर किंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा इणमे निग्गंथे पावयणे णिस्संकिया णिक्कंखिया णिवितिगिच्छा लद्धठा गहीयठा पुछियट्ठा विणिच्छियठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता अयमाउसो निग्गंथे पावयणे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे उसियफलिहा अवगुय दुवारा अचियत्तं तेउरपरघरपवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिठ्ठपुण्णिमासिणीसुपडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा समणे निग्गंथे फासु एसणिज्जेणं असण पाणखाइम साइमेणं वथ्थ पडिग्गह कंबल पायपुंच्छणेणं ओसह भेसज्जेणं पीठ फलग सेज्जा संथारएणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय गुणवेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावे माणा विहरंति ॥ ७६ ॥

तेणं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहुइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति पाउणंतित्ता आबाहंसि उप्पन्नंसिवा अणुप्पन्नंसिवा बहुइं भत्ताइं अणसणाए पच्चखाए बहुइं भत्ताइं अणसणाए पच्चक्खाएत्ता बहुइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ बहुइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइत्ता आलोइय पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवताए उववतारो भवंति तंजहा महड्ढिएसु महज्जुइएसु जाव महा सुखेसु सेसं तहेव जाव एसट्ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे साहू तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभंगेएवं आहिए ॥ ७७ ॥

अर्थः—वली विशेष कहिये छैयें. ते यथा दृष्टांते नाम एवी संभावनायें जेम कोइएक उत्तम पुरुष, विशिष्ट उपदेश सांभलवाने अर्थे मुनिओने सेवे छे. ते(समणोवासगाभवंति के०) श्रमणोपासकनो धर्म सेवन करे, ते श्रमणोपासक विशेषतः धर्मना करनार जाणवा, ते श्रमणोपासकना लक्षण कहे छे. (अभिगय के०) अभिगत एटले ओलख्या छे, जाण्या छे, (जीवाजीवा के०) जीव जे चेतना लक्षणरूप, अने अजीव जे चेतनारहित, एटले जीवाजीवना ओलखनार तथा (उवलद्धपुण्णपावा के०) शुभ प्रकृतिरूप जे पुण्य, अने अशुभ प्रकृतिरूप जे पाप, तेना स्वरूपने उपलब्ध एटले जाण्या छे, तथा (आसव के०) आश्रव ते शुभाशुभ कर्मनुं आववुं, अने (संवर के०) संवर ते आवता कर्मनुं रोकवुं, संवरवुं, तथा (वेयणा के०) वेदना ते साता असातारूप बे प्रकारनी, (णिज्जरा के०) निर्ज्जरा ते कर्मनुं खपाववुं, (किरियाहिगरण के०) क्रियाअधिकरण एटले घर, हाट, खज, कटारी, उखल, मुसलथकी कर्म बंधाय ते, (बंध के०) बंध चार प्रकारना तथा (मोख्ख के०) कर्मथकी मूकाववुं ते जाणवाने विषे (कुसला के०) डाह्या छे, (असहेज्ज के०) कोइ कष्ट पड्याथकी देवादिकनी सहायतानी वांछा न करे, सहायरहित धर्मना करनार होय. (देवासुरनागसुवन्नजख्खरख्खसकिंन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं के०) तथा देव एटले वैमानिक देवो, असुर एटले असुरकुमार भवनवासी देवो, नागकुमार, सुवर्णकुमार, यक्ष, राक्षस, किंन्नर, किंपुरिस, अश्वमुख गरुड, गंधर्व, महोरगादिक, (देवगणेहिं के०) इत्यादिक देवताना समूह ते, (निग्गंथाओपावयणाओ के०) निग्रंथना एटले भगवंतना प्रवचनथकी तेने (अणइक्कमणिज्जा के०) चलावी न शके, डोलवी न शके. (इणमेनिग्गंथे

पावयणेणिस्संकिया के०) तथा ए निग्रंथना प्रवचनने विषे निःशंकित एटले संदेहरहित होय, एटले जे श्री वीतराग बोल्या तेज सत्य छे एम जाणे. (णिक्कंखिया के०) सूत्र छोडी बीजुं शास्त्र वांछे नही, (निव्वितिगिच्छा के०) धर्मना फलने विषे संदेहरहित होय, तथा सूत्रोक्त साधुना मार्गने विषे दुगंच्छारहित होय, (लद्धठ्ठा के०) सूत्र सांभलवाथकी लाधा छे सूत्रना अर्थ जेणे, (गहीयठ्ठा के०) धारणाये करी ग्रह्या छे अर्थ जेणे, (पुच्छियठ्ठा के०) संशय उत्पन्न थया थकी पूछीने खरा कर्या छे अर्थ जेणे, (विणिच्छियठ्ठा के०) वारंवार विशेषे पूछीने निश्चित कर्या छे अर्थ जेणे, (अभिगयठ्ठा के०) प्राप्त थयेला अर्थने पूछ्या पछी, निर्णय करी धार्या छे अर्थ जेणे, एटले प्रकारे तत्वार्थना जाण, (अठ्ठिमिंज पेम्माणुरागरत्ता के०) अस्थि अने हाड मांहेली मिंजा जे धातु विशेष ते भगवंतना सिद्धांतरूप कसुंबादिकने विषे प्रेमरूप रागेकरी रंगाणा छे एटले रागरक्त छें, तथा पांच मांहे मल्या थका एवी धर्मनी कथा करे के, (अयमाउसो के०) अहो आयुष्यमंतो ! (निग्गंथेपावयणे के०) निग्रंथ एटले साधु संबंधि जे प्रवचनसिद्धांत छे (अयंपरमठ्ठे के०) एज आत्माने अर्थे उत्कृष्ट मोक्ष साधनरूप मार्ग छे. (सेसेअणठ्ठे के०) अने शेष बीजा कपिलादिकना ग्रंथ, तथा धनधान्यादिक, पुत्रकलत्रादिक ए सहु अनर्थकारी छे, ए सर्व असार एवो जे आ संसार तेनी वृद्धिनां कारणरूप छे. एवी कथा करे, ए रीते निग्रंथना प्रवचनने विषे रागी छे, (उसियफलिहा के०) निर्मल स्फाटिकना जेवुं चित्त छे जेनुं (अवगुयदुवरा के०) जेना घरना बारणा भोंगल रहित एटले सर्व काल उघाडां छे, (अचियत्तंतेउरपरघरपवेसा के०) राजाना अंतःपुरनी पेठें लोकना घरने विषे प्रवेश करवानो जेणे त्याग कर्यो छे, अथवा

अप्रीतिकारि छे, परदर्शनादिकना घरने विषे प्रवेश जेनो, एतावता परतीर्थिकने परघर जाणीने घणा मजबूत कारणो विना तेमने घरे न जाय तथा (चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ के०) चतुर्दशी, अष्टमी अने उद्दिष्टा एटले महाकल्याणिक तिथि (पुण्णिमासि-णीसु के०) त्रण पूर्णिमा चतुर्मासिक तिथी, एटला दिवसोने विषे (पडिपुन्नंपोसहंसम्मंअणुपालेमाणा के०) प्रतिपूर्ण पोसहने सम्यक् प्रकारे पालताथका विचरे छे. वली ते श्रावक कहेवा छे तो के (समणेनिग्गंथे के०) श्रमण तपस्वी निग्रंथने (फासुएसणिज्जेणं के०) प्राशुक एटले निर्जीव, एषणीक एटले बहेंतालीस दोष रहित एवो (असणपाणखाइमसाइमेणं के०) अशन, पान, खादिम, स्वादिम (वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंच्छणेणं के०) तथा वस्त्र, पात्र, कंबल, पायपुंछण, (ओसहभेसज्जेणं के०) औषध, भैषज्य, (पीठफलगसेज्जासंथारएणंपडिलाभेमाणा के०) पीठ, फलक, शय्या, संथारो तेणे करी प्रतिला-भता थका, (बहुहिंसीलव्वयगुणवेरमणपच्चखाण पोसहोववासेहिं के०) घणां एक शीलव्रत तथा शील ते शुभाचार, तथा स्थूल प्राणातिपातविरमणादिक गुणव्रत ते दिशिव्रतादिक योग्यपणे लीधेला तथा नवकारसी पोरसी प्रमुख पच्चख्खाणना करनार, तथा पौषध सहित उपवासना करनार, (अहापरिग्गहिएहिं के०) तथा यथा परिग्रहित एटले पोतानी इच्छा माफक आदर्या छे जेणे; ते शुं आदर्या छे ? तो के (तवोकम्मेहिं के०) तपकर्म तेणे करी (अप्पाणंभावेमाणाविहरंति के०) पोताना आत्माने भावता थका विचरे छे. ॥ ७६ ॥

(तेणंएयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा के०) ते एतद्रूपपणे एटले एवा पूर्वोक्त श्रावकने आचारे प्रवर्त्तताथका,

(बहुइंवासाइं के०) घणा वर्ष सुधी (समणोवासग परियागं के०) श्रमणोपासकना पर्यायने (पाउणंति के०) पाले, (पाउणंतित्ता के०) पालीने (आबाहंसिउप्पन्नंसिवा के०) रोगादिक आबाधा उपनी, (अणुप्पन्नंसिवा के०) अथवा अनुत्पन्न एटले न उपनी छते (बहुइंभत्ताइं के०) घणा भात पाणीनो (अणसणाएपच्चक्खाए के०) अनशन पच्चक्खे (पच्चक्खाएत्ता के०) एम घणा भक्त पाननो अनशन पच्चक्खिने (बहुइंभत्ताइंअणसणाएछेदेइ के०) ते अनशनने विषे घणा भक्त पानने छेदे, एटले परिहरे. (छेदेइत्ता के०) छेदी एटले परिहरीने, घणा दिवस अनशन पालीने (आलोइय पडिक्कंता के०) आलोचे, पडिकमे एटले जे पाप लाग्यां होय, ते अरिहंतादिक आगल प्रकाशीने तेनां मिथ्यादुष्कृतादिक आपीने (समाहिपत्ता के०) ज्ञानादिकनी निर्व्याघातपणे समाधि पामीने एटले पडिक्कमीने समाधि प्राप्त थइने, मरणना अवसरे काल करीने एटले समाधि मरण करीने अनेरा देवलोकने विषे देवतापणे उपजनार थाय. ते कहे छे. महोटी ऋद्धि छे वैमानिकादिकनी तेने विषे, महोटा द्युतिने विषे, यावत् घणा सुख तेने विषे, इत्यादिक शेष बोल पूर्ववत् एटले तेमज जाणवा. ज्यां सुधी एवुं स्थानक आर्य धर्मपक्ष साधु छे एटले रुडु छे. यावत् एकांत सम्यक्त्वमार्ग साधु त्यां सुधीनो आलावो बधो कहेवो. ए त्रीजुं स्थानक जे मिश्रपक्ष तेनुं स्वरूप कह्युं. एटले धर्मपक्ष, अधर्मपक्ष, अने मिश्रपक्ष, ए त्रणे पक्ष कह्यां. ।७७।

तात्पर्यः-समकित सहीत बार व्रतोनुं ग्रहण करवुं ए देशविरतिनो आचार छे, ते देशविरति पालन करनारा श्रावकोने देवाधिदेवें उपर कहेला बीजा अंगमां मिश्र पक्षवाळा कहेला छे, अने सन्मार्ग पामेला होवाथी श्री

वीतरागे धर्म पक्षमांहे ग्रहण कर्या छे. ॥ २३ ॥

मिथ्यादृष्टी ने अविरती, पक्ष अधर्म तेय दुर्मती ॥ सुत्ता बाल अधर्मी हुंति, असंयती अविरत एगंति ॥ २४ ॥ पंडितबाल पंडित व्यवहार, मिथ्यादृष्टि बाल विचार ॥ विरति थकी अधिको समकित्त, बाल न कहिये तिण संयुत्त ॥ २५ ॥

सामान्य रीते बधा देवताने आवी रीते न कहेवुं, के देवता मिथ्यादृष्टि छे, देवता अविरति छे, तेथी तेमनो अधर्मपक्ष छे; देवता बाल छे, देवता अधर्मी छे, एकांते असंयति अविरति छे, माटे मिथ्यादृष्टिने बाल कहेवाय, परंतु विरतिथकी पण अधिक उत्तम समकित ते उत्पन्न थयेलो छे जेमने, एवा समकित सहित देवताने बाल कदी न कहेवाय. उपर लखेल बीजा अंगनो ७८ मो आलापक इहां पण जाणी लेवो. ॥२४-२५॥

पंचमंग बोल्यो भगवती, सुर नहु कहेवा असंयती ॥ [1]निठुर वचन एम भाषतां, गुण[2] सुधर्म अविनय राखतां ॥ २६ ॥

---

१ कुवचन. २ श्री सुधर्मास्वामीए अविनयने अटकावाथी गुण कह्यो छे, ते कियो गुण के निठुर वचन न बोलवुं ते.

श्री भगवतीजीना पंचमशतकना चोथा उद्देशाने विषे.

देवाणं भंते! संजयाइ वत्तव्वंसिया? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे अब्भखाणमेयंदेवाणं। देवाणं भंते! असंजयाइवत्तव्वं सिया? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे निठुरवयणमेयं देवाणं। देवाणं भंते! संजयासंजयाइवत्तव्वंसिया? गोयमा! नोइणट्ठे समट्ठे असब्भूयमेयंदेवाणं। सेकिंखाइएणंभंते! देवाइवत्तव्वंसिया? गोयमा! देवाणं नो संजयाइवत्तव्वंसिया॥

आथी देवताने असंयति न कहेवा, अने एम जो बोले तो निठुर वचन बोल्युं गणाय, अने देवताने संयति कहीये तो अभ्याख्यान लागे, अने देवोने संयतासंयति कहिये तो असद्भूतवचन कहेवाय, माटे देवोने नोसंयति कहेवा एम श्री जिनेश्वर भगवाने कह्युं छे. ॥ २६ ॥

नोसंयत इम कहेवा कह्या, तासु भाव गीतारथे लह्या॥ नहीं संयत्त ए अर्थ न होय, आगम ग्रंथ विचारी जोय॥ २७॥

नोसंयत एम भगवाने कहेवा कह्या छे. अने तेनो तात्पर्य गीतारथ महाराजाओए जाणेलो होय छे, ने जे कोइ "नहीं संयत" एवो अर्थ करो तो ते अर्थ कदी थाय नहि. आगम ग्रंथ विचारीने जोइ लेजो. ॥ २७ ॥

वृत्तियें अर्थ इहज संग्रह्युं, वृत्ति न माने तेहने कहुं॥ मिलतो सूत्र करी आपीये, नहीं तो सूत्र

जणि थापीये ॥ २७ ॥ नोकसाय नोइंद्रिय जेय, नोसन्ना नोआगम जेय ॥ जेम तेम नोसंयत जाण, केवळ सूत्र तणे परमाण ॥ २९ ॥

वृत्तिमां एहज अर्थ कहेलो छे. जो वृत्ति न मानो तो सूत्रने मलती व्याख्या करी आपीये. जेम सूत्रोमां "नोकसाय, नोइंद्रिय, नोसन्ना, नोआगम" तेम "नोसंयत" केवल सूत्रना प्रमाणथी जाणी लेवुं, एटले नोकसायनो अर्थ अकसाय एवो थतो नथी, नोइंद्रियनो अर्थ अनिंद्रिय थतो नथी अने एम जो थाय तो उंधो थई जाय; ते माटे एवो अर्थ कदी करवो नहिं, अने देवताने अधर्मी एवा पण कदी नहीं कहेवा, केमके तेमनामां पण श्रुतधर्मनो सद्भाव छे एम सूत्रोमां कहेलुं छे ॥ २८–२९ ॥

अनुत्तर उववाई देवता, तिहां बतां गणि जिण सेवता ॥ पूछे मन करि प्रश्न विचार, बूझे जिनवर जाषित सार ॥ ३० ॥ इस्या नाण दंसण निर्मला, किणे काले न हुवे सामला ॥ वलि उपशांत मोह ते कह्या, सुगुरु वचन ते में सद्दह्या ॥ ३१ ॥

श्री जगवतीजीना ५ मा शतकना चोथा उद्देशाने विषे.

पभूणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगयाचेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावंवा संलावंवा करेत्तए ?

हंता पभू। सेकेणठेणं जाव पभूणं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ? गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगयाचेव समाणा अट्ठंवा हेउंवा पसिणंवा कारणंवा वागरणंवा पुच्छंति तण्णं इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरणंवा वागरेइ सेतेणठेणं भंते ! इहगए केवली अट्ठंवा जाव वागरेइ तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थ गयाचेव समाणा जाणंति पासंति. सेकेणठेणं जाव पासंति ? गोयमा ! तेसिणं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति सेतेणठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पासइ ॥

भावार्थ—समर्थ छे हे भगवन् ! अनुत्तर विमानने विषे उपन्या जे देव तिहां अनुत्तर विमानने विषे रह्याथका वसता थका, निश्चे इहां मनुष्यक्षेत्रनेविशे रह्याथका केवली संघातें एकवार बोलवो मन संघातेज, वारवार बोलवो मन संघातेज. ते करवाने इति प्रश्न. हा, गौतम ! समर्थ छे. ते स्ये अर्थे हे भगवन् ! यावत् समर्थ छे अनुत्तर विमाने उपना देव केवली संघाते आलाप संलाप करवामां ? हे गौतम ! जेह भणी अनुत्तर विमानवासी देव (जे माटे अच्युतदेव लोक उपरांत देवनो गमन आगमन नथी,) ते माटे तिहां रह्या थकाज अर्थ प्रत्ये हेतु दृष्टान्त प्रत्ये अथवा प्रश्न प्रत्ये अथवा कारणप्रत्ये अथवा व्याकरण (कह्यानो उत्तर ते व्याकरण) प्रते पूछे, ते इहां मनुष्यक्षेत्रे रह्या केवली अर्थ प्रत्ये यावत् प्रश्नना उत्तर कहे, ते तेणे अर्थे आलापादिक करवाने समर्थ छे. हे भगवन् ! इहां मनुष्यक्षेत्रने विषे रह्या केवली अर्थ प्रते यावत् प्रश्ननो उत्तर कहे ते प्रते अनुत्तर विमान उपना देव तिहांज रह्याथका निश्चे जाणे देखे ? हा गौतम ! जाणे देखे कया

कारणे हे भगवन् यावत् जाणे देखे ? हे गौतम ! तेह देवने अनंति मनोद्रव्यवर्गणा तेहना अवधिज्ञाननेविषे पहुंति, तेहने अवधिज्ञाने सामान्यथी पामी, विशेषथी पामी हुइ, जे माटे ते देवोनुं अवधिज्ञान संभिन्नलोकनाडी विषय छे. अने जे लोकनाडी ग्राहकहुवे ते मनोद्रव्यवर्गणा ग्राहकहुवेज; माटे जे पण लोकसंख्येयभाग विषयअवधिज्ञान हुवे ते पण मनोद्रव्यग्राही हुवे तो संभिन्नलोकनाडी विषय ते मनोद्रव्यग्राही केम न हुवे ? वांछीये छैये. लोकसंख्येयभाग अवधिने मनोद्रव्यग्राहकपणो, इति. तेणे कारणे हे गौतम ! इहां रह्यो केवली प्रश्नोत्तर कहे ते अनुत्तर विमानवासीदेव जाणे देखे. आवा देवता ज्ञानवान् तेने "बाल" शी रीते कहेवाय ? कहेनारज मूर्ख (बाल) कहेवाय.

उपरनी गाथामां कह्या मुजब जेओनुं ज्ञान अने दर्शन निर्मल छे, अने कोइ काले पण ते ज्ञान दर्शन श्यामताने पामे नहि एवा देवताओ छे. वली परमात्माए जेमने उपशांतमोही कह्याछे, ते पाठ नीचे मुजब:—

अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ? गोयमा ! णो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, णो खीणमोहा.

अर्थ—अनुत्तर विमानवासी हे भगवन्! देव शुं उत्कट वेदमोहनीय छे, अथवा उपशमाव्या छे वेदमोहनीय जेणे एवा छे, अथवा खपाव्या छे वेदमोहनीय जेणे एवा छे? हे गौतम! उत्कट वेदमोहनीय नहि, अनुत्कट वेदमोहनीय तेह छे, ते भणी उपशांतमोहनीय छे. एहने परिचारणाना (मैथुन) अभावथकी, परं सर्वथा उपशांतमोह तेमने न कहीये, केमके उपशमश्रेणी

तेमने नथी ते माटे. क्षपकश्रेणीना अभावथी क्षीणमोह नथी. आ पाठ श्री भगवतीजीना ५ शतकना चोथा उद्देशीने विषे छे.

वर्तमान चोथे सुर हुंत, अगियारमें भावत विहरंत ॥ जीव ठाण इह छे स्यो भेद, श्रमण श्रावकथी अधिक अवेद ॥ ३२ ॥

सम्यक्दृष्टि सर्व देवो चोथा गुणस्थाने वर्ते छे, अने अनुत्तर विमानवासी अनुत्कटवेदी उपशांतमोहवाला होवाथी अगीआरमा गुणस्थानना जेवा भावमां वर्ते छे. जीवस्थानमां तो कांइ भेद नथी, छतां केम भेद ? तो के अनुत्कटवेदी एटले उपशांतमोही आश्रिभेद छे, अने ए अनुत्तर विमानवासी देवो अल्प विकारी होवाथी एटले एमने अवेदी कह्या छे, अने अनंत सुखी कह्या छे. "अप्प वियारा अणंत सुहा" एम संघेणीमां कीधेलुं छे, साधु श्रावकथी अधिक अवेदी छे. आवा उत्तम देवोने हीलवा ते महा मोहनीयकर्म उपार्जन करवानुं छे. ते जीव पाप पोताना माथा उपर लइ लेछे.

कूड वचन नहु आणे हदे, शक्र सुरेसर साचुं वदे ॥ श्रावक स्थूल मृषा टालता, श्रावकथी देवे अधिकता ॥ ३३ ॥

॥ श्रीभगवतीजीना शोलमा शतकना त्रिजा उद्देशामां कह्युं छे. ॥

सक्केणंभंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी, मिच्छावादी ? गोयमा ! सम्मावादी, णो मिच्छावादी । सकेणंभंते ! देविंदे

देवराया, किं सच्चं भासंभासइ, मोसं भासंभासइ, सच्चा मोसं भासंभासइ, असच्चा मोसं भासंभासइ? गोयमा! सच्चंपि भासं भासइ, जाव असच्चामोसंपि भासं भासइ ॥

अर्थ—हे भगवन्! शक्रदेवेन्द्र देवराजा सम्यक्वादी के मिथ्यावादी ? हे गौतम! सम्यक्वादी. मिथ्यावादी नहिज. हे भगवन्! शक्रदेवेंद्र देवराजा शुं साची भाषाने बोले छे के मृषाभाषाने बोले छे के सत्यामृषाभाषाने बोले छे के असत्यामृषाभाषाने बोले छे ? हे गौतम ! साची भाषा पण बोले छे, यावत् असत्यामृषाभाषा बोले. एवा इंद्रमहाराज साचुं बोलवावाला, अने कूड वचन हृदयने विषे पण नहीं आणवावाला, स्थूलमृषावादने टालनहार जे श्रावक तेथी पण अधिक गुणवाला, एवा देवोने " बाल " आदि विशेषणो केम कहेवाय ? नज कहेवाय.

ऊघाडे मुखे हुवे सावद्य, ढांके मुखे भाखे निरवद्य ॥ सुरपति सुमति हियडे धरे, भाषासमिति केम विभिचरे ॥ ३४ ॥

सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासंभासइ, अणवज्जं भासंभासइ ? गोयमा ! सावज्जंपि भासंभासइ, अणवज्जंपि भासंभासइ. जाव सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सावज्जंपि जाव अणवज्जंपि भासंभासइ ? गोयमा ! जाहेणं सक्केदेविंदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जुहित्ताणं भासंभासइ, ताहेणं सक्केदेविंदे देवराया सावज्जं भासंभासइ, जाहेणं सक्केदेविंदे देवराया सुहुम कायं णिज्जूहित्ताणं भासंभासइ, ताहेणं सक्केदेविंदे देवराया अणवज्जं भासंभासइ, सेतेणट्ठेणं जाव भासइ ।

अर्थः—हे भगवन्! शक्रदेवेन्द्र देवराजा शुं सावद्य भाषाने बोले छे, अनवद्य भाषाने बोले छे? हे गौतम! सावद्य भाषाने पण बोले छे, अने अनवद्य भाषाने पण बोले छे. श्या अर्थे हे भगवन्! आप आम कहो छो के सावद्य भाषाने पण बोलेछे अने अनवद्य भाषाने पण बोले छे? हे गौतम! जेवारे शक्रदेवेंद्र देवराजा हस्त वस्त्रादिके करीने मुख अनाच्छादन करी भाषा बोले छे ते वारे शक्रदेवेंद्र देवराजा सावद्य भाषाने बोले छे, तथा ज्यारे शक्रदेवेन्द्र देवराजा हस्त तथा वस्त्रादि मुखे दइ बोले (मुख ढांकी बोले), तिवारे शक्रदेवेंद्र देवराजा जीव संरक्षण करतो थको अनवद्य निरवद्य भाषा बोले. हे भगवन्! देवेंद्र देवराजा शुं भवसिद्धिक, अभवसिद्धिक, सम्यक्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि? हे गौतम! भवसिद्धिक अने सम्यक्दृष्टि छे. आवा सम्यक्दृष्टि देवने "बाल" आदि विशेषणोथी उच्चारण न कराय.

महाशुक्र सुरलोक निवास, दोय सुर आवी जिनवर पास ॥ मनस्युं विनय करी पूछंत, साधु सहूने हित वंछंत ॥ ३५ ॥ प्रभु तुम विजयवंत विहरता, जप तप संयम खप विचरता ॥ सुगुण साधु केता सीझस्यें, भवसायर पारे पहुंचस्यें ॥ ३६ ॥ वलतो जिनवर उत्तर कहे, मनस्युं ते सुर निरतो लहे ॥ गौतम मन आव्यो संदेह, नाणें इम अधिका बे तेह ॥३७॥ संयम पाली सातसें साध, जास्ये मुक्ति थइ निरबाध ॥ इम कहि निर्मळ मन परिणाम, नमि गोयम पहुंता तिण

ठाम ॥ ३७ ॥ बाल बुद्धिने ए खप किसी, को जाउं न्नावे गति तिसी ॥ पंम्कित बाल न हुवे सारिखा, जाण करे जाणी पारिखा ॥ ३ए ॥

॥ श्रीन्नगवतीजीना पंचम शतकना चोथा उद्देशामां कह्युं ठे ॥

जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति २ जावणमंसित्ता एवंवयासी एवंखलु भंते ? अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासग्गाओ विमाणाओ दोदेवा महिड्ढीया जाव पाउब्भूया, तएणं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो मणसाचेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो. कइणं भंते! देवाणुप्पियाणं अंतेवासिसयाइं सिज्झिहिंति जाव अंतंकरेहिंति ? तएणं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ, एवंखलु देवाणुपिया! मम सत्त अंतेवासिसयाइं जाव अंतंकरेहिंति. तएणं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसापुट्ठेणं मणसाचेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामोत्तिकट्टु भगवंगोयमंवंदइ णमंसइ जामेवदिसं पाउब्भुया तामेव दिसिं पडिगया.

अर्थः-जिहां भगवंत गौतम छे तिहां आवे, आवीने यावत् नमस्कार करे, करीने एम कहे. इम निश्चे हे भगवन्! अम्हे महा शुक्रनामा सातमा देवलोकथकी, महास्वर्गनामा विमानथकी, दाय देव महर्द्धिक आव्या, त्यार पछी अम्हे श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी प्रते वांद्या, नमस्कार कीधां, मनेज करी निश्चे आवो प्रश्न पुछ्यो के हे भगवंत केटला देवानुप्रियना अंतेवासी

(शिष्य) ना सैकडा सीज्जस्ये, यावत् सर्व कर्मनो अंत करस्ये ? तेवारे श्रमणभगवंत महावीरदेवनें अम्हे मने करी पूछ्यां थकां अम्हप्रते मनेज करी निश्चयें एहवें रूपें प्रश्ननो उत्तर दीधो. एम निश्चे अहो देवानुप्रिय ! माहरा सातसें शिष्य सीज्जस्यें, यावत् सर्व दुःखनो अंत करस्यें. तिवारे अम्हे श्रमणभगवंत श्रीमहावीरदेवने मने करी पूछ्यां थकां मनेज करीने एहवेरूपे प्रश्ननो उत्तर दीधां थकां श्रमणभगवंत श्री महावीरस्वामी प्रत्ये वांदियें, नमस्कार करीए, पर्युपासना करीयें, इम कर्या पछी भगवन् गौतम प्रते महाशुक्रकल्पवाळा देवो वांदे, नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने जे दिशिना देशथकी प्रगट थया हता ते दिशिना देश प्रते पाछा गया. हवे वाचकवर्गने विचारवुं जोइयें के बालबुद्धिवाला जो देवो होय तो आवी खप एमने क्यांथी होय के आपना साधु मोक्ष केटला जासे ? एवी इच्छा करी भगवान् पासे आवी विनयपूर्वक प्रश्न पूछी उत्तर सांभली खुशी थवुं, अने गणधरदेव साथे संभाषण करवुं. आवा संभाषण करवानी मिथ्यादृष्टिनी भावना क्यांथी होय ! अपितु नज होय. मिथ्यादृष्टिने तो गमे तेवी गतिमां जाओ तेमां एमने शुं, ए तो कदी पूछेज नहि. माटे बाल, अने पंडित ए बे सरखा न हुवे. जाण पुरुष छे ते जाणीने परीक्षा करे छे, पण देवोने आल देता नथी.

जिनवर भक्तें राग सुरधणी, दंत दाढ सकथा जिनतणी ॥ वंदे पूजे भक्ति घणी, पाळे शील तिहां गुण गणी ॥४०॥ ए व्रत चोथुं विणु उच्चार, पाळे निर्मल वारंवार ॥ घणा काल लगे राखे भाव, साधु श्रावकनो पहोंचे आव ॥ ४१ ॥

॥ श्री भगवती सूत्रना दशमा शतकना पांचमा उद्देशाने विषे कह्युं छे ॥

पभूणंभंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचारायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सिंहासणंसि तुडिएणं सद्धिंदिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणेविहरित्तए ? णो इणठ्ठे समठ्ठे. सेकेणठ्ठेणं भंते ! एवंवुच्चइ णो पभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए जावविहरित्तए ? अज्जो ! चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए माणवए चेइए खंभेवइरामएसु गोलवट्ट समुग्गएसु वहूओ जिणसकहाओ सण्णिखित्ताओ चिठ्ठंति, जाओणं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिंचवहूणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ णमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइअं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति, तेसिंपरिहाणे णो पभू सेतेणठ्ठेणं अज्जो ! एवंवुच्चइ णो पभू चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए विहरित्तए ॥

अर्थः–हे भगवन् ! चमर असुरेंद्र असुरकुमारराजा चमरचंचानाम राजधानीने विषे, सुधर्म सभाने विषे, चमर सिंहासनने विषे त्रुटिकवर्ग संघाते देव संबंधी भोगववा योग्य भोगप्रते भोगवतो थको विचरे ? नही. ते शा माटे हे भगवन् ! नही समर्थ चमर असुरेन्द्र असुरराजा चमरचंचा राजधानीने विषे यावत् विचरवाने ? हे आर्य ! चमर असुरेन्द्रनी राजधानी चमरचंचा सुधर्मसभा तेने विषे माणवक नामना चैत्यना स्थंभमां वज्रमय गोळ आकारवाळा डाबलाने विषे घणा जिनना अस्थि, हाड, दाढा प्रमुख घाली राखेला रहे छे, ते चमर असुरेन्द्र असुरकुमार राजाने पूजवा योग्य छे अनेरा पण

घणा असुरकुमार देवता देवीओने पूजवा योग्य छे, स्तुति करी वांदवा योग्य छे, प्रणाम विशेषे करी नमस्करणीय छे, फूलेंकरी पूजवा योग्य छे, वस्त्रादिके करी सत्कार करवा योग्य छे, विशेषे करी सन्मान करवा योग्य छे, कल्याण मंगलीक दैवत चैत्य इत्यादि बुद्धिकरी पर्युपासना करवा योग्य होय छे, तेनी समीपमां मनमांहि वंद्य पूज्य जाणीने हे आर्य ते भोग करवाने समर्थ थता नथी, ते माटे हे आर्य इम कहीये छैये के ते समर्थ नथी, चमर असुरेन्द्र असुरराजा. चमरचंचाराजधानीने विषे, सुधर्म सभाने विषे, चमरसिंहासणने विषे, चउसठ सामानिक सहस्रदेव संघाते, त्रायत्रिंशक इत्यादि. जाव बीजा पण घणा असुरकुमार संबंधि देव संघाते, देवी संघाते, परिवर्यो मैथुन(भोग)करे नही, केवल स्त्रीयोनां शब्दनुं श्रवण अने रुपने देखतो विचरे. "आवा विनय धर्मने पालण करनार देवने बाल केम कहेवाय ?" नज कहेवाय. आवी रीते शीलने पालन करी चोथुं व्रत उच्चारण कर्या विना वारंवार निर्मलपणे पाले छे, साधु श्रावकनो भाव पोते, निर्मल वारंवार घणा काललगी राखे छे, अने तेवाज निर्मल विचारोथी पोतानुं आयुष पूरण करे छे, आवा उत्तम आशयवाला देवोने "मूर्ख" कहेवा तेतो कलंक देवा जेवुं छे, माटे समिति पूर्वक बोलवानो खप करवो, अने देवोने "मूर्ख" एवुं कलंक न देवुं.

इंद्र करी परियरण विमान, नेमि पद्मि रूव सुरत गुण गान ॥ सेवत टाळे आसातना, थाये इम जिन मत जावना ॥ ४२ ॥

अर्थः—इंद्र परियरण माटे विमान करी नेमिना दृष्टांत समान एवुं जे सुरतगुणस्थान ते प्रति सेवताथका इंद्रमहाराज

आसातना टाळेछे, ते आसातना टाळवामां जिनमतनी भावना सिवाय बीजुं कारण छेज नहि. आ उपरथी सम्यक्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिनी श्रद्धा अने वर्त्तणुकमां भेद करावनार कोणछे, ते बुद्धिवाळाए विचार करवो.

जाणे जीवाजीव विचार, समकितधारीनो आचार ॥ विणु पच्चखाण सचित्त परिहार, करिय करे सुरवर आहार ॥ ४३ ॥

वळी इंद्रमहाराज जीव अजीवादि पदार्थनो विचार पण जाणे छे. अने जे जीव अजीवादि पदार्थने जाणे सद्दहे ते समकितधारी कहेवाय छे. वळी पच्चख्खाण विना सचित्तनो परिहार करी सुरवर आहार करे छे, पण सचित्तनो आहार करता नथी. एहवा इंद्रमहाराजने बाल केम कहेवाय.

एकण अवसर सोहम इंद, अवग्रह पूछि थयो सानंद ॥ साधु सहुने अवग्रह दिये, बाळपणुं तसु किम बोलिये ॥ ४४ ॥

॥ श्री भगवतीजीना १६ मा शतकना बीजा उद्देशाने विषे नीचे मुजब कह्युं छे. ॥

कइ विहेणं भंते ! उग्गहे पन्नत्ते ? सक्का ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहाः—देविंदोग्गहे १, रायावग्गहे २, गहवइउग्गहे ३, सागारिउग्गहे ४, साहम्मियउग्गहे ५, जेइमेभंते ! अज्जताए समणाणिग्गंथाविहंरति एएसिणंअहं उग्गहंअणुजाणामीतिकट्टुसमणं भग-

वंमहावीरंवंदइणमंसइ ॥अर्थः॥ एक वखत शक्रदेवेंद्र देवराजा श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामीने समीपे धर्ममते सांभलीने हृदय धरीने हर्ष संतोष पामी श्रमणभगवन्त श्री महावीरस्वामी प्रते वांदे, नमस्कार करे, वांदी नमस्कार करीने इम बोले. केटले भेदे हे भगवन्! अवग्रह कह्यो ? उत्तर. हे शक्र! पंचप्रकारे अवग्रह कह्यो. देवेंद्र अवग्रह १, राजा ते चक्रवर्ति तेहनो अवग्रह षट्खंड भरतादिक्षेत्र २, गृहपति कहिये मंडलीकराजा तेहनो अवग्रह ते गृहपति अवग्रह ३, सागारि कहेता गृहस्थ तेनो अवग्रह ४, साधर्मिक ते साधुनो अवग्रह ५, आवी रीते सांभली इंद्रमहाराज कहे छे, जे हे भगवन् ! वर्तमानकालमां जे श्रमण निग्रंथ विचरे छे तेने हुं अवग्रह आपुछुं. आम कही वंदन नमस्कार करी इंद्रमहाराज स्वर्गमां गया. आथी ध्यानमां लेवानुं जे मुनिओने वस्तिदान देवावाला देवने "बाल" केम कहेवाय, नज कहेवाय.

साहु साहुणी श्रावक श्राविका, श्रीजिनसासन सुप्रभाविका ॥ हित सुख पथ्य तासु चिंतवे, सुरपति गुरुथानक इम हुवे ॥ ४५ ॥

॥ श्री भगवतीजीना ३ शतकना पहेला उद्देशामां कह्युं छे. ॥

सणंकुमारेणं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी परित्तसंसारिए अणंत संसारीए सुलहबोहीए दुल्लहबोहीए आराहए चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सणंकुमारेणं देविंदे देवराया भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिए, एवं सम्ममिच्छ परित्तअणंत सु० आ० च० पसत्थंनेयव्वं. सेकेणट्ठेणंभंते ? गोयमा ! सणंकुमारे देविंदेदेवराया बहूणंसमणाणं

बहुणंसमणीणं बहुणंसावयाणं बहुणंसावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हियसुहनिस्सेसकामए सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारेणं भवसिद्धिए जाव णो अचरिमे.

अर्थः—श्री गौतम पूछे छे. (सणंकुमारेणभंते देविंदेदेवराया) सनत्कुमार हे भगवन् देवेंद्रदेवराजा (किंभवसिद्धिए) शुं भवसिद्धिक भव्य छे, (अभवसिद्धिए) अभवसिद्धिक अभव्य छे. (सम्मदिठ्ठी) सम्यक्दृष्टि (मिच्छादिठ्ठी) मिथ्यादृष्टि छे, (परित्त संसारिय) तुच्छ संसारी छे, (अणंत संसारिय) अनन्त संसारी छे (सुलभबोहिए) सुलभबोधि छे, (दुल्लह-बोहिए) दुर्लभबोधि छे. (आराहए विराहए चरिमे अचरिमे) आराधक छे ज्ञानादिकनो के विराधक छे, छेल्लोज छे भव जेहनो अणपाम्यो रह्यो छे अथवा अचरिम छे ? इति प्रश्न, उत्तर. (गोयमा सणंकुमारेणं देविंदे देवराया भवसिद्धिए) हे गौतम ! सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा भव्य छे (णो अभवसिद्धिए) अभव सिद्धिक नथी (एवं सम्मदिठ्ठि परित्त संसारी) इम सम्यक् दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि नथी. तुच्छ संसारी छे, अनन्त संसारी नहीं (सुलभ बोहिए आराहए) सुलभबोधी छे, दुर्लभबोधी नहीं, आराधक छे, विराधक नहीं (चरिमेपसत्थंणेतव्वं) चरिम छे, अचरिम नहीं, प्रशस्त भला कहेवा, अप्रशस्त छोडवा (सेकेणठ्ठेणंभंते एवंवुच्चइ) ते स्ये प्रयोजनै हे भगवन् ! एम कह्युं ? इति प्रश्न उत्तर. (गोयमा सणंकुमारे देविंदे देवराया) हे गौतम, सनत्कुमार देवेंद्र देवराजा (बहूणंसमणाणं बहूणं समणीणं) घणा श्रमण तपस्वी साधुनो, घणी श्रमणी साध्वीनो (बहूणंसावयाणं बहूणं सावियाणं) घणां श्रावकनो घणी श्राविकानो (हियकामए सुहकामए पत्थकामए) हितसुख, निबन्धन वस्तु तेहनो वांछक (पत्थकामए आणुकंपिए) पथ्य (दुःख त्राण) तेहनो वांछक कृपायेंकरी सहित (निस्सेयसिए) निःश्रेयस

(मोक्ष) ते विषे जाणे (हियसुहणिस्सेसकामए सेतेणठेणं गोयमा सणंकुमारे देविंदे भवसिद्धिए) हित जे सुख (अदुखनो बन्ध) इत्यर्थ ते निःशेष समस्त तेहने कामयते वांछे जे जाणे समस्त दुःख रहित थाओ मुक्तिजाओ इत्यर्थः तेणें प्रयोजने (णंवाक्यालंकारे) हे गौतम, सनत्कुमार देवेंद्र भवसिद्धिक भव्य छे (जाव णो अचरिमे) यावत् चरिम छे पण अचरिम नहीं. आवा सुरपति शुभमतिवाळा श्री जैनशासनना प्रभावक साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओने हित सुख पथ्यकल्याण थाओ. गुरुनी माफक आवी रीते चिंतन करवावाला देवेंद्रने अवर्णवादे करी कदि पण निंदवा नहि.

जप तप संयम गुण भंडार, उत्तम क्षमावंत अणगार ॥ मिथ्यादृष्टि देखी अवगणे, न नमे धर्मकथा नहु सुणे ॥४६॥ सम्यक्दृष्टी सुरवर जोय, मुनिवर जाणी पंजली होय ॥ जाण विमाण थकी उतरी, वंदे त्रण प्रदक्षणा करी ॥ ४७ ॥

॥ श्री भगवतीजीना १४ मा शतकना ३ जा उद्देशाना विषे कह्युं छे. ॥

देवेणंभंते महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झं मज्झेणं वीइवएज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइया वीइवएज्जा अत्थेगइया णो वीइवएज्जा, सेकेणठेणंभंते ! एवंवुचइ, अत्थेगइया वीइवएज्जा अत्थेगइया णो वीइवएज्जा ? गोयमा ! देवा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा मायीमिच्छदिठी उववण्णगाय, अमायी सम्मदिठी उववण्णगाय, तत्थणं जेसे मायी मिच्छदिठी उवव-

णए देवे, सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासइत्ता णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं जाव पज्जुवासेइ, सेणंअणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा, तत्थणं जेसे अमायी सम्मदिठ्ठीउववण्णए देवे, सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासइत्ता वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ, सेणं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं णो वीइवएज्जा सेतेणठ्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव णो वीइवएज्जा, असुरकुमारेणं भंते! महाकाए महासरीरे एवं चेव, एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए.

अर्थः—(देवेणंभंते महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?) देव हे भगवन् ! मोटो अथवा घणो निकाय परिवार छे जेहने ते, तथा मोटो शरीरछे जेहनो तेह साधुने भावितात्माने मध्ये मध्यभागे थइ व्यतिव्रजे जाय?इ० प्र० उत्तर-(गोयमा! अत्थेगइया वीइवएज्जा अत्थेगइया णो वीयीवएज्जा) हे गौतम! केटलाएक जाय, केटलाएक न जाय. (सेकेणठ्ठेणं भंते एवं वुच्चइ) ते स्येअर्थे हे भगवन् ! इम कहिये (अत्थेगइया वीयीवएज्जा अत्थेगइया णो वीयीवएज्जा)केटलाएक व्यतिव्रजे जाय, केटलाएक न जाय इ० प्र० उत्तर—(गोयमा! देवादुविहे पं० मायामिच्छादिठ्ठीउववण्णगाय अमायीसम्मदिठ्ठी उववण्णगाय) हे गौतम ! देव बे प्रकारना कह्या. मायी मिथ्यादृष्टि उपपन्नका, अमायी सम्यक्‌दृष्टि उपपन्नका (तत्थणं जेसे मायी मिच्छदिठ्ठी उववण्णए देवे) तिहां जे मायी मिथ्यादृष्टी उपपन्नकदेव (सेणंअणगारं भावियप्पाणं पासइ पासइत्ता णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेयी) तेह साधु भावितात्माप्रते देखे, देखीने वांदे नहीं, नमस्कार करे नहीं, सत्कार न करे, सन्मान न करे (णो कल्लाणं मंगलं देवयं जाव पज्जुवासेइ) नहीं कल्याण मंगलीक देवत यावत् पर्युपासना सेवा न करे (सेणं

अणगारस्स भावियप्पणो मज्जंमज्जेणं वीयीवएज्जा) तेह अणगारने भावितात्माने मध्ये मध्यभागे व्यतिव्रजे जाय (तत्थणं जेसे अमायी सम्मदिठ्ठी उववण्णए देवे) तिहां जे अमायी सम्यक्दृष्टि उपपन्नकदेव (सेणं अणगारं भावियप्पाणं पासइ पासइत्ता वंदइ णमंसइ जाव पज्जुवासइ) तेह अणगार भावितात्मा प्रते देखे, देखीने वांदे, नमस्कार करे, यावत् पर्युपासना सेवा करे (सेणं अणगारंस्स भावियप्पणो मज्जंमज्जेणं णो वीयीवएज्जा) तेह अणगारने भावितात्माने मध्ये मध्येंकरी व्यतिव्रजे नहीं. (सेतेणंट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव णो वीयीवएज्जा) ते तेणे अर्थे हे गौतम ! इम कहिए यावत् व्यतिव्रजे नहीं, जाय नहीं (असुरकुमारेणं भंते ! महाकाए महासरीरे एवं चेव) असुरकुमार हे भगवन्! महाकाय परिवारवन्त, मोटा शरीरवन्त इत्यादि इमहीज (एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिए) इम देवदंडक कहेवो, नारकपृथिवीने ए कार्यनो असम्भव छे ते माटे न कहेवा, यावत् वैमानिकताई कहेवा. जप तप संयमने सेवन करनार अने गुणना भंडार उत्तम क्षमावान् एवा अणगार तेने देखी मिथ्यादृष्टि अवगणना करे, नमस्कार न करे, तेमनी कहेली धर्मकथा ते मिथ्यातीन सांभले, एवा मिथ्यातीदेवो होय छे. अने सम्यक्दृष्टिदेव, देवेंद्र उत्तम गुणना भंडार अने जप तप संयमने सेवन करनार मुनिओने जाणी अथवा तेवा मुनिओने देखी अने तेज वखते अंजली करे छे, अने पछी पोतानो यान जे विमान तेथकी उतरी अने त्रण प्रदक्षणा करी मुनीओने वंदना करे छे. एवा सम्यक्त्वधारीदेवोने मिथ्यात्वीनी साथे सरखामणी करवी ते भूलभरेल छे. तेवी सरखामणी कदी थायज नहीं.

घणा भाव इम पंचम अंग, अन्नउथिय सुर सत्तम अंग ॥ वांके समे कहणे आंतरो, जुवा खल गुल इक कां करो ॥ ४७ ॥

आवी रीतना सम्यक्दृष्टिदेवोना घणा जुदा जुदा भाव भगवतीसूत्रमां कह्या छे, अने अन्य जे मिथ्यादृष्टि देवो तेना भाव उपासकदशांगसूत्रमां कह्या छे. माटे वक्रताथी बोलवुं अने शरलताथी बोलवुं तेमां घणो आंतरो छे, तेम खोल अने गोल कोइ वर्णानुप्राशथी सरखामणी करी साचुं माने तो ते साचुं होय? नज होय. तेम एक देवना नामथी सम्यक्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टि बंने सरखा गणे तेनी सत्य परुपणा गणाय? नज गणाय ॥ ४८ ॥

मिथ्यादृष्टी समकित धार, अंतर जाणी करो विचार ॥ सम्यक्दृष्टी पंडित भणो, मिथ्यादृष्टि बाल इम गणो ॥ ४९ ॥

माटे मिथ्यादृष्टि देव बालना भंगमां छे, अने सम्यक्दृष्टिदेव पंडितभंगमां देवाधिदेव कह्या छे. माटे हे भवभीरु पुरुषो उत्सूत्रना फळ कडुक जाणी जे विचार करशे ते सम्यक्वादी; अने नहि विचार करे ते मिथ्यावादी ॥ ४९ ॥

जिण अरिहंत अने केवली, उहिनाण भाखे ते वली ॥ ठाणंगे इण गुणि देवता, अवगुण भाखी खासे खता ॥ ५० ॥

वली तेनी व्याख्या तमो पण ठाणांगसूत्रना त्रीजा ठाणामां जुओछो, वांचोछो, परुपोछो, छतां जो नहि मानो तो खता खाशो. कारण जे अछती परुपणा करे ते समान् पाप बीजुं कोइ नथी ॥ ५० ॥

तओजिणा पण्णत्ता तंजहा ओहिनाणजिणे मणपज्जवनाणजिणे केवलनाणजिणे तओकेवली पण्णत्ता तंजहा ओहिनाण केवलीमणपज्जवनाणकेवली केवलनाणकेवली तओअरहापन्नत्ता तंजहा ओहिनाणअरहा,मणपज्जवनाणअरहा, केवलनाणअरहा, आथी एम न समजवुं के नारकीमां तथा तिर्यंचमांपण अवधिज्ञान तो होय माटे थयुं शुं ? मुनिराज काल करी नरकतिर्यंचमां जता नथी, मात्र देवतामांज जायछे. माटे आ पाठ बहुज बारिकीथी विचारजो.

पूरव भव तप संयम कर्या, सुरवरने भव जे अवतर्या ॥ तसु अवर्ण बोले गहगही, बोधि-दुर्लभ करे ते सही ॥ ५१ ॥

॥ श्री ठाणांग सूत्रना पांचमा ठाणा मध्ये कह्युं छे के ॥

पंचहिंठाणहिं, जीवादुल्लभबोहि यत्ताए कम्मंपकरेंति तंजहा, अरहंताणमवन्नंवदमाणे, अरहंताणपण्णत्तस्स धम्मस्सअ-वन्नंवदमाणे, आयरिय ऊवझयाणमवन्नंवदमाणे, चाऊवन्नसंघस्सअवन्नंवदमाणे, विविक्कतववंभचेराणं देवाणंअवन्नंवदमाणे.

अर्थ–पांच थानके जीव दुर्लभबोधिपणानो कर्म बांधे, जीनधर्मनी प्राप्ति दोहिली होय ते कहेछे ॥ १ ॥ अरिहंतना

अवर्णवाद बोलतो, जेमके—अरिहंत थया तो समोसरणमां शुं बेसवुं, अरिहंतना परुपेल जे श्रुतधर्म द्वादशांगी कहेवाय छे, ते प्राकृत भाषामां रचायेलुं छे, तेथी कोइ निपुण समर्थ विद्वानोनो ए लेख गणाय नहि; जो परिपूर्ण विद्वान होय तो संस्कृतमां केम लखे नहि? एहवी रीते अवर्णवाद बोलतो ॥ २ ॥ तथा अरिहंतना कहेल चारित्रधर्म तेनो अवर्णवाद बोलतो जेमकेः—चारित्र ते शा कामनुं, दान देवुं तेज भलुं छे, कारण के गृहस्थाश्रम विना दान दइ शकातुं नथी, तेथी गृहस्थमां रहेवुं तेज सारुं छे, इत्यादिक अवर्णवाद बोलतो ॥ ३ ॥ तथा आचार्य, उपाध्याय ए बालक छे, बुड्ढा छे, इत्यादिक अवर्णवाद बोलतो ॥ ४ ॥ चतुर्विधसंघनो अवर्णवाद बोलतो, जेमकेः—ए संघ शेनो? पशुनो समुदाय ए सरखो छे, इत्यादि अवर्णवाद बोलतो ॥ ५ ॥ विपक एटले प्रकर्षने पामेलां जे तप अने ब्रह्मचर्य भवान्तरने विषे जेओना, ते हेतुवाला देवायुष्कादि कर्मछे जेओना, एवा देवताओना अवर्णवाद बोलतो, जेमकेः—देवो छेज नहि, देवता होय तो क्यारेक तो देखाय, माटे देवताओ छेज नहि. अथवा कामथी छाकटा बनी गयेला अथवा मरेला मडदा जेम उघाडी आंखोवाला अने शासननी खबर नहि लेवावाला; एवी रीते देवताना अवर्णवाद बोलतो—परिपूर्ण पाछला भवना तप, ब्रह्मचर्य पाल्याथी देवतापणुं पाम्या ते देवताना अवर्णवाद बोलतोथको जीव दुर्लभबोधिपणाने उपार्जन करे, तेथी जीवने जैनधर्म श्रद्धापुर्वक उदय आववुं मुश्केल थई जाय छे ॥ ५१ ॥

साचा सूत्र अर्थ पन्नवे, भूलो गुरु वली मारग ठवे ॥ इम गुरुथी सुर [1]उरण होय, तसु [2]जां-मलि कहिये जग कोय ॥ ५१ ॥

साचा एवां जे सूत्र अने तेनो अर्थ तेने पन्नवे जणावे छे. वली भूला पडेला गुरुमहाराजने मार्गे चडावे, एवी रीते गुरुना उपकारनो बदलो वाळी शके. आवी रीते उपकार करनार देवोने सामान्य पंक्तिमां केम गणाय, नज गणाय, मतलब के सम्यक् दृष्टिदेव अने मिथ्यादृष्टिदेवमां महान् अंतर छे.

॥ श्री ठाणांग सूत्रना ३ जा ठाणामां कह्युं छे के ॥

केइ तहारूवस्स समणस्सवा माहणस्सवा अंतियमेगमवि आरियंधम्मं सोच्चा निसम्म कालमासे कालंकिच्चा अन्नयरेसुदेवलोएसु देवत्ताए उववन्ने तएणं सेदेवे तंधम्मायरियं दुभिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खदेसं साहरेज्जा कंताराओ वा णिक्खंतारंकरेज्जा दीहकालिएणं वा रोआतंकेण अभिभूयं विमोइज्जा तेणावि तस्सधम्मायरियस्स दुप्पडियारं भवइ अहेणंसे तंधम्मायरियं केवलीपण्णत्ताओधम्माओ भट्ठंसमाणं भुज्जोवि केवलिपण्णत्तेधम्मे आघवइत्ता जाव ठावइत्ता भवइ तेणामेवतस्सधम्मायारियस्स सुप्पडियारं भवइ.

---

१ गुरुथी देव रणरहीत थाय, २ सरखो.

अर्थः-कोइक पुरुष तथारूप श्रमणसाधुमाहणने पासे एक आर्य (निष्पाप) धर्मनां शुभ वचनप्रति सांभळीने सम्यक्प्रकारे धर्म करी आउखुं पूर्ण करी (काल करीने) अन्यतर कोइएक देवलोकने विषे देवतापणे उपजे, तिवारे ते देवता ते धर्माचार्यने दुर्भिक्ष दोहली भिक्षा छे जिहां जे देशमां एटले दुकालमांथी सुभिक्ष जिहां सुकाल होय ते देशमां आणी मूके, अथवा अटवीमां पडया होय तिहांथी वास्तिमां आणी मूके, अथवा घणा कालनो रोग होय, रोगनी पीडाथी पराभव्यो होय, ते रोगथी मूकावे, देवशक्तिथी एटले प्रकारे पण ते धर्माचार्यने धर्मना आपनारने दुःप्रतिकार ओसिंगल न थाय, तो किम थाय ते कहे छे,—जो ते धर्माचार्य केवलिभाषित धर्मथी पडिया प्रति धर्मथी भ्रष्ट थयो तो ते प्रति फरीने केवलीभाषित धर्म ते आगल कही समजावी पाछो धर्ममां थापे. आषाढाचार्यने जेम चेले वाल्यो. देवता थइने ते प्रकारे ते धर्माचार्यने ओसिंगल थाय, धर्मथी संसार तरिये अन्यथा वदलो वली शके नहीं.

विषय थकी विरते सुर सर्वे, थइ यति चिंते पूरव भवें ॥ आयरिआदिक सुगुरु सुसाध, जसु पसाय ए में फल लाध ॥५३॥ ते भदंत गुरुआ गणधार, जप तप संयम जग आधार ॥ वंदु विनय करी तेहनो, हुं हुंतो सेवक जेहनो ॥ ५४ ॥ इम जाणी सुर आवे इहां, ए उत्तम गुण लाभे किहां ॥ इम बोल्यो छे श्री ठाणंग, पूछी जाणो सुगुरु सुसंग ॥ ५५ ॥

विषय विकारथकी सर्व देवो निवृत्ति पामीने अने यति थइने एटले इंद्रिओनो संयम करीने देवलोकने विषे देवो विचार करे के, मारा पूर्वभवने विषे मारा आचार्य भगवानादि सुगुरु सुसाधु–के जेना पसायथी आवी समृद्धि देवपणानी मने मली, तो ते भगवान् महोटा गुणना भंडार अने जपतप संजमना आधार एटले भाजनरूप अने मारा परम उपगारी हता, अने हुं पूर्व भवमां जेहेनो सेवक हतो तेओ साहेवने हुं विनय करी वंदन करुं. आवी मनमां भावना करी अने उपकारी जाणी इहां मनुष्यलोकने विषे जिहां पोताना आचार्यादिक होय तिहां आवे, आवीने भक्तिपूर्वक वंदन नमस्कार करे. आवो उत्तम विनयगुण मिथ्यादृष्टिदेवोमां किहांथी मले. एम श्री सूत्रकारे ठाणांगसूत्रमां फरमावेल छे तेनो रहस्य जाणवानी इच्छा होय तो सुगुरुमहाराजनो सारी रीते संग करी तेमने पूछी अने रहस्य जाणवुं. एम ग्रंथकार आचार्य भगवान् सूचन करे छे.

॥ श्री ठाणांग सूत्रनां त्रिजा ठाणा मध्ये कह्युं छे के ॥

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्सणमेवं भवइ अत्थिणं ममंमाणुस्सए भवे आयरिएइवा उवज्झाएइवा पवत्तेइवा थेरेइवा गणीइवा गणहरेइवा गणावच्छेएइवा जेसिं पभावेणं मएइमा एयारूवा दिव्वा देवड्ढी दिव्वादेवजुइ दिव्वेदेवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए तंगच्छामिणं तंभगवं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणंमंगलंदेवयंचेइयं पज्जुवासेमि.

अर्थः–देवलोकमां नवो उपनो देवता दिव्यकामभोगमां मूर्छित नथी, अनित्य जाणी अगृद्ध गढित नथी, अति आसक्त नथी; तेहनुं एहवुं मन होय छे जे माहरे मनुष्यभवना धर्मनां उपदेशक आचार्य, उपाध्याय धर्मना प्रवर्त्तनार प्रवर्त्तक, स्थविर गणीगच्छना स्वामी गणधर भगवंतना शिष्य विशेष गणावच्छेद ते गच्छनुं अंश केटलोएक समुदाय लेइ विचरे, जेहना प्रभावथी महारे आ प्रत्यक्ष एहवो रूप देवतानी रिद्धि, दिव्यकांति, दिव्यदेवप्रभाव में सम्यक्प्रभावें पाम्यो तेहथी हुं जाउं ते उपकारी भगवंतने वांदुं, नमस्कार करूं, सत्कार आदर देउं, वस्त्रादिक देइ सन्मान देउं कल्याण, मंगल, दैवत देवचैत्य अरिहंतनी प्रतिमानें जिम सेविए तिम सेवुं. उचित प्रतिपत्तिवडे अने वली ते देवताने एहवी भावना थाय छे के (एसणं माणुसए भवे णाणीइवा तवस्सीइवा अइदुक्कर दुकर कारगे तं गच्छामिणं भगवंतं वंदामि णमंसामि जावपज्जुवासामि) देवताना मनमां एवुं आवे जे एह मनुष्यभवमां मोटा नाणी छे, अथवा तपस्वी छे, अति छेली करणीनो करनार छे, सिंहगुफा सर्पविले काउसग करे छे, दुःकर ब्रह्मचर्य पाले छे, ते माटे हुं जाउं, ते भगवानने वांदुं, नमस्कार करुं यावत् सेवा भक्ति करुं; आवी उत्तम भावनावालां देवोने बाल शी रीते कहेवाय ? नज कहेवाय.

वलि सुरवर टाळी संताप, भावन भावे करे परिताप ॥ अहह दुल्लह माणसभव लही, गुरुयोगे तप संयम ग्रही ॥ ५६ ॥ आलसि गुरु साहम्मी तणो, वेयावच्च न कीधो घणो ॥ आगम पूरो न सक्यो भणी, चरण सीम नहुं पाली घणी ॥ ५७ ॥ ए संयोग किहां पावस्युं, सुद्ध

ध्यान हियके ध्यावस्युं ॥ परम पदे वासो ठावसुं, गर्भवास पुणरवि नाविसुं ॥ ५७ ॥

वली उत्तम देवो संतापने टाली करी सारी भावना भावे अने मनमां खेद करे के, अहोहो! दश दृष्टांते दुर्लभ एवो मनुष्यनो भव पामी पूर्वभवमां गुरुमहाराजना योगे तप संयमने में ग्रहणकरी प्रमाद छोड्यो नहि, तप संयम रुडी रीते पाल्या नहीं, अने आलसथी गुरु तथा साधर्मीनो घणो वैयावच्च करवो जोइये ते में कर्यो नहीं. अने प्रमादना योगो आगम एटले सिद्धांत तेने पण हुं पूरो जाणी शक्यो नहीं. अने वली चारित्रनी मर्यादा पण उत्तम रीते लांबा वखत सुधी रुडीरीते पालण करी शक्यो नहीं. हवे आवो संयोग फरी हुं कीहां पामीश, अने क्यारे शुद्ध ध्यान हृदयमां ध्यावीश अने परमपद एटले मोक्षपद तेमां निवास करीश, अने गर्भावासमां फरी पाछो नहीं आवीश. एवी उत्तम भावना देवो भावे छे, ए हकीकत सूत्रमां कहेली छे ते नीचे मुजब.

॥ श्री ठाणांग सूत्रना त्रिजा ठाणा मध्ये कह्युं छे के ॥

तिहिंठाणेहिंदेवेपरितप्पेज्ञा तंजहा अहोणं मए संतेवले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरक्कमे खेमंसि सुभिख्खंसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं णो वहुएसुएअहीए ॥१॥ अहोणंमए इहलोग पडिवद्धेणं परलोग परंमुहेणं विसयतिसिएणं णोदीहेसामन्नपरियाए अणुपालिए ॥ २ ॥ अहोणंमए इड्ढिरससायगुरुएणं भोगासंसगिद्धेगं णोविसुद्धेचरित्ते फासिए ॥ ३ ॥

अर्थः—त्रण थानके देवता पश्चात्ताप करे ते कहे छे. अहो इति खेदे माहरे शरीर संबंधी बलछते, जीवाश्रित वीर्यछते, पुरुषाकार अभिमान तेथी उपनो जे पराक्रम ते छते, क्षेम उपद्रवरहितपणें सुकालछतें, आचार्य, उपाध्याय भणावनारनी सामग्रीछते, शरीर नीरोगछते, हुं मनुष्यनां भवमां घणुं श्रुत भण्यो नहीं एम पश्चाताप करे. अहो में इहलोक विषयादिकनें प्रतिबंधे अतृप्तपणें परलोकथी पराङ्मुख उपरांठे थके विषयतृष्णायें करी घणे काल लगि चारित्रनो पर्याय न पाल्यो, मोडी दीक्षा लीधी. अहो वली में रिद्धिने, रसनें, सातनें गारवें करी भोगनी आशामां गृध्रपणें शुद्ध चारित्र फरस्युं नहीं, ए तीन थानके पश्चाताप करें. आवी रीते भावना भाववावाला देवने मिथ्यात्वी साथे सरखा केम करी शकाय ? नज करी शकाय.

एवा सुर किम कहीये बाल, जिनवर आणतणा प्रतिपाल ॥ सुरगति लाभ मनुजने कह्यो, उत्तर ज्यण सत्तम सद्दह्यो ॥ ५९ ॥

उपरनी गाथाओमां कहेली भावनाने भावनारा, एवा देवोने केम बाल कहेवाय! जे देवो श्री जिनेश्वरदेवनी आज्ञाने पालण करे छे, ते कदी बाल कहेवाय नहीं. अने वळी श्री उत्तराध्ययनना सातमा अध्ययनमां सुरनी गतिनो लाभ मनुष्यने कह्यो छे, अने आचार्य भगवान् कहे छे के अमे पग तेमज सद्दहीए छीए.

तथाचतत्पाठः—धीरस्सपस्सधीरत्तं, सव्वधम्माणुवत्तिणो चिच्चाअधम्मं धम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥ २९ ॥

बालपणा थवाने काज, तप संयम साधी जिनराज ॥ साधु अने श्रावक खप करे, बाल कहे ते स्युं अनुसरे ॥ ६० ॥

भावार्थः—इहां मनुष्यभवमां देवाधिदेवे कीधेला तप संयम तेने साधी देवलोकने विषे देवपणे उत्पन्न थया जे देव, ते शुं बाल थवाने वास्ते जिनराजना कहेला संयम साध्या ? अने तप संयमना मभावथी ते शुं बाल थया ? कारणके तमारुं कहेवुं एम छे जे देव थाय ते बाल, एम कहेवुं तमारे व्याजबी नथी.

कारण के जिनेश्वर भगवानना साधु अने श्रावक जे तपादि करे छे ते शुं बाल थवाने वास्ते तपादिनो खप करे छे ? कदीं नहीं. एम कहेवुं तदन विरुद्धज छे.

कारण के देवताओ जिनेश्वरने पण १०८ स्तुतिपूर्वक मीठी वाणीए करीने कहे छे के, हे जगन्नाथ! आप जीवोना हित वास्ते तीर्थ मवर्तावो, अने वली देवताओ साधु तथा श्रावकने धर्ममां पण थिर करे छे, देवे थिर करेला ते धर्मनेविषे थिर थाय छे. तेवा देवोने शुं समजीने बाल कहेता हशे, अथवा तेवा बाल देवोए कीधेल मार्गमां साधु अने श्रावक केम मवर्तता हशे ? माटे सर्व देवो बाल नथी, एमां पण तारतम्य छे.

आवस्यक सुर आसातना, टालि श्रवरण वदे तेहना ॥ करे जे पुस्तक वेंगण जिस्युं, कहो तेहने कहिये किस्युं ॥ ६१ ॥

आवश्यक एटले श्रमण सूत्र तेमां "देवाणं आसायणाए" ए पाठ भणी मिच्छामिदुःक्कडं दे छे ने अवर्णवाद बोलता जाय छे, तेथी तेओ पुराणीना वेंगणनो न्याय (पोथीमांना रींगणा जेवो) करे छे तेहने शुं कही शकीए. हे जिनराज।

जीवाभिगमे नाम उवंग, जोइ लेज्यो मनने रंग ॥ अणुअ तुल्ल गुरुआ गुरु कह्या, गिरुआ गुरुने वचने लह्या ॥ ६२ ॥ बंभचेर तप संयम जिस्या, पोते जेहने ते ठे तिस्या ॥ रिद्धि गणो तेहने अनुसार, सुरवर सुगुण ते एम विचार ॥ ६३ ॥

श्री ठाणंगसूत्रनो उपांग "जीवाभिगमसूत्र" ने विषे कह्युं छे के, देव त्रण प्रकारना छे. सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यक्मिथ्यादृष्टि, तेमां जेणे पूर्वभवमां तप, ब्रह्मचर्य, संयम, अणु "अल्प" तुल्य "मध्यम" गुरु "मोटा" जेवा जेवा कर्या छे, तेवा तेवा स्वामीपणाने पामेला छे, आनो विशेष खुलासो उक्त सूत्रमांथी जाणी लेवो. अने ऋद्धि पण पूर्वकृत तप ब्रह्मचर्य संयमने अनुसार तेवी तेवी पामेला छे. इहां विचारवानुं छे जे सम्यक्दृष्टिदेव छे ते उत्तम अने सारा गुणवाला छे तेओने मिथ्यादृष्टिनी साथे सरखा न करवा.

ठाणांगे त्रण्णे व्यवसाय, सुरवर जइ सभा व्यवसाय ॥ तिहां अहे धम्मिय व्यवसाय, बीजे त्रीय उवंग कहाय ॥ ६४ ॥

॥ श्री ठाणांग सूत्रना त्रीजा ठाणामां आम कह्युं छे. ॥

तिविहे ववसायेपन्नत्ते तंजहा–धम्मिए ववसाये, अधम्मिए ववसाये, धम्मियाधम्मिएववसाये ३. अर्थः–हे भगवन्! व्यवसाय केटला प्रकारे? उत्तर हे आर्य त्रण प्रकारे, व्यवसाय एटले शुं? जवाब. पुरुषार्थसिद्धि माटे जे अनुष्ठान कराय ते. तेमां प्रथम धार्मिक व्यवसाय ते मुख्य मुख्य मुनिराजनो होय. बीजो अधर्मिक व्यवसाय ते संसारीजीव जेणे धर्मनुं स्वरूप जाण्युं नथी तेनो होय, त्रीजो धार्मिकाधर्मिकव्यवसाय ते देशसंयम पालनार सम्यक्दृष्टि श्रावकवर्गनो होय, उक्त व्यवसायना विचार माटे सुरवर सम्यक्दृष्टि सभामां जइनें व्यवसायमध्ये धार्मिक व्यवसायप्रति ग्रहें, विचारे. तेनो खुलासो बीजुं उपांग जे रायपसेणी तथा त्रीजुं जीवाभिगम तेमां पण घणी व्याख्या छे. तथाच तत्सूत्रम्–जेणेव ववसाय सभा तेणेव उवागच्छइ ववसायं सभं अणुपयाहिणी करेमाणे पुरेत्थमिल्लेणं दारेणं अणुपविसंति जेणेव सिहासणे जावसण्णिसणे तएणं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणिय परिसोववन्नगा देवा पोत्थरयणं उवणेंति तएणं से सूरियाभेदेवे पोत्थयरयणं गिण्हइ पोत्थयरयणं मुयइ पोत्थयरयणं विहाडेइ पोत्थयरयणं वायेति वाएता धम्मियंववसायंगेण्हइ पोत्थयरयणं पडिणिक्खमति.

अर्थः–जिहां व्यवसाय सभा (पुस्तकसभा) तिहां आवे, व्यवसाय सभा प्रत्ये प्रदक्षिणा करतो थको पूर्वने द्वार प्रते पेसोने जिहां सिंहासन तिहां पूर्व साहामो थइ बेसे, तिवार पछी तेहने सूर्याभदेवना सामानिक अभ्यंतर परिषद्ना देवता पुस्तकरत्न आणी सुंपे, तिवार पछी तेह सूर्याभदेव पुस्तकरत्न ग्रहे पुस्तकरत्ननो डाभलो उघाडे, उघाडीने पुस्तकरत्न वांचे, वांची-

ने धर्म सबंधि व्यापार प्रते ग्रहे, पुस्तकरत्न ठामे मूंके इत्यादिक रायपसेणी सूत्रमां कहेल विचारवुं, तेमज जीवाभिगम सूत्रमां कहेल छे ते नीचें मुजब.

जेणेव ववसाय सभा तेणेव उवागच्छति ते-त्ता ववसायसभं अणुप्पदाहिणं करेमाणे करेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति अत्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति ते-त्ता सीहासण वरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे तएणं तस्स विजयस्स देवस्स अभियोगियादेवा पोत्थयरयणं उवणेंति तएणं से विजए देवे पोत्थयरयणं गिण्हइ पो-त्ता पोत्थयरयणं मुयति पो-त्ता पोत्थयरयणं विहाडेति पो-त्ता पोत्थयरयणं वाएइ पो-त्ता धम्मियं ववसोयंपि गेण्हेति.

अर्थः—जिहां निश्चे व्यवसायनी सभा छे तिहां आवे, आवीने व्यवसायसभा प्रत्ये प्रदक्षणा करतो थको पूर्व दिशाने बारणे प्रवेश करे. प्रवेश करीने जिहां सिंहासन छे तिहां आवे, तिहां आवीने सिंहासनने विषे प्रधान एवुं, ते सिंहासन पाम्ये थके पूर्वाभिमुखे पूर्वदिशाने सामो बेसे, तेवारे ते विजयदेवना आभियोगिक नामे देवता पुस्तकरत्नने आणि आगळ मुके तेवारे ते विजयदेवता पुस्तकरत्नने ग्रहण करे, ग्रहण करिने मुके, मुकीने पुस्तकरत्नने उघाडे, उघाडिने पुस्तकरत्नने वांचे, वाचीने धार्मिक एटले धर्म सबंधी व्यवसाय धर्मनी करणी तेहना अर्थ हइयामां धारे. माटे देवो धर्म व्यवसाय करनारा होवाथी श्रुतधर्मी कहेला छे ते आगली गाथामां बतावे छे.

इम श्रुतधर्में ते धम्मीया, चारित्र धर्म अधम्मेठिया॥ ते पण जाणे वाववहार, निश्चे वलीय विशेष विचार ॥ ६५ ॥

उपर कहेल धर्म व्यवसायने ग्रहण करनार होवाथी ते देवो श्रुतधर्मवाला होवाथी धम्मिआ कहेल छे. अने ते देवता-ओ चारित्र धर्मवाला न होवाथी चारित्रधर्मनी अपेक्षाए अधम्मेठिया कहेवाय छे. ठाणांगजीना बीजा ठाणामां आ प्रमाणे छे,-" दुविहे धम्मे पन्नत्ते-सुयधम्मेय, चरित्त धम्मेय " अर्थः-धर्म बे प्रकारनो कहेल छे. श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म. वधा सम्यक्दृष्टि देवोमां श्रुतधर्म गुण रहेल छे, अने चारित्र धर्मनी अपेक्षाए अधर्मस्थितछे तेनो पाठ भगवतीना १७मा शतकना बीजा उदेशाने विषे आ प्रमाणेछे. सेणूणंभंते ! संजयाविरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे धम्मेठीए-असंजय अविरय अपडि-हय अपच्चख्खाय पावकम्मे अधम्मेठिए संजयासंजए धम्मा धम्मोठिए ? हंता गोयमा ! संजयाविरय जाव धम्मा धम्मोठिए.

अर्थः-हे भगवन् संजत अने विरतिवाळा वळी पापकर्मने जेणे प्रतिहत कर्या एहवा मुनिराज छे ते धम्मेठिआ कहीये एटले सर्वविरति धर्ममां स्थित कहेवाय ? अने असंयत अने अविरति वळी पापकर्मने जेणे रोक्या नथी तथा प्रतिहत कर्या नथी ते अधम्मठिया कहेवाय एटले अधर्ममां स्थित छे एम कहेवाय ? अने संजतासंजत एटले श्रावक देशविरति मार्ग पालनार ते धम्माधम्मेठिया कहेवाय-धर्माधर्मस्थित भेदथी बोलाय ? हंता गोयमा! तमे जेम कहोछो ते तेमज छे. तथा उपर कहेल सूत्र तेना पछीनो पाठ पण उपयोगी होवाथी लखेल छे. एएसिणं भंते ! धम्मंसिवा अधम्मंसिवा धम्माधम्मंसिवा च-

क्रिया केइ आसइत्तएवा जावतुयट्टितएवा ? णोइणट्ठे समट्ठे, सेकेणट्ठेणं खाइअट्ठेणं भंते! वुच्चइ जाव धम्माधम्मोठ्ठिए ? गोयमा ! संजय विरय जाव पावकम्मे धम्मेठ्ठिए धम्मंचेव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, असंजय पावकम्मे अधम्मोठ्ठिए अधम्मंचेव उवसंपज्जिताणं विहरइ, संजयासंजए धम्माधम्मोठ्ठिए धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, से तेणठ्ठेणं गोयमा ! जावठ्ठिए.

हे भगवन् आपश्रीए प्ररुपेला धर्मने विषे, एटले संयमने विषे तथा अधर्मने विषे एटले असंयमने विषे तथा धर्माधर्मने विषे एटले देशविरति धर्मने विषे वेसवाने तथा पासु फेरववाने कोइ समर्थ छे ? कोइ समर्थ नथी. तेनुं शुं कारण छे के ते समर्थ नथी ? उत्तर. हे गौतम ! सम्यक् जतनावाळा एटले चालवामां, वेसवामां, उभा रहेवामां, शयन करवामां, भोजन करवामां, बोलवामां, तथा पापथकी विरमेला मातिहत कर्यां छे पापने जेणे एहवा धम्मेठ्ठिया छे ते धर्मनेज अंगीकार करी विचरे छे; अने असंजत, अविरत, पापकर्मी अधर्मस्थित छे ते अधर्ममांज वर्तनाराज होय छे, अने संजतासंजत धम्माधम्मे स्थित छे, ते देशविरति धर्माधर्मने आदरी अंगीकार करी विचरे छे, माटे हे गौतम एम कहिये छीये.

कोइक एम कहेछे जे श्रावकधर्म ते पण धर्मपक्षमांज छे एटले जेम मुनिराजनो धर्मपक्ष छे तेज प्रमाणे श्रावक देशविरतिनो धर्म पण छे. आ उपर बुद्धिमान समीक्षक पुरुषोए विचार करवो जोइये के धर्मपक्ष पालनारा तो अणगार पंचमहाव्रत, दशविध यतिधर्म, आठ प्रवचनमाताना परिपूर्ण पालनारा, अढार हजार शीलांगरथना धोरी ते अणगार धर्ममां निरारंभ निःपरिग्रहपणुं तेम प्रवचनना सारभूत छकायजीवनुं पालन छे, जेमां तेथी भिन्न आगार एटले गृहस्थ देशविरतिनो

धर्म छे, ते मिश्रपक्ष मुनिराजनी अपेक्षाए छे, ते आगारधर्म कही वर्णन कर्यो, तो तेने एकांत धर्मपक्ष श्रावकधर्मनी अपेक्षाये कहेवाय, पण मुनिराजनी अपेक्षाये तो नज कहेवाय. एकांत सम्यक्मार्ग कहेवाय, पण जो एकांत धर्मपक्षमांज गणातो होय तो साधु अने श्रावकना वच्चे जे अंतर राखवामां आवेछे के मेरु अने सरसव तेनो विचार करवो समीक्षकने सोंपीये छीए.

मात्र जे कोइ मिश्रपक्ष उडावाने माटेज डोळ करेतो ते ज्ञानाजीर्ण कहेवाय. अने वळी सूत्र पांचांगमां जे धम्मिया, अधम्मिया, नोधम्मिया, तथा पच्चख्खाणी, अपच्चख्खाणी, पच्चख्खाणापच्चख्खाणी, संजया, असंजया, संजयासंजया, बाळ, पंडित, बाळपंडित, धम्मेट्ठिया, अधम्मेट्ठिया, धम्माधम्मेट्ठिया, विरति, अविरति, विरताविरति, धर्मपक्ष, अधर्मपक्ष, मिश्रपक्ष, विगेरे त्रण त्रण भेद कहे छे ते उत्थापाय छे. उत्थापाय तो उथपो जेओनुं आ वचन छे ते स्वाधिरूढशाखामोटन न्याय जेवुं छे, कारण के ज्यारे गृहस्थने घेर बेठा मुनिना धर्मपक्षनो लाभ थाय तो तेने सर्वथी चारित्र श्रमणधर्म माटे संसार त्याग कराववा उपदेश आपवो ते काष्टघंटाविटंबना न्याय सरखोज थाय छे.

देवताओने चारित्र धर्मनी अपेक्षाये अधम्मेट्ठिया कह्या छे, ते पण मात्र व्यवहारनयनी अपेक्षाए जाणवा, अने निश्चेथी वळि विशेष विचार—एटले निश्चय नयनी अपेक्षाये तो विशेष विचार छे तेनी व्याख्या आगेनी गाथामां आवशे, ते व्याख्या गुरु गीतार्थ भवभीरु बहुश्रुत समाधिनिष्ठ एहवा गुणभंडार महाराजनी पासे श्रुत सांभळी तथा भणी विशेष

विचारजो, विचारीने सारी रीते हृदयमां धारजो, कुमतिने वारजो अने द्वेष म आणजो.

श्रमण मिथ्याति बालज हुंत, यद्यपि सर्वविरति पालंत ॥ नवमा ग्रैवेयक लग जंत, पन्नवणा भगवइय भणंत ॥ ६६ ॥

श्रमण एटले साधु (मुनि) सर्वज्ञ परूपेल सर्वविरति मुनिधर्म सर्वथा विरति परिणामरूप पालन करतो होय छतां पण सम्यक्ज्ञान दर्शनथी रहीत होय, सद्दहणा परूपणा शुद्ध न होयते द्रव्यलिंगी साधु मिथ्यात्वी कहेवाय, अने ते बालज कहेवायछे.

ते जो के सर्वविरति पाले छे, उग्र कष्ट करेछे तेथी नवमा ग्रैवेयक सुधी जायछे तेनो पाठ श्रीपन्नवणासूत्र तथा श्री भगवतीसूत्रमां कहेलो छे. ते आ प्रमाणे—अविराहियसंजमासंजमाणं जहण्णेणंसोहम्मकप्पे उक्कोसेणं अच्चुए, सलिंगीणं दंसण वावन्नगाणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणंउवरिम गेवेज्जएसु.

अर्थः—अविराधक एहवा संजतासंजत एटले देवाधिदेवे जे भाव गुणने रीते परूप्या ते पदार्थने तेज प्रमाणे श्रद्धावाळो, अने जें देशविरतिमार्गे धर्म तेनुंज नाम संजतासंजत छे, ते धर्मप्रति फर्शना, पालना, तीर, विशोधि निःशल्य थइ ते श्रावकधर्मे क्यां उपजे, कइ गतिमां जाय ? उत्तर. जघन्यथी सौधर्मदेवलोक प्रथम स्वर्गमां, अने उत्कृष्टथी बारमा अच्युत देवलोकमां जाय.

वळी जे स्वलिंगी एटले जिनेश्वरे कहेला साधुना उपकरण तेने धारे छे छतां दर्शन–सम्यक्त्व तेथी पडेला ते हे भगवन्! क्यां उपजे? उत्तर–जघन्यथी भवनवासीनिकायमां उपजे अने उत्कृष्टथी उपरला ग्रैवेयकमां उपजे. एवी रीतनोज आलावो पण श्री भगवती सूत्रमां छे, ते गुरुमहाराज पासे पुछी जाणवुं. सर्वविरतिने पालण करनारा छतां पण आणा रहीत एटले सम्यक्ज्ञान अने दर्शन रहित होवाथी मिथ्यात्वी तथा बाल कीधेल छे ते निश्चेनयनी व्याख्या जाणवी. विशेष खुलासो गीतार्थ पासेथी समजवो.

देसविरत अविरत गति एक, उत्कृष्टी बारम सुरलोक ॥ समकित विरति किस्युं आंतरो, बोलो टाली मन पांतरो ॥ ६७ ॥

देशविरति सम्यक्दृष्टि अने अविरति सम्यक्दृष्टि ए बंनेनी गति एक उत्कृष्टि बारमा देवलोक सुधीनी कही छे, तेनो पाठ पन्नवणाना छठा पद मध्ये छे, तथा च तत्पाठः–जदिसम्मदिट्ठी पज्जत्त संखेज्ज वासाउय कम्मभूमि गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संजयसम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो असंजयसम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मदिट्ठी पज्जत्त संखेज्जेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! तिहिंतोवि उववज्जंति, एवं जाव अच्चुगोकप्पो.

अर्थः–जो सम्यक्दृष्टि पर्याप्ता संख्याता वरसना आउखावाळा जो कर्मभूमि गर्भजमनुष्यथी उपजे तो श्युं संजत सम्यक्दृष्टि पर्याप्तायी उपजे? के असंजत सम्यक्दृष्टि पर्याप्ताथि उपजे? के संजतासंजत जे देशविरति तेनाथी उपजे?

हे गौतम! त्रणे थकी पण उपजे, क्यां सुधी ? जाव बारमा अच्युतदेवलोक सुधी, सम्यक्दृष्टि जीव तथा सम्यक्दृष्टि साधु तथा सम्यक्दृष्टि श्रावक देशविरति बारमा देवलोकमां उपजे. आनो पाठ पन्नवणासूत्रना छठा पदमध्ये छे. माटे समकितिमां अने देसविरतिमां शो तफावत छे. आ बाबतमां विचार करी मननो हठ मुकी उत्तर आपवो जोइये.

पेच्चा कही परभव एकंत, इह भव परभव पण एकंत ॥ पुव्विं पछा शब्दे जाण, इह भव परभव बेवि वखाण ॥ ६७ ॥

सूत्रमां पेच्चा शब्द छे तेनो अर्थ एकांते परभव थाय छे अने आगममां पुव्विंपच्छा शब्द जे छे तेनो अर्थ पण आभव परभव एकांते थाय छे. सूत्रमां कोइ स्थले पेच्चा शब्द अथवा तेना बदले परभव शब्द कहेल छे अने कोइ स्थले पुव्विंपच्छा शब्द अथवा तेना बदले आभव परभव शब्द कहेल छे, पेच्चा अने पच्छा ए बे शब्दनो अर्थ एकज छे. परभव अर्थ पच्छा शब्दनो थाय छे तेज पेच्चा शब्दनो पण थाय छे, तेथी शब्द पर्याय रचनाये भ्रममां पडवुं नही, कारण के सूत्रोनां कोइ स्थलमां (पेच्चाहियाए) एवो पाठ छे अने कोइ आलावामां (इहभवे परभवे वा आणुगामियत्ताए) एवो पाठ पण छे पण अर्थ एकज थाय छे एमां फेरफार समजवो नहीं.

॥ श्री रायपसेणी सूत्रमां आ प्रमाणे कह्युं छे. ॥

तएणं तस्स सूरियाभस्स पंचविहाए पज्जतीए पज्जति भावंगयस्स समाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था किं-मे-पुव्विं-करणिज्जं किं-मे-पच्छा-करणिज्जं किं-मे-पुव्विं-सेयं किं-मे-पच्छा-सेयं किं मे-पुव्विं-पच्छावि-हिताए सुहाए खमाए णिस्सेसाए अणुगामित्ताए भविस्सइ, तएणं-तस्स-सूरियाभस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा-देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूव मब्भत्थियं-जाव-समुप्पण्णं समभिजाणित्ता जेणेव-सूरियाभे-देवे-ते-णेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए-अंजलिं-कट्टु जएणं विजएणं-वद्धावेंति २.त्ता एवंवयासी-एवंखलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे-विमाणे सिद्धाययणं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेह-पमाणमे-ताणं सण्णिखित्तं, चिठंति, सभाएणं सुहम्माएणं माणवते चेइए खंभे-वइरामए, गोलवट्ट-समुग्गए, बहुउ-जिणस्स कहाउ-सण्णिखित्ताउ चिट्ठंति, ताउणं-देवाणुप्पियाणं अण्णेहिंच बहुणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाए जाव वंदणिज्जाओ णमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ समाणणिज्जाओ कल्लाणं-मंगलं-देवयं-चेइयं पज्जूवासणिज्जाओ तं-एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विंकरणिज्जं तं-एयण्णं देवाणुप्पियाणं पच्छाकरणिज्जं तं-एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं-सेयं तं-एयणं देवाणुप्पियाणं पच्छासेयं तं-एयण्णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं-पच्छावि-हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए अणुगामियताए भविस्संति.

अर्थः-त्यारे ते सूर्याभदेव पांच प्रकारनी पर्याप्तिये पर्याप्तिभाव प्रति पामेला ते सूर्याभदेवना मनने विषे आवा प्रका-

रनो विचार थयो के मारे प्रथम शुं करवुं जोइये ने पछी शुं करवुं जोइये. वळी मारे प्रथम श्रेय (कल्याणकारी) शुं छे, अने पछी मारे श्रेय शुं (कल्याणकारी) छे, ने प्रथम पहेला तथा पछे कल्याणकारी शुंछे. वळी आत्माने हितभणी, सुखभणी, क्षेमभणी एटले पांमेल तेना रक्षण भणी वळी मोक्षभणी एटले सर्वथा दुःखथी मुक्त थवा भणी अने परंपराये हित करनार शुं हशे? ज्यारे आवा विचार थया त्यारे ते सूर्याभदेवना सामानिक सभाना उत्पन्न थयेला देवो छे ते सूर्याभदेवना उपर कहेला मनोगत उपजेला विचार जाणीने जे ठिकाणे सूर्याभदेव छे ते स्थानमां आवे आवीने सूर्याभदेव प्रत्ये करसंपुट एकठा करी मस्तकमां आवर्तन करी अंजलि करी जय अने विजयवडे वधावे, वधावीने आ प्रमाणे बोल्या के-हे देवानुप्रिय आपसाहेबना सूर्याभविमानने विषे सिद्धायतन छे तेमां १०८ जिन प्रतिमा छे, ते जिननी अवगाहना प्रमाणे उंचैमां छे, वळी सुधर्मा सभाना माणवकचैत्यस्थंभमां वज्रमय गोळ आकारवाळा डाबडाओमां घणी जिनेश्वर भगवाननी डाढाओ रुडी रीते स्थापन करेली छे, ते जिनप्रतिमा अने डाढाओ आपसाहेबने तथा बीजा पण घणा विमानवासी देवता देवीयोने अर्चन करवा योग्य, वंदन करवा योग्य, नमस्कार करवा योग्य, पूजवा योग्य, सन्मान करवा योग्य, वळी कल्याणकारी, मंगलकारी त्रणलोकना अधिपतिपणाथी देवता तथा सुप्रशस्त मन करवानो हेतु होवाथी आपने पूजवा योग्य छे; माटे आप साहेबने प्रथम करवा योग्य एहज छे, पछी करवा योग्य पण एहज छे, ने वळी एहज पहेला श्रेय अने पाछल श्रेय ते एहज छे. आप साहेबने पहेला अने पछे पण हितभणी, सुखभणी, क्षेमभणी, मोक्षभणी, अने परंपराये हितभणी थशे. ए रायपसेणी सूत्रनो पाठ गुरूगमथी अवधारवो.

देसविरति धारी इम कह्यो, गुरु मुख बहु आगम मे लह्यो ॥ इहनव परनव हित सुख नणी, जिनवरनुं वंदण इम गिणी ॥ ६ए ॥

देशथकी जेनी विरति होय एटले विरमणना जे परिणाम होय तेने देशविरति कहीये; तेवा देशविरति धर्मने धारण करनारा श्रावकोने देशविरति धर्मना अधिकारे आवी रीते घणा आगममां कहेल छे, अने ते गुरु महाराजना मुखकमळथी में जाणेल छे के श्री जिनेश्वरनुं वंदन नमस्कार ते आ भवनेविषे, परभवनेविषे हितभणी, सुखभणी छे. आवी रीते जाणी ने श्रावक जिनेश्वर भगवाननुं वंदन, नमन, पूजन करे छे. ते नीचे प्रमाणे आगममांहि पण कह्युं छे, ते हठ कदाग्रह निवारी विचारजो अने हृदयमां धारण करजो.

॥ श्री ज्ञाताधर्म कथाना तेरमा अध्ययन मध्ये कह्युं छे ॥

समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो जाव पज्जुवासामो इहभवे परभवे हियाए खमाए णिस्सेसाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ, तएणं तस्स ददुरस्स बहु जणस्स अंतिएएयमट्ठं सोच्चाणिसम्म अयमेया रुवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था एवं खलु समणं भगवं महावीरं तं गच्छामिणं वंदामि-णमंसामि जाव-एवं संपेहेइ.

अर्थः–श्रमण भगवान् महावीरस्वामी अत्रेनाज गुणसिलानामयक्षना चैत्यने विषे समवसर्या छे, माटे हे देवाणुप्रिय आपणे पण जइए. चालो श्रमण भगवान् महावीरप्रते वांदीए, नमस्कार करीए, यावत् पर्युपासना करीए, कारण के ते वंदनादि आ भव परभवमां हितभणी, सुखभणी, निरुपद्रवभणी, निःश्रेयसभणी, मोक्षभणी, अनुगामिपणाभणी थशे. ते समयने विषे ते दर्दुरने (देडको) घणा मनुष्योनी पासे आ वावत सांभलीने हैयामां धारीने मनमां एवो विचार उत्पन्न थयो के हुं पण जाउं, श्रमण भगवान् महावीर प्रते वंदन करुं, नमस्कार करुं, एज मने जावत् कल्याणकारी हितभणी सुखभणी थशे. तेमज पूजा करवानुं पण आगममां कह्युं छे. ते नीचे मुजबः–

॥ श्री उववाइ उपांगमांहि कह्युं छे. ॥

अंबडस्सणं णो कप्पति अन्न उत्थियावा अन्न उत्थिय देवयाणिवा अन्न उत्थिय परिगहियाइं अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा णमंसित्तएवा पज्जुवासित्तएवा नण्णथ्थ अरिहंतेवा अरिहंत चेइयाणिवा.

अर्थः–अंबडनामा परिव्राजक कहे छे के, हे भगवन् आजथी मने अन्ययूथिक वा अन्ययूथिक देवो वा अन्ययूथिक परिग्रहित एटछे पोताना देव करी मानेली अरिहंतनी प्रतिमाने वंदन, नमस्कार, पर्युपासनादिक करवा कल्पे नहि; किंतु देवमां तो अरिहंत देव अने अरिहंत भगवान्ना बिंब (जिनपडिमा) ते प्रत्ये वांदवा, पूजवा, पर्युपासना करवा कल्पे, एम श्रावकने अधिकारे वीतरागना उपदेशे जिनप्रतिमा वंदन पूजननो विधिवाद जाणवो. (तथा वली) श्री महानिशीथ मध्ये

कह्युं छेः–पुणोवि वीयरागाणं, पडिमा चेइयालए; पत्तेयं संथुणे वंदे, एगग्गो भत्ति निब्भरं ॥ १ ॥ वली प्रत्येक वीतराग देवनी पडिमानें तो विशेषे करी चैत्यालयने विषे स्तुति करे, वंदना करे, केवी रीते करे तो एकाग्र; वली तन्मय थइ भक्तिपूर्वक वंदन करे, ए पण श्रावकना अधिकारे प्रतिमा वंदननो विधिवाद जाणवो, कदाग्रह निवारवो.

श्री ज्ञाताधर्म कथाना सोळमा अध्ययनने विषे कह्युं छे केः–

तएणं सादोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जण घरे तेणेव उवागच्छइ२त्ता मज्जण घरं अणुपविस्सइ२त्ता ण्हायाकयबलि-कम्मा कय कोउय मंगल पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवर परिहिया, मज्जण घराउ पडिनिक्खमइ२त्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ२त्ता जिणघरं अणुपविसति२त्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेति२त्ता वंदति नमंसति२त्ता लोमहत्थयं परामु-सति एवं जहा सूरियाभे जिणपडिमाउ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ वामंजाणुं अंचेइ दाहिणजाणुं धरणि तलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि नमेइ२त्ता इसिं–पच्चुन्नमइ करयल–जाव कट्टुएवं वयासि नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ.

अर्थः–त्यारपछी ते द्रौपदी नामवाळी राजकन्या छे ते जे ठिकाणे मज्जनघर छे ते ठिकाणे आवे, आवीने मज्जन-घर एटले नावानुं घर तेमां प्रवेश करे, प्रवेश करीने प्रथम नाही, पछी जेणीये बलिकर्म कर्या, तथा कौतुकमंगल कर्या छे मननी शुद्धि माटे जेणीये, एहवी राजकन्या द्रौपदी, शुद्ध दोषरहित पूजनयोग्य, वळी मांगल्यकारी एहवा प्रधान वस्त्र पहेरी,

मज्जन करवाना घरथी निकले, निकलीने जे ठिकाणे जिनघर छे ते ठिकाणे आवे, आवीने जिनघरप्रति अनुप्रवेश करे, करीने जिनप्रतिमाना दर्शन करे, प्रणाम करे, करीने मोरपीछीवडे प्रमार्जन करे, करीने बाकी पूजानी विधि जेम सूर्याभदेवे करी ते प्रमाणे १७ भेद पूजा करे, (प्रतिमाओ पूजे), धूपप्रति उखेवे, उखेवीने यावत् सविस्तर पूजननो विधि प्रमाणे पूजे, एटले अंगपूजा शरीरनी ने अग्रपूजा जे धूप तथा अष्टमंगळ प्रमुखनी आगळ करे तेना नामः—साथीयो १, श्रीवच्छ २, नंदावर्त ३, भद्रासन ४, कलस ५, दर्पण ६, सरावसंपुट ७, मच्छजुगल ८, विगेरे करीने योगमुद्राये बेसी नमोत्थुणंनो पाठ भणे, जाव ठाणंसंपत्ताणं, इत्यादिवडे वंदन तथा नमन करे.

श्रावक बहुला पहुंता जिहां, निःश्रेयसपद पुण दीसे तिहां ॥

जिनेश्वर गणधर स्थवीर बहुश्रुत महाराज पधारेला जाणी श्रावकोना मनमां आवी रीतनी भावना उत्पन्न थाय छे के तेओने वंदन करवुं, नमस्कार करवो, तेमना सामे जवुं, तेमनो उपदेश सांभलवो, ते आ भवमां परभवमां अमने हितकारी, सुखकारी छे; एम जाणी घणा श्रावक पूजनीय पुरुषने वंदन करवा गया छे एवा आलावाओ घणा सिद्धांतोमां छे तेमां निःश्रेयसपद पण देखाय छे.

केटलाक आलापकनो पाठ नीचे मुजब जाणी लेवो.

॥ श्री भगवतीशतक बीजाना त्रिजा उद्देशामां कह्युं छेः ॥

तएणं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग–तिग–चउक्क–चच्चर–चउम्मुह–महापह-पहेसु जाव–एगदिसाभिमुहा णिज्जायंति, तएणं ते समणोवासगा इमीसे–कहाए लद्धट्ठासमाणा हट्ठ–तुट्ठा जाव–सद्दावंति, सद्दाविता एवंवयासी, एवंखलु देवाणुप्पिया पासावच्चेज्जा थेराभगवंतो जातिसंपण्णा जाव–अहापडिरूवं–उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, तं-महाफलं खलुदेवाणुप्पिया तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स–विसवणयाए किमंगपुण अभिगमण–वंदण–नमंसण–प-डिपुच्छण–पज्जुवासणयाए जाव–गहणयाए तं–गच्छामोणं देवाणुप्पिया थेरे भगवंते वंदामो णमंसामो जाव–पज्जुवासामो, एयण्णे इहभवे परभवे जाव आणुगामियत्ताए भविस्सई तिकट्टु–अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति.

अर्थः–तेवारे तुंगियानाम नगरीने विषे सिंघाडग–के० शृंगाटकफलाकारस्थान, तिग–के० त्रण रस्ता एकठा थवानुं स्थान, तथा–चउक्क–के० चार रस्ता मलवानुं स्थान, तथा चच्चर–के० घणा रस्ता मलवानुं स्थान, महापह–के० राज-मार्ग,पंथा–के०(रथ्यामात्रं) रथना रस्ता,जाव–के० यावत् एक दिशिना सन्मुख निकलेछे, ते समयने विषे,ते श्रमणोपाशको, स्थविर भगवान् अत्रे पधारया छे, एहवी खबर मलवाथी घणाज खुशी थया, यावत् ते श्रावकवर्गे एकठा मली सकल वर्गने बोलावीने एम कह्युं के–हे देवानुप्रिय! पार्श्वनाथना स्थविर भगवान् सकलगुणसंपन्न, सकलगुणभंडार, जाति कुलवडे प्रधान, एहवा ते साधुने योग्य अवग्रहप्रति ग्रहण करीने संजम तपवडे आत्माने भावता विचरे छे, ते माटे हे देवानुप्रिय ! तथा-

रूप थविर भगवान्ना नाम गोत्र सांभलवावडे कल्याण थायछे, तो जे महानुभाव पुरुषोना सन्मुख जइ वंदन, नमन, प्रतिपृच्छा, पर्युपासना करीयें, ते तेनाथी अधिक नें वळी जे विनयपूर्वक ते थविरमहाराजा पासेथी अर्थ धारीयें, तो तेनाथी पण अधिक फल छे, माटे चालो आपणे देवाणुप्रिय थविर भगवंतने वांदीये, नमीये, पावन थइये, पर्युपासना करीये, नें वळी आ करणी आभव परभव जाव हितभणी, सुखभणी, यावत् अनुगामि थशे. आ प्रमाणे परस्पर विचार करी जे ठिकाणे घर छे तिहां आवे, आवीने नाइ धोइ पवित्र थइ पोताना घरदेवनुं पूजन करी शुद्ध अने अमूल्य वस्त्र पहेरी वांदवा गया, अने त्यां जइ अनेक प्रकारना प्रश्नो पूछ्या. इत्यादि.

सुर आव्या जिन वंदन काज, पेच्चापद तिह भण्यो समाज ॥ ७० ॥

देवताओ श्री जिनेश्वर भगवान्ने वंदन करवाने वास्ते आव्या ते आलावामां "पेचापद" तिहां समाजे (सभामां) भणेलो छे.

॥ रायपसेणी सूत्र मध्ये कह्युं छे के ॥

नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव संपाविउंकामस्स वंदामिणं भगवंतं तत्थगयं पासउमे भगवं तत्थगए इहगयं त्तिकट्टु वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता इमया रुवे अब्भत्थिए चिंतिए मणोगए पत्थिए संकप्पे समुप्पजित्था एवंखलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे भारहेवासे आमलकप्पाए णयरीए वहिया अंवसालवणे चेइये

अहा पडिरुवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे माणे विहराति तं—महाफलं खलु तहारुवाणं अरहंताणं भगवंताणं नाम गोयस्स वि—सवणयाए किमंगपुग अभिगमण वंदण णमंसण पडिपुच्छण पज्जुवासणयाए एगस्सवि आयरिस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए किमंगपुग विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए तंगच्छामिणं समणं भगवं महावीर वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि एयं मे—पेच्चाहियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए अणुगामियत्ताए भविस्साति इतिकट्टुएवं संपेहेति.

अर्थः—पोतपोताना तीर्थनी अपेक्षाए धर्मनी आदि करनार जाव मोक्षनी इच्छावाला एवा श्री महावीरस्वामी भणी नमस्कार थाओ. तिहां रहेला भगवान् प्रत्ये हुं वंदन करुं छुं; हे भगवन् ! त्यां रहेला आप, इहां रहेलो हुं, तेने आप देखो; एम करी वंदन नमस्कार करे, वंदन नमस्कार करीने आवा प्रकारनो मनोगत संकल्प उत्पन्न थयो के आ जंबुद्वीप नामनो द्वीप तेना भरतक्षेत्रने विषे आमलकल्पा नामनी नगरी, तेना बाहेर आम्रसालवन चैत्य तेने विषे श्रमण भगवान् महावीरस्वामी यथायोग्य अवग्रहनी अनुज्ञा लइने संजमे करी, तपे करी, आत्माने भावता थकां विचरे छे; ते माटे खरेखर तथारूप अर्हंत भगवंत तेओना नाम गोत्र पण सांभलवाथी महाकल्याणकारी छे, तो वली जे भगवान्‌ना सन्मुख जवुं, वंदन करवुं, नमन करवुं, पूछवुं, पर्युपासना करवा वडे करी, तथा वली एक धार्मिक आर्य सुवचन तेना सांभलवावडे करी, जे फल थाय छे ते तो वली विशेष कल्याणकारी छे. वली विशाल अर्थना ग्रहणवडे जे लाभ थाय तेनुं कहेवुं शुं ! एटले

घणोज लाभ थाय छे; ते माटे हुं जाउं, अपण भगवान् महावीरस्वामीने वंदन करुं, नमस्कार करुं, सत्कार करुं, सन्मान करुं; भगवान् केवा छे, के जेओ कल्याणकारी, मंगलकारी, इष्ट देवरूप, चित्तने प्रसन्नताना हेतुरूप एवा भगवान् छे, ते प्रते जइ पर्युपासना करुं आ करणी मने परभवमां हितभणी, सुखभणी, निरुपद्रवभणी, छेवट मोक्षभणी थशे, एम विचार करे. आंहि श्री महावीरस्वामीने वंदन नमस्कार करवानुं फल सूर्याभदेवे जे मनमांहे चिंतव्युं ते फल साधु श्रावकने सद्दहवा योग्य छे, कारण के सम्यक्दृष्टिदेवे बोलेलुं धर्मनुं फल डाह्या मनुष्योए उपादेय (अंगीकार) करवा योग्य छे.

तेमज वळी श्री भगवतीसूत्र मध्ये इन्द्रमहाराज विचार करे छे के, चमर असुरेंद्र असुरराजा अरिहंत वा अरिहंत चैत्य (जिनबिंब) अथवा भावित-आत्मा कोइपण मुनि तेनुं शरण लीधा विना अहीं आवी शके नहीं, माटे रखेने कोइनी आशातना थाय एम विचारी जल्दी अवधिज्ञानथी जाणी, भगवान्थी चार आंगुल दूर रहेल वज्रने पकडी लीधुं, इत्यादि आलापक छे ते तिहांथी जाणी लेवुं. इहां कोइ वादी एम कहे छे जे देवलोकमांही प्रतिमा छे तेनुं शरण केम लीधु नहीं ? उत्तर के महाविदेहक्षेत्रने विषे पण तीर्थंकरभगवान् विचरे छे तिहां जइ शरण केम लीधुं नहि. माटे एवो खोटो तर्क करवाथी कांइ आत्मकल्याण थवानुं नथी. ए आलापकने विषे पण चैत्यशब्दे जिनप्रतिमा जाणवी, अने जीवाभिगम सूत्रमांहि देवताना अधिकारे जिन प्रवचन प्रतिमानी भक्तिनो विधिवाद कह्यो छे, ते नीचे मुजबः—तत्थ णं बहवे भवणवइ वाणमंतर जोतिस वेमाणिया देवा चाउमासिय पडिवएसु संवत्छरेसुय अण्णेसुय बहुजिण-जम्मग-निक्खमण-णाणु–

ष्पाय परि-णिव्वाण मादिएसुय-देवकज्जेसुय देवसमुदएसुय देवसमितीसुय देवसमवाएसुय देवपउणेसुय एगंतउसहिया समुवा गया समाणा पमुदित पक्कीलिया अट्ठाहियाउ महामहिमाउ कारेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेण विहरंति.

अर्थः-तिहां घणा भवनपति, वाणवंतर, ज्योतिस, वैमानिक देवता चौमासी पडिवाने विषे, संवच्छरीने विषे, बीजा वली तीर्थंकरना जन्मना, वळी दीक्षा लेवानी वेलाये, वली ज्ञान उपजती वेलाये, निर्वाण (मोक्ष) जवानी वेलाये ए आदि देइने वेलाये, देवता संबंधी कार्य वेलाये, देवताना मेलावे, देवताना समूह मिलेथके, देवतानुं प्रयोजन, सर्व देवता एकठा थवानुं प्रयोजन उत्पन्न थये छते, एकठां थयाथका, एक समुदाय थयाथका, हर्षवंत थयाथका, क्रीडावंत थयाथका, अष्टाहिकादिक मोटा मोटा महामहिमावंत उत्सव करताथका, सुखे समाधिये विचरे छे.

जिनवर प्रतिमा पूजी नमी, पुव्विं पच्छा ए पद जाणी ॥ हित सुख निःश्रेयस अणुगाम, सुर अधिकार विहूंने ठाम ॥ ७१ ॥

जिनेश्वर परमात्मानी प्रतिमाने देवताओए "पुव्विं" अने "पच्छा" ए बे शब्द करी पूजा करी नमन कर्युं, ते शा वास्ते ? हितने वास्ते, सुखने वास्ते, कल्याणने वास्ते, अनुक्रमे मोक्ष मेळववाने वास्ते. आ हकीकत सूत्रमां देवताओना अधिकारमां लखेल छे. एवी रीते सूत्रोमां सम्यक्दृष्टि अने देशविरति ए बेउना अधिकारमां सरखा पाठ छे.

॥ श्री रायपसेणी सूत्रमां आ प्रमाणे कह्युं छे केः-- ॥

अम्हेणं भंते! सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो समाणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं पज्जुवासामो देवाइ समणे भगवं महावीरे-तेदेवे एवंवयासी जुत्तमेयंदेवा पोराणमेयंदेवा जीयमेयंदेवा किच्चमेयंदेवा करणिज्जमेयंदेवा आइन्नमेयंदेवा अब्भणुन्नायमेयंदेवा जण्णं भुवणवइ, वाणमंतर, जोइस वेमाणियादेवा अरहंते भगवंते वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता तओ साइंर नाम गोत्ताइं साहंति तं पौराणमेयंदेवा जावअब्भणुन्नाय मेयंदेवा. इति

हे भगवन्! अमे सूर्याभदेवना आभियोगिक देवताओ छीए, आपसाहेब प्रति अमे वंदन करीए छीए, नमस्कार करीए छीए, सत्कार करीए छीए, सन्मान करीए छीए; कल्याणना हेतु, मंगलना हेतु, इष्टदेव अने चित्तनी निर्मलतानां कारण एहवा आपसाहेब ते मते अमो पर्युपासना करीए छीए. भगवान् कहे छे के हे देवो! हे देवानुप्रिय! युक्त छे, आ तमारी करणी युक्त छे, हे देवानुप्रिय! आ करणी कांइ नवी नथी, पण पुरव कालथी छे, एटले चिरंतन कालथी तीर्थंकर मतें देवे।वडे करायेली छे; जे माटे भवनपति, वाणवंतर, ज्योतषी अने विमानवासी देवताओ अरिहंत भगवंतने वांदे, नमस्कार करे, वंदन नमस्कार करीने पोतपोताना नाम गोत्रने कहे छे. माटे आ करणी तमारी पेहेलानी छे, वळी आ जीत छे. वळी हे देवानुप्रिय! आ कृत्य छे, करवा योग्य छे, वळी आ वंदन, नमन, सत्कार, सन्मान, तीर्थंकर प्रति आचीर्ण छे, तथा अभ्यनुज्ञात छे एटले

वंदनादिक तीर्थंकरभणी देवुंज जोइए. कारण के सर्व तीर्थंकरोए कह्युं छे के तमारा देवोनाज आ कृत्य छे. आचीर्ण छे. आ प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीरना वचन सांभली देवो बहुज खुशी थया. पछी जवानी वखते भगवान्‌ने वंदन नमन करीने इत्यादि पाठ रायपसेणीमां छे.

॥ अथ श्री जीवाभिगमे तृतीय प्रतिपत्तिः ॥

जेणेवणंदा पुक्करणी तेणेव उवागच्छति तेरत्ता णंदापुक्करिणं पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसति अरत्ता पुरच्छिमिल्लेणं तिसमाणे पडिरूवेणं पच्चोरूहति परत्ता हत्थपादं पक्खालेति हरत्ता एगं महं सेतं रजतामयं विमलसलिलपुण्णमत्तगयमहमुहाकिति समाणं भिंगारं पगिण्हति भिंरत्ता जाइं तत्थउप्पलाइंपउमाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हतिता-त्ता णंदातोपुक्करिणिउ पच्चुत्तरेइ प-त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पाहारेत्थगमणाए तएणं तंविजयंदेवं चतारि सामाणिय साहस्सीउ जावअण्णे बहवेवाणमंतरायदेवादेवीउ अप्पेगतिया उप्पलहत्थगता जाव सतपत्त सहस्सपत्त हत्थगया विजयं देवं पिट्ठितो अणुगच्छंति वि-त्ता तएणं तस्स विजयस्स बहवे आभिओगिया देवा देवीउय कलस हत्थगता जावधूवकडुछुय हत्थगता विजयं देवं पिट्ठतो अणुगच्छंति तएणं सेविजएदेवे चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं जाव अण्णेहिय बहुहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्डीए सव्वजुत्तीए जाव निग्घोसणाइए रवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव उवागच्छइ ते-त्ता सिद्धायतणं अणुप्पयाहिणी

करेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति ते-त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति आ-त्ता लोमहत्थगं गेण्हति लो-त्ता जिणपडिमा उलोमहत्थएणं पमज्जति लोमहत्थएणं पमज्जिता सुरभिणा-गंधोदएणं ण्हाणेइ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणित्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाइए गात्ताइं लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गात्ताइं अणुलिंपइ अणुलिंपित्ता जिण पडिमाणं अहयाइं सेताइं दिव्वाइं देवदूसजुयलाइं णियंसेइ णियंसित्ता अग्गेहिं वरेहिय मल्लेहिय अच्चेहि-त्ता पुष्फारुहणं गंधारुहणं, चुण्णारुहणं आभरणारुहणं करेति करेत्ता आसत्तोसत्त विउलवट्ट वग्घारित मल्लदाम कलावं करेति आसत्तोसत्तविउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलावं करेत्ता अच्छेहिं सण्णेहिं सेएहिं रययामएहिं अच्छरस तंदुलेहिं जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठमंगलए आलिहसितं० सोत्थिय सिरिवच्छे जावदप्पणं अट्ठमंगलगे आलेहित्ता कयग्गाह गहितकरतलपब्भट्ठ विप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुष्फपुंजोवयारकलितं करेति२ चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयण भत्तिचित्तं कालागरुपवर कुंदुरुक्कतुरुक्कधूव गंधुत्तमाणुविद्धं चधूमवट्टिं विणिमुयंतंवेरुलियमतं कडुच्छुयं पग्गहियं पयत्तेणं धूवंदाऊणजिणवराणं अट्ठसयं विसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं संथुणइ संथुणित्ता सत्तट्ठ पयाइं उसरति स-त्ता वामंजाणुं अंचेतिवा-त्ता दाहिणं जाणुंधरणितलंसिनिहट्टु धरणितलंसिणिवाडेतिरत्ता तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि णामइरत्ता इसिं पच्चुण्णमतिर त्ता कडयतुडियथंभियाउ भुयाउ पडिसाहराति। करतलपरिग्गहिय सिरसावत्तंमत्थये अंजलिं कट्टु एवं वयासि ॥ णमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं जावसिद्धिगइ णामधेयं ठाणंसंपत्ताणं तिकट्टुवंदति णमंसति ॥

अर्थः-जिहां नंदानाम पुष्करिणी छे तिहां आवे, आवीने नंदापुष्करिणी प्रत्ये प्रदक्षिणा करतो थको पूर्वदिशने तोरणे प्रवेश करे, प्रवेश करिने पूर्वदिशने द्वारे त्रिसोपान, प्रतिरूपके करीने मांहि प्रवेश करे, प्रवेश करीने हस्त पगने पखाले (धोवे), हस्तपगने पखालिने (धोइने) एवुं मोटुं धोलुं रजतरुपामय निर्मल जल (पाणी) तेणे परिपूर्ण भरेलुं मोटा हाथीनुं मोटुं मुख तेनी आकृति आकार ते सरिखुं भृंगार नामे एक भाजन (पात्र) विशेष तेने परिग्रहण करे. भृंगार परिग्रहण करीने पछी जे तिहां उत्पलकमल, पद्मकमल जावत शतपत्र सहस्रपत्र तिहां लगिनो पाठ लेवो ते सर्व ग्रहण करे, ग्रहण करीने नंदी नामे पुष्करिणिथकी पाछो उतरे, पाछो उतरीने जिहां सिद्धायतन तिहां जावाने चाले, तिवारे ते विजयदेवना च्यार हजार सामानिक देव जावत् अन्य बीजा घणा वाणवंतर देवता देवीयो तेमां केटलाक देवता उत्पलकमल छे हस्तने विषे ते जेने, जावत शतपत्र सहस्रपत्र कमल छे हस्तने विषे जेमने एवा छता विजयदेवने पाछल परिपाटीये जाय, विजयदेवनी पाछल परिपाटीये (अनुक्रमे) जाइने तिवारे ते विजयदेवना घणा आभियोगिक देवता देवीयो कलशछे हाथमां जेमने जावत धूपनां भाजन पात्र छे हाथमां जेने एवा छतां विजयदेवने पुंठे पाछल जाय, तिवारे ते विजयदेव ते च्यार हजार सामानिक देव जावत अन्य बीजा घणा वाणवंतर देवता देवीयो तेणे सहित भली रीते विंटयो थको परिवर्यो थको सघली ऋद्धिये, सघली द्युति कांतिये, जावत् वाजित्रना निर्घोष शब्द थाते थके जिहां सिद्धायतन प्रासादछे तिहां आवे, तिहां आवीने सिद्धायतनने प्रदक्षणा करतो थको पूर्व दिशाने वारणे परिपाटीये प्रवेश करे प्रवेश करीने जिहां देवछंदो तिहां अनुक्रमे

आवे, आवीने दीठे थके जिननी प्रतिमाने नमस्कार करे, दीठे थके नमस्कार करीने पुंजणी प्रमुख हाथमां ग्रहण करे, पुंजणी प्रमुख हाथमां ग्रहण करीने जिननी प्रतिमाने पुंजे प्रमार्जे, प्रमार्जिने सुगंधि गंधजल तेणे करी स्नान करावे, स्नान करावीने दिव्य मनोहर सुरभि एवुं गंधकषाय, एवा लूगडे करी गात्र (शरीर)ने लूछे, गात्र (शरीर)ने लूछीने सरस नीलां एह्वां वावना-चंदन ते चंदने करी गात्र(शरीर)ने लिपे—विलेपन करे, विलेपन करीने जिननी प्रतिमाने अहत मोंघां घणाज उत्कृष्ट उजलां दिव्य मनोहर देवदूष्य (जुगल) बे बे देवदूष्य वस्त्र पहेरावे—चढावे, श्वेत दिव्य देवदूष्य जुगल बे बे देवदूष्य वस्त्र पहेरावीने—चढावीने अग्र (प्रधान) गंधद्रव्ये करी, मालाये करी पूजा करे. हवे विस्तारे देखाडेछे जेः—फूल चढावे, गंधारोपण गंधद्रव्य चढावे, मालानुं आरोपण करे, वरणनुं आरोपण करे, चूरणनुं आरोपण करे, आभरणनुं आरोपण करे; आरोपण करीने हेठलनी भूमि भागने तथा उपरनी भूमि भागने लगतो विस्तीर्ण वाटला आकारे लांवो प्रसार्यो फूलनी मालानो समूह ते करे, करीने निर्मल श्लक्ष्णं सुंवाला श्वेत (उजला) रूपामय अछ सुंदर छे रस जेने विषे, पासेनी वस्तुनुं प्रतिविंव जेमां पडे एवा निर्मल तंदुल (चोखा) तेणे करी जिन प्रतिमानी आगल आठ आठ मंगलिक आलेखे. ते जेमः—साथियो १ श्री वत्स २ जावत् दर्पण तिहां सुधीनो पाठ लेवो. आठ मंगलिक आलेखिने केशपाश ग्रहण कर्यानी पेठे करवडे ग्रहण कर्यां, करतल थकी छुटां मूक्यां पांच वर्णनां फूल तेनो समूह ते मुकेला फूलना समूह वडे युक्त करे, करीने चंद्रप्रभ वज्रवैडुर्यमय निर्मल छे दंड जेहनो एवो कंचन मणिरतनकी भक्ति रचना तेणे करी चित्र विचित्र युक्त कृष्णागरू प्रधान कुंदुरु, शिलारस, तुरुष्कनो जे धूप तेनो जे उत्तम गंध

तेणे युक्त धूपनी वर्तिका (वाटय)ने मुकनो वैडुर्यरत्नमय धूपनो कडछो (भाजन) विशेष तेने ग्रहण करी, प्रयत्ने करी धूप उखेवे, धूप देइने जिनवरथकी सात आठ पगलां पाछेपगे खसे-पाछो हठे, पाछो खसीने दश अंगुलि सहित अंजलिने मस्तके करी सावधान थई विशुद्ध निर्मल एटले दोष रहित छे शब्द संदर्भ शब्दनी रचना जेने विषे अर्थ करीने प्रधान एवां वली-पुनरुक्ति दोषेरहित एवां एकसो आठ मोटां वृत्ते करी स्तुति करे; पछी डाबो ढींचण उपाडे-उंचो राखे-एटले उभो राखे, जमणो ढींचण पृथ्वीतलने विषे नमावे-एटले पृथ्वी उपर अडाडे-लगावे, पृथ्वी उपर लगावीने त्रणवार पृथ्वीने विषे मस्तक नमावे, नमावीने कांइक उंचो नमे-थोडोक उंचो थाय, कांइक उंचो थइने कडां बेरखा तेणे करी थंभेला एवा जे बे भुजा तेने प्रति संहरे-एकठा करी संकोचे, बे हाथ एकठा करी संकोचीने माथे आवर्त्तन करे-माथे फेरवे, माथे आवर्त्तन करी अंजलि करे, अंजलि करीने एम बोले, एटले आ प्रकारे नमोत्थुणं कहेता हवोः- नमस्कार थाओ अरिहंत प्रत्ये, देवतादिकने पूजवा योग्य ए अर्थ. वली भगवंत प्रत्ये नमस्कार थाओ समग्र ऐश्वर्ये यूक्त ए अर्थ छे. जावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थानक प्रत्ये पाम्या एवा भगवंतने नमस्कार थाओ तिहां सुधीनो पाठ जाणवो. एम कहीने सामान्यपणे वांदे-नमस्कार करे एटले विशेषे करी अभ्युथानादिके करी वांदे.

ए प्रमाणे वंदन नमस्कारनो ठाम ठाम विधिवादे अधिकार छे, तेने सारी रीते समजवो, कदाग्रह टालवो, विशेष जाणवानी इच्छा होय तो श्री गुरु महाराजने पूछवुं.

इण कारण कांइ ज हुस्ये, गीतारथ समरथ जाणस्ये ॥ ते पुछी आणीये विवेक, जिनमत थइये सहुए एक ॥ ७२ ॥

ते कारण वास्ते कांइपण समजवा लायक समजवानुं हशे ते गीतारथ समरथ पोतानी मेळे जाणशे, तेवा गीतारथ महाराजाओने पूछी करी अने हृदयनी अंदर विवेक आणवो जोइए, अने तेवो विवेक आववाथी आपणे बधा जिनमतमां एक थइए.

साधु श्रावक सुर एकज हुंत, श्रुत धर्मे जिन एम कहंत ॥ चरण धर्म अंतर ववहार, जोई लेज्यो सूत्र विचार ॥ ७३ ॥

साधु, श्रावक, अने देवता श्रुतधर्मे करी सरखा गणाय छे, एम जिनेश्वर परमात्माए कीधेल छे. व्यवहारथी चारित्र धर्मे अंतर पडे छे, ते सिद्धांतोने विचारो अने जोई लेजो.

जिनशासन निंदा टालजो, जिनवर आंण खरी पालजो ॥ श्री पार्श्वचंद्र करे विनती, सांभलज्यो सहुए जिनमति ॥ ७४ ॥ इति सुरदीपिका समाप्ता.॥

हे भव्यजीवो जिनशासन विषे निंदाने टालजो (अछति परुपणा करवी ते निंदा तेने टालजो). अने जिनेश्वर परमात्मानी आणाने खरी रीते पालन करजो. एवी रीते श्री पार्श्वचंद्र सूरीश्वर विनंती करे छे, ते विनंती जैनधर्मीओए सौए सांभळवी, अने हृदयमां धारण करवी.

॥ इति श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराज युगप्रधान सुविहित भट्टारकोत्तमाचार्य श्री पार्श्वचन्द्र सूरीश्वर विरचिता सुरदीपिका समाप्ता ॥

॥ इति श्री सुरदीपिका समाप्ता. ॥

॥अथश्रीसिद्धान्ताराधनैकोनचत्वारिंशतिका ॥

श्री गुरुभ्योनमः ॥ श्री जिनागम बोहित्थं ॥ संसारार्णवतारणं । ममेदं दर्शितं येन ॥ तस्मै श्री गुरवेनमः ॥१॥ देशी अढीयानी ढाल ॥ श्री गुरु जगे दिनकार, ज्ञान किरण गणधार॥ भाव प्रगट कर ए, संसय तम हर ए ॥२॥ गुरु हिमकर उपमान, सौम्यकला सुप्रधान॥ वाणिय अमिय झर ए, देखत तनु ठर ए ॥३॥ दीपक जेम दीपंत, आपण पर दीपंत॥ अवगुण सवि दह ए। गुण गौरव लह ए ॥४॥ श्री गुरु कहीये देव, जेने सेवे देव ॥ अन्नगति ढंकीये ए, आण न खंकिये ए ॥५॥ ढाल फागनी ॥ श्री गुरु समतुल ममतुल, दिनकर निशिअ प्रकाश॥ हिम करन करे दिनपह, पवन न दीप उल्हास ॥ ए जग दीसे उत्तम, उपम देशत होइ ॥ सर्व थकी गुरु जामलि, आम

लहे नहु कोइ॥६॥ ॥ढाल अढीयानी॥ सवि सुख तणा उपाय, प्रणमुं तेहना पाय, हरख हीये धरी ए, मंदमति परिहरी ए ॥७॥ पामी सुगुरु पसाय, आण वहु जिनराय॥ डुल्लह ए कही ए, तेहज में लही ए ॥८॥ ते छे श्रुत आधार, ए वचन मन धार॥ श्रुत आराधिये ए, शीवसुख साधी ए ॥९॥ डुहा॥ गुरुपय पणमी जिनतणी, डुल्लह पामी आण ॥ श्री पार्श्वचंद्र सूरि विनवे, आगम मुज प्रमाण ॥ १०॥ ॥ ढाल ॥ हवे कहीयें आगम जणिय सीख, म विराधो दुल्लह लहिय दीख ॥ जन अइय काले आगम विराधि, पडिया अनंत जवजल अगाधि ॥११॥ पडशे अनंत आगामि काल, बहु पडता संपइ मन संजाल ॥ आराधि सूत्र सीधा अनंत, सीजस्ये तासु न लहिये अंत ॥१२॥ बहु सीजे हमणां एम जाणि, समवायंगे चोथे वखाणि ॥ तेह काल संख इग्यार अंगे, बोली छे जाणुं मन रंगे ॥१३॥ उद्देश पमुह किरिया विशेष, अणुयोगद्वारे बोल्या अशेष ॥ त्रिणुकालग्रहण सज्जाय शुद्ध, नहु बोली उत्तर ज्जयण मज्ज ॥१४॥ आसायण आगमतणीय टाल, मन वयण काय जिन आण पाल ॥ आंवरण नाण दंसणह बंध, पंचमे अंगे जाष्यो प्रसिद्ध ॥१५॥ जे एम तो मुणिवर

पन्नणंत ॥ गीयछ वयण श्रावय सुणंत॥ जेम साहु तेम साहुणि विचार, वेदंतरि अंतर इणे प्रकार ॥१६॥ पर्याये लहुओ जेय जोय, मुनि साहुणिने वंदेवो होय ॥ नहु छेद पुव वांचे भणे, आयरिअ मुखे विधिशुं सुणे ॥१७॥ साहुणी प्रवर लखणादि नाण, ए विधि जाणे विच्छेद ठाण ॥ तेह परुवो चरुवो कर्मदोस, ए वचन म डुखसि रागि रोस ॥१८॥ आगम विधि लोपी धर्महाण, ए वचन सहु करजो प्रमाण ॥ श्री आगम नमतां हुए आणंद, कर जोमी पन्नणे श्री पार्श्वचंद्र॥ १९ ॥ ढाल ॥ सांभलो शीख हवे उत्तम श्राविया, पुन्य संयोगे भव मानुष्ये आविया ॥ दसह दृष्टांतहि जनम ए दोहिलो, कर्मवशे तुमने ए थयो सोहिलो ॥२०॥ तत्थ वली आरिय खेत्त उत्तम कुलं, जाइ रुवाइ सयलंपि अति निम्मलं ॥ साहु साहुणि सामग्री पामी करो, देव गुरु धर्म अइरम्म निय मन खरो ॥२१॥ दंसण नाण चारित्त रयणत्तयं, आगम परख करी परख दिढ वछयं ॥ वळीय कर बुद्दते कत्थ पाविज्ज ए, पुग्गला संख मणुयत्त जाणिज्ज ए ॥२२॥ जाणिए अंतरो म कर मन पंतरो, दाखव्यो आगमे एह पटंतरो ॥ शुद्ध सम्मत्त मिच्छत्त जुअ जुअ करो, पाली सम्मत्त संसार सा-

यर तरो ॥२३॥ देह संबंध तिय गारवा परिहरी, जाविय जावना अशुचिनी मनधरी ॥ बार जे श्रोत्र ते बार तनु मल श्रवे, देह नारीतणो शौच ते केम हुवे ॥२४॥ मंस पेसी जीसी जुवइ जोखम घणी, संखगुण नरथकी नारी आगम जणी ॥ पापनी राश बहु वास आवी मले, स्त्रीतणो वेद सुह वेदतो संपजे ॥२५॥ कर्मबले महबले सबल माया करी, तित्थकर रूप नृपकुंजघर अवतरी ॥ पुत्रिका मल्लि ए गरुअ अछेरउं, जइ पण स्त्रीपणो एह जछेरउं ॥ २६ ॥ पूर्वला मित्र बह परणवा आविया, अशुचि तनु दाखवी परमपद गाविया ॥ हरि प्रत्ये दीकरी दासी थाशुं कहे, वसिहि कोलीतणे पज्जिय परिजव लहे ॥२७॥ इणिपरे नारि अवधार परवस सदा, विरह वली वरतणे प्रगट परमापदा ॥ जाण एम टाल ऋतुकाल आसातना, श्रुततणी तुम जणी न हुए जवयातना ॥२८॥ डुहा ॥ असज्झाइ सज्झाय जे, जणे गुणंत सुणंत ॥ ते नारी बहु जव जमे, श्री पार्श्वचंद्र पजणंत ॥२९॥ ढाल ॥ दिक्रढीनी ॥ जाणीय पुष्प प्रवाह, अवसर अवसर, संजारे त्रिजुवन धणी ए ॥ हइये धरे बहु दाह, धिग धिग नारीय, जारिय कर्मे जिन जणी ए॥

रहे रहे दिन च्यार, आगम अक्षर, अक्षर मुखथि न उचरेए ॥ नावे सभामजार, ठिवइ न कांइय, लाज काण अति वणी करे ए ॥३०॥ समूर्छिम नरठाण, चउदह थानक, पन्नवणे जिन उचरे ए, तेहनी उतपति जाणी, जयणा निय मन, नियम निरतिशुं खप करे ए; ओरालिय दस भेद, बोलिय ठाणंग, असझाइ ते टालवी ए॥ वळीअ वखाणे छेद, आण इसी जिम, जननी जिननी पालवी ए।३१। सूत्र तणो व्यवहार, जिणवर भाखिय, साखिय जाणो शिवतणो ए॥ त्रिभुवननो आधार, एह म विराधो, साधो स्वारथ आपणो ए ॥ होशे मूरख कोइ, कुमतियें भंभित, कुरु पंडित भाखशे ए ॥ इह दुषण नहु कोइ, आण किसीपर, सूत्र विराधक राखसे ए ॥३२॥ ग्रंथे भाख्यो दोष, मुनिवर जिनवर, प्रतिमा आगल नहु फिरे ए॥ नाणे मन संतोष, हसे न बोलए, वाचा संवर बहु करे ए॥ निंदे गरहे आप, संभालि स्वामिय, पामिय शासन ताहरो ए॥ केम्हे पडियो पाप, संयम तपविणु, काल निफल ए माहरो ए ॥३३॥ जंगम तीरथ साधु, विहग तणीपरे, विहरत आव्या कोइ कहे ए ॥ ए मोटो अपराध, काल विलंवण, नारी वंदेवा लहे ए ॥ एणे अवसरे मुज होय, मरण कि-

वारे, तो जइये निःसंबलाए॥एह ध्यान जसु होइ, दिन दिन दीपइ, चरुती चरुतीत सुकन्ना ए॥३४॥ परदरसणे पण साख, ऋतु विण मैथुन, जे नर सेवा नितु करे ए॥ब्रह्मघात तसु दाखी, जे ए अवगुण, नारी नहु निज तन धरे ए ॥ तो न होय ब्रह्महाणी, कइये पण किमे, कीधां कर्म न बुटियें ए ॥ एक तप संयम प्राणी, श्रुत आराधन, साधन शिवसुख पामीयें ए ॥३५॥ ढाल काव्यनी ॥ श्री वीतराग तुम शासन ए सुचंग, सिद्धांत आराधन धर्म रंग ॥ टालंत आशातन दोष न्नारी, ते मुक्ति पामे नरवृंद नारी ॥३६॥ जिनेंद्रनी वाणी सुधा समाणी, नरेंद्र देवेंद्र सहु वखाणी ॥ हुं विनवुं जोरुी बे बेवि हाथ, होजो सदा श्री अरिहंत नाथ ॥३७॥ प्रन्नात उठी सुणीये तमारी, वाणी तणा न्नाव हिये विचारी ॥ तहत्ति जाणी जिन आण पालुं, संसार संचार अपार टालुं ॥ ३८ ॥ "कलश" इम दोष जाणो हिये आणी श्रुत आशातन टालशे ॥ जिन नाम निर्मल सलिल पामी पापपंक पखालशे ॥ जिन वचने राचो कहे साचो श्री पार्श्वचंद्र कृपा लही ॥ गुरुतणीय सुजो न्नविय बुजो रिद्धिसिद्धि लहो सही ॥ ३९ ॥ इति श्री सिद्धांतआराधनैकोनचत्वारिंशतिका ॥

॥अथ श्री शील दीपिका ॥

सुण सुण कंतरे शीख सोहामणी ए देशी.

ॐ श्री परमगुरुज्योनमः ॥ सुहगुरुभाखेरे भवियणसांभलो । पालेशीलजेतसुकुल निरमलो । निरमलोमनही वचन काया, शीलपालेजेसही । वलिहारिजाउं एकजीभे, तासगुण नसकुकही । इणकालेंथोडा रहसि रहता, नारिनरयोगेंमिले । थूलभद्रजिम विरतिराखे, वेदकर्मविणुटले ॥ १ ॥ जातिकुलव्रतनीरे लज्जा जेवहे । ते मनव्यावतहंधीनिरवहे । निरवहेउत्तम देशविरती, जीवठाणेपंचमे । छठेसत्तमसर्वविरती, एहथीनहुआतक्रमे । भलभला जेछेसाहुसाहुणि, वेदसहित ते भाखीया । जगन्नाथआगमछता तेणें, धन्य जेणे व्रतराखिया ॥ २ ॥ रूपीलखणाजिमजे नहुकहे । मननोचिं-तन छउमछ किमलहे । किमलहेनिरतो, कहेनिरतो जेम लोकें द्रौपदी । नारदेंपूछ्यापंचसाचा,

शीलनिरमलसुरनदी । सहकारवाव्यो वृद्धिपाव्यो, पत्रपुष्पफलेन्नरयो । ततकालमहिमासत्यकेरो, शीलआपणउद्धरयो । ३ वेद उदयजे आवे नावना । तसुब्रतमोहोळ्युंकीइनहीतिणविना । तिण-विना उत्तम काल जेणे, तेहकेवल सिरिवरया । उवसांतमोहें चमीनपड्या ते अणुत्तरअवतरया । ध-नधन्य तेपिण विरतिपाखे, पंचमअंगे अविरती । उपसांतमोहा कह्याजिणवरें, सीजस्ये गतिआव-ती ॥ ४ ॥ वेद सुवेदी पाले शीलजे । आगलपामे मोटी लीलते । तसुलीलमोटी, पवि कबोटी, कालपंचम जेहनी । मंमिज्यो उत्तमकाल सरिसी, शीलरेखा तेहनी । तसुनाससमरण जाएपा-तिक, वंन धरज्यो तनखरो । मनवचनजयणा नणे श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिजेमशिवरमणीवरो ॥ ५ ॥ इति श्री शीलदीपकस्वाध्यायः संपूर्णः ॥

॥ अथ श्री आगम छत्रीशी ॥

॥ ढाळ पेहेली ॥ चोपाइ छंद. ॥

सुहगुरु चरणकमळ प्रणमेसुं, प्रवचन गुण हुं केवि कहेसुं ॥ श्रुत बीजक जोइ जाणीये, नाम ग्रंथ संख्या आणिये. ॥ १ ॥ आगे जिणवर गणधर काल, आगम हूंता अति सुविशाल ॥ मुनिने मुखपाठे आवता, खिण खिण दीठा ते खीजता. ॥ २ ॥ पंचमकाल तणे परमाण, विद्यावंत तणी बहु हाण ॥ देवह्धिगणिए जाणि करी, श्रुतरागे शुभ मति मन धरी. ॥ ३ ॥ हिवणां एक छे पंचम अरो, दसम अछेरो वलि डुत्तरो ॥ भस्मक ग्रह महिमा गहगहे, हुंडाअवसर्पिणि तिहं वहे ॥ ४ ॥ सदा काल संतती मिथ्यात, पंच मलि ए करस्ये घात ॥ त्रिभुवनतारक जिन मत तणो, आगम तेहनो उछंभणो ॥ ५ ॥ आगम समरथ सुख दातार, आगम तीरथनो आधार ॥ आगम जामलि कोइ नहीं, आगम महिमा मोटी कही ॥ ६ ॥ श्री जिन आगमने आधार,

अनंत जण पहुंता जवपार ॥ वत्नि अनंत मुक्ति पहुचशे, सबल कर्म्मनो बल वंचशे ॥ ७ ॥ द्वि-वर्मां जे पहुंचे इण काल, ते पण आगम मत प्रतिपाल ॥ थोके बहु बहु सुं जाखिये, इण कारण आगम राखिए ॥ ८ ॥ बहु आगम विछित्तियें गया, जे छे ते पण थोमां थयां ॥ एटला पण जे किमइ रहे, तो जन सूधो मारग लहे. ॥ ए ॥ इम लिखि श्रुत बहु जयणा करी, कर्यो काज तीरथ उधरी ॥ देवर्द्धिगणि जयो गुणवंत, क्षमाश्रमण वंडु जगवंत ॥ १० ॥ पहेलुं श्री आवश्यक जणुं, उह अध्ययने गुण संथुणुं ॥ (१२५) पंचवीस अधिको शत एक, ग्रंथमान जाणे सविवेक ॥ ११ ॥ दस अध्ययन डुन्नी चूलिका, पाप रोग वारण मूलिका ॥ दसवैकालिक श्रुत (७००) सातसें, तसु नामे मुज मन उल्लसे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ गौतम स्वामीना रासनी, वीर जिणेसर चरणकमल कमला कय वासो, एराग ॥

उत्तराध्ययने सहस डुन्नि (२०००) अध्ययन(३६) छत्रीस, तासु नाम गुण मंत्र जिम समरुं निसदीस॥ आचारंगे (२५) पंचवीस अध्ययन संजारुं, बिहु खंधे उद्देस (८५) असी वली पंच विचारुं ॥१३॥ सत्तउ

चउ चउ छह्य पंच अरू(ण)चउ अठ केरा, एगारस तिति दु ङ दु दुन्नि इक सरग अनेरा॥ सोल उद्देसा एक ऊधृण कीधोविछेद, नहु लिखियो किणहि विशेष ते न लहु भेद॥१४॥पंचवीशसत ग्रंथमान(२५००) हिवे बीजो अंग, सहस दुन्नि (२०००) जसमान तेय सिरि सूयगडंग॥ चउ तिति दुदु इम पंच ल-गी चउदह उद्देसा, इक सरगा अध्ययन अवर त्रेवीस असेसा ॥ १५ ॥ ठाणांगे अध्ययन जाण दस पनर उद्देसा, तिन्नि सहससय सत्तसठी (३७६०) जिह वहु अविसेसा ॥ चोथे अंगे एक थकी समवाय विचार्या, कोडाकोडी सीम सुगुरु वचने मन धार्या ॥ १६ ॥ एक खंध एक सहस छसय सत्तसठि (१६६७) परिमाणे, एहना जे छे भाव तेह गीतारथ जाणे ॥ पंचम अंगे सतक संख ए-कसो अडतीस (१३८), उद्देसक तिह एक सहस नवसय पंचवीस (१९२५) ॥ १७ ॥ पनर सहस सय सत्त सठि (१५७६०) ए ग्रंथ प्रमाण, छठे अंगे खंध दुन्नि तिह पहिले जाण॥ एगुणवीस (१९) न्याय बे बीजे दस वग्ग, धम्मकहा अड्डुठ कोडी तिह मिलिय समग्ग ॥ १८ ॥ छ सहस (६०००) संख्या ग्रंथतणी हिवे सत्तम अंग, खंध एक अध्ययन दसय श्रावक गुण चंग॥ अडसय बारुचर

(८१२) प्रमाण अंग अठम जाणुं, अठ वग्ग अध्ययन नेवु तसु विगत वखाणुं ॥ १९ ॥ पहिले दस अरु बीय वग्गि तेरह तह त्रीजे, दस चोथे दस पंचम ए छठे सोल गणीजे ॥ तेरह सत्तम अठम ए दस एह प्रमाण, अठमंग अध्ययन तणो जाणो नवियण जाण ॥ २० ॥ नव अधिक सय अठ (८०९) ग्रंथ अनुत्तर उववाइ, नवम अंग (१०२) सत एक उपर बाणुइ कहाइ ॥ त्रण वर्ग दस तेर दसय अध्ययन तेत्रीस, दसम अंग परिमाण कहेशुं मन आणी जगीश ॥ २१ ॥

॥ ढाळ त्रिजी ॥ जमावसीनी देशी ॥

जिह आश्रव संवरनो विचार, तिह बोल्या दस अध्ययन सार ॥ बारहसय साढा (१२५०) ग्रंथमान, पन्हवागरणंग सुगुण प्रधान ॥ २२ ॥ दुख अने सुख नाना विन्नाग, जसु श्रवण टले संसार राग ॥ बारहसय सोल (१२१६) अध्ययन वीस, अगीयारमांगे मन जगीश ॥ २३ ॥ हवे कहियेछे बार उवंग, ते सुणो नवि मन धरी रंग ॥ उववाइय पनर सय (१५००) प्रमाण, तिह अंबरुचिय वंदनह ठाण ॥ २४ ॥ वली रायपसेणी सहस दुन्नि, अरुसत्तरी (२०७८) अधिका धरु

मन्नि ॥ हिवे जीवाभिगमे सहस च्यार, सय सत्त (४७००) ग्रंथ संख्या विचार ॥ २५ ॥ सग सहस सत्यासी अधिक सत्त, सय (७७८७) पन्नवणा भावे विचित्त। चउसहस तहा इग सय ठयाल, (४१४६), जंबुद्विपपन्नत्ति गुण विशाल ॥ २६ ॥ दो सहस दुन्निसय (२२००) [1]ससिपन्नत्ति, दो सहस दुन्निसय (२२००) [2]रविपन्नति ॥ हिवे पंच उवंगे सत अगियार, नव (११०९) अधिका तिह बहुला विचार ॥ २७ ॥ तिहां पहेलो निरयावलि जाण, अध्ययन दस महिमा वखाण ॥ दस झयणे कप्पवरंसयाय, त्रीजो दस झयणे पुफ्फियाय ॥ २८ ॥ पुप्फचुलिय चोथो ए उवंग, अध्ययन दसय बोल्या प्रसंग ॥ वन्हियदसा पंचम विचार, अध्ययन बार नव नव प्रकार ॥ २९ ॥ इम पंच उवंगे पंच वग्ग, अध्ययन मली बावन समग्ग ॥ हिवे छेद ग्रंथना कहिस्युं नाम, ते समरि समरि करीयें प्रणाम ॥ ३० ॥

---

१ चंद पन्नति. २ सूर पन्नति.

॥ ढाळ चोथी. स्वामिओए वीरजिणंद पुनिमचंद जिम उलसिय—एराग ॥

अठसय ए पनर (८१५) निशीथ, वीस (२०) उद्देसा सवि मीलीए॥ शीखवे ए सुगुरु निशीथ[३] सीस उत्तम मन अटकलीए॥ त्रिहुतरी ए अधिक सत चार (४७३) वृहत्‌कल्पे उद्देस छह, छयें ए (६००) श्री ववहार दस उद्देसा गुण गुहिर ॥ ३१ ॥ श्रुतदसा ए अढारसय त्रीस (१८३०) जिण जाणिया दस अझयण, अगियारसें ए उपरि तेत्रीस (११३३) पंचकल्पे बहुगुणरयण ॥ छट्ठो ए महानिशीथ (४५००) च्यार सहस्स सय पंचहिय, एटलो ए जेहनो ग्रंथ एकहत्तरी उद्देस सहिय ॥३२॥ एहनो ए जे परमथ्थ अर्ढरत्तें सुहगुरु कहे ए, तेहनो ए जाव गीयथ्थ निरतो गुणनिधि गुरु लहेए ॥ उद्धर्यों ए पंचमकाळ बहुश्र आचारजें इम कह्योए, नहु मिले ए तसु अंतराल छंन्दिय मिलतो संग्रह्योए ॥ ३३ ॥ सातसें (७००) ए नंदीविस्तार इक ऊणा ओगणीससय, एटलो (१८९९) ए अनुयोगद्वार बहुश्र पइन्नाश्रुत जाणीय ॥ ते सहु ए मुज प्रमाण जे आगम

---

३ रात्रिमां ४ मध्यरात्रिमां

सरिसा मिलेए; प्रकरणु ए जे जिनआण ते आगम जामलि तुलए ॥ ३४ ॥ चउदह ए पूरवधार दस पूरवधर जे कह्याए, तिह नही ए कोइ विकार केवळी जिम ते उच्चार्याए ॥ दसथकी ए पूरव उण तेह विसे भजना कहीए, क्रिमकहु ए नाण विहूण इम छे श्रुत भाख्युं सहिए ॥ ३५ ॥ (कलश) इणि परे सुविशाले पंचम काले जे आगमगणि उद्धरिय, पुस्तक लिखिराख्या जिनवर भा रुया भवियण हितकारण करिय ॥ तसु नाम पमाणं गणि पहाणं बीजकजोइ स्मृति भणिय, ए चिहुंवर छंदे मन आणंदे पार्श्वचंद्र सूरि दे भणिय ॥ ३६ ॥

॥ अथ श्री गुरु छत्रीशी ॥

॥ चोपाइ छंद. ॥

रिषभ प्रमुख जिनवर चोवीस, विहरमान तिर्थंकर वीस ॥ विचरे दुन्नि कोडी केवली, प्रह उठी वंदो मन रली ॥ १ ॥ साधु शिरोमणि बिसहस कोडि, ते नितु प्रणमो बे करजोडि ॥ कर्मभूमिका पनर मांह, जघन्य पदे बोल्या जगनाह ॥ २ ॥ तसु पयकमल भ्रमर जिम लीण,

दुसमकाल अतिसय हीण ॥ कर्मयोग भरतें अवतर्यो, बहुमत देखी संशय भर्यो ॥ २ ॥ ते संशयनो भंजणहार, एक अरिहंतज जगदाधार ॥ ३ ॥ हिवमा तेहने विरहे करी, असंयति पूजा विस्तरी ॥ ४ ॥ आज थया वरस सय सात, विरला जाणे प्रवचन वात ॥ कीधा कल्पित ग्रंथ अनेक, प्रवचन प्रकरण भाषे एक ॥ ५ ॥ श्रीश्रुत ढांकी मूक्यो दूर, प्रकरण कहे भगमते सूर ॥ द्रव्यत देव गुरु धर्म कह्या, भोळे भावतणे भ्रमे ग्रह्या ॥ ६ ॥ एक गामे चोरासी थया, मांहो मांहे सहु जुजूवा ॥ निज निज चैत्य संघ मन वस्यो, एह किम लाभे सासन कस्यो ॥ ७ ॥ पडियो लोक गाडरि प्रवाह, राशिबद्ध जिम ताण्यो जाय ॥ परदरशन जे दीठो बहु, नाम फेरि ते मंड्यो सहु ॥ ८ ॥ एक कहे प्रतिमा एकली, घर पूजंता न हूवे भली॥ मल्लि नेमि श्रीवीर जिणंद, जिणदीठे हुवे परमाणंद ॥ ९ ॥ तेहनी प्रतिमा घर नाणियें, इम कहेतां किम गुरु जाणीयें ॥ एक कहे स्त्री पूजे नहीं, दोवइ पूजी आगमे कही ॥ १० ॥ एक जैन जोमावा गणे, लाभ हानि जिन पूज्ये भणे ॥ करे प्रतिष्टा आपणे हाथ, करे जात्र

जळनी जइ साथ ॥ ११ ॥ मुखे जिन प्रतिमा पूजा कही, तेह मुखे वळी बोले नहीं ॥ माहरी मात अने वांजणी, एह वात जेणे साची गणी ॥ १२ ॥ बोले निज निज गुरु अवदात, बह कायनो जिहांछे घात॥ एक कहे वरसाव्यो मेह, रोग रहित कीधो निज देह ॥ १३॥ न्नोंय उपर आएया श्री पास, तो तेहनी तेणे पूरी आस ॥ एहवा बोल अनाहत कहे, मुग्ध लोक कांइ नवि लहे ॥ १४ ॥ आराधि एके चामुंरु, तेणे जे कीधो पाप प्रचंरु ॥ तेह वात तो में न कहाय, न्नोळाना तेहज गुरु थाय ॥ १५ ॥ नदीमांही पेसी साधियो, बलिबाकुल सुर आराधियो॥ जीव तणी हिंसा नव गणे, तेहने पण गुरु गुरु मुख न्नणे ॥ १६ ॥ एक कहे बांधी वीजली, अमावासनी पूनम करी ॥ वरु उपाश्री चलाव्यो साथ, जिन आशिस दिये निज हाथ ॥ १७ ॥ इम

---

१ ॥ तित्थोगाली पयन्ना मध्ये ॥ हो हिंतिय पासंडा, मंतक्खरकुहग संपउत्ताय ॥ मंडल मुद्दा जोगा, दंस उच्चाडण परायदंडं ॥ १ ॥ ते हिं मुसिज्जमाणो, लोगो सच्छंद रइय कव्वेहिं ॥ अवमग्गिय सब्भावो, जाओ अलिभोय पलिओय ॥२॥ हो हिं ति साहुणो बिय, सपक्ख निरावक्ख निद्दयाणियं ॥ समण गुण मुक्क जोगी, केई संसार च्छेतारो ॥ ३ ॥ हिति हीति गुरुकुलवासो, मंदाय मतीय समण धम्मंमि ॥ एयंतं संपत्तं, वहु मुंडे अप्प समजेय ॥ ४ ॥

कहेता हुवे आसातना, तेहने बोली सुप्रभावना ॥ कणयरनी कंबा फेरवी, सौगतहणी यात्रा कारवी ॥ १८ ॥ साधर्मीना भोजन भणी, संघ तणे मन आरति घणी ॥ ताणी मंत्री बहु घृत आणीयो, तिणे ते साचो गुरु जाणीयो ॥१९॥ लोक कुगुरु धूर्ते धूतियो, मिथ्यामत वाहिणी जोत्रीयो ॥ कल्पित ग्रंथ पुराणे करी, वहे मान खंधे धूसरी ॥ २० ॥ राग दोष तेणे कर्यो प्रमाद, पण जे भाखे ए विधिवाद ॥ पंचमें अंगे प्रगटज कह्यो, तेय भाव तेणे नव लह्यो ॥ २१ ॥ विण आलोवे काल करंत, ते अणगार विराधक हुंत ॥ विधि वादे आलोयण नहीं, एह मर्म ते न लहे सही ॥ २२ ॥ एवं आदि कहिये केटला, बहु विरुद्ध दीसे जेटला ॥ पण देखाड्यो वानकी मात्र, थोरे बहु जाणो मति पात्र ॥ २३ ॥ दसमो अछेरो गहगहे, विरलो कोइक मारग लहे ॥ इण अवसर गुरु पण दोहिला, साधु किम लाभे सोहिला ॥ २४ ॥ जगन्नाथ तीरथ जगमगे, वरस सहस एकवीसह लगे ॥ ते बे प्रवचनने आधार, गुरु सुसाधु तेने अनुसार ॥ २५ ॥ सुधो भासे ते गुरु जाण, जे पाळे ते साधु वखाण ॥ पाळे पण साधु नवि कहे, समकित विन चारित्र

किम लहे ॥ २६ ॥ सूधे कहिवे दंसण सही, चारित्रनी तिह भजना कही ॥ इण कारण प्रवचन ऊलखो, शिवपुर जाता पूठी रखो ॥२७॥ दस पूरव लगे सूत्र कहाय, भिन्न विषे तसु भजना थाय॥ इस्या वचन गुरु मुख सांभली, प्रकरण सूत्र एक मति टली ॥ २८ ॥ वली जे सूत्र संघाते मले, ते प्रकरण आगमसम तुले ॥ मलतो अणमळतो जे हुस्ये, श्रुत सांभलि बहुश्रुत जाणस्ये ॥ २९ ॥ रागी मति कल्पी बोलिये, वीतराग वचने तोलिये ॥ एह असमंजस जे कोइ कहे, म्हाह्यो हुवे ते किम सद्दहे ॥ ३० ॥ इण कारण जिन भाषित सही, इण जामली कांइ बीजो नहीं ॥ तेह छे जीवाजीव विचार, एक एकना घणा प्रकार ॥ ३१ ॥ तेह तणो हुं पार न लहुं, सारभूत परमारथ कहुं ॥ विधिवादे हिंसा उपदेश, मिथ्यामतनो एह निवेस ॥ ३२ ॥ जे उपदेशज छे निरवद्य, विधिवादे ते लहे सावद्य ॥ धर्मारथ कामारथ सही, हिंसा लव जिन वचने नही ॥ ॥ ३३ ॥ एह साख श्री आचारंग, अध्ययन चोथे बोले रंग ॥ धर्म मूल समकित अधिकार, जोइ लेज्यो चतुर विचार ॥ ३४ ॥ श्री जिन छहकाय हितकार, जगजीवन जगना आधार ॥

सर्व त्रस थावरना दुख लहे, आप समाणी वेदन कहे ॥ ३५ ॥ इस्यो जाणी कोइ हणीये नहीं, वाणी मधुर जिनवरनी कही ॥ जे भाखे तेहने अनुसार, ते साचो उपदेश विचार ॥ ३६ ॥ एह वचन साचा सद्दहे, भवियण आगळ साचा कहे ॥ तेह सुगुरुनो समरी नाम, पार्श्वचंद्रसूरि करे प्रणाम ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्री पाखी छत्रीशी ॥

॥ चोपाइ छंद ॥

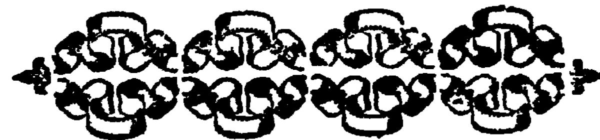
प्रणमीए पहिलो वीर जिणंद, भविय कमल पडिबोहे दिणंद ॥ पभणेसु पाखी तणो विचार, करी साख जिन आगमसार ॥ १ ॥ केइ कहे पाखी चउदसे, केइ कहे पुनम अमावसे ॥ इहनो निर्णय तो जाणीये, जो प्रवचन हियडे आणीये ॥ २ ॥ पनर दिवसे जे बोल्यो पक्ख, काल सरुप ते जाणे दक्ख ॥ पाखी भाखी पोसह काज, दिन गणवे ते नहु जिनराज ॥ ३ ॥ पाखी पक्खे मासे मासी, पक्खे पहुंचे किम चउमासी ॥पंच दिवसे पाखी थको, संवत्सर बोली किम शको ॥४॥

संवछर हुंती दस दीह, किम हुइ पाखी जोइ निरीह ॥ ऊष्टिराग जे नव मुंकस्ये, सत्य वचन ते जन चूकस्ये ॥५॥ प्रगट नाम जिन आगम लहो, दिन गणवा किण कारण कहो ॥ पर्व जाणी पोसह पालिये, दिन गणवानो भ्रम टालीये ॥ ६ ॥ दिन गणतां आवे चउदसी, मुख कहिये पुनम अमावसी ॥ प्रगट मृषा ए लागे सही, करिये अवर अनेरो कही ॥ ७ ॥ जिण तिथिमांहिं सूर उगमे, तेहज दिन अहनिशि संक्रमे ॥ उदयिक तिथि ते करो प्रमाण, मूल सूत्र छे एहनो ठाण ॥ ८ ॥ चंद सूरपन्नत्ति उवंग, भगवइ नामे पंचम अंग ॥ पडिक्कमणा वेला छे जिहां, सूत्र साख विण कहिये किहां ॥ ए ॥ अंतो पक्ख भणि पूनमे, पाखी पडिक्कमणो अम्हगमे ॥ एम कहे ते न लहे सही, अंतो कहेतां अंतज नहीं ॥ १० ॥ मध्यतणो इह जाणो अत्थ, गुरु पूछी जाणो परमत्थ ॥ श्रुत भाखे माणिस संदेह, अंतो म कहि पक्खनो छेह ॥ ११ ॥ अंतो जे आव्यो अवसाण, तत्ते एक मात्र तो जाण ॥ वयण विभत्ति होय सत्तमी, एक वचन जाणे संजमी ॥१२॥ मात्र सहित कानो छे जिहां, वयण विभत्ति कांइ नहु तिहां॥ शब्दशास्त्र अव्यय पद एह, अर्थ

विचालानो छे तेह ॥ १३ ॥ चउदस अने अमावस बेउ, बीजे पखी पूनमने लेव ॥ बिहुं दिवस जे पोसह होइ, पाखी चउत्थ किसी परे जोइ ॥ १४ ॥ कह्यो छठ चोमासा त्रणी, बिहुं दिवसनी संख्या गणी ॥ एक चौदस बीजो पूनमे, बे उपवास हुए अनुक्रमे ॥ १५ ॥ पंचम अंगे शतक पनरमें, जाण्यो चोमासो पूनमे ॥ पछुवे दिन श्रीवीरविहार, साधु सहुनो एह आचार ॥ १६ ॥ निशि पडिकमणो दिन न कराय, दिन पडिकमणो निशि न थाय ॥ पाखी चौमासी दिन केम, चौमासो पाखी दिन एम ॥ १७ ॥ पाखी चौमासी जूजुवा, इक पडिकमणे बे किम थया ॥ देसी पाखी नहु मूकिये, त्रिहुं पाखीथी किम चूकीये ॥ १८ ॥ चौमासी पडिकमणा तिन्नि, देसी पाखी मन्निया दुन्नि ॥ त्रीजो चोमासो जोइये, जुगते करी जुगतो होइये ॥ १९ ॥ अट्ठमि चौदसि ने उद्दिट्ठ, पूनम आगमए दिन दिट्ठ ॥ पोसह श्रावकने अधिकार, चरित यथास्थित एह विचार ॥ २० ॥ विधिवादे ए नहु उपदेश, जिनविधि जाणो अधिक न लेश ॥ पाखी संखे पोसह कीध, पुक्खलीसाहमी भोजन दीध ॥ २१ ॥ कुमर सुबाहु पोसह बहु, विपाक श्रुत ए जाणे सहु ॥

करतो चिहुंने ठामें वार, पोसह त्रिण नंदमणियार ॥ २२ ॥ तिण कारण ए नहु विधिवाद, इण दिवस परिहरि प्रमाद ॥ कीधा करतां पोसह थाय, सहु यथास्थित चरित कहाय ॥ २३ ॥ पोसह करवानी विधि जाण, काल ते सघला दीह वखाण ॥ उत्तरज्झयण जएयो पंचमे, जिनवरवचन कवण अतिक्रमे ॥ २४ ॥ अरिहंत तणा महा कल्याण, दिक्षा ज्ञान अने निर्वाण ॥ ए उचित पोसह अधिकार, पूनम त्रीहुं चोमासे सार ॥ २५ ॥ सूत्रअर्थ जगमांहि अछोप्त, चोथे अंगे दीधो थाप्त ॥ सूयगडांगने अर्थे जोइ, श्रुत मिलतो माने सहु कोइ ॥ २६ ॥ नव पूनम बार अमावसी, पाखी बुझे नहु मन वसी ॥ इण कारण पाखी चउदसे, जाणी जोइ कसी आगम कसे ॥२७॥ पर्यूषणाथी सित्तरी दीस, चौमासी पडिकमण जगीस ॥पछे प्रथम सित्तरि पंचास, चोथे अंग इणह प्रकाश ॥ २८ ॥ चोथ करते एक अधिको थाय, जिणवर तणी आण लोपाय ॥ एक दिवस तिण पाछो कर्यों, पाखी नाम तिहां उच्चर्यो ॥२९ ॥कल्पसूत्रनो जेहछे अत्थ, तेह थकी जाणो परमत्थ ॥ संप्तल वली दसासुयखंध, वर्धमान जिनवर संबंध ॥ ३० ॥ मल्ल लच्छगण राय अढार,

निरतिचार बारह व्रतधार ॥ तण थाप्यो पोसह मावसे, वीरनिर्वाण थया तिण मिसें ॥ ३१ ॥ हिव गया जिन भावउद्योत, करीस्युं इहां द्रव्यउद्योत ॥ दीवा कहतां श्रुति नहु मिले, श्रावक आश्रव हुंती टले ॥ ३२ ॥ थाप्यानो वली स्युं थापिये, कीधानो स्युं करी आपीये ॥ हुंतो पोसह पाखी भणी, तो थापे स्युं गणना धणी ॥ ३३ ॥ उद्दिष्ठे कल्याणक सर्व, पूनम चोमासानो पर्व ॥ इण कारण पाखी चउदसे, जाणी म पडिश मतने वशे ॥ ३४ ॥ जलधि वृद्धि नागादिक भत्ति, शेलग जद्दृतणी बहु सत्ति ॥ तिहोद्दिष्ठ अमावस कही, लौकिक लोकोत्तर इक नही ॥ ३५ ॥ पंचमी पोसह संवछरी, केम करे श्रावक संवरी ॥ चिहुं तिथि अधिक पर्व न होय, चतुर चेत चित्त चिंती जोय ॥ ३६ ॥ अभिनिवेस भवियण परिहरो, आगम ऊपर आदर करो ॥ पाखी चौदस दिन सद्दहो, श्री पार्श्वचंद्रसूरि सुख लहो ॥ ३७ ॥



॥ अथ असज्झाइविचार. ॥

असज्झाइ क्यारे क्यारे अने क्यां क्यां सूधी लागे छे तेनो विधि नीचे मुजब छेः—

आकाशनी अंदरथी ज्यां लगी सूक्ष्म (झीणी) रज पड्या करती होय त्यां लगी असज्झाइ गणाय छे. तथा जेटला वखत लगी धुमस गर्या करतो होय त्यां लगी असज्झाइ गणाय छे. धुमस गरवाथी सघली जमीन अप्पकाय (पाणीना जीव) मय थइ रहे छे, जेथी ते समये पंचमहाव्रतधारी साधु उपाश्रयनी अंदर कांबलीवडे सघलां अंग उपांग अने म्होंं वगेरे ढांकी तथा अंगोपांग हलाव्या विना बेसी रहे अने ज्यारे धुमस गरतो बंध पडे त्यारे तमाम क्रिया करवी, जेथी जीवदया सचवाय छे. तथा आकाशमां देवतानुं करेल गांधर्वनगर देखाय, तेमज उल्कापात (तारानुं खरवुं—वीजलीनुं पडवुं, वगेरे उपद्रवीय कारण) थाय, अथवा उल्का पडतां तेजमय रेषा अने अजुवालुं देखाय छे ते, तथा कणग एटले जेना पडवा

पछी रेषा अजुवालुं न देखाय ते, अने दिशिदाह एटले के दशे दिशा सलगता प्रचंड अग्नि समान लाल देखाय, ते समयमां पण असज्झाइ लागे छे. एउनुं देखावुं ज्यारे बंध पडे त्यारे एक पहोर पछी असज्झाइ निवृत्त थाय छे. तेमज वर्षाऋतुमां ७ कणग, शियालामां ५ अने उन्हालामां ३ कणग पडे तो ४ पहोर लगी असज्झाइ लागे छे. वगर समय विजली ऊबके तो १ पहोर लगी असज्झाइ लागे छे. आषाढी चोमासी प्रतिक्रमण कर्या पछी पडवाना दिवसे असज्झाइ लागे छे, ते बीजने दिवसे निवृत्त थाय छे. (आ संबंधी श्री ठाणांगजीमां चतुर्थ स्थानना बीजा उद्देशामां कह्युं छे के–" नोकप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा चउहिं महा पडिवएहिं सज्झायं करित्तए तं असाढपडिवए १, महपडिवए २, कत्तिअपडिवए ३, गिम्हपडिवए ४ " कार्तिक चोमासीए पण एज प्रमाणे असज्झाइ लागे छे. आशो शुदि पांचमना बे पहोरथी मांडी कार्तिक वदी पडवा लगी असज्झाइ लागे छे, ते बीजने दिवसे (असज्झाइ) मटे छे. " चैत्र शुक्ल पंचमी मध्यान्हादारभ्य वैशाखवद प्रतिपदं यावदस्वाध्यायः, अत्रायं विशेष. " एवीज रीते चैत्र

शुदि ११ थी मांडी पूनमना दिवस लगी त्रण दिवस "अचित्त रजउड्डावणी करेमि काउसग्गं" लोगस्स ४ नुं चिंतवन करवुं. कदाचित अगीआरसना दिवसे याद न रहे तो बारस तेरस चौदशना दिवसे, तथा बारसे न सांभरे तो तेरस चौदश पूनम लगी चार चार लोगस्स चिंतववा. तेरसने दिवस न सांभरे तो आवता चैत्र लगी ज्यां सुधी धूल उडे त्यां सुधी असज्झाइ लागे छे. तेमज ज्यां लगी बे राजाउ वच्चे क्लेश चालतो होय, तथा म्लेछादिकनो भय होय, उपाश्रयनी नजीक स्त्री पुरुष लडे अथवा होली पर्वनी धूड उडे त्यां लगी असज्झाइ लागे छे. तथा राजाना मरणथी मांडी नवो राजा गादीए न बेसे त्यां लगी असज्झाइ लागे छे. गाममां कोइ वगर विचार्युं कार्य के विचार अमलमां मूकायो होय (असमंजस प्रवर्ते) तेनो निकाल जो न लावे तो ८ पहोरनी असज्झाइ लागे छे. उपाश्रयथी सात घर लगीमां कोइ प्रसिद्ध पुरुषनुं मरण थाय तो अहोरात्रि लगी असज्झाइ लागे छे. "नगर प्रधान पुरुषे मृते प्रहराष्टकं यावद् स्वाध्यायः" तथा बीजा सामान्य पुरुषनुं मडदुं उपाडया पछी असज्झाइ मटे छे. तिर्यंच (पशु)नुं कलेवर उपाडी गया पछी असज्झाइ मटे छे. तथा "आचार्य,

महर्द्धिक, कृतानसनमहातपस्वि, बहुस्वजनवल्लनमरणे दिनत्रयं यावद स्वाध्याय एकदिनेऽप्युपवास अन्येषां मरणे ऽयमपिन " तेमज तिर्यंचनुं लोही पड्ये, इमां फूट्ये, गाय वियाय ने ज्यां मेली पडे त्यांथी १०० हाथ लगी त्रण पहोरनी असज्झाइ लागे बे. मनुष्यनुं लोही पड्या बतां उपाडी लीधुं होय तो पण एक अहोरात्री लगी असज्झाइ लागे बे. तथा ज्यां घणी मेघवृष्टि थइने जमीन धोवाइ साफ थई गई होय तो थोडी वेला वीत्या पबी असज्झाइ मटे बे. तथा घडीरात्र बाकी होय ते वखते मनुष्यनुं लोही पड्या बतां उपाडी लीधुं होय तो सूर्य उग्या पबी असज्झाइ मटे बे. तेमज ज्यां मनुष्यनुं हाडकुं पड्युं होय त्यां १२ वर्ष लगी असज्झाइ लागे बे. तथा दांत दाढ पड्या पबी शोध्या बतां न जडे तो " दंत उडहावणियं करेमिकाउसग्गं. " एम बोली १ नवकार चिंतववाथी असज्झाइ मटे बे. तेमज बिलाडी उंदरने जीवतो ने जीवतो लइ जाय तो असज्झाय न होय अथवा विणासीने लइ जाय तो १ अहोरात्री लगी असज्झाइ लागे बे. तिर्यंचनां अवयव तथा लोही पडवाथी ६० हाथ लगी असज्झाइ लागे बे. मनुष्यनुं रुधिर तथा तेना अवयव पड्याथी १००

हाथ लगी असज्झाइ लागे छे; पण वचमां गारुं नीकळी शके तेवो मार्ग होय तो न लागे. तथा स्त्रीने महीने महीने स्त्रीधर्म (अटकाव) आवे तो ३ दिवस असज्झाइ लागे छे. जे स्त्रीने लोहीवा होय तो त्रण दिवस रजोदर्शनना वीत्या छतां पण रुधिर वहे तो असज्झाइ उहावणि लोगस्स १ नो काउसग्ग कर्या, पछी १ पहोर वीत्ये असज्झाइ मटे छे. आगल उल्कापातथी लागती असज्झाइ संबंधी लखाइ गयुं छे; पण जो आर्द्रा नक्षत्रथी मांडी चित्रा स्वाति नक्षत्र लगी गाज वीज थाय तो असज्झाइ लागती नथी. तथा भूमिकंप–धरती धूजे तो ८ पहोरनी असज्झाइ लागे छे. तथा आग लाग्यो होय ते न ओलाय त्यां सुधी असज्झाइ, तथा चंद्रग्रहण ग्रस्तास्त थयेल होय तो उत्कृष्टपणे १२ पहोरनी असज्झाइ लागे छे; कारण के–उगेलोज चंद्र ग्रसायलो अथवा खग्रास होवाथी ग्रसायलोज रात्रिने अंते अस्त थयो होय तेथी ए पूर्णिमानी रात्रिना ४ पहोर अने पछवेनी रात तथा दिवस मली ८ पहोर, एम १२ पहोरनी असज्झाइ गणाय छे. अथवा कोइ साधु न जाणतो होय के ग्रहण क्यारे थशे, मात्र एटलुंज जाणतो होय के आज पूनम होवाथी ग्रहण थशे; तथापि

वादलां थवाथी चंद्रने प्रथम ग्रसायलो जोइ शके नही; पण प्रभाते चंद्रास्त समय ग्रसायलो नजरे
पडे तेथी ते रात्रिना चार पहोर लगी अने आवता दिवसनां अहोरात्री मली पहोर १२ नी असज्झाइ
लागे ठे. पण ग्रस्तास्त के खग्रास चंद्रग्रहण न होय तो जघन्य रीते पहोर ८ नी एटले के पून-
मनी रात्रीना अंते चंद्रग्रहण थयुं होय अने पकडायलो आथमी जाय तो अहोरात्रीनी असज्झाइ लागे
ठे. पण ते वचमां ग्रहण थयुं होय तो मध्यम असज्झाइ गणाय ठे, एटले के जे रात्रे चंद्र पकडायो तेज
रात्रे १ घडी रात्र बाकी रहेतां मुक्त थयो तो सूर्य उग्ये असज्झाइ मटी जायठे. सूर्यग्रहण होय तो
१६ पहोरनी असज्झाइ लागे ठे; कारण के उत्पात ग्रहणमां उगतो सूर्यज घेरायो अने घेरायलो
ज आथम्यो तो ते दिवसना ४ पहोर, रात्रिना ४ पहोर अने आगलनी अहोरात्री एम १६ पहोर
गणाय ठे. अथवा कोइ साधु एम न जाणे के अमुक वखते सूर्यग्रहण थशे, मात्र एटलुंज जाणे के
आज ग्रहण थशे. वादल ठतां सूर्य उदयथी प्रारंभी सज्झाय बंध पाडे ते ४ पहोर तथा अस्त
थवा वखते वादल दूर थये घेरायलो अस्त थतो जोवामां आव्यो तो ते रात्रिना पहोर ४ अने

अगामीनी अहोरात्रीना ८ पहोर एम १६ पहोर असज्झायनी मर्यादा छे. जघन्यपणे १२ पहोरनी असज्झाइ लागे छे एटलेके अस्त थतो सूर्य घेरायलोने घेरायलोज आथम्यो जेथी ते रात्रिना ४ पहोर अने बीजा दिवसनी अहोरात्रीना ८ पहोर मळी १२ पहोर थाय छे. ए मर्यादानी वचेनो भाग मध्यम असज्झाइ मनाय छे, एटले के जे दिवसे घेरायो तेज दिवसे मुक्त थयो तो फक्त चार पहोरनीज असज्झाइ गणाय छे.–"पुत्रे जाते शतहस्त मध्ये दिन सप्तकंयावदस्वाध्यायः, पुत्र्यांजातायांतु दिनाष्टकमस्वाध्यायः, स्त्रियारक्तोत्कटत्वात्"–पुत्रनो जन्म थयो होय त्यांथी १०० हाथ लगी ७ दिवस पर्यंत अने पुत्रीना जन्मस्थलथी १०० हाथ लगी आठ दिवस पर्यंत असज्झाइ लागे छे, तथा बारे मास परपोटा थनारा वर्षादनी वृष्टि थाय तो अहोरात्र ऊपर ज्यां सुधी वरसे त्यां सुधी असज्झाइ लागे, परपोटा रहित वरसे तो बे अहोरात्र उपरांत असज्झाइ, पण न्हानी फरफर वरसे तो सात अहोरात्री लगी असज्झाइ लागेछे. तथा प्रभात–(सूर्येऽनुद्गते), मध्यान्ह, अस्तमन समय अने अर्धरात्री ए चार संध्या समय तथा अजुआले पखवाडे पडवा, बीज,

त्रीज लगी रात्रिना पहेले पहोरे असज्झाइ लागे छे. आ प्रमाणे ४२ असज्जय. ॥ पाखीनी रात्रि पण सज्जाय न सूझे "युपकनामा अस्वाध्यायो भवति"—आनुं विस्तारपूर्वक वर्णन समाचारी शतकथी जाणवुं. आ प्रमाणे असज्झाइनो विचार छे. असज्झाइ संबंधी अर्थात् अकाले स्वाध्याय करवाथी दूषण लागे एम श्री ठाणांगजीना चतुर्थ स्थानकना बीजा उद्देशामां कह्युं छे के—" सुअनाणं मिअभत्ती १, लोगविरुद्धं २, पमत्तछलणाय ३, विज्जासाहणवेगुण ४, धम्मया ५. एवमाकुणसु —" इत्यादि इत्यादि—



॥ अथ श्री अस्वाध्याय सित्तरी ॥

(चोपाइ छंद.)

श्री गुरुपयनमि नामीशीश, सूत्र ज्ञणणविधि कहणि जगीस ॥ ज्ञणिये गुणिये जिणि परि नही, ते पुण कहिशुं गुरुमति लही ॥ १ ॥ अर्थ प्रकाशे श्री अरिहंत, सूत्र रचे गणधर गुणवंत ॥ सूत्र अर्थ इम दोय प्रमाण, परंपरागम ज्ञाखे जाण ॥ २ ॥ आगम कहिये त्रिज्ञुवन सार, आगम ज्ञवियण तारणहार ॥ तेहवो जगमां कोइ न लहुं, आगमनी जामलि जे कह्युं ॥ ३ ॥ ए आराधी शुद्धाचार, जन अनंत पहुता ज्ञवपार ॥ ए विराधी संसार अनंत, कीधो सही दूरि ज्ञवअंत ॥ ४ ॥ इम ज्ञाख्युं ठे चोथे अंग, गुरु पूठी जाणजो प्रसंग ॥ इणि कारणि श्रुत आराधिये, निर्मल मुक्ति पंथ साधिये ॥ ५ ॥ आवश्यकावश्यकवितिरित्त, कालिक उतकालिक इम वुत्त ॥ अंग बाहिर ने अंगपविठ, सूत्र ब ज्नेद ठाणांगि दिठ ॥ ६ ॥ काल ग्रहण करि ज्नणिये जेह, आगम ज्नाख्यो कालिक तेह ॥

उत्तराध्ययन छेदने अंग, बारमांहि केईय उवंग ॥ ७ ॥ इम कालिक आवश्यक आदि, एहना तप उपधान अनादि ॥ विधि विण भणतां बहुला दोष, थाय सही आसायण पोष ॥ ८ ॥ आसायण वारण मिछत्त, टालंतां निर्मल समकित्त ॥ इसो जाणि विधिशुं सद्दहो, श्रुत भणिवो जिम शिव-सुख लहो ॥ ए ॥ सूत्र अर्थ अधिकारी साध, गृही अर्थ अधिकारी लाध ॥ अंगउवंग सूत्रनी शाखि, एह मर्म निश्चल मन राखि ॥ १० ॥ पाउंसी वेरत्ति जाण, पाभाई इम त्रिणि वखाण ॥ उत्तराध्ययने छवीसमें, त्रिहुं काले मुझ मन वीसमे ॥ ११ ॥ कालग्रहण यति विण नवि होय, एह विचार विमासी जोय ॥ तिणि विण गृही कहो किम भणे, गुणे तेह साधु मुखि सुणे ॥ १२ ॥ साधु गृहीने नहु वायणा, दिये निसित्थे पडिसेहणा ॥ ठाणांगि वायण वारणा, संभालुं ए गुरु सा-रणा ॥ १३ ॥ पूर्व कालि पुस्तक नहु हुता, गृही कहो तिह किम वांचता ॥ आशातन टालो एम जाणि, जयो जयो जिनवरनी वाणि ॥ १४ ॥ विधिये भण्युं पुण जिम न भणाए, नहु वंचाए नहु गुणाए ॥ ते कारण असज्झाइ तणुं, गुरुमुखि संभालि ते हिव भणुं ॥ १५ ॥

(ढाळ. छप्पय समान)

ते असज्झाइ बिहुअ नेदि आगममति जाणो, जेह विवेकी लोक तेह ए हियमे आणो ॥ आपणथी कारजे जेह ते आयसमुत्थ, परसमुत्थ जे परहथकी गिणि इम परमत्थ ॥ १६ ॥ परसमुत्थना नेद पंथ इक संयमघातक, धुअरि प्रमुख दुतिय नेद कहियै उतपातिक ॥ रजरुधिरादिक वृष्टि नेद हिव त्रीय सदिवा, करे नगर घर गयणि विविध सुर जे गंधवा ॥ १७ ॥ चोथो व्युद्ग्रह नेद ए कहियै संग्राम, शारीरिक नर तिरिय अंग पुग्गलनो ठाम ॥ ए बोल्यो पंचमो नेद हिव त्रीयनि, कहिशुं लहिशुं जेह सुगुरुवाणीनी जुगति ॥ १८ ॥ संयमघातक प्रथम नेद धुंअरि शिआले, जां लगि हुइ तां सीम साधु संनाषण टाले ॥ अंग संकोची वस्त्र सहित ढांकी एकांति, बेसे किरिया किंपि करे नहु माणिस नांति ॥ १९ ॥ तो नणवानुं कहण किसुं बीजी जे चारि, असज्झाइ तिह सूत्र नणण तसु गुणण निवारि ॥ किरिया करवी सहुअ अवर हिव बीजी नणियै, संयमघातक तणो नेद इणि परि ए सुणियै ॥ २० ॥ राती ठाया

गगन थकी रजरेणु वरसे, तेह निरंतर त्रिणि दिवस ऊपर जो दीसे ॥ तो असज्झाइ जाणवी जां लगी तां सीम, सूत्र नाण गुणिवा निषेध इम पाले नीम ॥ २१ ॥ घण वरसंते बुदबुदाकारें जिणिवारें, त्रिहु दिन ऊपर होय जाणि असज्झाय तिवारें॥ वरसे बुद बुद रहित मेह सत्रेह निरंतर, तिह असज्झाइ होय पंच दिन थकीय अंतर ॥ २२ ॥ न्हानी धारे वरसतो जब न रहे मेह, सग वासर उपरांत हुइ असज्झाइ एह ॥ संयमघातक एह पंच जाणिवा प्रकार, पहिले परहसमुत्थतणो असज्झाय विचार ॥ २३ ॥ टाले नाणवो जेह साधु पाले जिणआण, निरते मारगें चालतां लहिये निर्वाण ॥ हिव उत्पातक तणिय विगति कहिशुं संखेवी, रुधिर मांसनी वृष्टि एह जूजुइय कहेवी ॥ २४ ॥ असज्झाइ हुए एहतणी अहोरत्त प्रमाण, नाण न सूझे सूत्रतणो तेहना ए ठाण ॥ वात सहित वा वात रहित रजने उद्घाति, रज पडती जिह शब्द थाय तेहने आपाति ॥ २५ ॥ धूलि शिला ने केश वृष्टि जातां असज्झाइ, चैत्रमासि उजले पख कमि पंचमि आइ॥ योगतणो निक्षेप करे तिणि दिवस प्रभाति, जो न करे तो बीज हुवे ए आगम ख्याति ॥ २६ ॥

अंतराले ऊतरे नही वलि तेरसि चउदशि, पूनम लोगस्स चारि चारि काउसग त्रिहु दिवसी जो न करे तो वरष लगी जब झरे धूलि, तब असज्जाइ सूत्र सहु जणिये नहु मूलि ॥ २७ ॥ आशु शुदि पंचमी पहर बिहु थकी गिणीजे, पडिवे लगी गिणि सूत्रतणो सज्झाय न कीजे ॥ इम उत्पातिक भेद कह्या त्रीजो हिव कहिये, तासु नाम सादिव्य जेह गुरु वचने लहिये ॥ २८ ॥ नगरतणा आकार सरिस गयणांगण होई, ते जणिये गंधर्वनगर विरचे सुर कोई ॥ अग्नि वर्ण राती प्रभा जलती दीसे दिशि, ते दिग्दाह विचारि जाणि भणिये आगम किसि ॥ २९ ॥ गयणि झबक्के वीजली विणुकाले जिवारे, उल्कापाते एक पहर असज्जाइ तिवारे ॥ गाजि अकाले प्रहर दुन्निसज्झाय निवारे, इणिपरि जे परिहरे दोष ते आप उतारे ॥ ३० ॥ पखिव अजुआले पडिव बीज त्रीजें इक जाम, निशिनो पहिलो जाणिजो असज्झाइ ठाम ॥ तिणि दिशि संध्या निरति नही तिणि काल न सूझे, पाउसी आगम विचार गीतारथ बूझे ॥ ३१ ॥

(दुहा.)

रवि आथमते अंबरे, दीसे लांबी मोघ ॥ राती अथवा सामली, ए उतपात अमोघ ॥ ३२ ॥ तो असज्झाइ इक पहर, जाणी लेजो जाण ॥ जलधरने आडंबरे, ग्रह ऊगमते न्नाण ॥ ३३ ॥ श्याम वर्ण अथवा अलप, रातो दीसे जोई ॥ अथवा उंधण सारिखो, ए उतपातज होई ॥ ३४ ॥ असज्झाइ तव इक पहर, इकगीयझ कहंति ॥ प्रहर तिन्नि मुनिजन तदा, न्नणिवा श्रुत न लहंति । ३५ । न्नूमिकंप अथ घरूहरू, पहर आठ असज्झाय ॥ घरूहरू, मोटे सादिन्नणि, नामंतरि निग्घाय ॥ ३६ ॥ शबद रहित धूजे धरा, न्नूमिकंप ए जाणी ॥ ए आशातन टालियें, ए श्री प्रवचन वाणि ॥ ३७ ॥ चंद सूरना ग्रहणनी, असज्झाइ जिम होय ॥ गुरुमुखिं संन्नलि ते कहिशुं, ते टालो सहु कोय ॥ ३८ ॥ उतकृष्टी बारह पहर, चंदतणी जे थाय ॥ ते किम किण उतपात वश, ऊगत चंद ग्रहाय ॥ ३९ ॥ ग्रह्यो हतो शशि आथमे, निशिना पहर विचार ॥ आवंता आठे पहर, इणिपरि बार विचार ॥ ४० ॥ एहनो अन्नेरी परिं, बीजो सुणो प्रकार ॥ ग्रहण हुसे किण अवसरें, जाणे नहु अणगार ॥ ४१ ॥

इम जाणे होशे सही, ग्रहण ति वादलमांहि ॥ नवु दीठो निशि छेहडे, दीठो ग्रह्यो प्रवाहि ॥ ४२ ॥
आथमतो इम रयणिना, टाल्या पहर चियार ॥ वलि आवंता दिवसनिशि, इम बारह अवधार ॥ ४३ ॥
अवसाणि पूनिमतणे, चंदग्रहण जे दीठ ॥ पहर आठ एणीपरें, श्रुति जघन्य निदिठ ॥ ४४ ॥
रयणि मध्ये जे ग्रह्यो, वलि मध्यें मूकाय ॥ तो जेती निशि थाकती, ते असझाई थाय ॥ ४५ ॥
उतकृष्टि मज्झिम जहन, एवं त्रिणी प्रकार ॥ चंद ग्रहणना ए जगया, हिव रविग्रहण विचार ॥४६॥

(ढाळ. देशी आदिसरजीनी विनतिनी)

हिव रविग्रहण विचार, कहिशुं जिणि परें, असज्झाइ हुइ एह तणीए । राहु केतु ग्रहवार, करतां आवरे, मंडल रविनो ते जणीए ॥ लोक कहे शशि सूर, राहु गले इह, एह वचन मिथ्या कहे ए । श्री जिन केवलसूर, अंगें पंचमि, बारमे शतकें संग्रहे ए ॥ ४७ ॥ छठे उद्देशे इम, बोल्यो विस्तर, ग्रहण तणो तिह जाणवो ए । तो असझाइ केम, केवल कारण, उतपातिक मन आणिवो ए ॥ सोल पहर उतकृष्ट, ए असझाइय, उदयावसरें रवि ग्रह्यो ए । अस्तमि पुण तिम दृष्ट, ते निशि

आगिलो, अहनिशि इम निरतो लह्यो ए ॥ ४८ ॥ कहिये अवर, प्रकार गयणि सवादल, दिवस ग्रहण दीसे नही ए। इम जाणे अणगार, आज अमावश छे, तिणि ग्रहण हुशे सही ए ॥ निर्मल अंबर दिठ, अंस्तमिसंग्रह, तिणि निशि निशि दिन आगिलो ए। पहर सोलनी दिठि, आगमि जिनवर, असझाय ए संगिलो ए ॥ ४९ ॥ बारह पहर जघन, ते किम संभलो दिनकर, आथमियो ग्रह्यो ए । तिहि निशि टाले धन्य, मुनिजन सज्झाय, अहोरात्र बीजे लह्यो ए ॥ बारह पहर इम जाणि, ॥ जे पुण दिवसि, ग्रह्यो दिवसि मूक्यो वली ए, । ग्रहण काल मन आणि, वेला आवती, तां लगी सज्झाई टली ए ॥ ५० ॥ विंतर कृत गुंजार, नादिई ऊपने, आठ प्रहर असज्झाइया ए । दिवसि संध्या चारि, उदे हिवे पहरे, अस्तमानिएं मध्यराइया ए ॥ तिणि-वेला असज्झाय, भणिवो वांचवो, सूत्रतणो सूझे नही ए। कातिग ने अषाढ, पडिकमि चउमासी, पडिवा लगि जाणो सही ए ॥ ५१ ॥ असज्झाइ दिन बीज, सूझे सज्झाय, एहनो दोष अछे घणो ए। प्रवचनि वार्यो काल, भणतां प्रवचन, मुनिनें छल हुइ सुर तणो ए ॥ जे हुए साधु प्रमत्त, तासु

विशेषहि, ढलना सुरनी ऊपजे ए। जे हुए मुनि अप्रमत्त, तिहनें सागर, अर्द्ध ऊण थिति संपजे ए ॥ ५२ ॥ जसु ते सुर न ढलंत, आधा सागर, परिमिति थिति वरते सदा ए। पुव्ववैर समरंत, तिणि सुर ते पुण, ढलिये वलिए ए कह्या ए तिणि कारणि असज्झाय, टालिय गुरु जणिवो, वहिवो योग तणो करे ए। ते मुनिवर समुदाय, श्रुत आराधीय, हेले जवसागर तरे ए ॥ ५३ ॥

(दुहा.)

व्युद्ग्राहिक असज्झाइया, कहिये चोथो जेद ॥ श्रुत बलि गुरुमुख संजली, हिवे जाणिज्यो सजेद ॥ ५४ ॥ म्लेछादिक नरवइतणो, महायुद्ध जां होय ॥ वसतिथकी आसन्न नर, इठी कलहें जोय ॥ ५५ ॥ पर्व वासें रज जां लगी, ऊफे फागुण मासि ॥ असज्झाइ तां लगी हुए, जो जो हिये विमासि ॥ ५६ ॥

(ढाल भुजंगी छंद जेवी.)

देशनो अधिपति विपति पामे तदा, होय असज्जाइ अवर बेसे तदा ॥ सूत्रनो जणण करिये

विमासि सही, एह त्रिणुं सूत्र सज्झाय भणिवो नही॥ ५७ ॥ होय परचक्रभय तेह नवि उपशमे,
तां असज्झाइय अकरणिएं अतिक्रमे ॥ आण जिणवरतणी भणे त्रिभुवन धणी, तासु परंपरे आज
लगी ते गिणी ॥ ५८ ॥ नगर नर मोटिको मरण पामे जदा, इग अहोरत्त असज्झाय हुए तदा॥
वसतिथी सात घरमांहि दीपत नरें, विहत्थिये पहर अरु सूत्र नहु उच्चरे॥ ५९ ॥ पाधरा पुरुषने मरणि
शब जां पड्यो, रहे तां होइ असज्झाइ चिते चड्यो ॥ पड्यो तिरि रुधिर तह फूटए अंडए, गायने
प्रसवि जर धरणि जव ठंडए ॥६०॥ एटले जाम तिय सूत्र नहु सूझए, भणिवए गुणिवए पदं नहु
बूझए ॥ विबुध जन जाणि ए दूषण टालए, सुमति जल दुरितमलपंक पखालए ॥ ६१ ॥
नरतणे शोणिते उद्धर्यें इहां वली, इक अहोरत्त असज्झाइय अटकली ॥ मेघनी वृष्टिते धोवराणो
जदा, ततखिणे टले असज्झाइय ते तदा ॥ ६२ ॥ पाछलि निशि पड्यो उद्धर्यो जगते, सूरि सूझे
तदा चित्त बलि जागतें ॥ दंत देखि पड्यो हाथ सो बाहिरें, परिठव्ये शुद्ध नहु दोष श्रुत
वागरें ॥ ६३ ॥ अहव जाणि पड्यो शोधतां नहु लह्यो, दंत उंहडावणी काउसग्ग तिह कह्यो ॥

चार लोगस्सनो शुद्ध जे इम करे, सूत्र आशातना इणि परि परिहरे ॥ ६४ ॥ प्रेतवनि नरतणा अस्थि बे जे दह्या, ततखिणे मेघजलवृष्टिशुं ते वह्या ॥ तिह असज्झाय सर्वथा पैं नही, अन्यथा वरस दश डुन्नि सूझ नहीं ॥ ६५ ॥ जे बिलारू तणी जाति जीव जीवतो, ग्रहिय न जाय तो न हिय असूझतो ॥ करत तसु घात जे कोइ अवयव परू, पहर अरु सूत्र सज्झायने ते नरू ॥ ६६ ॥ साठ करमांहि तिर्यंच अवयव तथा, हाथ शत मांहि नर अवयव संकथा ॥ करे असझाय विचि से रजें बिहु दिसें, होय तो शुद्ध सज्झाय आगम कसें ॥ ६७ ॥ नारिने ऋतुसमय मास मास सुण्यो, वासर त्रिणि असझाय कारण गिण्यो ॥ तेहथी अधिक असझाय ओहडावणी, करिय काउसग्ग तो शुद्धि थाये घणी ॥ ६८ ॥

(दुहा.)

आद्रा मंरू स्वाति लगी, गाजवीज जो होय ॥ तो असझाइ नहु कही, हिये विमास जोय ॥ ६९ ॥ शेषकालि तारा तणि, दंसणि सूझे काल ॥ पुत्र प्रसवि दिन सत्त गिणी, पुत्रि अरु दिन टाल

॥ ३० ॥ इम शारीरिक पंचमी, असझाइ ए जाणि ॥ श्री पार्श्वचंद्र हरखे भणे, सांभलि प्रवचन वाणि ॥ ३१ ॥ (कलश) इणिपरि निजुत्ती बहु विह जुत्ति जोइ आवश्यक तणिय ॥ ठाणांगिं चंगे जाणि प्रसंगें संखेपे ते में भणिय ॥ सांभलि ए वाणि सगुणज प्राणी श्रुत आशायण परिहर ए ॥ ते नहीय विराधक सहीय आराधक भवसायर हेलें तर ए ॥ ३२ ॥

॥ इति श्री नागपुरीय वृहत्तपागछाधिराज युगप्रधान श्री पार्श्वचन्द्रसूरि विरचिता अस्वाध्याय द्विसप्ततिका संपूर्णा ॥

---

१ आ प्रकरणमां बनती महेनते सुद्धि करवामां आवेली छे, छतां पण तथाविध शुद्ध पुस्तक न मलवाथी केटलीक गाथाओमां संशय रहे छे, माटे जेमनी पासे आ शुद्ध पुस्तक होय अने ते अमने लखी जणावशे तो बीजी आवृत्ति वखते उपयोगी थइ पडशे.

॥ अथ श्रीब्रह्मबावनी ॥

(एकत्रिसा सवैया छंद.)

ॐकार आप परमेश्वर परमज्योति अगम अगोचर अलख सुरूप गायो है, ऽव्यतामै एक पै अनेक भेद परजैमैं जाको जसवास मत्त वहुनमैं ठायो है ॥ त्रिगुन त्रिकाल भेव तीनु लोक तीनु देव अष्ट सिद्धि नवो निद्धिदायक कहायो है, अक्षरके रूपमैं स्वरूप भूअलोकहुको ऐसो ॐकार हरखचंदमुनि ध्यायो है ॥ १ ॥ नमत सुरासुर खगेंद्र धरणेंद्र जाकों मुनिनके वृंद ध्येयरूप करि ध्यायो है, जैनी कहैं जिन शिवमति शिवरूप मानै वेदपाठी ब्रह्म बोध बोधरूप गायो है ॥ कोउ कहै अलख अल्लाह यौं अथाह रूप ॐ ॐकार ऐसो जिन जैसोऽ बतायो है, वर्ननको इंद जा की महिमा अमंद ताहि वंदत हरखचंद सब सुख पायो है ॥ २ ॥ मत्तहुमैं तत्तहुमैं जोगकी जुगतिहुमैं भुगति मुगतिहुमैं जाको विसतार है, वेदमें किलेबमैं अवेदहुके भेदमैं सुथापना

उच्छेदमैंहु कियौ निरधार है ॥ जंतरमै मंतरमैं बकै बकै तंतरमैं शबद निरंतरमैं होवत उच्चार है, प्रणव प्रसिद्ध ऋद्धि वृद्धि सुखदायक है जपत हरखचंद ऐसो ॐ ॐकार है ॥ ३ ॥ सिद्धिनकौं सिद्धि ऋद्धि वृद्धि देहि संतनिकौं महिमा महंतनकौं देत छिन मांही है, जोगीकौं जुगति औ मुकति देति मुनिनकौं भोगीकौं भुगति गति मति उन पाही है ॥ चिंतामनि रतन कलप वृक्ष कामधेनु सुखके समाज सब याकी परिछांही है, कहै मुनि हर्षचंद लखि देख ग्यानदृष्टि ॐ ॐकार मंत्र सम और मंत्र नांही है ॥ ४ ॥ धंधभावकोसो इह जगको सुभाव तामैं अधिक अग्यान भावहुकी अँधियारी है, मोहकी वयार सेती उरूत मिथ्यातरज जिन्हें ग्यानदृष्टिकौं मलीन कर डारी है ॥ काम क्रोध लोभ मोह प्रगट प्रमाद वसै रागदोष चोरहुकी भीति जहां भारी है, ऐसे भववासतैं उदास ह्वेकें ग्यानीजीव साधत मुकति ताकौं वंदना हमारी है ॥ ५ ॥ अगम अगोचर अलख अविनाशी ब्रह्म मोहके मिलाप देखो कैसी नाच नाचा है, कबहु एकेंद्री विकलेंद्री सकलेंद्री भयो गयो नरकादि गति जहां दुख साचा है ॥ कबहु नरेंद्र

धरणेंद्रहु खगेंद्र इंद्र दिव्य देह पाय स्वाद विषयके राचा है, जौलौं ग्यानभावकौं स्वभाव घट प्रगटै न तौलों इह चिदानंद सव खेल काचा है ॥ ६ ॥ आदि है अनादि है अखंडित अबाधि है न कमी है न ज्यादेहै सुव्यापक सरव है, एक है अनेक है अलेख भेख रेख ऐसो परजै विशेषहीमें जाहीको परवहै ॥ तोहीमें है मोहिमें है जहां देखो जाहीमें है सत्ताकी समोहीमांहि चेतन जरब है, परजै प्रवान है अनंत ग्यानवान है सो मोखको निदान ऐसो आतमदरब है ॥ ७ ॥ इनहीके ध्यान निरवान पद पाइयत इनहीके ध्यान ग्यान केवल लहतु है, इनहीके ध्यान कीए मिटत करममल अचल अमल गुन आतमा गहतु है ॥ इनहीके ध्यान सुरलोक नरलोकहुमें पावै प्रभुताई भवपातिक दहतुहै, सोहै घटमंदिरमैं आतमा प्रगट देव ताकी कर सेव मुनि हर्ष युं कहतु है ॥ ८ ॥ ईश जगदीश औ अधीश शीष अवनीश करत मुनीश सब याहिकी उपासना, वही चिदानंदप्रभु पूरन परमब्रह्म पुग्गलमै मिल्यौ जैसें पुहपमें वासना॥ भेद ग्यानदिष्टिसौं विचछन विभिन्न करै जैसें मथि काढियतु काठमैं हुतासना, कहे हरख-

चंद मुनि तिहुं लोकमांहि आतमप्रकाश सम दूसरी न प्रकाशना ॥ ९ ॥ उपजै न उपजतु विनसे न विनसतु आतमा अखंड ब्रह्मंडको विकाशीहै, परजैके भेदसौं भयौ अनेक वेद तोहू द्रव्यतामै एक एह अज अविनाशी है॥ वरनादि वीसभेद भाखै प्रभु पुग्गलके तिन्हौंहूतें भिन्न निज सत्ताकौ उपासी है, मनमैं न गही जाय वानीसौं न कही जाय ऐसी शुद्ध आतमाकी ज्योति परगासी है ॥ १० ॥ ऊरध सपत राज सात राज अधोलोक तीनसै तयालराज तिरछै प्रमानियै, तामैं खट दरव सरब नव तत्वभेद ऐसे भरे जैसैं घट घृतपूर जानियै ॥ ताहीकौं कहत गेय गेय परमान ग्यान ग्यान परमान शुद्ध आतमा बखानियै, व्यापित अखिल ब्रह्मंडमैं अखंड ज्योति तातैं इह आतमा सरब गति मानियै ॥ ११ ॥ ऋद्धि है अपार अविकार तेरे निकटही प्रगटै कपट पट खुलै जो अग्यानके, तेरेहि भंडारमांहि भरे ग्यानरतन सो जतनके कीन्हे बिना भए वश आनके ॥ तेरी प्रभुताइ पहिचानवेकौं मुनिजन होइकैं मगन अधिकारी भये ध्यानके, अहो प्रभु चेतन अग्यानताके भाव त्याग आपुकौं संभारौ भ्रम टारौ दरम्यानके ॥ १२ ॥

रीति विपरीति गही शुद्धताकौं डांरि दइ तातैं द्युति मंद भइ राजा चिदानंदकी, भम्यौ भव बीच एक सासमैं सतर वेर जनम मरन करि सही दशा दंदकी ॥ मोहकी मलिनतासौं हीनता भइ अनेक राहके गिरासे जैसैं घटै कला चंदकी, अनुभौ अभ्यास शुद्ध आतमप्रकाश भयो तमकै मिटै-तैं कला प्रगटी दिनंदकी ॥ १३ ॥ लिख देख्यो शीख देख्यो शीखन शीखाइ देख्यौ रह्यौ न परेखौ कहुं वे-दहुकी आतमा, ग्रंथ देखे पंथ देखे कुमतिकुपंथ देखे नगन निग्रंथ देखे मुनि औ महातमा ॥ सिद्ध देखे सती देखे जोगी अरु जती देखे लेखे अनदेखे देखे पंडित द्विजातमा, गुनी देखे ग्यानी देखे तीरथके-थानी देखे एते सब देखे पै न देख्यो एक आतमा ॥ १४ ॥ लीन्हौ कहा जोग जो तौ भोगसौं न मुर्यो मन लोगके रिझायवेकों धूम्रपान गटकैं, कोउ शीष धारे जटा कोउ तो उखारे लटा कोउ कनफटा कोउ क्रियाहीमें अटकैं ॥ कोउ तो संन्यासी मठवासी वनवासी कोउ होयकै उदासी परे तीरथकौं भटकैं, ब्रह्महीकौं चीन्यो नांहि मन वश कीन्हौ नांही एते पर होत कहा थोथे कन फटकै ॥ १५ ॥ एकही सिलोक पढौ पढौ क्यौं न कोटि ग्रंथ पंथहु कुपंथनिमैं जेती जेती कथाहै, वेद

निरवेद पढो औरहु कितेब पढो पोथीहु पुराननमैं भाख्यौ जेसैं जथा है॥ गुरु कहै ग्यानी कहै बझे मतिमानी कहै ब्रह्महीके जानवैकैं श्रुतसिंधु मथाहैं, आपा पर पहिचान्यौ सब तंत विरतंत जान्यो और जानवेकी रही कौंन तथा है ॥ १६ ॥ एही प्रभु आतमा अलख अविनाशी ब्रह्म कर्मके भरमवश कैसें रूप ह्वै रह्यौ, रच्यो परभाव पै सुभावको न लीन्हो शोध आतम प्रबोध विनु जरुताकौं वैरह्यो; मानकी मगनतासौं क्रोधकी जगनतासौं लोभकी लगनतासौं मोहनिंद स्वैरह्यो, सुगुरु चितावै जिनबानी समझावै तब आपा निधि पावै जो अनादिहीसौं खैरह्यो ॥ १७ ॥ केइ जो ब्रह्म जाकैं वेदमती ब्रह्ममानै न्यायके पढैया माने करता करमकौं, बोध कहै बुद्ध अरु सबसौं करे विरुद्ध जैनी कहैं शुद्ध यहै धरता धरमकौं; एते मतवारे मतवारे मतवारे झोले करैं पछपात पाट खुल्यो न भरमको, वह तौ है एक ए अनेक भांति भांति कहै विना भ्रांति मिटे पैमो पावै क्युं परमको ॥ १८ ॥ और नही जान्यौ कहूं अंत न वखान्यौ काहु ऐसो न प्रमान्यो कौन रूप कौन रंग है, काहु नही देख्यौ कहूं चित्तमें न रेख्यौ तातै आपतै परेखौ को बतावै कौन ढंग है ॥

जान्यो तो न जाय इह कह्यो गह्यो जाय कैसें लख्यो नहुं जाय इह आतमा अनंग है, और मतवादी बकवादी कहैं एक अंग जैनी स्यादवादी कहै ब्रह्म सरवंग है ॥ १९ ॥ कोउ शिष्य सुगुरुसौं कहै कर जोरि करि स्वामि मोही ब्रह्मको स्वरूप समझाइये, कौन भांति जान्यो जाय काहतैं प्रमान्यो जाय कैसें करि मान्यौ जाय कैसें ठहिराइये॥ गुरु कहैं तेरौ ब्रह्म तेरे घट-बीच तातैं निपट नगीच दूर कहांलौं बताइयै, पूरण प्रधान बस्यो तेरे घट आन सो तौ परजै प्रमान ग्यान चेतनातैं पाइयै ॥ २० ॥ खट गुनी हानि वृद्धि कही व्यवहार मांहि निहचेमें एक दूजो भेद इहां नांही है, वरण विकार औ आकार सब पुग्गलमैं वह निराकार ब्रह्म जहां देखौ तांईहै॥ रूपहै न रेखहै न वरण विशेष भेष ऐसो है अलेख जामे धूंप है न छांही है, अरे मन क्रूर कहा खोजत फिरत दूर तेरेइ हजूर नूर तेरो तुझ मांही है ॥ २१ ॥ गरुऐ भयेतैं कबु गरु औ कह्यौ न जात हरुये भयेतें कबु हरुउे नाही भयौ, जब देह धारी तब भयो नर नारी फिर जब देहि टारी तब जैसैंकौ तैसो रह्यौ॥ किये भेख नामा भयो बालक जवान वह पुरुष प्रधान

वृद्ध बालक नही कह्यो, न भज्यो अपार पारावारकौसो विसतार वर्के मतधारिहूनै पार वाको न लह्यो ॥ २२ ॥ घटमैं है निकट प्रगट ब्रह्म तेरे तूं तो मोहकै अंधेरे मांहि खोजत जहांनमैं, अपनेहि पास मृगमदकी सुवास मृग सुंघत फिरत घास जैसें रान रानमैं; तूं तो भ्रम रह्यो गमि रह्यो वह नांहि कहूं तोमें रमि रह्यो जैसें पावक पाषाणमैं, दहिमांहि घीव जैसें देहीमांहि जीव तैसें देखत सदीव ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मग्यानमैं ॥ २३ ॥ ग्यानदृष्टि वेदसौं अभेद एह आतमा हैं यद्यपि है वेद पै तथापि एक कहियै, जैसें तृण काठ घास इंधनसौं भिन्न वन्हि दाहक स्वरूप करि एकै भांति लहियैं॥ तैसें देहधारी देह देहमें अनेक भांति भयौ नाना कांति पै अलेख भेख सहियै, तीनहू त्रिकालमांहि ग्यानतें विभिन्न नांहि आपनी शकति छांरू परकी न गहियै ॥ २४ ॥ चंचल तरंग उठे पौनकै प्रसंग सेति अपने स्वभावहीतें नीर ज्यौं अडोल है, तैसें ग्यान चेतना सौं आतम सुथिर सदा परकै प्रभाव सेती नाना ऊकलोल है॥ देव नर नारी पशु पंखी जलथलचारी पुन्य पाप सुख दुख करम किलोल है, मिटै परभाव शुद्ध आतम सुभाव आवै पावै निज संपदा जो

अखय अमोल है ॥२५॥ छिनवादी कहै जीव छिन छिन आवै जावै जलमैं तरंग जैसें अंगमांहि आतमा, दरबके सरबस भेद कौन पावै शठ करै हठवाद वाद ठानै वातवातमां ॥ नही पहिचान शुद्ध ग्यानकी भइ है तातैं मनके किलोलकौं कहतुहै त्रिधातमा, जैनमती कहै जीव ग्यानमयि है सदीव अमल अखंड जैसें जातिरूप जातमां ॥ २६ ॥ जलमैं है थलमैं है अनिल अनलमैं है सबल निबलमैं समायकै रह्यो वही, ग्यानहुमैं ध्यानहुमैं निखिल निदानहुमैं वडे मतिमानमें प्रमानमैं कियो सही॥ रूपमें रचा है अन रूपमें सचा है घट कौंन धोव चाहै जामें आप रूप है नही, साहिबकै भोरे तूं तो ढुंढतहै औरैं औरैं घटमें ढंढोरै तो घटमैंहै छते अही ॥ २७ ॥ ऊधरूत फिरत अनाहक अग्यानी जीव कोउ कहै आतमा है कोउ कहै नांही है, कोउ कहै व्यापकअव्यापक बतावै कोउ कोउ कहै ईश्वरके ज्योतिहुकी छांहीहै ॥ कोउ शून्य ठानै कोउ पंचतत्व मानै तातैं जैनी कहै जीव तौ सदीव ग्यान मांही है, चेतन स्वरूप है अखंडित अरूप है सुतत्वनिकौ भूप ऐसौ ब्रह्मघटमांहिहै ॥ २८ ॥ नांही रूप रंग अंग वचन प्रसंग संग अकल अनंग ढंग कहांलौं कहीजियै, नांही कबु

मूरति न सूरति गरूर तन ग्यानकी जहूरतसौं पूरत लहीजिये ॥ ऐसोहे अलख जौलौं आपमैं लखै न तौलौं परके बताए कहो कैसो कैं पतीजिये, काहेकों करत वाद अनुभौंको पायो स्वाद गूंगे कैसो गुरू खाय चुप व्है रहीजियै ॥ २९ ॥ टरत न टरै निज सत्ताको स्वभाव जीव परके विभावमैं कदापि काल नां मिलै, जैसें शुद्ध कंचन कुधातमैं मिलत तउ निज गुन छांडि पर गुनमैं नही भिलै ॥ ज्युंही इह आतमा अलख अविनाशी ब्रह्म परकै मिलाप गति च्यारुमैं सदा रुलै, परजै प्रसंग भयौ नाना विधि रंग तोउ आतमा अभंग शुद्ध चेतनासौं नां टलै ॥ ३० ॥ ठाम ठाम गाम गाम धाम देवी देवहुकी करैं शठ सेव पै न भेवहूकौं पावही, फूल फल पाती तोरैं धूप दीप वाती जोरैं वरु उतपाती केते जीवकौं सतावही ॥ आपहै सचेत पैं अचेत भूत प्रेत पूजे आपकौं न सूझे मूढ और भरमावही, घटमैं निकट परमातमा प्रगट देव ताकी करै सेव तेतो सबै फल पावही ॥ ३१ ॥ रूलै न रुलाय जैसें उपल अटलखंभ जलके समीप ठाढो अपने सुभावसौं, पौनकै हिलोरे उठै जलमैं किलोल तातैं रूलतोसो दीसै सो तौ परके विभा-

वसौं ॥ तैसे ही अनादि अविकार निराधार ब्रह्म आप तौ अमोल भूलै कुमति कुभावसौं, मिटे तैं अग्यान घट प्रगटै परमग्यान पावै निरवान पद कर्मके अभावसौं ॥ ३२ ॥ ढरत ढरत नीर ज्यौं ज्यौं नीचै जात त्यौं त्यौं विमल स्वभाव मिटै भइहै मलीनता, कहुं झकझोर कहुं धारकी मरोर कहुं उठत हिलोर कहुं वृद्धि कहुं हीनता ॥ तैसें इह ब्रह्म पर्यो करम भरममांहि परम धरम बिन भइ छवि छीनता, जब भ्रम मेटै तब आपहीमैं आप भेटै विना ताहि भेटै नांहि मिटै भवदी- नता ॥ ३३ ॥ नांही कहे नांही नांही है कहे तो हैही सही नाही अरू है ए दोउ स्यादवाद रूप है, व्योममैं कुसुम जैसें अस्ति नास्ति उभै रूप कैसै ठहरावै घनघटा मध्य धूपहै ॥ ऐसें सप्त भंगी नय साधी सरवंग अंग वचन प्रसंग भाखी जिनमत भूप है, जानै स्यादवादी और वादी जानै मानै नांहि अकल अलख रूपी ब्रह्मको स्वरूप है ॥ ३४ ॥ तनमैं तिहारे परमेसर वसत तूं तौ तोहुं न निहारै जौलौं पमल अग्यानके, उगेहु विरोचनके लोचन खुलत नांहि कौशिकके बाल चाल पावैं न विहानके ॥ करि ग्यान अंजन निरंजन निजर आवै सुगुरु बतावै

उपचार ज़ोजो ध्यानके, तजि मति फैन गहौ जिन मति बैन ऐन ताहितैं विमल नैन होत ब्रह्मग्यानके ॥ ३५ ॥ थिर चर देहधारी जेते है संसारी ताकी करम प्रकृति न्यारी न्यारी गति टेक है, वरन विकार औ अकारहुतें न्यारे सब न्यारे न्यारे कर्मबंध फल व्यतिरेक है ॥ जनमतैं मरनतैं चरनतैं करनतैं न्यारे न्यारे सब जीव द्रव्यतैं अनेक है, परजै प्रवान सब दीसतुहै आनि आनि निहचै समान ग्यान चेतनामैं एक है ॥ ३६ ॥ द्रव्यत स्वरूप कलधौत एक रूप जैसै कुंडल कटिक परि जेते बहु रूप है, परजैकी हानि वृद्धि द्रव्य घटै वढै नाहि अपने स्वभाव लीनै अचल स्वरूप है ॥ तैसैं जीवद्रव्य ताके ग्यान चेतनादि गुन नरनारकादि गति परजै निरूप है, घटेतें घटत नांहि वढेतैं वढत नांहि औसो अविनाशी ब्रह्म घटमें अनूपहै ॥ ३७ ॥ धरे बहु भेख पैं अलेखकी न लखी रेख ज्ञानदृष्टि देख अनमेखमै लख्यौ परै, तजिकैं भरम परब्रह्मकौं पिछान लेहु आपहीमैं जानकर हृदैमें न क्युं धरै ॥ काहिकौं करत खेद छोरू जड़बुद्धि भेद आप तुं अभेद ब्रह्म मुक्तितौ सदा करै, जप तप ध्यान दान तीरथसनान व्रत बिन ब्रह्म देखे बिना कछु काज नां सरै ॥ ३८ ॥ नयकौ निवास

संघं ण मण्णएपूआ ॥ साहु अन्नावं मण्णइ, कलिकाले एरिसा सद्धा ॥ ६७ ॥ बहु णिंदइ गणवासी बहु णिंदइ ढूंढमइअ जिणपडिमा ॥ बहु णिंदइ जिणपवयण, कलिकाले एरिसा सद्धा ॥ ६८ ॥ णहु जाणइ सम्मत्तं, णहु णय णहु तत्तविरइ दवाइ ॥ गुरु देवाई न याणई, अप्पंपइ मुणई सद्धत्तं ॥६९॥ णहु षड्काय सरूवं, मुणई णहु पंचइंदि विसयाणि ॥ आवस्सगं ण मुणइ, सद्धत्तं तहवि मण्णेई ॥ ७० ॥ साहिं साहग साहण, मुणई जेया ण मूढ वङ्गप्पा ॥ णाया खलु अप्पाणं, मुणई एयरिसा सद्धा ॥ ७१ ॥ णय णिछय ववहारं, मुणई णय साहु सावगं धम्मं ॥ तहविण वंदइ जइणो, कलिकाले एरिसा सद्धा ॥ ७२ ॥ जस्सुवएसंसुच्चा, जाणइ धम्मं च चच्चए अप्पा ॥ मण्णई तस्स कुलिंगी, कालेखुकंयग्घिणो सद्धा ॥ ७३ ॥ इदि मम मणेसु विम्हय, अवगुण गहणेण मुणइ अत्तहिअं ॥ न्नणइ अहं समदिठी, डुसुमे एयारिसा सद्धा ॥ ७४ ॥ मण मणियं मण्णेई, साहु असाहु गुणागुणे धम्मे ॥ जेणहु कुणई परिक्का, ते मूढा हुंति कुल सद्धा ॥ ७५ ॥ संजइ असंज जेवा, गीयत्था इयर सील डुस्सीला ॥ सव्व समाणं मण्णई, कलिकाले एरिसा सद्धा ॥ ७६ ॥ जह एरिसा कुसद्धा,

दीसइ बहुलाहु डुस्समे समए ॥ तहवि सुसट्ठाथोवा. अज्जवि दीसंति गुणगाही ॥ ७७ ॥ अज्जवि सम्मत्तधरा, वयपडिमा धारगा सुसीलावि ॥ साहुगुणे सुविरत्ता, सड्ढा एयारिसा अत्थि ॥ ७८ ॥ जिणपूआ गुरुभत्ति, कुणई साहम्मियाण वच्छल्लं ॥ सगखित्ते धणववणं, जवणं विहि पंच परमेठी ॥ ७९ ॥ गुरुजण गमणागमणे, पयठवणे साहु दिस्कणे चेव ॥ दव्वुब्भावुब्भव, करणे अज्जावि तज्जमा सड्ढा ॥ ८० ॥ अज्जवि सुधम्मपस्की, सव्वयाराहु सदय सुवियारी ॥ सुद्धकरणी अणुरत्ता, अज्जवि एरिसा सड्ढा ॥ ८१ ॥ अज्जवि सुगुण सुरूवा, दीह वियारी सवज्ज सुविणीया ॥ सुवयणा गुणपस्की, गुणरागी एरिसा अत्थि ॥ ८२ ॥ धम्मी धम्मसणेहि, धम्मसहाईय धम्मववएसी ॥ धम्माणु रागरत्ता, अज्जवि सड्ढाय धम्मिठा ॥ ८३ ॥ चउविह धम्मपवत्तग, अवर पवत्तावणेवि जे कुशला ॥ गेहेविय वसमाणा, समण समाणा गिही अत्थि ॥ ८४ ॥ जइवि उक्किठगुणा, न हुंति दुसमेण काल भावेण ॥ तहविय जहन्न मज्झिम, गुणा पवत्तंति संघेसु ॥ ८५ ॥ सज्जण सरल सहावा गुणथुइ सीला अनिंदगा मिठा ॥ एए गुणा जहण्णा, जस्सहवे तेजहण्ण गुणी ॥ ८६ ॥

सम्मत्त देस विरइं, सव्व विरदस्स साहणं कुणई ॥ तिसुठाणे सुवि मझिम, गुणी विमग्गाणु सारीत्ति ॥ ८७ ॥ जं तिय मझ्ण्णयरं, गुणं सु लहिऊण दिढयरं धरई ॥ मूलगुणं उत्तरमवि, जयणं उक्किठणादव्वं ॥ ८८ ॥ आयरिय उवझाया, साहु सढ्ढाय चउविहो संघो ॥ उक्किठाइ ति भंगा, निय नियठाणेसु जुंजिव्वा ॥ ८९॥ दव्वाइ चउभंगाणि, वियारियव्वाणि आदमझीणं जेणय मऊथ्थ भावं हवइदिढं दोसपरिहरणं ॥९०॥ दूसम समय सहावे, अप्प गुणा दोस बहुयरा होई ॥ इदिमुणि ऊणय भविया, गुणगहणं कुणह अत्तहिये ॥ ९१ ॥ दोसग्गहणे दोसं. गुणगहणे होइ अत्तगुणवुढ्ढी ॥ इय जाणे भो भवा, गुणगहणं दोस चयण वरं ॥ ९२ ॥ आयरिय उवझाया, साहु सिस्साय साहुणी सढ्ढा ॥ अवमाणियाहु जेमे, अवराह खमंतु मे सव्वे ॥ ९३ ॥ णहु मे राउ दोसो, णहु मे णिंदापओअणं किंचि ॥ दुसम सहावं कहियं, भवियाणं जाणण णिमित्तं ॥ ९४ ॥ जं सामाण विसेसं, रूवं भ-णियं च समण संघस्स ॥ अहमवि तेणय रूवे, वट्टामो कम्मजोएण ॥ ९५ ॥ तत्र जत्र नाण झाण समिई गुत्तीय समण धम्मं च ॥ सुह किरियाणुट्ठाणं, णहु मे एकोत्ति पुण्ण गुणो ॥ ९६ ॥

जइ जिणमय सद्दहणे, आराहग नाव नाणिणा दिठं ॥ ता तेण गुणाधारे, अहमवि आराहगो-होमि ॥ ए७ ॥ दंसण नाण चरित्तं, रयणत्तय वंदणीय णमणीयं ॥ पढम डुगं सुयधम्मं, तिइय गुणं होई सगनामे ॥ ए८ ॥ दुगधम्मे अवयरणं, तिण्णि गुणाणं च सोवि दु दु नेये ॥ णय णिछय ववहारं, सद सद नूएण तेवि दुहा ॥ एए ॥ गीयछ गुरु समीवे, उस्सग्गापवाय नेय मुणिऊण ॥ वंदण नमंसणाई, जहाविहुं कुणह नो नवा ॥१००॥ जे सामाण सरूवं, वण्णवियंविज्जमाण जंदिठं॥ तं वायमाण गुणियण, ममुवरि वेसं च मा वहसु ॥१०१॥ जं जं सच्चासच्चं, वट्टइ वत्थु सुहासुहं सव्वं ॥ गिण्हइ विणापरिस्का, तस्स विही का नवे विह्मं ॥ १०२ ॥ आयरिया अणणाई, उवाहि जुत्ता च हवइ उवज्झाया ॥ साहु हवई असाहु, पुछामि विह्मयं कस्स ॥ १०३ ॥ जइ सद्दावि कुसद्दा, गुणा गुणंणेव जाणए किंचि ॥ कस्स णिवेयेएमि णायं, जइ नवई एरिसो संघो ॥१०४॥ साहण सहाय रहिउ, कुणई कधं धम्म साहगो साहु ॥ साहण सहाय सरिसं, सिज्झइ कज्जं सुहासुहं सव्वं ॥ १०५ ॥ चिच्चा सढहढवायं, मयवायं माण मायवायं च ॥ जइ हवह गुणलाहं, रिउ-

भावे सुणइ चचेह ॥ १०६ ॥ कुणई कुमिल कुभावे, भणणं गुणणं च कहण सुणणं च ॥ पुब्बण चच्चणयायी, सव्वंपि निरब्बयं तस्स ॥१०७॥ तम्हा कुमिल कुभावं, चिच्चा धरिऊण हियय रिउ भावं ॥ भईऊण लोय भावं, जिणधम्मं कुणइ भोभवा ॥१०८॥ जं सादवाद धम्मं, छ भय नवत्तं न जाणए मूढो ॥ एगं तं गही ऊणय, भावण उत्थावणं कुणई ॥ १०९ ॥ तं जिणधम्म विराहग, भूदा खलु भमदिणंत संसारे ॥ तम्हा आणपमाणं, कुणइय इउण मय वायं ॥११०॥ तम्हा परिक्खणं खलु, कत्तवं देव धम्म गुरु गंथे ॥ सच्चेयरमिस्सेहव, गेयं हेयं उवाएयं ॥ १११ ॥ सिरि नागपुरी नाम, वरू तव गछे जुगप्पहाणोय ॥ सिरि पासचंदसूरि, सरपट्टे अठमे अछि ॥ ११२ ॥ सिरि णेमिचंदसूरी, सररखे दुसम समयगुणं ॥ मालारूवं सदगं, रइयं मुणि कम्मसिंहेण ॥ ११३ ॥ जो भवि भव सहावे, पढदी गुणदी कुणोदि गुणगहणं ॥ गुणगहणे गुण लहणं, गुण लहणे लहदि परमपयं ॥ ११४ ॥

॥इति श्री महामहोपाध्याय मुनिश्री कर्मसिंहेन रचितं श्री कलिकाल स्वरूप कथनशतकं समाप्तम्॥

अथ श्री गुणस्थानकचिन्हानि कथ्यंते.

जीवनां गुण ज्ञान दर्शन चारित्र रूप (जीवस्वन्नावना) तरतम विशेष कृत न्नेदवमे गुणस्थानके जीवना पण न्नेद थाय ठे ते ए केः—प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थानक एटले के जिनवचनथी विपरीत दृष्टिये अर्थात् जीवादि नव तत्वनी विपरीत प्रतिपत्ति, जेम धंतरानां बीज खावामां आववाथी धोळी चीज पण पीळीज न्नासे अथवा पीळीजठे एम मानी बेसे, तेम मिथ्यात्वमोहनीना जोरवमे देव गुरु धर्म ए ३ विपरीतपणे अने सर्व वस्तुने एकांतपणे मानी ले, पण सापेक्षपणे न माने, अथवा जिनवचन संपूर्ण सद्दहतां पण एक अक्षर मात्रनो अविश्वास जमालीनी पेठे लावे ते मिथ्यादृष्टिनुं चिन्ह ठे. कोइ कहेशे के-- मिथ्यात्व दोष डुष्टने गुणठाणी केम कही शकीए ! तेना उत्तरमां एटलुंज के-- यद्यपि मिथ्यात्व मोहनीय प्रकृति सर्व घातिनीठे तथापि तेथी सर्व ते स्वप्रतिपत्ति

हणाए; तोपण मेघाछादित सूर्यप्रभानी पेठे रात्रि दिवस विभागनी करनारी प्रभा अनावृति होय छे, तेवीज रीते जीवने पण एकांशे घटादिकनी प्रतिपत्ती अविरुद्ध होय तथा अक्षरनो अनंतमो भाग उघाडो हमेशां जीवने रहे छे, ते परम निकृष्ट गुणनी अपेक्षाये मिथ्यात्वीने गुणस्थनाक कहेल छे. पुनः कोइ कहेछे के-- ज्यारे मिथ्यात्वी पण मुक्ति हेतु क्रिया करे त्यारे गुणठाणी गणाय छे, पण ते सिवाय मिथ्यात्व भूमिस्थ गणाय छे. अथवा ए सम्यक्त्वादि गुण प्रात करशे तेथी गुणठाणी कहेवाइ शकाय छे. १

बीजुं सास्वादन गुणस्थानक एटले के, उपशम सम्यकत्व पामी एक समय तथा छ आवळी शेष सम्यकत्व काळ होवा छतां अनंतानुबंधियाना उदयथी उपशमिक वमतां क्षीर स्वाद समान भाव मिथ्यात्व प्रात थयां पहेलां होय ते सास्वादन सम्यक्दृष्टि गुणस्थाक गणाय छे. २.

मिश्र गुणस्थानक एटले के मिश्र मोहनीना उदयवडे श्री जिनना वचनोनी उपर रागद्वेष न होय ते त्रीजुं गुणस्थानक कहेवाय छे. ३

चोथुं अविरति सम्यकदृष्टि गुणस्थानक एटले के--विरति गुण जाणतां छतां भवप्रत्ययें अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयें करीने आदरी न शके, ते जाणे न आदरी न पाळी शके १, तथा जाणे न आदरे पाळे २, अने जाणे आदरे पण पाळी न शके ३, आ त्रण भांगे वर्त्ततां क्षायिक १, उपसमिक २, अने वेदक ३, आमांथी एकज तत्त्व रुचिरूप सम्यकत्व प्राप्त करी जे जे अध्यवसाए जिनवचन यथास्थितपणे परिणमे ते चोथुं गुणठाणुं कहेवाय छे. ४.

पांचमुं देशविरति गुणस्थानक एटले के-सावद्य योगनी एकदेशे विरति जेम निरपराधि निरपेक्षसंकल्पी त्रसजीवनुं न हणवुं इत्यादि हिंसानिषेधरूप सम्यकत्व सहित अध्यवसाय जाणे आदरे पाळें ए भांगें वर्त्तें ते पांचमुं गुणस्थानक त्यां नवकारसी आदि प्रत्याख्याननो उदय होय छे.५.

छठुं प्रमत्त गुणठाणुं एटले के-पांच प्रमादवडे चारित्र मलीन अध्यवसायथी थाय ते अप्रमत्तना अध्यवसायनी अपेक्षायें पडतां, देशविरतिनी अपेक्षायें चडतां अनंत गुणविशुद्ध एवी माया परिणामें वर्त्तेछे. ६.

सातमुं अप्रमत्त संयम गुणठाणुं एटले के-ते पांच प्रमाद रहित अनंत गुण विशुद्ध निश्चय चारित्र विषे स्थिरता रूप ते सहित जे अध्यवसाय तेज सातमुं गुणठाणुं कहेवाय छे. ७.

आठमुं निवृत्ति गुणठाणुं एटले के-चारित्रमोहनी प्रकृति २१ उपसमाववा तथा खपाववाने माटे जेणे अतिविशुद्ध अध्यवसायवके विशेष वीर्योल्लास युक्त स्थितिघात, १, रसघात २, गुणश्रेणि ३, गुणसंक्रम ४ अने अपूर्व स्थितिबंध ५ ए पांच वस्तु आद्यथी अपूर्वकरणे कहेवाय छे, तथा एक समय अनेक जीव गुणठाणे चड्या तेने शुद्ध शुद्धतरादिक अध्यवसाय भेदवके निवृत्ति कहेतां फेरफार होय त्यां एनुं नाम निवृत्ति गुणठाणुं पण कहवायछे. आ गुणस्थानके समय समय अनंतगुण विशुद्ध थाय छे. ८

नवमुं बादरसंपराय गुणठाणुं एटले के-एक समयमां अनेक जीव चके अने अध्यवसाय फेरफार न होय तेथी एनुं नाम अनिवृत्ति कहेवाय छे, तथा बादर (मोटा) संपराय (कषाय) ना अहींयां खंऊ थाय छे तेथी बादर संपराय कहेवाय छे. ९

दशमुं सूक्ष्मसंपराय गुणठाणुं एटले के-सूक्ष्म कीट्टीकृत लोभ वेदतां शेष मोहनीयना क्षय-वडे तथा उपसमवडे जे विशुद्ध अध्यवसाय ते दशम गुणस्थानक कहेवाय छे. १०

अग्यारमुं उपशांतमोहनी छद्मस्थ वीतराग गुणठाणुं एटले के-जेम पाणी नीतरवाथी तेमां-नो मेल तळिये ठरी जतां पाणी निर्मल थाय तेम मोहनी कर्मना उपसमवाथी अध्यवसाय निर्मल थायछे. तेमज कषाय सत्तामां रहे छे ते माटे कषाय उदय थया के डोलायला पाणीनी पेठे मलीन अध्यवसाय थवानो संभव होय छे, तेना लीधे उपशांत मोहनी कहेवाय छे. आ गुणठाणथी अ-वश्य पाछो पडे अने जो मरे तो अनुत्तरवासि देव थाय त्यां पण चोथुं गुणठाणुं प्राप्त थाय छे. अन्यथा दशमुं प्राप्त थाय छे. ११

बारमुं क्षीणमोह वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानक एटले के—सर्व मोहप्रकृति खपाव्याथी मोहनी सत्ता दूर थाय तेथी अत्यंत विशुद्ध अध्यवसायवंत थाय छे. १२

तेरमुं संयोगी केवळी गुणठाणुं एटले के-केवळज्ञान प्राप्त थया पछी ज्यां लगी बादर योग

मन वचन कायाना प्रवर्त्ते हाले चाले बोले त्यां लगी संयोगी केवळी कहेवाय छे.

चौदमुं अयोगी केवळी गुणठाणुं एटले के–बादरयोग रुंधवाथी मन वचन कायाना व्यापारना अभावथी करण वीर्यरहित मेरुनी पेठे निःप्रकंप जणी शैलेसीकरण करवाने लीधे अयोगी केवळी गुणस्थान कहेवायछे. आ गुणस्थानके व्युपरत–क्रिय अप्रतिपाती नामनो शुक्लध्याननो चोथो पायो प्राप्त थायछे तेथी शुक्लकाययोगवडे केवळीने योगनिरोध थायछे, पण ते सर्वथा योगना अभावथी न थाय. अयोगीपणुं ते बादर योगना अभाववडे अपेक्षाए लेवायछे. इत्यादि.

ए चौद गुणस्थाननुं कालमान कहे छे.

मिथ्यात्व गुणठाणुं अभव्यने अनादि अनंत, भव्यने अनादिसांत तथा सादिसांत होयछे. ५–६–७–१३ ए गुणठाणे देश ऊणो पूर्वकोडी काल छे. ४ थे सागर ३३ साधिक कालमानछे. २ जे छ आवळी, १४ पांच ह्रस्वाक्षर प्रमाण काल होयछे. शेष छ गुणठाणे काल उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त होयछे.

॥ मुनि श्री ज्ञाणचंद्रजी कृत प्रश्नोत्तर.॥

प्रश्नः—जीव साथे कर्म अनादिनांछे तेनो वियोग केम थायछे ?

उत्तरः—कर्म बे प्रकारनां होयछे एटले के—सहज स्वज्ञाव संपाद्य कर्म अने बीजुं सहकारी स्वज्ञाव संपाद्य कर्मछे. ते पैकी जे सहज स्वज्ञाव संपाद्य कर्मछे ते अनादिछे तेथी तेनो वियोग नथी. पण जे सहकारी स्वज्ञाव संपाद्य कर्मछे ते सादिछे तेथी तेनो वियोग थायछे ए माटे कर्मनो अने जीवनो संबंध संयोगवडे सादि अने प्रवाहे अनादिछे. जे संयोगी ज्ञावछे ते वियोगगर्भितछे तो ते विज्ञावजनित कर्म जातेज अन्यछे. अन्य होय ते दूर थाय तेमां संदेह लाववा जेवुं पण शुंछे ?! मूळथीज कर्मबंध समयेज जीव ते निमित्त कारणछे, उपादान कारण नथी. मात्र जुक्तवा वखते उपादान पणे परिणामे छे, एम मूळथीज जे बेउ द्रव्य ज्निन्न छे ते उपाय वडे

वियोग थतां अडचण आवती नथी. पुनः जीवने कर्मनो कर्त्ता कहिये छिये ते व्यवहारथी छे. जेम कुंभार घडानो कर्त्ता छे, पण निमित्त मात्रथी ते कर्त्ता कहेवाय छे, तेम जीव पण कर्मनो निमित्त कारणज छे, पुद्गलास्तिकाय द्रव्य ते लोकाकाशमां सर्व स्थळे फरतो छे. सकर्मा जीव पण एमज छे. ते ज्यारे एक क्षेत्रावगाही थाय छे त्यारे ग्राह्य ग्राहकभाव संबंधे तथाविध द्रव्यादि सामग्री संयोगवडे कर्मपणे थाय छे. ते बनता कर्म प्रत्ये जीव पोते निमित्त कारण थाय छे तेज कर्म भोगववा वखते उपादान कारणपणे थाय छे, ते कर्मस्थिति मात्रायेज रहे छे ते सादि छे एम हमेशांनो नियम छे, ते माटे अनादि कहेवाय छे, तेनो वियोग छे. जेम खाणमां पेदा थयेलुं सोनुं सदा माटीनी साथे भेगुं छे; परंतु तथाविध उपायवडे सुवर्ण ते माटीथी रहित थाय छे, तेमज जीव पण प्रवाहे अनादि कर्म संबंधे सहित; पण योग साधनादि सामग्री संयोगे शुद्ध द्रव्यरूप थाय छे एमज सद्दहवुं योग्य छे. ॥ इति महामहोपाध्याय मुनि श्री ज्ञाणचंन्द्र कृत प्रश्नोत्तरम् ॥



अथ अष्टकर्म संबंधी बोलविचार.

आठे कर्मना स्वन्नाव कोना जेवा ले ए संबंधीनो विचार नवतत्त्वनी अंदर कथन करेल ले. ते आठे कर्म पैकी ज्ञानावरणी कर्मवडे अनंत ज्ञानगुण ढंकाइ जाय ले, दर्शनावरणीवडे अनंत दर्शन गुण ढंकाइ जाय ले. वेदनी कर्मवडे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोकाइ जाय ले, मोहनी कर्मवडे क्षायिक समकित गुण रोकाइ जाय ले, आयुकर्मवडे अक्षय स्थिति गुण रोकाइ रहे ले, नामकर्मना उदयवडे अमूर्त्तिगुण रोकाय ले. गोत्र कर्मवडे अगुरुलघु गुण रोकाय ले अने अंतराय कर्मवडे अनंतवीर्य आत्मशक्ति रोकाय ले.

ज्ञानावरणी कर्म ल प्रकारथी बंधाय ले, ते (कर्मबंधनी विगत श्री नगवतीजीमां ले.) ए के-" नाणपमिणियाए "-ज्ञानीनुं भुंडुं बोले १ " नाणनिन्हवणयाए " ज्ञानीनो उपकार न माने २, "नाणंतराएणं" सूत्र नणनारने विघ्न करे. ३, "नाणप्पउसेणं" ज्ञान अने ज्ञानी ऊपर

द्वेष राखे. ५, " नाणआसायणाए "—ज्ञाननी आशातना करे. ५, णाणविसंवादणा जोगेणं "—ज्ञाननो व्यभिचार बतावे अथवा ज्ञानथी विपरीत उपदेश करे. ६, आ छ प्रकारे ज्ञानावरणी कर्म शरीर प्रयोग नामकर्मना उदयवडे ज्ञानावरणी कर्म शरीर प्रयोग बंध अर्थात् आ छ प्रकारथी ज्ञानावरणी कर्म बंधाय छे. तथा ते कर्म पांच अथवा दश प्रकारथी जोगवाय छे. तेमां मतिज्ञानावरणी १, श्रुतज्ञानावरणी २, अवधिज्ञानावरणी ३, मनपर्यवज्ञानावरणी ४, अने केवलज्ञानावरणी ५, ए पांच ज्ञान प्रकट थवा न दे. तेमज दश प्रकार ए छे के सोयावरणे १, सोयविन्नाणवरणे २, नेतावरणे ३, नेतविन्नाणवरणे ४, घाणावरणे ५, घाणविन्नाणवरणे ६, जीन्नावरणे ७, जीन्नविन्नाणवरणे ८, फासावरणे ए, फासविन्नाणवरणे १०, आ दश प्रकारे जोगवाय छे. ए ज्ञानावरणी कर्मनी स्थिति आ प्रमाणे छे के—जघन्य अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट त्रीश कोमाकोमी सागरनी तथा अबाधा काळ त्रण हजार वर्षनो छे.

दर्शनावरणी छ प्रकारे बंधाय छे अने नव प्रकारे जोगवाय छे, ते ए के–(छ प्रकार ज्ञानावर-

णीनी पेठेज समजी लेवा.) चक्षु दर्शनावरणी १, अचक्षु दर्शनावरणी २, अवधि दर्शनावरणी ३, केवळ दर्शनावरणी ४, निद्रा ५, निद्रानिद्रा ६, प्रचला ७, प्रचलाप्रचला, ८ अने थिणद्धि ए आ नव प्रकारथी जोगवाय छे. दर्शनावरणीनी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट त्रीश कोडाकोड सागरोपम अने अबाधा काल त्रण हजार वर्षनो छे.

वेदनी कर्म बे प्रकारे होय छे--एटले के शाता वेदनी अने अशाता वेदनी. शाता वेदनी दश प्रकारे बंधाय छे ते एवी रीते के,—पाणाणुकंपयाए १, जूआणुकंपयाए २, जीवाणुकंपयाए ३, सत्ताणुकंपयाए ४, बहूणं पाणाणं जूयाणं जीवाणं सत्ताणं अडुख्खणआए ५, असोयणाए ६, अ-जूरणयाए ७, अतिप्पणयाए ८, अपिट्टणयाए ए, अपरियावणयाए १० आ दश प्रकारे बंधाय छे, अने आठ प्रकारे जोगवाय छे ते ए के—मणुन्नासद्दा १, मणुन्नारूवा २, मणुन्नागंधा ३, मणुन्नारसा ४, मणुन्नाफासा ५, मणसुहाए ६, वयसुहाए ७, कायसुहाए ८ आ ८ प्रकार छे.

अशाता वेदनी बार प्रकारे बंधाय, अने आठ प्रकारे जोगवाय छे ते एके—परदुख्खणयाए १,

परसोयणयाए २, परफूरणयाए ३, परतिप्पणयाए ४, परपिट्टणयाए ५, परपरियावणयाए ६, बहुणं पाणाणं जूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुख्खणयाए ७, सोयणआए ७, फूरणयाए ए, तिप्पणयाए १०, पिट्टणयाए ११, परियावणयाए १२ आ बार प्रकार बंधना छे, अने अमणुन्नसद्दा १, रूवा, गंधा, फासा, रसा, मणदुहया, वयदुहया अने कायदुहया आ ७ जुक्तवाना प्रकार छे. वेदनी कर्मनी स्थिति त्रीश कोमाकोमी सागरोपमनी अने अबाधाकाळ त्रण हजार वर्षनो छे.

मोहनीकर्म ७ प्रकारे बंधाय छे अने अठ्यावीश प्रकारे जोगवाय छे ते एवी रीते केः—तिव्व-कोहे १, तिव्वमाणे २, तिव्वमायाए ३, तिव्वलोहे ४, तिव्वदंसणमोहणीजाए ५, तिव्वचरित्तमोहणी जाए ६, आ ७ प्रकार बंधना छे, अने अनंतानुबंधी क्रोध के जे पर्वतनी रेखा सरखो १, अनंता-नु बंधी मान के जे पथराना थांजला जेवो २, अनंतानुबंधी माया के जे वांसमानी गांठ समान ३, अनंतानुबंधी लोज के जे किरमजना रंग समान छे. आ चारे नरकनी गति आपे छे अने जावजीव रही समकितनो घात करे छे. अप्रत्याख्यानी क्रोध पृथ्विनी रेखा समान १, मान

(अप्रत्याख्यानी) अस्थि समान २, अप्रत्याख्यानी माया घेटाना शिंगडा सरखो अने अप्रत्याख्यानी लोभ गाडानी धरीनी मळी समान छे अने एओ तिर्यंचनी गतिदाता छे. स्थिति वर्ष दिवसनी अने देशविरतीनो घात करनार छे. प्रत्याख्यानी क्रोध वेळुनी रेखा समान १, प्र० मान काष्ट सरखुं २, प्र० माया गोमूत्रना समान ३, प्र० लोभ नगरनी खाळना कादव समान होय छे. एओनी स्थिति चार मासनी, गति मनुष्यनी आपी शके अने सर्वविरतीनो घात करे छे. संज्वलन क्रोध पाणीनी लीटी समान १, सं० मान नेत्रनी सळी समान २, सं० माया वांसडानी छोल समान ३, अने सं० लोभ हळदरना रंग समान ४. एओनी स्थिति पंदर दिवसनी, देवगतिदाता, अने यथाख्यात चारित्रनो भंग करे छे.

आ सर्व मळी १६ कषाय ए नोकषाय छे. हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद अने नपुंसकवेद ए चारित्र मोहनीनी पचीश प्रकृति. समकित मोहनीनी त्रण प्रकृति— समकित मोहनी १, मिश्रमोहनी २, मिथ्यात्व मोहनी ३ ए सर्व मळी २८ प्रकृति छे. एउनी स्थिति

जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्टथी ७० कोडा कोड सागरोपमनी तथा अबाधा काळ जघन्य अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कृष्टी ७००० वर्षनी छे.

आयु कर्म सोळ प्रकारथी बंधाय छे अने चार गतिमां चार प्रकारे भोगवाय एटले के-नारकीनुं आयु चार प्रकारथी बंधाय छे ते ए के-महारंभियाए १, महा परिग्गहाए २, कुणिमाहारेणं ३, पंचिंदियवहेणं ४. तिर्यंचनुं आयु चार प्रकारे बंधाय छे ते ए के-माइल्लियाए १, नियडिल्लियाए २, अलीयवयणेणं ३, कुडतुल्लकूडमाणेणं ४. मनुष्यनुं आयु पण चार प्रकारथी बंधाय छे ते एज के-पगइभद्दयाए १, पगईविणियाए २, साणुक्कोसियाए ३, अमच्छरिआए ४. एज रीते देवनुं आयु पण चार रीते बंधाय छे ते ए के-सराग संजमेणं १, संजमासंजमेणं २, बालतवो कामेणं ३, अकाम निज्जराएणं ४, आ चार प्रकारना ४-४ मळी १६ भेद थया ते चारे गतिनी अंदर चार चार रीते भोगवाय छे. नारकी, देवतानी स्थिति जघन्य दश हजार वर्षनी अने उत्कृष्टपणे ३३ सागरोपमनी, तेमज मनुष्य, तिर्यंचनी स्थिति जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्टपणे त्रण पल्योपमनी छे.

नाम कर्मना बे भेद छे ते ए के पहेलुं शुभ नाम कर्म अने बीजुं अशुभ नाम कर्म छे. ते पैकी शुभ नाम कर्म चार प्रकारथी बंधाय छे अर्थात् कायउज्जुआए १, भासउज्जुआए २, भावउज्जुयाए ३, अविसंवायणाजोगेणं ४ आ चार प्रकारे बंधाय छे अने चौद प्रकारथी भोगवाय छे ते ए के—इठा सद्दा रूवा रसा गंधा जाव फासा १-थी-५, इठागइ ६, इठाठिई ७, इठेलावन्ने ८, इठाजसोकित्ति ए, इठेउठाणकम्मबलवीरियपुरिसक्कारपरकम्मे १०, इठसरया ११, कंतसरया १२, पियसरया १३, मणुन्नसरया १४ आ चौद प्रकारे भोगवाय छे. अशुभ नाम कर्मनी प्रकृति ४ प्रकारे बंधाय छे ते ए के—कायअणुज्जुआए १, भासअणुज्जुआए २, भावअणुज्जुयाए ३, विसंवायणाजोगेणं ४ आ चार कारणथी बंधाय छे अने चौद प्रकारथी भोगवाय छे ते ए के—अणिठासद्दाजाव अणिठाफासा ५, अणिठागई ६, अणिठाठिई ७, अणिठेलावण्णे ८, अणिठाजसोकित्ति ए, अणिठेउठाणकम्मबळवीरियपुरिसक्कारपरकम्मे १०, हीणसरया ११, दीण १२, अणिठ १३, अकंतसरया १४ ए चौद छे. नाम कर्मनी त्राणु प्रकृति छे. ते कर्मग्रंथथी जाणी लेवी. एनी स्थिति

जघन्यथी आठ मुहूर्त्तनी अने उत्कृष्टपणे वीश कोमा कोमी सागरोपमनी, तथा अबाधा काळ बे हजार वर्षनो छे.

गोत्र कर्मना २ भेद छे ते ए के--उच्च गोत्र अने नीच गोत्र. ए ७ प्रकारे बंधाय छे माटे आठ मद न करवा. उच्च गोत्र बांधे ते पण आठ प्रकारे भोगवाय छे एटले के--जाइविसिठ्ठया १, कुलविसिठ्ठया २, बलविसिठ्ठया ३, रूवविसिठ्ठया ४, तवविसिठ्ठया ५, सुयविसिठ्ठया ६, लाभविसिठ्ठया ७, इसरियविसिठ्ठयाए ७ आ आठ प्रकारथी भोगवाय छे अने उच्चपणुं पामे छे. नीच गोत्र आठ प्रकारे बंधाय छे ते ए के--जाइमएणं १, कुलमएणं २, जावईस्सरियमएणं ७ ए आठ प्रकारे जे मद करे ते नीच गोत्र बांधे छे, अने ते आठ प्रकारे भोगवाय छे. एटले के जाईविहीणया, कुलविहीणया, जाव ईस्सरियविहीणया. ए आठ प्रकारथी हीणपणुं भोगवे छे. ए कर्मनी स्थिति जघन्यथी ७ मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टथी २० कोमाकोमी सागरोपमनी, अने अबाधाकाळ २००० वर्षनो छे.

अंतराय कर्म पांच प्रकारथी बंधाय छे एटले के--दानांतराय पामवाथी, लाभांतराय करावाथी

ईर्ष्याए भोगांतराय कराववाथी, उपभोगांतराय कराववाथी अने वीर्यांतराय कराववाथी आ पांच प्रकारथी बंधाय छे अने पांच प्रकारथी भोगवाय छे एटले के--दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय अने वीर्यांतराय. ए कर्मनी स्थिति जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टथी ३० कोडाकोडी सागरोपमनी अने अबाधाकाळ ३००० वर्षनो छे. ॥ इति अष्टकर्म विचारः ॥

॥ अथ श्री आठ मद परिहार सज्झाय. ॥

(राह त्रिताल चोपाइनो.)

सुगुरु सीख रे जीव संभाळि, आठे मद मनहुंता टाळी ॥ दिनकर तापें ग्रीषमकाळि, जिम जळ छंडे सरवर पाळि ॥ १ ॥ आठे आठ करमना ठाम, जेवुं नाम तेवुं परिणाम ॥ घणो काळ एनो उन्माद, पंचमांहि ए प्रथम प्रमाद ॥ २ ॥ माता पक्ष जाति जगे कही, कर्मवशें ते उत्तम

लही ॥ एहनो मद म कर लगार, ए तें लही अनंती वार ॥ ३ ॥ अधम जाति पुण वार अनंत, ते कहेतां न लहिये अंत ॥ करिये गर्व किशुं मन जाणि, परिहर संभलि आगमवाणी ॥ ४ ॥ पिता पक्षतणो कुल तेह, प्राणीने मद कारण जेह ॥ उत्तम नर पुण इण मदे कळया, अवर लोक किहां जाय टळ्या ॥ ५ ॥ मरीचिने भवे श्री वर्द्धमान, कुलमद करी अति सपराण ॥ ते पुण माहण कुळ अवतर्या, कर्म खप्ये भवसायर तर्या ॥ ६ ॥ इशो जाणी कुळमद टाळीजे, निरतो सूत्र वचन पाळीजे ॥ प्राणी ए तुज अपूरव नहीं, काळ अनंतो इम गयो वही ॥ ७ ॥ गुण पाखें रूपें हुए किंशुं, परमारथि जनमनगुण वश्युं ॥ आवळ फूल सेवंत्री जोय, गुण विण रूपें राचे न कोय ॥ ८ ॥ जो गुण हुए तो जश पावीजे, रूप विण पुण इम भावीजे ॥ इण कारण गुण करो प्रमाण, रूप लही मद तजो सुजाण ॥ ९ ॥ रूप मदे चक्री सनतकुमार, उपन्या अंगे कोढ अढार ॥ संयम लेइ परिसह सह्या, तिणे मद छंडी परमपद लह्या ॥ १० ॥ रूप तणो मद जीव निवार, इम नहु पामिश भवजळ पार ॥ गर्वें कोइ न सीझे काज, गरवे न लहे शिवपुरराज ॥ ११ ॥

प्राणी तुज बळ केहो होय, काळ अतीत विमासी जोयं ॥ त्रेशठशिलाका पुरुष जे हुआ, तेहना चरित जाणि जुजूआ ॥ १२ ॥ तसु बळ केहनी जामलि नहीं, तसु प्रमाण हुं न शकुं कही ॥ अनंत काळे ते थया अनंत, गुण गिरुआ मोटा बळवंत ॥ १३ ॥ ते चिंतवी आपणपुं जोय, खजूआ सूर सम अंतर होय ॥ बळ मद टाळी चरण बळ धरे, काया निर्मळ इणि परे करे ॥ १४ ॥ श्रुतसागर जिम बे अपार, चउद पूरव अंग अग्यार ॥ जेइणे श्रुत पार ऊतर्या, तिणे पुण श्रुत मद नहुं कर्या ॥ १५ ॥ आदि एग डुइ श्रुतकेवळी, तरतमयोगें श्रुत ते वळी ॥ इम करतां शुं श्रुत तुज पास, म करिश मद इम हिये विमास. ॥ १६ ॥ आदीश्वरें वरषी तप कर्यो, वीरें ब मासी तप आदर्यो ॥ वर्गप्रतरघन एकावळी, सिंहनी क्रीम्ति कनकावळी ॥१७॥ इत्यादिक डुःकर तप जणया, वळी अनंते कीधा सुणया ॥ बारह प्रतिमा समरसें वही, जावजीव लगी निरवही ॥१७॥ रे जीव तेहवो तप नहु थाय, तो डुःकर केम कराय ॥ फोकट मद इम जाणि करी, किशुं करे अशक्ति. आदरी ॥ १ए ॥ ववहरतां एकांते लाज, कह्युं न जाय एकंति अलाज ॥ करमयोगें

ए थाए सही, मद करतां होय अधिको नहीं ॥ २० ॥ इशुं विचारी लाभमद छंडी, संजम ववहरवे बळ मंडी ॥ इणिपरे होशे अनंतो लाह, एह ऊपर मन करे उछाह ॥ २१ ॥ अथिर लच्छि जिम संध्याराग, सूखिम सूत्र जिम काचो ताग; बे पहरनी जिम छांहडी, कापुरिष केरी जिम बांहडी. ॥ २२ ॥ खिण खिण आवे खिण खिण जाय, जे धनवंत ते निरधन थाय; करम उदय ते वळि धनवंत, लखमीमद म करीश गुणवंत ॥ २३ ॥ ए मद करता हीणा सहू, मद टाळंतां वृद्धि हुए बहू; सांभळि सुगुरु तणो उपदेश, आठे मदनो टाळो लेश ॥ २४ ॥ सूत्र साखे ए करो विचार, पाळो पूरा पंचाचार; (श्री) पार्श्वचंद्रसूरीश्वर कहे, जे पाळ ते शिवसुख लहे ॥ २५ ॥

॥ सामायिकना बत्रीश दोषनी स्वाध्याय ॥

(त्रिताल चोपाइ)

पहिला प्रणमुं जिण चउवीश, सुगुरु नाम समरुं निशिदीश ॥ पन्नणिश श्रावकने अधिकार, सामायिक विधि श्रुतआधार ॥ १ ॥ आरत रौद्र तणो परिहार, अवधि सीम संजम आधार ॥ आणी समतानो परिणाम, सामायिक करवो अभिराम ॥ २ ॥ तेह तणाछे दोष बत्रीश, ते पन्नणिश मन धरी जगीश ॥ जे सांभळी श्रावक खप करे, हेलें जिम भवसायर तरे ॥ ३ ॥ वस्त्रि बांहि वाळी पालठी, प्रथम दोष ए जुगतो नथी ॥ आघुं पाछुं आसण थाय, बीजुं ए दूषण कहेवाय ॥ ४ ॥ दृष्टि न राखे एकण दिशे, जोवे चपळपणे चिहुं दिशें ॥ त्रीजो दोष सामायिक जाण, व्रत धरी परिहर हीअडे आण ॥ ५ ॥ अल्प बहुल लागे सावज्ज, चोथे दोष निवारो कज्ज ॥ पूंठ भीत पाटि ने स्तंभ, पंचम दोष जे ह्ये अवठंभ ॥ ६ ॥ अति संकोडे अंग उवंग, छठो दोष करे व्रतभंग ॥ आलस मोडे ए सातमो, भंजे करडक ए आठमो ॥ ७ ॥ नवमो मेल उतारे जेह,

दीलतणो व्रत दूषे तेह ॥ खणे खाज ए दशमो जाण, टाळंतां व्रत चढे प्रमाण ॥ ८ ॥ अंगे वी-
सामण कारवे, दोष इग्यारम व्रत हारवे ॥ बारम दोष जे निद्रा करे, बार दोष काया परिहरे
॥ ए ॥ वचनतणा दश दोष पिछाण, परिहरि चतुरपणो चित आण ॥ बोले कुवचन पहिलो
दोष, लागो जाणी म धरिश तोष ॥ १० ॥ बीजे म भणिश सहसाकार, आघो पाछो हिव त्रीजो
वार ॥ आपणछंदे जे बोलिये, चउथो दोष त्रिषे तोलिये ॥ ११ ॥ भणतो सूत्र म कर संक्षेप, पं-
चम दोषतणो निक्षेप ॥ कलह म मंडिश जां व्रतभार, छठा दोषतणो परिहार ॥ १२ ॥ विकथा
सप्तम दोष निवार, परउपहास आठमो विचार ॥ संपद पद विण उतावळो, म भणो नवम
दोषथी टळो ॥ १३ ॥ जाव आव इम कहिये नहीं, दशम दोष परिहरिये सही ॥ वचनतणा
ए जाणी दोष, टाळि करो सामायिक पोष ॥ १४ ॥ मनना दोष हिवे सांभळो, परिहर भवियण
पूरे रळी ॥ प्रथम दोष मन नहीं विवेक, नहु जाणे ऊणो अतिरेक ॥ १५ ॥ यश कीरति वांछे
अति घणी, करे सामायिक जे तिह भणी ॥ बीजो दोष ए आगम कह्यो, भवियण जण जाणि

निग्रह्यो ॥ १६ ॥ हियडे वांछे धननो लाह, त्रीजे दोषे घणो गुण दाह ॥ चउथो दोष जे करिए गर्व, एहथी निर्गमीए फळ सर्व ॥ १७ ॥ करे सामायिक जे बीहतो, वारे सुगुण दोष ईहतो ॥ पुत्र धनादिकतणो निदान, करतां छठो दोष निदान ॥ १८ ॥ सामायिक फळ विधि जे कही, शुं जाणुं होशे वा नहीं ॥ इम संशय हियडे आणिये, सप्तम दोष ते श्रुति जाणिये ॥ १९ ॥ अष्टम करे जे आणी रोष, अविनय करतां नवमो दोष ॥ भगति हीण ए दशमो सही, श्रावक ए आदरवो नहीं ॥ २० ॥ (उपजाति छंद) बत्तीस दोसेहिं विसुद्धमेवं, करिज्ज सामाइय मप्पमत्तो ॥ निच्चं नरो तस्स सुहं समग्गं, कहेइ एवं मुणि पासचंदो ॥ २१ ॥



॥ श्री जिनोक्त सद्दहणा क्रिया स्वाध्याय द्वात्रिंशिका. ॥

(राग शुपाल अथवा भेखरे उतारो राजा भरथरी–ए देशी.)

सोहम गणहर पय नमी, कहीशुं किंपि विचारजी ॥ सद्दहणा किरीआतणो, जिम आगम विस्तारजी ॥ १ ॥ भविअण निरतो उळखो, श्री जिनशासन मर्म्मजी ॥ सद्दहणा सूधी क्रिया, जिम लहिये शिवशर्म्मजी ॥ भविअण ॥ २॥ द्रव्यत इणे जीवें लह्यो, धर्म्म अनंती वारजी ॥ इक समकित विण बहु रूळयो, चउगइगहन मझारजी ॥ भविअण ॥ ३ ॥ सद्दहणा जे श्रुतें कही, पहिले बीजे अंगजी ॥ धर्मपरीक्षा तिह अछे, जो जो मनने रंगजी ॥ भविअण ॥ ४ ॥ पढम अंग चउथे झयणे, जैन शैव संवादजी ॥ त्रिणिशत त्रयशठ एकठा, बोद्ध्या गाढे सादजी ॥ भविअण ॥ ॥ ५ ॥ धर्म्मारथ आरंभ जिहां, तिहां अम दोष न कोयजी ॥ जैनीऐं एह वचन सुणयो, उत्तर वाळे सोयजी ॥ भविअण ॥ ६ ॥ अहो अनारज तुमे किशुं ? बोद्ध्युं वचन विरुद्धजी ॥ जिनमतना

जे जाण छे, वचन वदे ते शुद्धजी ॥ भवियण ॥ ७ ॥ जीव जिहां हणिये नहीं, तिहां नहि दोष लगारजी ॥ अम्ह तित्थेसर इम कहें, इणिपरें जिनमत सारजी ॥ भवियण ॥ ८ ॥ जिन विधि-वादे जे कहें, सावद्यनो लवलेशजी ॥ ते मिथ्याती जाणवो, भवमांहि लहे कलेशजी ॥ भवियण ॥ ९ ॥ धरम मिश्र आरंभ जिहां, देखी रहे उदासजी ॥ त्रिकरण शुद्धे साधु ते, पामे सौख्य निवासजी ॥ भवियण ॥ १० ॥ उदयक तिथि जिणवरें कही, चंद सूरपन्नत्तिजी ॥ पंचमंग शत बारमें, एहतणी वळि वृत्तिजी ॥ भवियण ॥ ११ ॥ दिन ऊगमते जे तिथि, समयादिक जब होयजी ॥ अहोरात्री ते तेहनो, सद्दहे तिथिमांहे सोयजी ॥ भवियण ॥ १२ ॥ बीय अंगे त्रेवीशमें, अध्ययन अर्थि चउमासिजी ॥ पूनम त्रिणि पाखी सवे, चउदशे हियें विमासिजी ॥ भवियण ॥ १३ ॥ पंचमंगि पनरम शतें, पूनम चउमासि साखिजी ॥ कल्पसूत्र वृत्तियें वळी, पाखी चउदशि दाखिजी ॥ भवियण ॥ १४ ॥ दशाश्रुतस्कंधे कही. चउदशि अरथे पाखीजी ॥ पंचमे पजूसण भाखिउं, निशियकल्पसूय साखिजी ॥ भवियण ॥ १५ ॥ इम चउमासुं पूनमें, पाखी चउदशें होयजी ॥

संवत्सरी पंचमें आणयो, हिये विमासि जोयजी ॥ भविय़ण ॥ १६ ॥ हवे पडिक्कमणुं जिम कह्युं, काउस्सग्ग निरयुक्तिजी ॥ काउस्सग्ग चार त्रण वांदणा, देवसी राई युक्तिजी ॥ भवियण ॥ १७ ॥ काउस्सग्ग इक अतिचारनो, करी वंदण गुरुपायजी ॥ आलोवीने पडिक्कमे, वंदण खामण आय-जी ॥ भवियण ॥ १८ ॥ चारित्र दंशण नाणनी, तिहुं काउस्सग्गें शुद्धिजी ॥ करिय अने गुरुवांदणुं, देतां आवश्यक शुद्धजी ॥ भवियण ॥ १९ ॥ राई पडिक्कमणे कह्युं, पहिलां चरणाचारजी ॥ बीजो दंसण शुद्धिनो, त्रीजो ज्ञानाचारजी ॥ भवियण ॥ २० ॥ तिहां अतिचार चिंतवी, पारी वांदण देइजी ॥ आलोइने पडिक्कमे, वंदी खामे तेइजी ॥ भवियण ॥ २१ ॥ काउस्सग्ग मांहि तप चिं-तवी, वंदी करे पच्चक्खाणजी ॥ देववंदणुं गुणत्रीशमे, उत्तरज्झयणें ठाणजी ॥ भवियण ॥ २२ ॥ थवथुइ मंगळपद कह्यो, सूत्रे अर्थ विचारजी ॥ स्तुति इक आदे सात ज्यां, श्लोकानो अधिकारजी ॥ भवियण ॥ २३ ॥ स्तव ते शक्रस्तव कह्यो, ए जिननो विधिवादजी ॥ चउविह संघ समाचरे, टाळे सयळ प्रमादजी ॥ भवियण ॥ २४ ॥ बीजे त्रीजे उवंगुअें, पंचम छट्ठे अंगेजी ॥

अष्ठोत्तर सो स्तुति करी, ऊना रही मन रंगेजी ॥ नवियण ॥ २५ ॥ बेसी शक्रस्तव नण्यो, सम्यग् दृष्टिश्रे एमजी ॥ इणी परे चैत्यवंदन करे, संघ सिद्धांतें जेमजी ॥ नवियण ॥ २६ ॥ अविरत सुर जिन जामलिये, आराधे बिहु कालजी ॥ तसु निरमल मति किम हुवे, आवश्यकें अतिचारजी ॥ नवियण ॥ २७ ॥ इक अरिहंत आराधतां, सीझे सघळां काजजी ॥ बीजा देव आराधतां, किम लहिये शिवराजजी ॥ नवियण ॥ २८ ॥ पांचे पमिक्कमणे कह्या, त्रिणिगमा विस्तारजी ॥ पमिक्कमणे वार त्रिणि करे, सामायिक उच्चारजी ॥ नवियण ॥ २९ ॥ इक ठावी बीजो वली, पमिक्कमतां काउस्सग्गजी, त्रीजो इम पांचे करे, तसु पमिक्कमणुं जुग्गजी ॥ नवियण ॥ ३० ॥ ए विधि संक्षेपें नणी, विस्तार आगम मझारजी ॥ चतुर हुशे ते जाणशे, करशे श्रुतअनुसारजी ॥ नवियण ॥ ३१ ॥ गछाचरणा जे करे, करिय सद्दहणा पर्वजी ॥ तसु मति विपरीत जाणवी, सूत्रे बोल्युं सर्वजी ॥ नवियण ॥ ३२ ॥

॥कलश॥ इम जाणी श्रुतनी साखे सद्दहणा पर्व किरिया किजए ॥ डुल्लंन्न माणुस जनम पामी

करि परीक्षा लिजए ॥ सूरींद्र श्री पार्श्वचंद्र शिष्यवर समरचंद्र इम उच्चरे ॥ शुद्ध जिनधर्म करे इक चित्तें तेह नवसायर तरे ॥



॥ अथ श्री नगवति सूत्रमां बतावेलुं गणित प्रमाण ॥

श्री नगवति सूत्रमां बठ्ठे शतके बठ्ठे उद्देशे गणित प्रमाण कहेल बे तेनुं सुगम नाषांतर आ मुजब बे के,-श्री नगवंत समीपे गौतमस्वामिये पूब्युं, हे नगवन्! एक मूहुर्त्तें केटला उसासा होय ? स्वामीए गौतम प्रत्ये कह्युं. अहो गौतम ! समय-अति सूक्ष्मकाळ जेना एकना बे नाग न थाय एवा असंख्याता समय जाय तो एक आवलिका थाय, संख्याती आवलिकाए एक उसास, संख्याती आवलिकाए एक निःश्वास थाय. आधि व्याधि रहित हर्षित पुरुषनो एक उसास एक निःश्वास के जेने एक प्राण कहेवामां आवेबे एवा सात प्राणे एक थोव थाय, एवा सात थोवनो एक लव कहेवायबे, एवा सित्योतेर (७७) लवनुं एक मुहूर्त्त थायबे. एक मुहूर्त्तें

त्रण सहस्त्र सातसो त्योतेर श्वासोश्वास थाय. ए मुहूर्त्तने प्रमाणे त्रीस मुहूर्त्ते एक अहोरात थाय. एवा पंदर अहोरात्र जाय, एटले एक पक्ष थाय, बे पक्षे एक मास थाय, बे मासे एक ऋतु, त्रण ऋतुये एक अयन, बे अयने एक संवत्सर, पांच संवत्सरे एक युग, वीस युगे सो वरस, दससो वरषे सहस्त्र वरष थाय, सो सहस्त्र वरषे लाख वरष, चोरासी लाख वरषे एक पूर्वांग, चोरासी लाख पूर्वांगे एक पूर्व, ए पूर्व चोराशी लाख गुणो करीए एटले एक त्रुटितांग, वळी एने चोरासी लाख गुणो करीए एटले एक त्रुटित थायछे, ए अनुक्रमे प्रत्येक प्रत्येक चोराशी लाखे गुणतां, अममांग, अमम, अववांग, अवव, हुहुअंग, हुहुअ, उत्पलांग, उत्पल, पद्मांग, पद्म, नलिनांग, नलिन, अछनिउरांग, अछनिउर, अयुतांग, अयुत, नयुतांग, नयुत, प्रयुतांग, प्रयुत, चूलिकांग, चूलिका, सीसपहेलियंग, सीसपहेलिया, एटला लगे गणित गणाय छे.

हवे पूर्वांगथी प्रारंभी सीसपहेलिका लगे गणितना भेद अठावीस छे ते सघळा अंक वर्के नीचे मुजब मंमाय छे.

१ ८४०००००० एटला वर्षे एक पूर्वांग थाय ते पूर्वांग.
२ ७०५६०००००००००० एटला वर्षे एक पूर्व ते पूर्व.
३ ५९२७०४००००००००००००००० एटला वर्षे ते त्रुटितांग.
४ ४९७८७१३६०००००००००००००००००००० एटला वर्षे ते त्रुटित.
५ ४१८२११९४२४ अहीं आगळ शून्य २५ मांडवां ते अडडांग.
६ ३५१२९८०३१६१६ आगल शून्य ३० मांडवां ते अडड.
७ २९५०९०३४६५५७४४ आगळ शून्य ३५ मांडवां ते अववांग.
८ २४७८७५८९११०८२४९६ आगल शून्य ४० मांडवां ते अवव.
९ २०८२१५७४८५३०९२९६६४ आगल शून्य ४५ मांडवां ते हुहुआंग.
१० १७४९०१२२८७६५९८०९१७७६ आगल शून्य ५० मांडवां ते हुहुअ.
११ १४६९१७०३२१६३४२३९७०९१८४ आगल शून्य ५५ मांडवां ते उत्पलांग.
१२ १२३४१०३०७०१७२७६१३९५७१४५६ आगल शून्य ६० मांडवां ते उत्पल.
१३ १०३६६४६५७८९४५११९५३८८००२३०४ आगल शून्य ६५ मांडवां ते पद्मांग.
१४ ८७०७८३१२६३१३९००४१२५९२१९३५३६ आगल शून्य ७० मांडवां ते पद्म.

१५ ७३१४५७८२६१०३६७६३४६५७७४४२५७०२४ आगल शून्य ७५ मांडवां ते नलिनांग.

१६ ६१४४२४५७३९२७०८८१३११२५०५१७५९००१६ आगल शून्य ८० मांडवां ते नलिन.

१७ ५१६११६६४२०९८७५४०३०१४५०४३४७७५६१३४४ आगल शून्य ८५ मांडवां ते अच्छिनिउरंग.

१८ ४३३५३७९७९३६२९५३३८५३२१८३६५२११५१५२८९६ आंगल शून्य ९० मांडवां ते अच्छनिउर.

१९ ३६४१७१९०२६६४८८०८४३६७०३४२६७७७६७२८४३२६४ शून्य ९५ ,, ते अयुतांग.

२० ३०५९०४३९८२३८४९९९०८६८३०८७८४९३२४५१८८३४१७६ शून्य १०० ,, ते अयुत.

२१ २५१९५९६९४५२०३३९९२३२९३७९३७९३४३२५९५८२०७०७८४ शून्य १०५ ,, ते नयुतांग.

२२ २१५८४६१४३३९७०८५५३५५१६७८६७८६४८३३८०५१०३९४५८५६ शून्य ११० ,, ते नयुत.

२३ १८११०७६०४५३५५१८४९८७६१००९००६४६०३९६२८७३१४५१९०४ शून्य ११५ ,, ते प्रयुतांग.

२४ १५२३०१०१८७८०९८३५५३८९५९२४७५६५४२६७३१८८१३४४१९५९९३६ शून्य १२० ते प्रयुत.

२५ १२५९३२८७२५७६०२६१८५२७२५७६७९५४९५८४५५६२०३२९१२४६३४६२४ शून्य १२५ चूलिकांग.

२६ १०७४६३६१२९६३८६१९९५६२८९६४५०८२१६५१०२७२१०७६४६४६९१०८४१६ शून्य १३० चूलिका.

२७ ९०२६९४३४८८९६४४०७६३२८३३०१८६९०१८६८६२८५७०४२३०३४२८१९०६९४४ शून्य१३५सीसपहेलियगं.

२८ ५५८२६३२५३०७३०१०२५११५७९७३५६९२७५६९६४७९९९१५५३४८७४४०१८३२९६शुन्य१४०सीसपहेलिया.

ए उपरांत गणित नथी. उपमित छे. ते उपमितना प्रकार बेः--पल्योपम १, सागरोपम २, पल्योपमनुं प्रमाण ए छे के—अनंतानंत परमाणुआ एकठा थाय एटले एक ओसण्हसण्हिया, अनंत परमाणुआ मले एटले सण्हसण्हिआ, तेटली सण्हसण्हिआ आठ मले तो एक उर्द्धरेणु एटले के जे जालांतरे सूर्यकिरण आवे तेमां जे सूक्ष्म रज देखाय ते उर्द्धरेणुं कहेवाय छे. ते आठ उर्द्धरेणु मल्ये एक त्रसरेणु थाय छे. जे वाये करी रज ऊरू ते त्रसरेणु कहेवाय छे. ए आठें एक रथरेणु थाय, आठ रथरेणु मल्ये तो एक देवकुरू उत्तरकुरूना मनुष्यनो वालाग्र थाय, ते आठें एक हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रना मनुष्यनो एक वालाग्र होय. ते आठे एक हैमवंत ऐरण्यवत क्षेत्रना मनुष्यनो वालाग्र थाय, ते आठें पूर्वविदेह पश्चिमविदेहना मनुष्यनो वालाग्र थाय, ते आठ वालाग्रे एक लीख होय, आठ लीखे एक जू होय, आठ जूए एक जव, आठ जवे एक आंगल, तेने उत्सेधांगुल कहीयें, एवा छ आंगुले एक पाद थाय, बे पादे एक विहस्त (वहेंत) थाय, बे विहस्ते एक हस्त चार हस्ते एक धनुष, बे सहस्त्र धनुषे एक कोस, चार कोसे १ जोयण थाय,

एक जोजनप्रमाण ऊंडो, एटलोज पहोळो कुवो, ते कुवो देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रनो उरूणो सात दिवसनो तेने शरीरे अंगुल प्रमाण एक रोम ते सात वार आठ गुणो करवो एम करतां सातमी वार रोमखंड (रुंवाडाना टुकडा) वीस लाख सत्ताणुं सहस्त्र एकसो बावन एटला थाय. ए रोमखंड स्थूळ जाणवा. जेह जणी संख्याता एज थया. परं असत्कल्पनाये एकेक रोमखंडना असंख्याता कल्पीये एवा जे सूक्ष्मखंड, तेणे ते कूवो गाढो निश्चच जरवो. ते ऊपर बासठ योजनने पटे गंगा नदी वेहवराये पण एक रोमखंड खेसवी न शके. तथा इंद्र सबल प्राणे करी वज्र मूके पण एक रुंआडुं जेदे नहीं, अथवा अग्नि ते ऊपर मूकवाथी ओल्हाइ जाय, पण एक रोम प्रज्वले नहीं एवा कठिन जरवा, अथवा चक्रवर्त्तिनुं कटक सघलुं ऊपर वही जाय तोपण एक रुंवाडुं खसे नहीं एवो जरीने पछी सो सो वरसे एकेको खंड काढवो. ज्यारे ते कुवो सर्वथा प्रकारे खाली थाय त्यारे एक पल्योपम कहेवाय, एवा दस कोडाकोडी पल्योपम जाय त्यारे एक सागरोपम थाय. एवा वीस कोडाकोडी सागरोपम जाय तो एक कालचक्र

कहेवाय. ते कालचक्रे बार आरा, छ आरा उत्सर्पिणी, छ आरा अवसर्पिणी काल कहेवाय. उत्सर्पिणी काले पेहेलो आरो एकवीस सहस्र वरस प्रमाण, बीजो आरो एकवीस सहस्र वरस प्रमाण, त्रीजो आरो एक कोडाकोडी सागरोपम बेतालीस सहस वरसे ऊणो जाणवो, चोथो आरो बे कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण, पांचमो आरो त्रण कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण, छट्ठो आरो चार कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण, एवं दस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण उत्सर्पिणी काल जाणवो. एम ऊतरता छ आरा, पेहेलो चार कोडाकोडी सागर, बीजो त्रण कोडाकोडी सागर, त्रीजो बे कोडाकोडी सागर, चोथो बेतालीस सहस वरसे ऊंणो एक कोडाकोडी सागर, पांचमो एकवीस सहस्र वरस प्रमाण, छट्ठो पण एकवीस सहस्र वरस प्रमाण जाणवो. एवं दस कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण अवसर्पिणी अने दस कोडाकोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी एवं बंने मली वीस कोडाकोडी सागरोपमे एक कालचक्र थाय एवा अनंता कालचक्रे एक पुद्गलपरावर्त थाय, ते पुद्गलपरावर्त्तना चार भेद छे. ते द्रव्यपुद्गलपरावर्त्त १, क्षेत्र पुद्गलपरावर्त्त २, काल पुद्गलपरावर्त्त ३,

ज्ञाव पुद्गलपरावर्त्त ४, ए चारेना सूक्ष्म बादर ज्ञेदे बे बे ज्ञेद जाणवा, बादर द्रव्य पुद्गल परावर्त्त, सूक्ष्म द्रव्य पुद्गलपरावर्त्त. २ एवं क्षेत्र काल ज्ञाव ज्ञेदना पण बे ज्ञेद, ए प्रकारे पुद्गलपरावर्त्त आठ जाणवा ॥ हवे पुद्गलपरावर्त्तनुं स्वरुप संक्षेपथी पोताने समजवा ने, परने समजाववा माटे आ प्रमाणे छे—पेहेला जीवने द्रव्य पुद्गल पूरवाना प्रकार सात कहीयें छीयें. औदारिक शरीर मनुष्य तिर्यंचना, वैक्रिय शरीर देवता नारकीना, तेजस शरीर कार्मण शरीर ए बे शरीर सर्व जीवने होयछे. ए चार शरीरे करी, तथा ज्ञाषाए करी बेइंद्रियादिक जीवने ज्ञाषा होय, तेणे कारणे जीव पुद्गल लइ बोले; तथा श्वासोश्वास ए सर्व जीवने छे. पण संसारी जीवने असंसारी सिद्ध जाणवा, जीव पुद्गल ग्रहण करी करी श्वासोश्वास ले ते कारणे ए छठ्ठो प्रकार, तथा मन ते पण पुद्गली, नवा नवा पुद्गल ग्रहण करी गर्ज्ञज पंचेंद्रि ते पण सन्निया मनने परिणामे परिणमावे, ए सात प्रकार पुद्गल पूरवाना कारण छे. हवे जीव औदारिक १, वैक्रिय २, तेजस ३, कार्मण ४, ए चार शरीरे करी ज्ञाषाये ५, श्वासोश्वासे ६, मने ७, करी

चौद रज्जुप्रमाण लोकमां जेटला पुद्गल छे ते सघला औदारिक १, वैक्रिय २, तेजस ३, कार्मण ४, जाषा ५, श्वासोश्वास ६, मनपणे, आगल पाछले करी सर्व पुद्गल परिणमावे ते बादर ड्रव्य पुद्गलपरावर्त्त कहेवायछे. हवे सूक्ष्म ड्रव्य पुद्गलपरावर्त्त केम करे ते कहिये छीये. पहेलो औदारिक शरीरे करी लोकमांहिला पुद्गल परिणमावे, पछी वैक्रिये, पछी तेजसे, कार्मणे, जाषाये, श्वासोश्वासे, मने ए अनुक्रमे सात प्रकारे करी जुजुआ सर्व पुद्गल परिणमावे ते सूक्ष्म द्रव्य पुद्गल परावर्त्त कहेवायछे. २ एम ड्रव्य पुद्गलपरावर्त्तना बे जेद कह्या. हवे क्षेत्रआश्री सूक्ष्म बादर बे कहिए छीए. एक जीव सर्वलोकना आकाश प्रदेश मरणे करी जेम तेम आगल पाछल फरसे एटले बादर क्षेत्र ते पुद्गलपरावर्त्त कहेवाय १, एक जीव सर्व लोकना आकाश प्रदेश अनुक्रमे अंतर रहित प्रदेश मरणे करी फरसे, विचाले अंतर पडे तो वली धुर थकी गणवो, एम करतां जेटले काले निरंतर सर्व लोकना आकाश प्रदेश जन्म मरणे करी अनुक्रमे फरसे तेटले काले सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गलपरावर्त्त कहेवाय. २. एम क्षेत्र पुद्गलपरावर्त्तना बे जेद कह्या. हवे कालआ-

श्री पुद्गलपरावर्त्तना भेद कहिये बीये. उत्सर्पिणीकालना जेटला समय छे तेटला सर्व समय जेम तेम आगळ पाछळ जन्म मरणे करी एक जीव फरसे एटले बादरथी कालपुद्गलपरावर्त्त कहेवाय. १ तथा एक जीव उत्सर्पिणीकालना समय जेटला छे, तेटला अनुक्रमे अंतर रहित जन्म मरणे करी फरसे एटले सूक्ष्मकाल पुद्गलपरावर्त्त कहेवाय. २. एम काल पुद्गलपरावर्त्तना बे भेद जाणवा. हवे भाव पुद्गलपरावर्त्तनुं स्वरुप कहिये बीये. सूक्ष्म पृथ्वी कायादिक थी जीव चवी समय समय प्रत्ये असंख्याता सूक्ष्म अग्निकायमांहि जाय, तेथकी सर्व लोकाकाश प्रदेश असंख्याता छे, तेथकी कायस्थिति काल असंख्यातो, तेथकी संयमाध्यवसात स्थान असंख्याता छे, ते सघळां संयमाध्यवसायनां स्थान जे कोइ एक जीव मरणे वारी जेम तेम फरसे ते बादर भावपुद्गलपरावर्त्त जाणवो तथा जेटलां संजमना अध्यवसायनां स्थानक अनुक्रमे एकेक स्थानक फरसे ते सूक्ष्मथकी भाव पुद्गलपरावर्त्त जाणवो ॥ २ ॥ एणीपरे भाव पुद्गलपरावर्त्तना भेद कह्या. एवं पुद्गलपरावर्त्त ८ कह्या. एकेके जीवे ए पुद्गलपरावर्त्त अ-

नंतीवार कीधा ॥ अनव्य जीव आगामि काले अनंता पुद्गलपरावर्त्त करशे ॥ अंतोमुहूत्त-मित्तंपि, फासिअंहुज्ज जेहिं सम्मत्तं ॥ तेसिं अवढ्ढ पुग्गल, परियट्टो चेव संसारो ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त्त मात्र पण जेणे सम्यक्त्व फरस्युं होय तेने संसार अर्ध पुद्गलपरावर्त्तथी ओछो संसार जाणवो ए निश्चय करवो ॥ सम्यक्त्व रहित भव्यजीव होय तेने पुद्गलपरावर्त्त थाय अथवा न थाय, परं प्रांते मोक्षगति पामे ॥ एकेके जीवे अतितकाले अनंता पुद्गलपरावर्त्त कीधां ए सही. एकेके जीव एवा छे तेने आगामिकाले कोइने एक पुद्गलपरावर्त्त, कोइने बे, कोइने त्रण, कोइने चार, एम कोइने संख्याता, कोइने असंख्याता, कोइने अनंता, जे भव्य होय तो अनंता पुद्गलपरावर्त्त करी छेहेरू अंत करे--अल्पसंसार करी मुक्ति पामे, जेथी अनंता अनंते भेदे जाणवा. अभव्यने अनंतानंते काले पण संसारनो अंत थशे नहीं ॥

हवे संख्याता, असंख्याता अने अनंताना भेद छयासिया कर्मग्रंथने अनुसारे सूत्र टीका थकी कहियें छियें.

१ जघन्य संख्यातो, २ मध्यम संख्यातो, ३ उत्कृष्ट संख्यातो ॥ १ जघन्य परितो संख्यातो, २ मध्यम परितो असंख्यातो, ३ उत्कृष्ट परितो असंख्यातो, ४ जघन्य युक्ता असंख्यातो, ५ मध्यम युक्ता असंख्यातो, ६ उत्कृष्ट युक्ता असंख्यातो, ७ जघन्य असंख्याता असंख्यातो, ८ मध्यम असंख्याता असंख्यातो, ९ उत्कृष्ट असंख्याता असंख्यातो ॥ १ जघन्य परिता अनंतो, २ मध्यम परिता अनंतो, ३ उत्कृष्ट परिता अनंतो, ४ जघन्य युक्ता अनंतो, ५ मध्यम युक्ता अनंतो, ६ उत्कृष्ट युक्ता अनंतो, ७ जघन्य अनंता अनंतो, ८ मध्यम अनंता अनंतो, ९ उत्कृष्ट अनंता अनंतो.

हवे ए संख्याता असंख्याता अनंताना भेद २१ तेनी विगत कहिये छीये. अहींयां एक गणवानी संख्या न लहे. जे भणी ऊणी एक घटादि पदार्थ दीठे ए घटादिक वस्तु दीसे छे एवी प्रतिति उपजे पण एक ए एम कह्यो न जाय, लेवा आपवाना व्यवहारने काले एक एवी गणत संख्या करी लीजे, अथवा आपीए तेणी वेलाये, अथवा लोकव्यवहारे एवुं प्रसिद्ध छे. ज्यां एकनी संख्या त्यां लाभ एवो शब्द कहे, ते कारणे एक गणाय नहीं. असव्यवहारपणाथकी, अल्पपणाथकी न

गणीये. बेज प्रभृतिथकी गणवानी संख्या होय, एटले बे लगी जघन्य संख्यातो कहीए. त्यां थकी उपहरो त्रण चार पांच इत्यादि अनेक भेदे मध्यम संख्यातो होय. केटला लगे मध्यम संख्यातो कहेवाय? ज्यां लगी उत्कृष्टु संख्यातुं न थाय त्यां लगे मध्यम संख्यातो कहीए. हवे उत्कृष्टु संख्यातुं केम जाणीये ते कहिये छीये--जंबुद्वीपपल्यनी प्ररूपणाये जाणीये. ते केम? जंबुद्वीप आयामे विख्खंभे लक्ष जोजन प्रमाण छे. एम पण पल्य प्रत्येक प्रत्येक लक्ष जोजन प्रमाण वाटुला एवा चार पल्य तेनां नाम--अनवस्थितपल्य १, शलाकापल्य २, प्रतिशलाकापल्य ३, महाशलाका पल्य ४, ए चारे सहस्त्र जोजन उंडा आठ योजन प्रमाण जगति सहित बे गाउ उंची पद्मवरवेदिकाए संयुक्त एवा शिखा लखी करण क्रम पूर्वक सरसवे भर्या. ए सामान्य पदे कह्या. विशेषथकी हवे कहीये छीये ॥ पेहेलो अनवस्थित पल्य सरसवे भर्यो करवो, बीजा त्रण यथा प्रस्तावे सरसवे भराशे तेम कहेशे. हवे अनवस्थित पल्य सरसवे भरीने शुं करीए ते कहे छे. ते अनवस्थित पल्य सरसवे भरीने उपाडीये, असत्कल्पनाये ए कर्यो, शिष्य प्रतिबोधवा

जाणी एक सरसव द्वीपे एक सरसव समुद्रे घालतां घालतां त जेवारे पूरो थाय जेणे द्वीपे अ-
थवा जेणे समुद्रे, त्यां तेटले प्रमाणे आदियकी प्रारंभी अनवस्थित पल्य बीजी वार कल्पिये,
वली तेमज एक द्वीपे समुद्रे सरसव घालतां घालतां जेवारे पूरो थाय तेवारे एक
सरसव बीजा शलाका पल्यमां घालीये, ते अनवस्थित प्याला मांहेलो नही, अनेरो सरसव
घालीये एक कहे अनवस्थित पाला मांहेलोज घालीये, अहीं तत्व केवली जाणे. इहां बीजीवार
अनवस्थित पल्य नीठवे एक सरसव शलाका पल्यमां घालीये ते केम ? पेहेलीवारने अनव-
स्थित पल्ये नीठव्येंज कांइ न घालीए ? एवे प्रश्ने उत्तर कहे छे. जेह भणी अनवस्थित पल्यनी
शलाकाए शलाका पल्ये भरवो कह्यो ते कारणे पेहेलो अनवस्थित पल्य न कहीये. बीजी वारनो
आदि दइ सघला अनवस्थित पल्य केहेवाय, एम जाणी संदेह टालवो. एम अनवस्थित पल्य
भरतां ठालवतां अकेंकी शलाकाये घालतां घालतां शलाकापल्य शिखा सहित एवो भराय, जेवो
के उपर एक सरसव न माय एटले अनवस्थित शलाकापल्य बे बे भर्या दीसे. ते वार पछी शुं

करीये ते कहे छे--शलाकापल्य भावे हाथे उपाडी अनवस्थित पल्यने छेल्ले सरसवे आक्रांत द्वीप अथवा समुद्र ते आगले एक सरसव द्वीपे एक समुद्रे प्रक्षेपतां जेटले ते पल्यनिःशेष ठालो थाय तवारे प्रतिशलाकामांहे एक प्रतिशलाका प्रक्षेपीये शलाकापल्य स्थानके थापीये, पछी अनवस्थित पल्य उपाडी शलाका पल्यने सरसवे जेटला द्वीप समुद्र आक्रम्या छे, त्यां आगल एक सरसव द्वीपे एक समुद्रे घालतां जे वारे ते सर्वथापि ठालो थाय तेवारे एक सरसव शलाकापल्य मांहे मुकीये, वली तेटले प्रमाणे अनवस्थित पल्य सरसवे भरी तेमज एक द्वीप एक समुद्रे सरसव मूकतां अकेको सरसव शलाकापल्यमां मूकतां, जेवारे ते बीजीवार शलाकापल्य शिखा सहित भराय तेवारे अनवस्थित पल्य भर्योज मुकीये, शलाकापल्य वली उपाडी एकेक सरसव द्वीप समुद्रे मुकतां जेवारे ते निःशेष ठालो थाय तेवारे प्रतिशलाकापल्य मांहे बीजी प्रतिशलाका मूकीये, पछी अनवस्थित पल्य उपाडी वली द्वीप समुद्रे एकेको सरसव मूकतां वली शलाकामांहे एकेकी शलाका मूकतां जेवारे संपूर्ण भराय, तेवार पछी शलाकापल्य उपाडी,

एकेक सरसव द्वीप समुद्रे मूकतां ठलवाय ते वारे एक सरसव प्रतिशलाका पल्यमांहे घालतां त्यांलगी अनवस्थित पल्य शलाका पल्यने ठालववे भरवे प्रतिशलाका पल्यमांहे एकेका सरसवने मूकतां लगी करीये. ज्यां लगी शलाका पल्य, प्रतिशलाका पल्य अनवस्थित पल्य त्रणे भराय. तेवार पछी शलाका पल्य अनवस्थितपणे भराय तेवार पछी प्रतिशलाका पल्य उपाडीये, ज्यां लगी द्वीप समुद्र नीठया छे त्यां आगले एक एक सरसव द्वीपे समुद्रे मूकीये, जेटलीवारे निःशेष ठालो थाय तेटली वार महाशलाका पल्ये एकेको सरसव मूकीये, पछी शलाकापल्य उपाडी प्रतिकलाका पल्यगत चरम सरसवे आक्रम्या द्वीप समुद्र आगले एकेक सरसव द्वीप समुद्रे मुकतां ठालो थाय तेवारे एक सरसव प्रतिशलाका पल्यमांहे मूकीये, पछी अनवस्थित पल्य उपाडी शलाका पल्यगत चरम सरसवाक्रांत द्वीप समुद्र विषे, एकेको सरसव द्वीप समुद्रे मूकतां जेटले ठलवाय तेटले एक सरसव शलाका पल्ये मूकीये, एणीपरे अनवस्थित पल्य भरतां ठालवतां शलाकापल्य भरीये. वली तेमज अनुक्रमे भरतां ठालवतां त्यां करीए के ज्यां चार

पल्य शिखा सहित संपूर्ण भराय एम अनवस्थित पल्ये शलाका भरीये, शलाका पल्ये करी प्रतिशलाका पल्य भरीए. प्रतिशलाका पल्ये महाशलाका पल्य भरीए एम अनवस्थित पल्य, शलाका पल्य, प्रतिशलाका पल्य, महाशलाका पल्य-एम चिहु पल्ये भर्या अनंतर शुं करीए ते कहे छेः—एवं चिहु पल्यना सरसव तथा द्वीप समुद्र प्रक्षिप्त सरसव तेनी सघळी राशि मांहि थकी एक सरसव ऊणो करीए एटले उत्कृष्टुं संख्यातुं होय. हवे बे लगी जघन्य संख्यातुं अने ए जे कह्यो सरसव राशि प्रमाण ए उत्कृष्टुं. ए उत्कृष्ट संख्याता अने जघन्य संख्याता विचाले जेटला संख्याता स्थानक ते सर्व मध्यम संख्यातुं कहिये. श्री सिद्धांतमां ज्यां क्यांय संख्यातानुं ग्रहण करे त्यां मध्यम संख्यातुं जाणवुं. एणीपेरे संख्याताना भेद कह्या. हवे असंख्याताना भेद नव कहीए छीए. जे उत्कृष्टुं संख्यातुं कह्युं ते एक सरसव सहित करीए एटले जघन्य परीत असंख्यातुं होय. अनुयोगद्वार सूत्रमांहे कह्युं छे ते लखीये छीये. उक्कोसए संखिज्जए रूवे पक्खित्ते ॥ जहन्नयं परित्ता संखिज्जयं होइ॥ तेणपरं अजहन्न—मणुक्कोसयाइंठाणाइं जाव उक्कोसयं

परित्तासंखेज्जयं न पावइ, उक्कोसयं परित्तासंखिज्जयं केवइयं होइ? जहन्नपरित्तासंखिज्जय मित्ताणं रासीणं अन्नमन्नब्भासो रूवूणो उक्कोसयं परित्तासंखिज्जयं होइ ॥ अहवा जहन्नयं जुत्ता संखिज्जयं रूवूणं ॥ उक्कोसयं परित्तासंखिज्जयं होइ ॥ जहन्नयं जुत्ता संखिज्जयं कित्तियं होइ? । जहन्न परित्ता संखिज्ज मित्ताणं रासीणं अन्नमन्नब्भासो पडिपुन्नो जहन्नयं जुत्ता संखिज्जयं होइ ॥ अहवा उक्कोसए परित्ता संखिज्जए रूवं पक्खित्तं ॥ जहन्नयं जुत्ता संखिज्जयं होइ । आवलियावि तित्तिया चेव ॥ तेणपरं अजहन्न–मणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसयं जुत्ता संखिज्जयं न पावइ ॥ उक्कोसयं जुत्ता संखिज्जयं कित्तियं होइ? ॥ जहन्नएणं जुत्ता संखिज्जएणं आवलिया गुणीया अन्नमन्नाब्भसो रूवूणो ॥ उक्कोसयं जुत्ता संखिज्जयं होइ ॥ अहवा जहन्नयं असंखिज्जा संखिज्जयं रूवूणं उक्कोसयं जुत्ता संखिज्जयं होइ ॥ जहन्नयं असंखिज्जा संखिज्जयं कित्तियं होइ? ॥ जहन्नेणं जुत्ता संखिज्जएणं आवलिया गुणिया अन्नमन्नब्भासो पडिपुन्नो जहन्नयं असंखिज्जा संखिज्जयं होइ ॥ अहवा उक्कोसए जुत्ता संखिज्जए रूवं पक्खित्तं जहन्नयं असंखिज्जा संखिज्जयं होइ ॥ तेणपरं अज-

हन्नामणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव उक्कोसं असंखिज्जा संखियं न पावइ उक्कोसयं असंखिज्जा संखिज्जयं कित्तियं होइ?॥ जहन्नयं असंखिज्जा संखिज्जयमित्ताणं रासीणं अन्नमन्नब्भासो रूवूणो उक्कोसयं असंखिज्जा संखिज्जयं ॥

एनो भावार्थ लखिये छीये ॥ पूर्वे जे उत्कृष्टुं संख्यातुं कह्युं, तेमां एक सरसव मूकीये एटले जघन्य परितअसंख्यातो होय, अहीं आघुं जघन्य पण नहीं, उत्कृष्टुं पण नहीं एम करतां जेटले उत्कृष्टुं परितअसंख्यातुं नावे तेटला विचाले जे स्थानक ते सर्व मध्यम परितअसंख्यातुं कहीये ॥

हवे उत्कृष्टुं परितअसंख्यातुं केटलुं होय ते कहे छे. जघन्य परितअसंख्याते जेटले प्रमाणे सरसवनी राशि होय तेनो अन्योअन्य मांहोमांहे अभ्यास कहेतां गुणाकार करीए. ते केम करीए ते देखाडे छे. केवली विना एनो परस्पर गुणाकार कोण जाणे ? तथापि छद्मस्थने प्रतिबोधवा भणी वानगी मात्र देखाडीए छीए. असत्कल्पनाये॥ जे भणी ए जेटला सरसव छे ते छद्म-

स्थने जाणवां दोहिलो, तेणे कारणे थोमा देखामी घणानो ज्ञान करावाय ले. जघन्य परितअसंख्या- ते जेटला सरसव ले तेटलाने ठामे पांच रुप कल्पीये, ते विवरीए छिये. एक श्रेणीए एकमा पांच मांमिये तेहनी स्थापना १ १ १ १ १ हवे जेटला उपला राशीना आंक तेटली संख्याए तेटला आंक हेठळ मांमिये. जे ऊपर पांच एकमा ले, एटला प्रत्येकने पांच ५ ५ ५ ५ ५ मांमिये. घणा होय तो घणा मांमिए. हवे मांहोमांहे केम गुणीए ते दखामे ले, पांचमो पेहेलो ते बीजा पांचमाशुं गुणीए. एटले २५ थया. ए पचीस त्रीजा पांचमाशुं गुणीए, थया एकसो पचीस १२५ अने चोथा पांचमाशुं गुणीए, थया लसेंपचीस. ए वळी पांचमा पांचमाशुं गुणीए, थया एकत्रीससें पचीस ३१२५ ए कल्पित राशीनो अन्योअन्य गुणाकार कीधो. एणीपेरें जघन्य परितअसंख्याते जेटला सरसव ते मांहो- मांहे सर्व गुणीए, जेटला होय तेटला मांहेथको एक ऊणो करीए. एटले उत्कृष्ट परितअसंख्यातो होय ॥ एवं जघन्य परित असंख्यातो, मध्यम परितअसंख्यातो, उत्कृष्ट परितअसंख्यातो एवं अ- संख्याताना नेद ३ त्रण थया. हवे युक्तअसंख्यातो जघन्य—मध्यम अने उत्कृष्ट एवं त्रिहुं नेदे

मांमिये बिये ॥ जघन्य युक्तअसंख्यातो केटलो होय ते कहे छे. जघन्य परितअसंख्यातो परस्पर गुणतां जेटलो होय, ते प्रतिपूर्ण, एक ऊणो न करीये एटलो जघन्य युक्तअसंख्यातो होय, अथवा उत्कृष्ट परितअसंख्याते एक रूप घालीये एटले जघन्य युक्तअसंख्यातो होय. जेटला जघन्ययुक्त असंख्याते रूप होय, तेटला एक आवलिना समय जाणवा. हवे एटला आघे ज्यां लगी उत्कृष्टो युक्तअसंख्यातो नावे तेटला विचाले असंख्यातभेदे मध्यमयुक्तअसंख्यातो जाणवो. हवे उत्कृष्ट युक्त असंख्यातो केटलो ते देखाडे छे ॥ जघन्ययुक्तअसंख्याते आवली गुण्ये जेटला होय तेटला वली परस्परे गुणीये, जेम पेहेलां देखाडी तेजपरे जाणवी, तेम मांहोमांहे गुणतां जेटलां रूप थाय, तेटला मांहेथी एक ऊणो करीए एटले उत्कृष्टो युक्तअसंख्यातो होय. अथवा जघन्य असंख्यातअसंख्यातो एक रूप ऊणो करीए. एटले पण उत्कृष्टो युक्तअसंख्यातो होय एटले युक्तअसंख्याताना भेद त्रण कह्या. एवं असंख्याताना छ भेद कह्या.

हवे जघन्य असंख्यातअसंख्यातो १, मध्यम असंख्यातअसंख्यातो २, उत्कृष्टो असंख्यातअ-

संख्यातो ३, ए त्रण भेद कहिये छिये. जघन्य असंख्यातअसंख्यातो केटलो होय ते लखिये छियेः— जघन्ययुक्तअसंख्याते जघन्ययुक्तअसंख्यातेज गुणीए अथवा आवळी जघन्ययुक्तअसंख्याता गुणी करीये, जेटली राशि होय तेटली वळी मांहोमांहे गुणीये एटले प्रतिपूर्ण जघन्य असंख्यअसंख्यातो होय ॥ इहां आघो ज्यां लगी उत्कृष्टो असंख्यातअसंख्यातो ना आवे त्यां लगी असंख्याते भेदे मध्यम असंख्यातअसंख्यातो होय. हवे उत्कृष्टो असंख्यातअसंख्यातो केटलो होय ते लखिये छिये. जघन्य असंख्यातअसंख्यात प्रमाण राशि मांहोमांहे गुणीए पछी एक ऊणो करीए एटले उत्कृष्टो असंख्यातअसंख्यातो जाणवो, अथवा जघन्य परितानंतो एक रूपे ऊणो करीए. एटलो उत्कृष्टो असंख्याता संख्यातो होय, एटले असंख्याताना भेद ए थया.

हवे अनंताना भेद नव लखिये छिये, पेहेलो जघन्य परित अनंतो केटलो होय? ते लखिये छिये. जघन्य असंख्यातअसंख्यातो जघन्य असंख्यातअसंख्यात प्रमाण राशीने मांहे गुणीये अने जेटलो होय तेटले प्रमाणे जघन्य परितानंता जाणवो अथवा उत्कृष्टे असंख्यातअसंख्यातमांहे

एकरूप घालीये एटले पण जघन्य परितानंतो होय, त्यां आघो ज्यां लगी उत्कृष्ट परितानंतो न थाय त्यां लगी अनंत भेदे मध्यम परितानंतो होय. उत्कृष्ट परितानंतो केटलो होय. जघन्य परितानंतो जघन्य परितानंत प्रमाण राशी मांहोमांहे गुणीये, एतावता तेटली राशिने तेटली राशि गुणी करिये जेटला होय तेटलामांहेथी एक काढीये, एटलो उत्कृष्ट परितानंतो होय. अथवा जघन्य युक्तानंतो एके ऊणो करीए, एटले उत्कृष्टो परितानंतो थाय एटले अनंताना भेद त्रण थया. हवे युक्तानंतना भेद त्रण लखिये छिये. जघन्य युक्तानंतो केटलो थाय ते कहीए छीए. जघन्य परितानंतो जघन्यपरितानंत प्रमाणराशि परस्पर गुणी करीये जेटलां रूप होय तेटलां पूरां जघन्य युक्तानंतो होय. अथवा उत्कृष्ट परितानंते एक रूप घालीये एटले जघन्ययुक्तानंतो होय. जगमांहे अभव्य पण तेटला ज छे. जघन्य युक्तानंते जेटलां रूप तेटला अभव्य जाणवा. त्यां आघो ज्यां उत्कृष्टो युक्तानंतो न आवे त्यां लगे अनंत भेद मध्यमयुक्तानंतो होय. उत्कृष्टोयुक्तानंतो केटलो होय ते कहे छे. जघन्य युक्तानंते जेटला अभव्य छे तेटला गुणीये, पछी वळी अन्योन्याभ्यास मांहोमांहे गुणाकार करीये, जेटलो होय तेटलो एके

ऊणो करीये एटले उत्कृष्टो युक्तानंतो होय, अथवा जघन्य अनंतानंतो एक ऊणो करीये एटले उत्कृष्टो युक्तानंतो होय. एटले अनंताना ब भेद थया. हवे अनंतानंताना भेद३कहीए बीए. जघन्य अनंतानंतो केटलो होय ते कहेबे. जघन्य युक्तानंते अभव्य गुणीए पबी वळी परस्पर गुणीए, जेटला होय तेटले पूरे जघन्य अनंतानंतो होय अथवा उत्कृष्टे युक्तानंतें एक रूप घालीये एटले पण जघन्य अनंतानंतो थाय त्यां आघोज्यां लगी उत्कृष्टो अनंतानंतो ना आवे त्यां लगी अनंतभेदे मध्यम अनंतानंतो कहीए, पण श्री अनुयोगद्वार मांहि एम कह्यो के "अणंताणंतयंनथ्थि" ए सूत्रने अनुसारे उत्कृष्टो अनंतानंतो नथी. ॥ तथा मतांतरे कर्मग्रंथ वादी अनंतानो भेद एम प्ररूपे. जघन्य परितानंतो तेहने मते केटलो होय ते देखाडे बे. जघन्य असंख्यात असंख्यातो त्रणवार मांहोमांहे गुणीये, एटले शो अभिप्राय कह्यो, जघन्य असंख्यात असंख्याते जे राशि ते सरखी बे राशि वळी मांडीये ते वर्गराशिनो वळी वर्ग करीये. वळी त्रीजीवार तेनो वर्ग करीए तेवार पबी ते मांहे दश प्रक्षेप घालीये. ते केवा प्रकारे ॥ एक लोकाकाशना प्रदेश १, धर्मास्तिकायना प्रदेश २, अधर्मास्तिकायना प्रदेश ३, एक

जीवना प्रदेश ४, जीवनां अध्यवसाय स्थानक, ज्ञानावरणादिक आठ कर्मनो स्थितिबंध, जेणें अध्यव-साये करे ते स्थितिबंधनां अध्यवसाय स्थान ५, अनुभाग, ज्ञानावरणादि कर्मनां जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट भेद भिन्न जे रसविशेष ६, तथा जोगच्छेय पलिभाग मनवचनकाय विषइयो वीर्य ते योग कहीये, तेना केवळी प्रज्ञाए छेदीने जुआ जुआ जे विभाग ७, तथा उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बेउ कालना समय जेटला ८, तथा प्रत्येक अनंतकाय टाली बीजा पृथ्वी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रस प्रत्येक शरीरी जेटला ए, तथा निगोद सूक्ष्म बादर अनंतकाय वनस्पती जीवना निगोद क-हेतां शरीर १० ए दश असंख्याता प्रक्षेपा घालीये तेवार पछी त्रणवार वर्गकरीए, जेम पेहलो कह्यो तेमज, एम करतां जेटलो होय ते जघन्य परितानंतो होय, ते जघन्य परितानंतानी राशि पर-स्परे गुणाकार करतां जेटली राशि होय, एटले जघन्य युक्तानंतो होय; जेटला जघन्य युक्तानंते रूप तेटला अभव्य जीव केवलीये दीठा. जघन्य अनंतानंतो केटलो होय ? जघन्ययुक्तानंतक रा-शि एकवार वर्ग करी वळी बीजीवार वर्ग करीए एटले जघन्य अनंतानंतो होय, हवे उत्कृष्ट अनं-

तानंतो कहीए छीए. ते जघन्य अनंतानंतो त्रणवार तेटली राशि गुणो करीए. तोपण उत्कृष्टो अनंतानंतो न थाय तो पछी केम करवुं ते कहेछे, ते मांहे ए प्रक्षेपा छ घालीए, ते कया? सिद्ध जेटला छे १, निगोदना जीव सूक्ष्म बादर निगोदना सघला जीव २, वनस्पति प्रत्येक अनंत सघली एतावता सर्व वनस्पतिना जीव ३, काल अतित, अनागत, वर्त्तमान समस्त ४, पुद्गल सघला परमाणुआ ५, तथा समस्त लोक अलोकनो आकाश ६, ए छये अनंता ते मांहे घालीने वळी त्रणवार वर्ग करीये अने जेटली राशि होय तेटली राशि सहित त्रिगुणी करीये, तेवारपछी केवलज्ञान, केवलदर्शन एतावता एना पर्याय अनंता छे ते घालीये तो कर्मग्रंथ वादी एम कहे के उत्कृष्टो अनंतानंतो होय. सूत्र श्री अनुयोगद्वार मांहे कह्यो छे " उक्कोसयं अणंताणंतयं नत्थी" इति वचनात् ॥ तत्त्वं पुनः केवलिनो विदंति" ॥ एटले श्री जगन्नाथ भाखे ते प्रमाण ज्यां सूत्रमांहे अनंतानंतो कह्यो त्यां सघले मध्यमेज अनंतानंतो जाणवो "उत्कृष्टं नास्ति अनंतानंतं" ॥ इति संख्याता असंख्याता अनंतानां भेद श्री अनुयोगद्वार तथा कर्मग्रंथ ए बेहुनी वृत्ति जोइ

लख्या छे. ज्ञाह्या होय ते विचारी जोजो ॥

इंद्रिय पांच तेनां संस्थान आकार लखिये छिये. श्रोत्रेंद्रियनो संस्थान कथंब फुल सरीखो ॥ १ ॥ चक्षुरिंद्रियनो संस्थान मसूर चंद्रमा सरिखो ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रियनो संस्थान अतिमुक्तक पुष्प सरीखो ॥ ३ ॥ रसनेंदियनो संस्थान छरपला सरीखो ॥ ४ ॥ स्पर्शनेंद्रियनो संस्थान नाना प्रकारनो जाणवो ॥ इंद्रियनुं जाडपणुं लखिये छिये. श्रोत्रेंद्रियनो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥१॥ चक्षुरिंद्रियनो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रियनो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ ३ ॥ रसनेंद्रियनो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ ४ ॥ फरसनेंद्रियनो अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ ५ ॥

इंद्रियनुं विस्तारपणुं लखिये छिये. श्रोत्रेंद्रियनो विस्तार अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥१॥ चक्षुरेंद्रियनो विस्तार अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ २ ॥ घ्राणेंद्रियनो विस्तार अंगुलनो असंख्यातमो भाग ॥ ३ ॥ रसनेंद्रियनो विस्तार अंगुलपुहुत्त अंगुल (नव) लगी ॥४॥ फरसनेंद्रियनो

विस्तार शरीरपणुं जाणवुं ॥ पांचइंद्रिय अनंत प्रदेशिक जाणवा. एकेकी इंद्रिये अनंता पुद्गल छे, श्रोत्रेंद्रियनो विषय जघन्य थकी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टो विषय योजन बार. चक्षुरेंद्रियनो विषय जघन्यथकी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टो विषय एक लाख जोजन झाझेरो, घ्राणेंद्रियनो विषय जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्टो विषय योजन नव, रसनेंद्रियनो विषय जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टो योजन नव, फरसनेंद्रियनो विषय जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टो योजन नव.

पांच इंद्रिय असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाढ छे. इंद्रियना बे भेद जाणवा ते कया? द्रव्येंद्रि १ अने भावेंद्रि २, त्यां द्रव्येंद्रि ७ भावेंद्रि ५ ॥ श्रोत्र २ नेत्र २ घ्राण २ जिह्वा १ फरस १ एवं द्रव्येंद्रि आठ जाणवा ॥

१ एकं	११ सहस्रकोटिं	२१ दशलक्षकोटाकोटिं
२ दश	१२ दशसहस्रकोटिं	२२ कोटाकोटिकोटिं
३ शतं	१३ लक्षकोटिं	२३ दशकोटाकोटिकोटिं
४ सहस्रं	१४ दशलक्षकोटिं	२४ शतकोटाकोटिकोटिं
५ दशसहस्रं	१५ कोटाकोटिं	२५ सहस्रकोटाकोटिकोटिं
६ लक्षं	१६ दशकोटाकोटिं	२६ दशसहस्रकोटाकोटिकोटिं
७ दशलक्षं	१८ सहस्रकोटाकोटिं	२७ लक्षकोटाकोटिकोटिं
८ कोटिं	१९ दशसहस्रकोटाकोटिं	२८ दशलक्षकोटाकोटिकोटिं
९ दशकोटिं	२० लक्षकोटाकोटिं	२९ कोटाकोटिकोटिकोटिं
१० शतकोटिं		

भयवं ! बीयप्पमुहासु पंचसु तिहीसु अणुट्ठाणकयं किं फलं होइ ? ॥ गोयमा ! ॥ बहु फलं भवइ. जओणं जीवेपाएणं एयासु तिहीसु परभवाउयं बंधइ, तम्हासमणेण वा समणीए वा ॥ सावएवा सावियाएवा विसेसओ धम्माणुंट्ठाणं कायवं ॥ ७ ॥

आवश्यक निर्युक्तिमां अग्नियादिक सेवैनही ए अधिकार काउसग्ग अध्ययनमां छे. अग्निना फरस लागे तो शरीर ढांकी राखे ए अधिकार छे. पत्रमां पुछेला प्रश्न तेनो उत्तर संपूर्णः

॥ शतक विचार प्रकृतिनो ॥ ध्रुवबंधनी कयी? वर्णादिचतुष्क ४, तेजस कार्मण २, अगुरुलघु १, निर्माणकर्म १, उपघात १, नय १, डुगंछा १, मिथ्यात १, कषाय १६, ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ए, अंतराय ५, एवं ध्रुवबंधनी ४७ ॥

अध्रुवबंधनी ७३ ॥ तनु ३, उपांग ३, संस्थान ६, संघयण ६, जाति ५, गति ४, खगति २, आनुपूर्वी ४, जिन १, उश्वास १, उद्योत १, आतप १, त्रसथावर २०, गोत्र २, वेदनी २, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, वेद ३, आयु ४, पराघात १, एवं ७३.

ध्रुवउदयीनी प्रकृति २७ ॥ निर्माण १, थिर १, अथिर १, अगुरु १, शुभनाम १, अशुभ १, तेजस १, कार्मण १, वर्ण ४, ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अंतराय ५, मिथ्यात १, एवं सत्तावीस ध्रुवउदयीनी प्रकृति. पूर्वे अध्रुवबंधिनी ७३ प्रकृति मांहेली ४ प्रकृति काढीये ते कयी? थिर १,

अथिर २, शुभ ३, अशुभ ४, ए चार काढीये त्यारे ६ए रहे ॥ ६ए अध्रुवबंध मांहेली ॥ ध्रुवबंध मांहेली १७ ते कयी ? १६ कषाय, १ डुगंछा, १ भय, ए अढार ध्रुवबंध मांहेली ॥ निद्रा ५, उपघात १, मिश्र १, समकित १ ॥ अध्रुव उदयनी एवं एए ॥ ध्रुवसत्तानी प्रकृति १३०, त्रसादि २०, वर्णादि २०, तेजस शरीरकेरी प्रकृति ७ ते केइ ? तेजस १, कार्मण १, तेजससंघातन १, कार्मणसंघातन १, तेजसबंधण १, कार्मणबंधन १, तेजसकार्मणबंधन १, ॥ ४७ मांथी ४१ प्रकृति-ध्रुवबंधिनी लीजे, ६ मांहे थकी टाळीए, ते कयी ? वर्णादिक ४ तेजस कार्मण २, एम ६ टालवी एटले ७७ होय ॥ वेद ३, संस्थान ६, संघयण ६, जाति ५, वेदनीय २, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, औदारिक सात प्रकृति ते कयी ? औदारिक १, औदारिकअंगोपांग १, औदारिकसंघातन १, औदारिकबंधन १, औदारिकतेजसबंधन १, औदारिककार्मणबंधन १, औदारिकतेजस कार्मणबंधन १, ए औदारिक सप्त ॥ उश्वास १ उद्योत १; आतप १, पराघात १; खगति २; तिर्यंचगति २; नीचैर्गोत्र १ एवं १३० ध्रुवसत्तानी प्रकृति जाणवी. ॥ अध्रुवसत्ता प्रकृति २७; समकित १ मिश्र

१; मनुष्यदुग २; वैक्रिय ११ ते कयी? नरकदुग २; सुरदुग २; वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय अंगोपांग १; वैक्रिय बंधन १; वैक्रियसंघातन १; वैक्रियतेजस बंधन १; वैक्रियकार्मण बंधन १; वैक्रियतैजसकार्मण बंधन १, जिननामकर्म १; आयु ४ आहारक सप्त वैक्रियवत् ७, उच्चैर्गोत्र १ एवं प्रकृति २७ अध्रुवसत्तानी जाणवी ॥ सर्वघाति प्रकृति २०, केवलज्ञानावरण १, केवलदर्शनावरण १, निद्रा ५, कषायधुरला १२, मिथ्यात्व १, एवं २० सर्वघातिनी जाणवी॥ देशघातिनी प्रकृति २५ ते कयी? ज्ञानावरणी ४, चक्षुदर्शनावरणी १, अचक्षुदर्शनावरणी १, अवधिदर्शनावरणी १, संजलनी चोकडी ४, नोकषाय ए, अंतराय ५, एवं पचीस प्रकृति देशघातिनी जाणवी ॥ अघातिनी प्रकृति ७५ ॥ पराघात १, उश्वास १, आतप १, उद्योत १, अगुरुलघु १, तिर्थंकरनामकर्म १, निर्माण १; उपघात १; तनु ५; उपांग ३; संस्थान ६; संघयण ६, जाति ५; गति ४; खगति २; आनुपूर्वी ४; त्रसादि २०; गोत्र २; वेदनीय २; आयु ४; वर्णादिक ४; एवं ७५ प्रकृति अघातिनी जाणवी.

पुन्यप्रकृति ४२ ते केइ? सुर ३, नर ३, शातावेदनी १, त्रसादि १०, शरीर ५, वज्रऋषभ

नाराच संघयण १, समचतुरस्त्र संस्थान १, पराघातादि ५, अगुरुलघुनाम १, वर्णादिक ४, उपांग ३, तीर्थंकरनाम १, तिर्यंचआउ १, उच्चैर्गोत्र १, पंचेंद्रिजाति १, शुभविहायोगति १. एवं ४२ पुन्यप्रकृति.

पापप्रकृतिना ८२ भेद ॥ संघयण ५, संस्थान ५, कुखगइ १, तिर्यंच २, अशातावेदनी १, नीचैर्गोत्र १, उपघात १, जातिचतुष्क ४, नरकत्रिक ३, थावरादि १०, अप्रशस्तवर्ण ४, सर्वघाति देशघाति ४५ एवं ८२ प्रकृति पापनी जाणवी.

अपरावर्तनी प्रकृति २९ ते कयी? वर्ण चतुष्क ४, तेजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, दर्शनावरण ४, ज्ञानावरण ५, अंतराय ५, पराघात १, भय १, डुगंछा १, मिथ्यात्व १, उश्वास १, जिननाम १, एवं २९ अपरावर्तनी प्रकृति जाणवी.

परावर्तनी ९१ प्रकृति ते केइ? तनु ३, उपांग ३, संघयण ६, संस्थान ६, जाति ५, गति ४, खगति २, आनुपूर्व्वी ४, वेद ३, हास्यादिक ४, कषाय १६, उद्योतआतप २, गोत्र २, वेदनी २, निद्रा ५, त्रसादि २०, आउ ४, एवं परावर्तनी ९१ प्रकृति जाणवी.

घनघातिनी ४७ प्रकृति ते कइ? सर्वघाति २० प्रकृति, देशघाति २५ प्रकृति, समकित १,
मिश्र १, ए सरवे मळी घनघातिनी ४७ प्रकृति जाणवी.

जीवविपाकनी ७८ प्रकृति ते कयी? घनघाति ४७, गोत्र २, वेदनी २, जिन १, त्रस ३,
थावर ३; सुभगादि ४, दुर्भगादि ४, उस्वास १, जाति ५, गति ४, खगति २, एम ७८ प्रकृति
जीवविपाकनी जाणवी.

हवे पुद्गलविपाकी केहेछे ॥ नामकर्मनी ध्रुव उदयनी प्रकृति १२, संघयण ६, संस्थान ६, शरीर
उपांग ६, उपघात १ साधारण प्रत्येक २, आतपउद्योत २, पराघात १, एवं ३६ प्रकृति, पुद्गल-
विपाकीनी जाणवी.

खेत्रविपाकीनी ४ ते कयी? आनुपूर्वी प्रकृति ४, भवविपाकनी प्रकृति ४, आयु चार वि-
पाक ॥ इति संपूर्ण ॥ तमारा पुछेल प्रश्ननो उत्तर टुंकमां लखेल छे.

१ मिथ्यात्वे—हेतु ५५ आहारक दुग २ छेद. ॥ २ सास्वादने हेतु ५० मिथ्यात्व ५ छेद. ॥ ३ मिश्रे-

हेतु ४३, अनंतानुबंधि ४, मिश्र २, औदारिक, वैक्रिय, कार्मण काययोग १.॥ ४ अविरति–हेतु ४६,
मिश्र ३ प्रक्षेप! औदारिक, वैक्रिय, कार्मण काययोग १.॥५ देशविरति–हेतु ३ए, अप्रत्याख्यानी
४, अविरति १, कार्मणकाययोग १, औदारिकमिश्र १, ॥ ६ प्रमत्ते–हेतु २६, अविरते ११ त्रिजा
कषायनी चोकमी भेद औदारिक वैक्रीयसरीय उदय ॥ ७ अप्रमत्ते–हेतु २४ वैक्रियमिश्र अने
आहारक मिश्र २ भेद. ॥ ७ नियट्टि–हेतु २२ वैक्रियशरीर आहारकशरीर भेद. ॥ ए अनियट्टि–
हेतु १६ हास्यादि ७ भेद. ॥ १० सूक्ष्मसंपराये–हेतु १० वेद ३ संज्वलना ३ ॥ ११–१२ मे–हेतु
ए संजलनो लोभ. ॥ १३ मे हेतु ७ असत्यभाषा, मिश्र ए २ नो भेद ॥ मनना जोग २ उदय होय.
ते आ सत्यमनयोग अने व्यवहार मनयोग ए बे उदय होय ॥

४ रत्न आयुधशाळाये उपजे ॥ चक्र १, छत्र १, खड्ग १, दंड १ एम चार.

३ रत्नभंडागारमां उपजे ॥ कागणी १, चर्म १, मणि ॥ एम त्रण.

२ रत्न वैताढये उपजे ॥ अश्व १, गज १ एम बे.

४ रत्न निजनगरीये उपजे ॥ सेनानी १, गाहावइ १, पुरोहित १, वार्द्धिक १ एम चार.
१ स्त्रीरत्नखेचरश्रेणीमध्ये उपजे ॥

चत्तारि मेहा पन्नत्ता? ॥ तंजहा ॥ पुख्खलसंवट्टे । पज्जुन्ने । जीमूए । जिम्मे । पुख्खलसंवट्ट एणं महामेहेणं एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ ॥ १ ॥ पज्जुन्नेणं महामेहेणं एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ ॥ २ ॥ जीमूएणं महामेहेणं दसवासाइं वासेइ ॥ ३ ॥ जिम्मेणं महामेहेणं बहुहिं वासेहिं एगं वासं भावेइवा न वा ॥ ४ ॥ इत्यादिक पाठ श्रीठाणांगें छे ॥७॥

तवसुएण सत्तेण एगत्तेण बलेणय । तुलणा पंचविहावुत्ता जिणकप्पं पडिवज्जओ ॥ १ ॥ श्री सूयगडांग मूलसूत्रे ॥ चाउदसट्ठ मुदिट्ठपुन्निमासिणीसु ॥ चतुर्दश्यष्टम्यादिषु तिथिषूप्रदिष्टासु महाकल्याणिकसंबंधिनीवापुण्यतिथित्वेन प्रख्यातासु । तथापूर्णिमासीषु च तृसृष्वपि चातुर्मासिक तिथिषु ॥ ८ ॥ इति श्रीसाधुरत्नशिष्येण श्रीपार्श्वविधुसूरिणालिखिताप्रश्नोत्तरपत्रिकासंपूर्णा ॥
॥ श्रेयसेभूयात्पृच्छकपाठकादिसज्जनानाम् ॥

॥ अथश्रीगुरुपरीक्षा स्वाध्यायः ॥

चोपाइ छंद—गुरु गिरुआ गुणमणिभंमार ॥ सुगुरु तरे तारे संसार ॥ सुगुरु सुधो मारग कहे, तेहथकी भवियण जण लहे ॥१॥ परदेशी नृप नास्तिकमति, न मानतो ते जिणवर यति ॥ देव सुधर्म सुगति दुर्गति, तथापी थापे निजमति ॥ २ ॥ ते पण पाम्यो मोटो लाभ, सम्यक्दृष्टि सुर सूरिया ॥ भव अंतर लेशे निर्वाण, जुर्ज सुहगुरुतणो प्रमाण ॥ ३ ॥ शुद्ध प्रकाशे सूधो करे, व्यवहारे ते तारे तरे ॥ पोते जे छे कर्म अनादि, कोइक बहीखले प्रमादि ॥ ४ ॥ पूछयो आपणा अवगुण कहे, पछे घणी खप करवा रहे ॥ ते पण सुहगुरु पदवीलहे, तसु दंसणे मुज मन गहगहे ॥ ५ ॥ करे शुद्ध भाषे उत्सूत्र, तेय विणासे निज पर सूत्र ॥ इह जोवो चित्तधरो जमालि, चारित्र लहि हार्यो जिण आली ॥ ६ ॥ चउथे भांगे केवल वेष, असंयती नीपावे रेष ॥ तेय यती नहु कहीए गृही, साधु सुगुरुनी मति तिह नही ॥ ७ ॥ गुरु परखे उत्तम श्राविका, जिन शासननी सुप्रभाविका ॥ भोजन अवसरे जोवे पंथ, भाग्य योगे आवे निर्ग्रंथ ॥ ८ ॥ साल

अछे तेने घरबार, जीव न सूझे घण अंधयार ॥ ते देखी एक पाछो वल्यो, साधु सुगुरुने पदे ते मळ्यो ॥ ए ॥ बीजो व्यवहारे तेह साध, आव्यो पण लाग्यो अपराध ॥ प्रमादवश पूछयो ते तिहां, उत्तम जूठो बोले किहां ॥१०॥ आपण दोष न्राखीने वल्यो, ते वांद्यो मन गुरु अटकल्यो ॥ एम गुरु परखणे सहुये न्रहे, निरता गुरु कोइ वीरलो लहे ॥ ११ ॥ शुद्ध प्रकाशक गुण आगार, समकित सहित धरे आचार ॥ गुरु परखो नागिलनी परे, शिव पामो जिम वसता घरे ॥१२॥ नागील वन्नो सुमति लघु न्राय, कर्म उदे आव्यो अंतराय ॥ तेने बले ते निर्धन थया, गुरु परखण परदेशे गया ॥ १३ ॥ महानिशिथे एनो विस्तार, जाणी करवो हिये विचार ॥ सुमतिक्रिया परखी एकली, विणुसमकित तेवी नहु न्रली ॥ १४॥ नागिले परख्या दंसण नाण, जिणे गुरुपदवी थाये प्रमाण ॥ तिणविणु संयम कर्यो असार, अगणि मसाण जेम सविकार ॥१५॥ जेहने लागे बहु अपराध, ते कहीये संवेगी साध ॥ तेहथी ऊण घणा इह तणा; नागिल बोल्या दूषण घणा ॥ १६ ॥ निंदक मुनिजनना ते नहीं, अल्पदोषि बहु दूषण ग्रही ॥ कह्यो नहीं चारित्रनो गंध,

ए केहो श्रावक संबंध ॥१७॥ पूठये सत्रि अवगुण थापिया, वाचक दोष जगमे वापिया ॥ इण कारण नागिलः पारखी, करहु परीख तेण सारिखी ॥१८॥ उत्कृष्टे चारित्रे ग्रैवेक, लगे पहोता बे साधु अनेक ॥ विणु समकित आराधक नहीं; नव अनंत ते रुलइये सही ॥१९॥ समकित सहित एक दिन पालि, संयम सकल कर्ममल टालि ॥ गयसुकुमाल प्रमुख शिवठाम, पहोता फल तसु पाय प्रणाम ॥ २० ॥ इणपरे शुद्ध प्रकाशक साध, व्यवहारे तेहज गुरु लाध ॥ (श्री) पार्श्वचंद्र एम कहे विचार, ते वंदी पामो नव पार ॥२१॥ इतिश्रीपार्श्वचन्द्रसूरिविरचितगुरुपरीक्षास्वाध्यायः ॥

श्रीचतुर्दशगुणस्थानककर्मप्रकृतिविचारगर्भित श्रीमहावीरजिनेन्द्र स्तवनत्रिपंचाशिका.

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ वस्तुछंद ॥ सयल गुणनिधि सयल गुणनिधि वीरजिणनाह, तसु पयप्रणमी भावशुं, गुणस्थानक चउदशभणेस्युं ॥ जिण जिण थानक जेटली कर्म्म प्रकृति तेती थुणशुं ॥

बंध नै उदय उदीरणा, सत्तातणो विचार ॥ मूल आठ अमवन्नसय, उत्तर पयमी धार ॥१॥ नाण दंसण नाण दंसण तासु आवरण, वेदनी मोहनी आउखु, नाम गोत्र अंतराय जाणो ॥ पंट प्रतिहार खमग सरिस मद्य निगम चित्रकर समाणो ॥ कुंनकार नंमारि सम, अनुक्रमे आठ वखाण; मिथ्या अविरति कषाय योग, बंधहेतु चउ जाण ॥ २ ॥ इति वस्तुछंदद्वयं ॥ ढाल. केशी बावनीनी ॥ प्रकृति स्थिति अनुनाग; प्रदेश बंध चिहुं प्रकारे ॥ प्रकृति सुनासुननो स्वनाव; स्थिति काले अवधारे ॥ नाण दंसण आवरण; वेदनी अंतराय चार ॥ ए चिहुंनी स्थिति सायर; त्रीस कोमाकोमी धारू ॥ मोहनी सित्तरि नाम; गोय वीसवीस कोमाकोम ॥ सागर तेत्रीस आउखो; उत्कृष्टि नही खोम ॥ ३ ॥ जघन स्थिति उह कर्म तणी; अंतमुहुत्त नणीजे; नाम गोत्रनो जघन्य बंध, आठ मुहुत्त सुणीजे ॥ वेदनी मुहुत्त बार, केइ जघन्य वखाणे ॥ आचारज मत अंतर, एह गीतारथ जाणे ॥ रसबंध एकठिक त्रिगुण, आदें प्रदेश ते अल्प बहुत ॥ मूल प्रकृति एणीपरे कही, उत्तर सुणो जुहुत्त ॥ ४ ॥ मतिश्रुत ओही मणहनाण, केवल आवरण ॥ ग्यानाव-

रण प्रकार पंच, दंसण आवरणं ॥ नवविध चख्खु अचख्खु ओहि, केवल आवरणं ॥ निद्रा पंच प्रकार, निद्रा ते सुख जागरणं ॥ निद्रानिद्रा प्रचलावली, पयल पयल थीणद्धी ॥ वेदनी सात असात दुइ, मोहनी अठ्ठावीस विधि ॥५॥ मुख्यदंसण चारित्र, मोह दंसण त्रिकारे ॥ समकित मिथ्या मिश्रमोह, हवे चारित्र धारे ॥ चारित्र मोहना दुन्निभेयं, सोल कषाय जाणीजे ॥ नोकषाय नव नाम, तसु हवे विगति थुणीजे ॥ क्रोध मान माया लोभाचउ, एकेके चार प्रकार ॥ अनंत अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संजलण संभार ॥६॥ हास्य अने रति अरति भय सोग दुगंछा जाणो॥ स्त्री पुं नपुंसक वेद, एम पंचवीस वखाणो ॥ आउकर्म चउभेय, निरय तिरिनरदेवसहिय ॥ नामकर्मना भेद, एक शतत्रण वली अहिय ॥ हवे तेहनो विवरो सुणो, ए नरकतिरि नरदेव ॥ गति चउ इग बिअ तिण चउ, पंचेंद्रिना भेव ॥७॥ शरीर उदारिक विक्रिय, आहारक तैजस कर्मणभणे ॥ उपांग त्रण उदारिक विक्रिय आहारकना सुणे ॥ औदारिक औदारिक विक्रिय,-विक्रिय आहारक आहारक ॥ तैजस तैजस कम्मण, कम्मण पणसरीरा धारक ॥ औदारिक विक्रियाहारक

कार्मण, तैजसमिश्र ए चार ॥ औदारिक विक्रियाहारक मव्यां, कार्मण त्रण विचार ॥८॥ औदारिक तेजस कमण, तिमसे विक्रियाहारक इम ॥ पन्नर बंधण इणिपरे, पंच संघातन तनु जिम। वज्रऋषन्ननाराच, ऋषन्ननाराच नाराच ॥ अर्द्धनाराच कीलिका छेवठ्ठ ठ साच ॥ सम चउरंग निग्गोह, सादि कुबज वामन हुंम एह ॥ संठाण वर्ण सीत कृष्ण, नील पीत रक्त न संदेह ॥ए॥ गंध सुगंध डुर्गंध, डुन्नि रस पंचविचारो ॥ तित्त कडूय कसाय, अंबिल मधुर संन्नारो ॥ गुरु लघु मृडु ने कठिन; शीत उन्हा सिणि लुख्ख ॥ फास निरय तिरि सुर, मनुष्य आनुपूर्वी चउ डुख्ख॥ विहाय गति डुय सुन्न असुन्न, उसास आतप पराघात ॥ उद्योत अगुरुलघु तित्थंकर, नाम निर्माण उपघात ॥ १० ॥ त्रस बादर पज्जत्त, पत्तेय थिर शुन्न वली सुन्नगं॥ सुसर अने आदेय यश एणीपेरे त्रस दसगं॥ थावर सुहुम अपज्ज नाम साधारण अथिर॥ असुन्न दुन्नगवली दुसर अनादेय अजस दस ए थिर॥ नामकर्मनी एकशत त्रण अधिक चित्ते धारि, गोत्रकर्मनी दोय प्रकृति उच्चनीच सुविचारि ॥११॥ दान लान्न न्नोगोपन्नोग वीरिय अंतराय ॥ अठावन चउ सर्व प्रकृति एम

कहे जिनराय ॥ एकसो त्रिहुत्तर नाम प्रकृति सतसठिनो बंध ॥ जेह नणी बत्रीस प्रकृति सम-
कालिन बंध ॥ बंधन पन्नर संघात पणवीस शरीरह मांहि ॥ वर्णगंधरस फरसनी सोलनो बंध प्रवाही
॥ १२ ॥ वस्तु ॥ अट्ठकम्मह अट्ठकम्मह बंधना हेतु कहीशुं सघला जूजुआ सुगुरु वचन मनमा-
हि धारिय ॥ नाण दंसण आवर्ण दोय पके थाय जिय कर्म्मं नारिय ॥ प्रत्यनीक निन्हवपणे, उ-
पघाते प्रद्वेष ॥ अंतराय नणतां करे बंध दो कर्म अशेष ॥ १३ ॥ सातवेदन सातवेदन बंध गुरु
नक्ति ॥ क्षमा दयाव्रत पालतां असुन्न योग क्रोधादि टाले । अशातबंध विपरीतथी थाय दया
दिक जे न पाले । उनमारगनी परूवणा करे मारगनो नाश । पकणीय जिनमुनि संघचेइ चेश्य
द्रव्य विणास ॥ १४ ॥ पणलक्षण पणलक्षण मोहनी बंध । दंसण चारित्र मोहनी कषाय सोल
नवनोकषाये । विषय पंच परवश थको वंध करे एणे उपाये ॥ नरक आउ आरंन्न महा बंधे
परिग्रह जेय । पंचेंद्री वध पल नक्षण करे बंध जिय तेय ॥ १५ ॥ नियडिमाया नियडिमाया
अलिय जंपे । अधिको लिये ओछो दिये तिरिय आउ ते जीव बंधे । प्रकृति नद्र प्रकृतिये

विनय दया भाव मछर जे रुंधे । मनुष्यपणो एणीपरे लहे ॥ सराग संयम व्रत बार ॥ बाल तप अकाम निरजरा लहे देव अवतार ॥ १६ ॥ नामकर्मह नामकर्मह सुभलणो बंध सरल अगर्वपणे करे । अशुभ एह विपरीत बंधे उच्चगोय गुण रागे मद रहित जिनादिक भक्ति संघे । भणे भणावे एहथी विपरीत नीचुं थाय । जिनपूजा अंतरायथो हिंसादिक अंतराय ॥१७॥ इति वस्तु पंचकं ॥ ढाल गीता छंदानी ॥ चालती ॥ गुणथानकरे चउदतणी विगती कहो ॥ आदि मिथ्यारे बीजो सासादन लहो ॥ मिश्र तीजोरे अविरति चोथो जाणिये ॥ देसविरतिरे पंचमठाण वखाणीये ॥ त्रुटक ॥ प्रमत्त अप्रमत्त निवृति अनिवृति बादर सहूम संपराइयं ॥ उवसंतखीण मोहसयोगी अयोगी केवली धारयं ॥ जिण ठाणे जेटली प्रकृति बंधे कर्म उदय उदीरणा ॥ सत्ता सवे गुणठाणे कहीशुं आगमछे विस्तर घणा ॥१८॥ चालती ॥ एकसो वीसरे प्रकृति सामान्ये बंध करे ॥ तसु नामजरे कहीशुं चतुर जे मन धरे ॥ नाण दंसणरे आवरणं पण नव कही ॥ वेदनी दोयरे मोहनी छवीसज सही ॥ त्रुटक ॥ नही समकित मिश्र मोहनी

बंध आउ च्यारे करे ॥ नामनी सतसठी पयडी बत्रीस मांहीथी निसरे ॥ पनर बंधण पणसंघातन सोल वर्णादिक नहीं ॥ गोत्र दोय अंतराय पंचय मिली एकसोवीस लही ॥१९॥ चालती॥ हवे पेहेलेरे ठाणे एकसो सत्तर हुवे ॥ जिननाम कर्मरे आहारक दु न संभवे ॥ सासादनरे एकसो इकउत्तर गणो ॥ नरक त्रिकरे एक बि ति चउ जाति मतभणो ॥ त्रुटक ॥ मत भणो हुंडसंठाण आतप संघयण छेवठयं ॥ मिथ्यात थावर सूक्ष्म अपज्जत्त साधारण नपुंसयं ॥ ए सोल पयडी पढम ठाणे बंध बीजे नहु करे ॥ मिश्र थानके प्रकृति चिहुंत्तरि बंध गियत्थ उचरे ॥ २० ॥ चालती ॥ तिर्यंच-त्रिकरे निद्रानिद्रा जाणिये ॥ थीणद्धीरे पयलापयल वखाणीये ॥ दोहग दुसररे अनादेयानंत चोकडी ॥ क्रोध मान मायारे लोभ संठाणह चोकडी ॥ त्रुटक ॥ निग्रोध सादिय कुब्ज वामण संघयण चउ वली जाणीये ॥ ऋषभ नाराच नाराच तसु अधिकीलिक एम वखाणीये ॥ नीचगोत्र उद्योत असुभ विहायगति स्त्री वेदयं ॥ मनुष्य देवह आउ सत्तावीस पयडि ऊणंकिद्धयं ॥ २१ ॥ चालती ॥ चोथे अविरतिरे गुणथानके सतहत्तरि ॥ नर सुर

आठरे जिननामह एकठ करी ॥ देशविरतियेरे सतसठ्ठि दस छेडी करी ॥ आदि संघयणरे मनुज-त्रिक बंधे नहीं ॥त्रुटक॥ क्रोध मान माया लोभ च्यारे अपच्चख्काणवरणा टल्या ॥ उदारिक तनु तसु उवंगह बंध नहीं एम सांभल्या ॥ त्रेसठ बंधे प्रमत्तठाणे पच्चख्काणावरणीया ॥ क्रोध मान माया लोभ बंधन च्यारे उणी जाणिया ॥२३॥ चालती ॥ अप्रमत्तेरे प्रकृति अठ्ठावन जाणज्यो, उंगणसठ्ठिरे अथवा हिये आणज्यो ॥ तेतो एणीपरेरे त्रेसठथी छह नीकली, दोय घालीरे आहारकद्विकस्युं मिली ॥त्रुटक॥ शोक अथिर अशुभ अरति अजस असातावेदनी, एम गुणसठ्ठि हवे अठावन प्रकृति कहुं परे बंधनी ॥ देव आयुनो बंध मंडशे छठ्ठो पुरो सातमे, करे तो उंगणसठ्ठि नहींतरे छठ्ठ पूरो अफवन्न ईमे ॥२३॥चालती॥ हवे अठ्ठमरे अपुव्वकरण गुणठाणयं, श्रेणी दोइरे उवसम खवगति जाणयं ॥ जीवमंफेरे इण थानके भाग साते करे, पहेले भागेरे बंध अठ्ठावन उच्चरे ॥ त्रुटक ॥ उच्चरे गोयथ्थ वितिय चउ पण छठ्ठे छपन्न जाणिये, निद्रा डुगं नहु बंध निद्रा पयल दुन्नि वखाणिये ॥ सातमे भागे छवीस पयमी बंध होवे त्रीसनो, प्रकृति छठ्ठे भाग रह्यो सुणो विवरण तेहनो ॥ २४ ॥

चालती॥ देवगति देवरे आनुपूर्वी पंचिंदिपणो, विहायगतिरे सुन्न त्रस बादर वलीन्नणो॥ पज्जत्तथिररे पत्तेय सुन्नग सुन्न सुस्वरं, आहारकरे विक्रय तेजस कम्मण मन धरुं ॥त्रुटक॥ विक्रियाहारक उपांग दोई आदेय समचउरंसए, संठाण निम्मांण तिहनाम वर्णचउक छवीस ए, अगुरुलघु उपघात परावात उसास इणपरे त्रीस ए॥ आठमे इम छत्रीस नवमे बंध होय बावीस ए॥ २५॥

चालती॥ नवमे गुण थानकेरे न्नाग वली पंचयकरे, तिहां पेहेलेरे न्नागे बात्रिस धाररे॥ तिहां चउ टालीरे हास रइ न्नय कुछए, बीजें न्नागेंरे पुरुषविणु इग वीसए॥ त्रुटक॥ वीसबंध तइय न्नागें क्रोधविणु ते जाणीयें, तुरीय न्नागें मान टाली ओगणीस एम संन्नारीयें॥ पंचम न्नागें विणुमाया अढारनो बंध इह न्नण्यो, गुणठाण दशमें लोन्न टाली बंध सत्तरनो सुंण्यों॥ २६॥

गुण दशमेरे नाम सुहुम संपराइयं, तिहां पयडीरे सत्तर बंधह उवदेशियं॥ चउ दंशणरे साता उच्च जस इमलही, नाण विग्धंरे दश मिली समग्ग ते कही॥ त्रुटक॥ इग्यारमे एक पयडी बंधे सातावेदनी जिन कहे, आवरण चउ चक्खु अचक्खु उही केवल बंध दशमे रहे॥ उच्च गोय

जसनाम ज्ञानावरण पणअंतराइयं ॥ पंच इम सवि सोल पयडी बंध रह्यो संपराइयं ॥ २७ ॥ वस्तु ॥ खीणमोहे खीणमोहे एकनो बंध, तेरमे थानके एकनो, बंध सातावेदनी जाणीजे ॥ चउदमे थानक बंध नहु कम्र्म रहित सिरि सिद्ध थुणी जे ॥ हवे हुं उदय विचारणा, एकसोने बावीस ॥ समकित मिश्र सहित जाणया, सामान्ये स जगीस ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ जंबूस्वामीना विवाहलो ॥ चालती ॥ पेहेले ठाणे एकसो सतरतणो, पयडी पंचनो उदउ मत जाणो, समकित मिश्रने आहारक डुगं, तित्थंकर नाम मिछे नहु जुगं ॥ त्रुटक ॥ गुणठाणे बीजे पयडि उदए एकसो इग्यारु ए । सुहिम अपजत आतप मिथ्या साधारण मन धारु ए । नरकानुपुव्वी छहय पयडी सतरमांही उंडी करी । हवे मिश्र एकसो उदय बारे काढी मिश्र मांहे धरी ॥ २९ ॥ चालती ॥ ते इम च्यारे अनंतानु बंधीया । थावर नामकर्म इगबिति चउरिंदिया । सुरनर तिर्यग आनुपुव्वी तियं । समकितठाणे चउ अधिकं सयं ॥ त्रुटक ॥ सत एक मांहे पंच घाली मिश्र एक उंसारियें । समकित च्यारे आनुपुव्वी नरकादिकनीधारियें ॥ प्रकृति

पंचम ठाण सत्यासी सतर पयडी उणी करो। चिहुत्तरसो मांहेथी देशविरति उदउ मन धरो ॥३०॥ चालती ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोधादिक चउ। देवगति देवाणुपुवी देव आउयं। विक्रिय तनुवली विक्रिय उपांग ए। नेरइयगतिने आनुपुवी आउए ॥ त्रुटक ॥ तिरि मणुअपुवी अयस दुर्भग अनादेय ए सविटले। प्रमत्ते उदय एकासि आठे काढी दोयमांहि मिले। उद्योत नीयंगोय तिरि-गति आउ प्रत्याख्यान चोकडी। ए काढी आहारक तणु उपांग दुन्नी पयडी मांहि जडी ॥३१॥ चालती॥ अप्रमत्त ठाणे उदय बिहुत्तरी। एकाशीथी पंच पाडी करी। निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचलय। थीणद्धीने आहारक दोय॥ त्रुटक॥ आठमे ठाणे उदय बिहुत्तरी। च्यार काढो तेहनी। पयडी अर्द्ध नाराच कीलिका छेवट समकित मोहनी। नवमे ठाणे छासठि जाणो। हास्य रतिअरति त्रयं। शोक दुगंछा छह्य काढी बहुत्तरि मांहिथी छसठयं ॥३२॥ चालती॥ दसमे ठाणे साठ प्रकृति कही। स्त्री पुं नपुंसक वेद उदय नहीं। क्रोध मान माया संजलनातियं। ए छह उणी छासठिथी कियं॥ त्रुटक ॥ इग्यारमे गुणठाणे संजलनो लोभ तेह नही। साठथी एक एह काढि उदय गुणसठि

हुए सही । बारमे सत्तावन ऋषभ नाराच दोय भणी करी । अथ पंचावन निद्रा प्रचला दोय आगले परिहरी ॥ ३३ ॥ चालती ॥ तेरमे ठाणे बेतालीस जाणीये । पंचावनथी चउद उण वखाणीये । नाणावरणी पंच अंतराइयं । पंचचउ दंसणावरणं निरधारियं ॥ त्रुटक ॥ इम चौद काढें एकतालीस हुए तित्थंकर नाम मांहि ठवो । इम बेतालीस पयडीई तेरम ठाणे जिन थवो ॥ चउदमे ठाणे बार उदई त्रीस पयडी नहु हुवे । चरम समये ते बारे पयडी खपि शिवपुरे रमे ॥ ३४ ॥ चालती ॥ उदारिक तनु तासु उवंगुए । अस्थिर असुभं नाम नचंगुए । सुभने असुभा विहायोगति । पत्तेय थिरि सुभ नहु उदई रति ॥ त्रुटक ॥ संठाण छह उपघात पराघात अगुरुलघु उसासए । वर्ण गंध रस फास निम्र्माण तैजस कम्मण निवासए । संघयण पेहेलुं दुसर सुसर साता अहव असातए । ए त्रीस पयडी उदय नहुए बारहुए विख्यातए ॥ ३५ ॥ चालती ॥ ते बारे इम त्रस बादर पज्जत्तयं । पंचेंद्रि जाति नरगति आयुयं । उच्चगोय सुभगं तित्थंकर नामयं । आदेय जस साय अहव असातयं ॥ त्रुटक ॥ ए बार पयडी चउदमे गुणठाणे चरमसमे खवे ।

चउद गुणथानके उदउ वोल्या जे जिहां संजवे । हवे उदीरणं कहु उदउ जेम तेम उदीरण । विस्तार जेम जेम पाछले कहियो तेम लहेज्यो धी धणा ॥ ३६ ॥ चालती ॥ पहेलेगणे एकसो सतरुए । बीजे एकसो अधिक इग्यारुए । एकसो त्रीजे चोथे चिहूत्तरु । पंचमे थानके सत्यासी मने धरु ॥ त्रुटक ॥ छठ्ठे इकासी हुइ हुइउदीरणा सातमाथी विवरणा । तेरमो थानक होय ज्यां लगी त्रिणि न करे उदीरणा । साता असाता मनुष्य आयु सातमे न उदीरए । तेणे उदय बि-हुत्तरी करे उदीरण त्रिहुत्तरी कहे जिनवीरए ॥ ३७॥ चालती ॥ आठमे थानके हुए उगुणहत्तरी । नवमे त्रेसठ उदीरणा मने धरी । दसमे सत्तावन छप्पन्न अगियारमे । बारमे चोपन्न उगुण-चालीस तेरमे ॥ त्रुटक ॥ त्रण त्रण पयडी उदयमांहिथी उदीरण उंही करो । सातमा गुणथानके प्रारंजी तेर लगे हियडे धरो । चउदमे गणे उदीरणा नहु अयोगी गुणगणयं इम चउद थानक कही उदीरण पयडि विवरण माणयं ॥ ३८ ॥

॥ ढाल ॥ दोडी ॥ सत्तातणो विचार पूरव बंधीय । पयडी पोते जे रहेए । पेहेले स्थानके

एकसत अमृतालीस । दस बंधन उंठी कहेए । बीजे त्रीजेठाणे एकसो सतृतालीस । तिथंकरनाम तिहां टल्योए । चोथेठाणे एकसत अमृतालीस । तिथंकर नाम मांहि मिल्योए ॥ ३ए ॥ पंचमे बठ्ठे ठाणे सातमे थानके । सत अठ्ठतालीस जाणवीए । आठमे नवमेठाणे दसमे इग्यारमे । वि-गति त्रणी मने आणवीए । अनंतानुबंधी च्यारे तिरिनरगायुष । बई पयमी सत्ता नहीए । तेणे एकसो बेताल इणे चीहुं थानके । सुगुरु वचने आगमे लहीए ॥ ४० ॥ अथवा चोथे ठाणे पंचम बठ्ठए । सत्तमे इण चिहु नाथके । अनंतानुबंधी च्यारे समकित मिथ्यात । मिश्रमोहनी साते वकेंए । क्षपकश्रेणी मांमे साते खय करे । तो एकतालीस आगलीए । अहव अधिक पचताल चोथे पंचमे । बठ्ठे सत्तमे संभलीए ॥४१॥ एकसत अधिक पेताल ते इणिपरे । तिरि निरय देव आउ त्रिणाए । निज निजभवे विछेद कीधो बे जिणेए । हेते जीव लाभे घणाए । अहवा अविरति आदें नवम पढम भाग लगे । एकसो अमृतीस जाणीए ए । प्रकृति सत्ताए विचार तेतो इणिपरे । सुगुरु गीयथ्थ वखाणीये ए ॥ ४२ ॥ पेंतालीस मांहे सात काढी जे चउ । अनंतानु बंधीतिय

मोहनी ए । चउथो पंचम ठठ, सत्तम अठमा, जीवठाणे परे एहनीए, नवमाना नव ज्ञाग, कीजे पहेले ज्ञागे । एक सत्त अठत्रीसे ज्ञणीए । बीजे प्रकृति बावीस । एक सत अधिकीय। अठत्रीसथी सोल अवगिणीए ॥ ४३ ॥ थावर सूक्ष्मनाम तिरिगति, तिरिपुव्वी।नरकद्धिक इणपरेज्ञणोए । आतपने उद्योत, थीणद्धि निद्रानिद्रा,पयलपयल गणोए । इगबिति चउरिंदि, जाति साधारण,नाम कर्म ए सोलमीए । त्रीजे ज्ञागे चउद, एकसो आगली, आठ बावीसथी नीगमीए ॥४४ ॥ अप्रत्याख्यानीचार, चारप्रत्याख्यानी, आठे क्रोधादिक टलीए। चोथे ज्ञागे नपुंसक वेद टल्यो, तिहां एक सयथी तेर आगलीए । पंचमे ज्ञागे बार, एकसो अधिकीय, स्त्रीवेद टाली संज्ञलीए । एक सत्त ठठेज्ञागे, ठह पयरुी विणु, हास्यादिक गिणतां मिलीए ॥ ४५ ॥ हास्यअरति रति, सोगज्ञय दुगंठाए । सातमे पंचाधिक जाणज्योए । पुरुषवेद परिहार, आठमे संजलनो । क्रोध टालि चउ वखाणज्योए । नवमे ज्ञागे मान, संजलनो टल्यो । तेणे एकसोत्रण चित्त धरोए । बिहुत्तर सुहम संपराय, थानके थानके सत्ताए । मायाविणु लेखो करो ए ॥ ४६ ॥ बारमे संजलनो लोज्ञ, ठेह्वा

समयने, पहेले समय वखाणीए । तिहां एकसोएक, हवे बेहले समये । निद्रा प्रचला नमात्रिए ए । तेण हते पयडी नवाणु; क्षपकश्रेणी करीये, क्षीणमोहे सत्ता लहीए। अगियारमे गुणठाणे, ते उपशम श्रेणी, तासु त्रिविद्धा इहां नहींए ॥ ४७ ॥ सयोगे पयडी पंच्यासी, सत्ताए हुवे । नवाणुं मांहे चौद नीसरेए । नाण दंसण आवरण, अंतराय चउ पंच, पंच छ चउद समकाले हरे ए । हवे अयोगी गुणठाणे, बेह्वा समयथी । प्रथम समय बिहुत्तरि खपेए । बेह्वे समय तेर, प्रकृति ते एटली, सत्ताए जिण लपेए ॥ ४८ ॥ देवगति देवाणुपुवी, सुभ असुभागति । गंधदु फास अरु-रसपणुं ए । पंच बंधन पंचवर्ण, पंच संघातन । संघयण छह पंचय तणुए । दुभग दुसर निर्माण, असुभ अनादेय । अयस अगुरुलघु सूभ थिरुए । छ संठाण उपघात, उसास पराघात । पत्तेय अपज्जत्त सूसरुए ॥ ४९ ॥ त्रण उपांग नीयगोत्र । अथिर असाताए, अहवा सातावेदनीए ॥ बहुत्तरि खपावी एह, अथवा तिहुत्तरी, मनुजानुपुवी सहितनीए । बहुत्तरि तो रहे तेर, तिहुत्तरितो बार । शेष रहे बेहले समयए । सत्ताए ते एह, नरगति आउय । आणुपुवी नरनी रमेए

॥ ५० ॥ त्रस बादर पज्जत्त, जस आदेय, सुभग उच्चगोय जिननामस्युए । पंचेंद्रिय जाति, साता असाताए । मांहेलि एकज गामश्युंए । तेरह पयडी एह, चउदमे गुणठाणे, चरम समय सघली खपीए । अथवा पयडी बार, चरम समये खपे, नर आणुपूर्व्वी जिणभणीए ॥ ५१ ॥ तुम्ह दरसण विणुस्वामी, कर्म तणेवसे । भवे भवे रोलीओ जीवडोए । जीव चउराशी लाख, मांहे दुःख सुख, पाम्या मोह नडे नड्योए । सद्गुरु तणे पसाये, तुम्ह सासन लह्यो । कर्म तणो हवे भय टल्याए । दूर थया सवि दुःख, शुभ मति संपनी, समकित सुरतरु सुजफल्योए ॥ ५२ ॥

॥ कलश ॥ इम चउद ठाणे पयडी विवरण नाम मात्रे संथुण्यो । सूरीन्द्र श्री पार्श्वचंद्र शिष्ये श्री समरचंद्र जेम सुण्यो । जे भण भावे मने ध्यावे कर्मपयडी खय करे ॥ त लहे केवल विमल सुखकर हेले शिवरमणी वरे ॥ ५३ ॥

॥ इति श्री चतुर्दशगुणस्थानकबंधउदयउदीरणासत्ता कर्मप्रकृतिविचारगर्भित श्री महावीर जिनस्तवनरूपत्रिपंचाशिका रचिता समरचंद्रसूरिणा समाप्ता ॥ शुभं भवतु ॥

॥ अथ श्रीराजर्षिकृतप्रश्नस्योत्तरम् ॥

पुरुषकाय स्थिति रहेतो सागरोपम ९०० जाझेरा ॥ स्त्री वेद रहेतो पल्योपम ११० पृथक्त्व, पूर्वकोडी ॥ नपुंसक वेदे रहे अनंति उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी रहे॥ पंचेंद्रि पंचेंद्रिपणे रहे तो, सागरोपम १००० जाझेरा॥जीवत्रसकाय मांहे आवी त्रसपणे रहे तो सागरोपम २००० जाझेरा रहे ॥

पांच ज्ञान त्रण अज्ञान कालथकी जघन्य तथा उत्कृष्टो केटलो काल रहे ते लखीये छीये, मतिज्ञान अने श्रुत ज्ञाननो कालजघन्यत अंतर्मुहूर्त्त एक॥ उत्कृष्टो काल सागरोपम ६६ जाझेरा

अवधिज्ञाननो काल जघन्यत एक समय, उत्कृष्टो ६६ सागरोपम जाझेरा, अवधिज्ञाननो एक समय ते केम? विभंगज्ञानी समकित पडिवजे तेवारे विभंग मटी अवधिज्ञान थाय, ते एक समय रही वली पडे, विभंगज्ञाननो विभंगज्ञाने ज आवे एटले विभंगनो विभंग ज थाय. एम अवधिज्ञान जघन्यत एक समय होय.

मनःपर्यवज्ञान जघन्यत एक समय,उत्कृष्टोतो देशत उणोपूर्व कोमी एक एक समय ते केम?, जेवारे अप्रमत्त गुणठाणे वर्त्तता मनः पर्यवज्ञान उपजीने जाय त्यां एक समय जाणवो.

केवलज्ञानना धणीने केवलज्ञान सादि अने अनंत होय मति अज्ञान अने श्रुत अज्ञानना जांगा काल आश्री त्रण जाणवा एक अनादि अने अनंत ए अजव्यने १, अनादि अने सांत ए जव्यने २, सादि अने सांत जे समकित थकी पमी वली चमे तेने ३. जे सादि अने सांत छे तेने जघन्यत अेकअंतमुर्हूर्त्त, उत्कृष्टोतो अर्द्ध पुद्गल जाणवो.

हवे विजंग ज्ञाननो काल कहे छे. जघन्यतो एक समय, उत्कृष्टोतो सागर ३३ जाजेरा. मनुष्यनो आयुष्य पूर्वकोमि एक पाली पछी अपइठाणे नरके जाय एटले एक पूर्वकोमिने तेत्रीस सागरोपम थाय.

हवे ए आठज्ञाननो आंतरो लखीये छीये,मतिज्ञाननो आंतरो जघन्यत अंतर्मुहूर्त्त १,उत्कृष्टो तो अर्द्ध पुजल माठेरो. एवं एणेज प्रमाणे श्रुतज्ञान,अवधिज्ञान,मनःपर्यवज्ञानना पण आंतरो

जाणवो, केवलज्ञाननो आंतरो नहीं. हवे मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञाननो कहीये छीये. जघन्यतो एक अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्टो सागरोपम ६६ जाझेरो. हवे विभंगनो आंतरो कहीए छीए. जघन्यतो अंतर्मुहूर्त्त एक. उत्कृष्टो तो वनस्पतिनो काल जाणवो.

भेद अजीवना १४ ते मांहेला केटला भेद लोक मांहे लाभे, केटला भेद लोक बहार अलोकमांहे लाभे, केटला भेद अढीद्वीपमां लाभे. केटला भेद अढीद्वीप बहार लाभे. ते विवरो लखीये छीये. लोकमांहे भेद तेर ते केम ! आकाशद्रव्यनो खंध टलतां बाकी १३ भेद. अलोक मांहे भेद २ ते कया ? आकाशद्रव्यनो देश १, प्रदेश २ अढी द्वीप मध्ये ११ ते केम ? धर्म अधर्म आकाश ए त्रणना त्रण खंध टल्या एवं ११, हवे अढीद्वीप बाहार भेद १० ते केम ? पाछला त्रण खंध तेमज काल सहित ४ एवं बाकी भेद १० जाणवा.

षटद्रव्यमां कयोद्रव्य गुरु ? कयो द्रव्य लघु ? कयो अगुरुलघु ? ते विवरी कहीये छीये.॥ जे पुद्गल ते गुरुद्रव्य १, अने जे काल ते लघुद्रव्य २, धर्मद्रव्य १, अधर्मद्रव्य २, आकाशद्रव्य ३,

ए गुरुलघु, जीवद्रव्य ते अगुरुलघु ॥ १ ॥ षटद्रव्यमां कोण नित्य कोण अनित्य ते लखीये छीये. आकाश १, काल २, धर्म ३, अधर्म ४ ए नित्य छे जीव तथा पुद्गल ए बंन्ने अनित्य. पर्याय आश्री एना पर्याय फरे ते माटे ए अनित्य. इतिश्रीराजर्षिकृतप्रश्नस्योत्तरं विहितं श्रीमत्पार्श्वचन्द्रसूरिणा

॥ अथश्रीषट्द्रव्यविचाररूपप्रश्नोत्तरम् ॥

॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ अथश्री षटद्रव्यविचारो लिख्यते ॥ जीवद्रव्य १, पुद्गलद्रव्य २, धर्मास्तिकायद्रव्य ३, अधर्मास्तिकायद्रव्य ४, कालद्रव्य ५, आकाशास्तिकायद्रव्य ६, ॥ अथ जीवद्रव्य भेद बे, एक शुद्धजीवद्रव्य बीजो अशुद्धजीवद्रव्य. शुद्धजीवद्रव्य ते कोने कहीये ? नो कर्म जे शरीर द्रव्यकर्म आठ कर्म पिंडरूप, भावकर्म रागद्वेष मोहरूप तें नोकर्मद्रव्यकर्म भावकर्म तेणे रहित जे आत्मा सिद्ध स्वरूपते शुद्धजीव कहीये.

अशुद्ध जीवद्रव्य ते जे च्यार गति संबंधि नरनारकादिक कर्मोपाधि सहित जीव ते अशुद्ध

जीवद्रव्य. अथ जीवना गुण तेना भेद २, एक शुद्ध गुण बीजो अशुद्ध गुण. शुद्ध गुण केवलज्ञानादि अनंतगुण. अशुद्ध गुण मतिश्रुताऽवधि मनःपर्यव, कुमति कुश्रुत विभंगज्ञान चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन ए दस जीवना अशुद्धगुण ॥

अथ जीवद्रव्यना पर्याय तेहना भेद २ एक व्यंजन पर्याय बीजो अर्थपर्याय. त्यां व्यंजनपर्यायना भेद २, एक शुद्धव्यंजनपर्याय बीजो अशुद्धव्यंजनपर्याय. शुद्ध व्यंजनपर्याय ते जे चरम शरीरथकी त्रीजे भागे न्यूनसिद्धनी अवगाहना ते शुद्धव्यंजनपर्याय, अशुद्धव्यंजनपर्याय, ते जे नरनारकादि शरीरपर्याय. हवे अर्थपर्यायना भेद २. एक शुद्धअर्थपर्याय, बीजो अशुद्ध अर्थपर्याय. ज्यां केवलज्ञानादि शुद्धगुण षटगुण हानि वृद्धिरूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय कहीए. तथा उत्कृष्ट मतिज्ञानादिकनो प्रकाश घटतो घटतो अक्षरने अनंतमे भागे निगोदादिकने विषे जाणपणो आवी रहे ते अशुद्धअर्थपर्यायकहीए. तथा द्रव्यगतपर्याय ते व्यंजनपर्याय, गुणना पर्याय ते अर्थपर्याय. एवं व्यंजनपर्याय अने अर्थपर्यायनो भेद जाणवो. जीवद्रव्य उत्पाद

व्यय अने ध्रुव संयुक्त छे. जीव द्रव्यथकी ध्रुव पर्यायथकी उत्पत्तिरूप विनाशरूप छे. इति द्रव्यगुणपर्याय व्याख्यानं ॥

अथ पुद्गल द्रव्यनो स्वरूप कहे छे, त्यां पुद्गलद्रव्य महाखंधनी अपेक्षाये लोक व्यापी छे. परमाणुंनी अपेक्षाये लोकना एक देश मात्र रहे छे. हवे पुद्गलद्रव्यना २ भेद एक शुद्ध पुद्गलद्रव्य अने बीजो अशुद्धपुद्गलद्रव्य तिहां शुद्ध अविभागी अछेद्य अभेद्य एहवो एक परमाणु आकाश प्रदेशने विषे रहे ते शुद्धपुद्गलद्रव्य तथा द्वयणुकादिक महाखंध पर्यंत स्कंध रूप जे पुद्गल ते अशुद्धपुद्गलद्रव्य कहीए.

अथ पुद्गलद्रव्यना गुण तेना बे भेद. एक शुद्ध गुण बीजो अशुद्ध गुण त्यां अविभागी परमाणुंने विषे रह्या जे वर्णगंधादिक गुण ते शुद्ध गुण तथा वीसगुण आदि देइ अनंत गुण मिश्रित एवा द्व्यणुकादिक स्कंधना जे गुण ते अशुद्धगुण. स्कंधने विषे वीसगुण मध्ये सात गुणनी मुख्यता छे, तेर गुणनी गौणता छे.

अथ पुद्गल द्रव्यना पर्याय तेना भेद २. एक व्यंजनपर्याय अने बीजो अर्थपर्याय, त्यां व्यंजनपर्यायना भेद २. एक शुद्धव्यंजनपर्याय बीजो अशुद्धव्यंजनपर्याय, त्यां अविभागी एक परमाणु एक वर्ण एक गंध एक रस बे स्पर्श एवं पांच गुण संयुक्त दिगंम्बरमते षट्कोणना आकारेश्वेतांबरमते गिरदाकार शुद्ध आकाश प्रदेशने विषे एवो शुद्ध परमाणु रहे छे, ते शुद्ध व्यजंनपर्याय तथा द्व्यणुकादि स्कंध सूक्ष्मरूप स्थूलरूप त्रयंशचतुरंशादि अनेक आकारे परिणमे, ते अशुद्धव्यंजनपर्याय तथा पुद्गलना अर्थपर्याय तेना भेद २. एक शुद्धअर्थपर्याय बीजो अशुद्धअर्थपर्याय, त्यां शुद्धपुद्गल परमाणु आपणा वर्णादि शुद्ध गुणे करी षट् गुण हानि वृद्धिरूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय. तथा द्व्यणुकादि स्कंधना जे वर्णादिक गुण तिव्रमंदादि तरतम भेदे परिणमे ते अशुद्धअर्थपर्याय, पुद्गलद्रव्य उत्पाद व्यय अने ध्रौव्य रूप छे. द्रव्य पुद्गल परमाणु रूप ध्रुव छे. पर्याय थकी उत्पत्ति नाशरूप छे. इति पुद्गलद्रव्यव्याख्यानं.

अथ धर्मद्रव्य शुद्ध लोक व्यापी जाणवो तेनो गुण गति लक्षण जाणवो. तथा धर्मद्रव्यना

पर्याय, एक व्यंजनपर्याय एक अर्थपर्याय, त्यां लोक व्यापी धर्मास्तिकाय लोकाकार रूप परिणमे ते शुद्धव्यंजनपर्याय, तथा धर्मद्रव्यनो गति लक्षण जे गुण ते षट्गुण हानिवृद्धि रूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय. धर्मास्तिकाय द्रव्यने विषे अशुद्धगुणपर्याय नथी. धर्मास्तिकाय उत्पाद व्यय ध्रोव्य संयुक्त छे. द्रव्य थकी ध्रुव छे, पर्याय थकी उत्पत्ति नाशरूप छे.
॥ इति धर्मास्तिकाय व्याख्यानं ॥

अथ अधर्मास्तिकाय द्रव्य शुद्ध अखंड लोक प्रमाण छे. तेनी स्थितिलक्षण शुद्ध गुण छे, तेना पर्याय एक व्यंजनपर्याय बीजो अर्थपर्याय त्यां अधर्मास्तिकायद्रव्य लोक प्रमाण लोकने आकारे परिणमे ते शुद्धव्यंजनपर्याय तथा. अधर्मास्तिकायनो स्थिति लक्षण जे गुण ते षट् गुण हानि वृद्धि रूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय कहीए. अधर्मास्तिकायने पण अशुद्धगुण पर्याय नथी. अधर्मास्तिकाय द्रव्य उत्पाद व्यय ध्रोव्य संयुक्त छे. द्रव्य थकी नित्य पर्याय थकी उत्पत्ति नाश रूप छे. इति अधर्मास्तिकाय व्याख्यानं ॥

अथ काल द्रव्य व्याख्यानं ॥ शुद्ध काल द्रव्यना अणुआ एक एक आकाश प्रदेशने विषे एक ए कालाणु रहे छे. ते शुद्धकालद्रव्य कहीए. तेनो गुण वर्त्तनालक्षण. तेना पर्याय बे. एक व्यंजनपर्याय एक अर्थपर्याय त्यां एक एक कालाणु एक प्रदेशी छे. ते आकाश प्रदेशने विषे अमूर्त्त थको रहे ते शुद्धव्यंजनपर्याय. तथा काल द्रव्यनो वर्त्तना लक्षण जे गुण ते षट्गुण हानि वृद्धि रूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय कहीए. काल द्रव्यने पण अशुद्ध गुण पर्याय नथी समय आवली प्रमुख जे काल ते पण शुद्धकालाणु द्रव्यपर्यायना जाणवा. काल द्रव्यथकी नित्य, पर्याय थकी उत्पत्ति विनाश रूप छे. ॥ इति कालद्रव्य व्याख्यानं. ॥

अथाकाशद्रव्य व्याख्यानं॥ आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापि अखंड अमूर्त्त अनंत प्रदेशी एकद्रव्य छे.ते आकाश द्रव्यनो गुण अवकाशरूपपर्याय एक व्यंजनपर्याय एक अर्थपर्याय त्यां आकाश द्रव्य अखंड लोकालोक प्रमाण अमूर्त्तरूप परिणमे ते शुद्धव्यंजनपर्याय कहीए. तथा अवकाश लक्षणजे गुण ते षट्गुण हानिवृद्धिरूप परिणमे ते शुद्धअर्थपर्याय एने पण अशुद्धअर्थपर्याय न-

थी. आकाशद्रव्य द्रव्यथको नित्य पर्यायथकी उत्पत्ति नाशरूप छे.

॥ इति श्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागच्छाधिराजयुगप्रधान श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरकृतं षट्द्रव्यविचाररूपप्रश्नोत्तरंसंपूर्णम् ॥

॥ अथश्रीजिनप्रतिमास्थापनारासः ॥

॥ ॐ ॥ सार वचन जिन भाखीओ, इण जामहि नहीं बीजो कोय के ॥ हीये विमासी जोयज्यो, सोवन पीतल सम किम होय के ॥ श्रुतनो पक्ष म मेलज्यो ॥ १ ॥ एहछे भाई सीख रसाल के आदर करीने मानज्यो ॥ नयगम भंग गुण सुविसालके, एकमने आराधज्यो ॥ मोह मिथ्यात विचे वट पालके, उपसम समकित जीपज्यो ॥ मुगति दुर्गनी उपरे मालके, सुखे चढी सुख पामज्यो ॥ श्रुतनो० ॥ २ ॥ कल्प साल किहां केरडो, किहां भूमितल किहां सुरलोक के ॥ किहां चिंतामणी कांकरो, सायर छीछर सरस म जोयके ॥ श्रुतनो० ॥ ३ ॥ राजहंस

किहां बगलनो, किहां नूमिपति किहां ते रंकके ॥ किहां उज्जल किहां मेलनो, किहां सरलो कि-
हां वंक निसंक के ॥ श्रुतनो० ॥ ४ ॥ किहां हयवर किहां रासनो, किहां मयगल किहां महिष
विचारके ॥ किहां रायण किहां रींगणी, किहां मज्जन किहां तरवो पारके ॥ श्रुतनो० ॥ ५ ॥
तिम केवली उद्मस्थने, वचने अंतर जाणो जाण के ॥ केवलि नाख्यो ते सही, तेहने मिलतो
सर्व प्रमाणके ॥ श्रुतनो० ॥ ६ ॥ सूत्र सूत्र मुखे सहु कहे, तिहां पण गिर सरसवह प्रमाणके ॥
केलवणहार आंतरो ॥ तिण थाये विस अमीय समाणके ॥ श्रुतनो० ॥७॥ जिम किणही कागले
लख्यो, पुत्र चोरतो हुं पण चोरके ॥ वांचणहारे वांचीयो, तिम जिम लेखक रूरु कठोर के ॥
श्रुतनो० ॥७॥ धणिये तिणपर वांचीयो, जिणपर हुवो राजपसायके ॥ केलवतां इम आंतरो, दुलहो
लहितां निरतो नावके ॥ श्रुतनो० ॥ ए ॥ परंपरा जे आवीयो, गुरुमुख सांनलज्यो परमत्थके ॥
आगम वांचे ते खरो, ते गुरुजन तारेवा समत्थके ॥ श्रुतनो० ॥ १० ॥ दया वखाणी तेहनी, जे
निरति राखे जिनवर आणके ॥ आण दया अंतर घणो, करज्यो ए तुमे वचन प्रमाणके ॥

श्रुतनो० ॥ ११ ॥ आगम त्रण आराधना, नाण दंसण ते जाणो आणके ॥ चारित्र कहीए ते दया, बे वे मीली शिवपुरनो ठाणके ॥ श्रुतनो० ॥१२॥ अन्नव्य जीव पाले दया, वार अनंत खरी व्यवहारके ॥ आज्ञा विणु ते जव जमे, कदी न पहोचे पेले पारके ॥ श्रुतनो० ॥ १३ ॥ देसविरती अविरति तणी, उत्कृष्टी जुवो गति एककके ॥ देवलोक हुवे वारमें, आण दयाने एह विवेकके ॥ श्रुतनो० ॥ १४ ॥ आण पखे (विना) पाले दया, उत्कृष्टो नवमे ग्रैवेयके ॥ सर्वविरतिने पहुचे सदा, आण ते सिद्धि आपे खोण एकके ॥ श्रुतनो० ॥१५ ॥ एक पुकारे मुख दया, नाम मात्र नवि जाणे आणके ॥ सूत्र मर्म जे नहुलहे, कह्यो तासु केम होय प्रमाणके ॥ श्रुतनो० ॥ १६ ॥ मुग्ध न जाणे बापडा, प्राये धन खरच्यो न सुहायके ॥ (रासें बंध्या जेम बलधीया) रासी बद्ध जीम बलधीया, प्रतिमा ढांके नास्तिक थाय के ॥ श्रुतनो० ॥ १७ ॥ आगम बोली बे दया, आण सहित तसु जाणो मर्मके ॥ मन वचन तने पालज्यो, जेम तमे पामो सुधो धर्मके ॥ श्रुतनो० ॥ १८ ॥ ते कांई परने चिंतवे, जे आपणे मन न सुहायके ॥ मूल मर्म ए धर्मनो,

परनी निंदा (ए) ते सहु जायके ॥ श्रुतनो० ॥ १ए ॥ वलीय विशेषे जिनतणो, मने माणज्यो डोह लगारके ॥ तेहनो अवरण बोलतां, चोथे अंगे सुणिय विचारके ॥ श्रुतनो० ॥ २० ॥ जिन प्रतिमानी हेलणा, सूत्र वचन जिनवर हिलायके ॥ पंचम अंगे विमासज्यो, आसायण तसु इ-णिपरे थायके ॥ श्रुतनो० ॥ २१ ॥ वीतराग जिणवर कह्यो, प्रतिमाने जोज्यो अधिकारके ॥ बीजे तिम त्रीजे वली, अंगे उवंगे लेहु विचारके ॥ श्रुतनो० ॥ २२ ॥ पंचमें बहे अंगे नणयो, सांनली हीयके आण विवेकके ॥ मं-बोलज्यो उपरावठा, साखी इहां बे ग्रंथ अनेकके ॥ श्रुतनो० ॥ २३ ॥ नगवइ अंगे नांखीयो, वीसमे सय नवमे उद्देशके ॥ बार ठाम प्रतिमा तणा, वंदेवा श्री साधु विशेषके ॥ श्रुतनो० ॥ २४ ॥ आठे ठामे शाश्वती, असाश्वति प्रतिमा चिहु ठामके ॥ वंदे ते चारण यती, इम बोल्या श्री सोहमस्वाम के ॥ श्रुतनो० ॥ २५ ॥ दशमे अंगे आठमे, अध्ययने जिनप्रतिमा काजके ॥ मुनिवर वेयावच करे, तेहने नास्ति नहीं जिनराजके ॥ श्रुतनो० ॥ २६ ॥ पंचम आवश्यक करे, वीरजिणंद चउविह संघके ॥ उनयकाले किरिया नणी, प्रतिमा वंदन पूजन

रंगके ॥ श्रुतनो० ॥ २७ ॥ बीजे ठामे मानीये, सघले धर्मारथ आरंनके ॥ एक प्रतिमा नहु मानीये, एह म करज्यो कूमो दंनके ॥ श्रुतनो० ॥ २८ ॥ पर अवगुण लव म ग्रहो; परनिंदा म करो मन रीसके ॥ पूठ मांसनक्षण कह्यो, श्री आगम गिरुवे जगदीशके ॥ श्रुतनो० ॥ २ए ॥ इह लोकिक पण इम कहे; मातंगीनो जोवो दृष्टांतके ॥ नूमि आनोखी चालती, निंदक रुलसी काल अनंतके ॥ श्रुतनो० ॥ ३० ॥ एहज आगम वांचतां, रुलीया चोगइ साध अनंतके ॥ एह आराधी उद्धर्या, पहोता सिद्धे साधु अनंतके ॥ श्रुतनो० ॥ ३१ ॥ एम जिनेसर नाखीयो, चोथे श्री समवाये अंगके ॥ जिन नाषित नहु अन्यथा, वानी ओलखज्यो मन रंगके ॥ श्रुतनो० ॥ ३२ ॥ अणजाएयो असूत्र कहे; अणदीठो जे सन्ना मझारके ॥ पंचम अंगे प्रगट कह्यो, ते नर नमस्ये अनंत संसारके ॥ श्रुतनो० ॥ ३३ ॥ प्रतिमा वंदण आखमी, कही नथी जिनमारगमांहिके ॥ साधु श्रावकने मारगे, म पमज्यो गामरीय प्रवाहके ॥ श्रुतनो० ॥ ३४ ॥ सूत्र ठता म उथपो, इम करतां नाजे जिन आणके ॥ एह मूल समकित तणो, श्री जिनप्रतिमा करो प्रमाणके ॥ श्रुतनो०

॥ ३५ ॥ जिन वंदण फल जेटलो, ते जिन प्रतिमा वंदण होयक ॥ रायपशेणी जाखीयो, हृदय नयन उघाडी जोयके ॥ श्रुतनो० ॥ ३६॥ प्रतिमा पुस्तक सारिखा, दंसण नाणतणो बे अंगके ॥ एक ढंके एक आदरो, इणपरे हुवे त्रिहुनो जंगके ॥ श्रुतनो० ॥ ३७ ॥ पुस्तकतो पछी हुवा, प्रतिमानी जोवो बुद्ध्यादिके (अनादि)॥तेह नवी कही ठोके,तेतो पडिया मिथ्यावादके॥श्रुतनो० ॥३८॥ तेहने जो न आराधीये, जेहथी हुवे परजव उपकारके॥ इमतो कृतघ्न थाइये, इम केम लहीये जवनो पारके ॥ श्रुतनो० ॥ ३९ ॥ रूसो सज्जण जण हसो, विहसो दुरजण मूरख लोकके ॥ जिनवर आण वहंतडा, तेम जावे जेम विरुओ न होयके ॥ श्रुतनो० ॥ ४० ॥ आज्ञा आचरणायें मिल्यो, पडिक्कमणो करजेज्यो बिहु कालके ॥ बिहु विण ढंदे आपणे, करतां पडीये जव जंजाल के ॥ श्रुतनो० ॥ ४१ ॥ तेहनी संगति टालज्यो, जेह विराधे देव गुरु धर्मके, नित समतारस झीलज्यो, मननो टाली मिथ्या जर्मके ॥ श्रुतनो० ॥ ४२ ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि विनवे, जिन प्रतिमा जिनवरनी बुद्धि के ॥ एकमना आराधज्यो, लहेज्यो मनवंछित फल सिद्धिके ॥ श्रुतनो० ॥४३॥

इति श्रीजिनप्रतिमास्थापनारासः संपूर्णः ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ अथश्रीशत्रुंजयनो रास. ॥

राग गोडी. भली भावना विमळगिरि भेटवानी, वसी चित्त कसवट्ट जिम हेमवानी ॥ तिणे ऊलटे तीरथराय गाउं, महा घोर संसारनो तीर पाउं ॥१॥ लहे लिह तन रुअडी तेज जीह, थुणे तेहना गुण गणुं धन सुदीह ॥ वहे पाय तसु पंथी ते धन्य जाणुं, करे अंजली जेय कर ते वखाणुं ॥२॥ जिणे जोइये रंगी ते धन्य नेत्र, हियो ते जिणे समरिये सिद्धक्षेत्र ॥ हरे भावि भयभूरि भवभ्रमण केरो जांमली नहींय तीरथ अनेरो ॥३॥ जिम ध्यानमांहे भलुं शुभ ध्यान, मणीमांहे चिंतामणी जेम प्रधान ॥ जिम गिरिवरे मेरु तरुवरे मंदार; तिम तीरथ मांहि शत्रुंजय सार ॥४॥ वडी जंबुदीपे नदी मांहि सीता, सति शीलगुण नारीगण गणीय सीता ॥ जिनधर्म करुणा नरे जिम उदार, तिम तीर्थमांहे शेत्रुंज सार ॥५॥ जिम वंशमांहि वडो जैन वंश, विहंगमां जिम कमळ रुडो राजहंस ॥ जिम मंत्र नवकार महिमा अपार, तिम तीर्थमांहि शेत्रुंज सार ॥६॥ अने

वन परिमळे जळ घणेरा, नहीं मन विना मानसहंस केरा ॥ जगे त्रिंयण चित्त आणंदकार, तीम तीर्थमांहि शेत्रुंज सार ॥ ढाळ ॥७॥ पृथवी भंरूण तीर्थ घणा ए, छें जण जण मण इछतो ॥ शत्रुंजय समवरू अवर मे, कोइ न तीरथ दीठतो ।गावो०॥८। गावो गावो आपणो ए, ए मनमाणो भ्रांत तो ॥ जेह बे गुणना पारखीय, ते परखी गुण लिंत तो ॥गावो०॥९॥ जिण दीठे गुणवंतना ए, गुण समरीये अनेक तो ॥ लेखंतणे अहिनाण तिहां, मन आणीये वीवेक तो ।गा०।१०। साधारण भावे भणयो ए, पग पग सिद्ध अनंत तो ॥ शत्रुंजय जेम सविशेष तिहां, नहु लाभे गुणवंत तो ।गा०।११। निरतो ज्ञान न उपजे ए, ज्यां लगे नर छदमस्थ तो ॥ त्यां मन आलंबन क्रियाए, अक्षर प्रतिमा लिछ तो ॥ गावो० ॥१२॥ लहि जिनसासन जेहनो ए, ए उपर नवि राग तो ॥ ते मिथ्याति जाणीए ए, के केवली वैराग तो गावो०॥१३॥ जे पण राग भलो नथी ए, थाये तो जिन मत थाउ तो ॥ सिद्ध राग मन सांभरे ए, वळी वळी तीर्थराज तो ॥गावो०॥ ढाल॥१४॥ शत्रुंजय गिरि गिरी अवर समाणो, एहवी मतिनो भाव म आणो ॥ जाणे हिये विचारी सोवन पीतळ

रजत कथीर, काच रतन ए पृथवी सरीर, धीर भीरु नर नारी ॥ १५ ॥ अंब निब तरुवरनी जात, काळ विशेष दिवस ने रात, जाति कनक जे फुल, दूध नाम गोअक सरीखो ॥ ए सहु ए समवड़ जइ देखो, लेखो गिरि गिरि तुल्ल ॥१६॥ इस्युं जाणी गणि शत्रुंजय तीर्थ, इणगिर आवी सिद्धा समर्थ, अर्थ सिद्धि जे पामी ॥ सिद्धतणे गुण रागे रमीए, माणसनो भव एले न गमीये, नमियें ते सिर नामी ॥ १७ ॥ छंडी राजरिद्धिनी ममता, इंद्रीयने दमी आदरी समता, करता विधिए विहार ॥ नेम जिनेश्वर सांभळी सिद्धगति, चिंतवि धिक् धिक् कर्मतणी गति ॥ निंदिय अथिर संसार ॥ १८ ॥ धरि वैराग राग मति परिहरी, पांच पांडव चड्या विमलगिरि, शिव-पुरी पाम्या राज ॥ इण गिरि सहस साधु परिवरीयो, थावच्चो गुणमाणिक भरीयो, तरीयो सारी काज, ॥ १९ ॥ सहस सहित रह शुक परिव्राजक, तेहतणा गुण जाणे सहु जग, ऊग-मग ते जस लीधो ॥ पूर प्रमादे पापह चेलग, विनय क्षमा देखी ऋषि सेलग, पंथक गुणे प्रति-बूधो ॥ २० ॥ पंच सयास्युं शत्रुंजे आव्यो, कर्मतणो मळ दूर खपाव्यो, पाम्यो शिवपुर ठाण ॥

छठे अंगे इणिपरे जणीये, जावे तेह तणा गुण शुणिये, गणिय जनम प्रमाण ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धन धन धारणी नाम ए माय, पुत्ररत्न जेणे उद्धर्यो ए ॥ अंधक वृष्णि धन यादवराय, जेहनो तात तेजे जर्यो ए ॥ गौतम उत्तम पुरुष प्रधान, आठ रमणी तजी व्रत धर्यो ए ॥ पामीय केवल ज्ञान निर्वाण, शेत्रुंजे दरिसण सांजर्यो ए ॥ २२ ॥ नवय सहोदर तासु उदार, अथिर संसार मन संजरी ए, आदरे आदरी संयमजार, रिद्धि रमणी सवे परिहरी ए॥ सम दम न धरे आलस अंग, समुद्र प्रमुख आगम जर्या ए ॥ करीय संलेखण शत्रुंजे शृंग, रंगे मुक्ति नारी वर्या ए ॥ २३ ॥ सुलसा नंदन नाग आनंदन, कुमर अणियस जसनिलो ए ॥ दंसणे शीतल नयण जेम चंदन, दोष निंकदन कुलतिलो ए॥ एक दिन परणीय नारी बत्रीस, कोडी बत्रीस सोवन मिल्यो ए॥ इणिपरे पुरीय सज्जन जगीस, दीसे दोगुंदुक सुरतिलो ए ॥ २४ ॥ छंडी गृहवास धरी धर्म अज्यास, सास वेसास न आवीयो ए ॥ ततक्षण तोडीय मोह दृढ पास, मास संलेखणा जावीयो ए ॥ शिखर शेत्रुंजतणो करीय निश्रेणि, सिद्ध निश्रेणि वेगे चड्यो ए ॥ गिरुउं गिरवर कारण

तेण, वीसरे ते किम चित्त अरुयो ए ॥ २५ ॥ ढाल ॥ अजित सेनादिक जास जगीस, कोमी रमणी बत्रीस बत्रीस ॥ सहोदर तासु पंचय व्रत धरी, शेत्रुंजे चकी पहुंता शिवपुरी ॥ २६ ॥ वसुदेव नंदन साण कुंवर, दारुक बीजो रूपे अमर ॥ कोमी पंचास रमणी पंचास, बंकी रिद्धि मंरुयो शिववास ॥ २७ ॥ डुमुह सुमुह कुंमर कुमार, ए त्रणे बलदेव मल्हार ॥ सांजली धर्मकथा प्रतिबुद्ध, विमलगिरि शिखरे थया सिद्ध ॥ २८ ॥ सांब प्रद्युम्न ने जाली मयाली, प्रमुख कुंवर दसकुल उजाली ॥ एक एक धन कोमी पचास, जोगवी रमणी पचास विलास ॥२ए॥ ए बोल्या बे अष्टम अंग, सयल संगी बंकी मन रंग ॥ शेत्रुंजागिरी संथारो करी, सिद्धि पहुंता जव सायर तरी ॥ ३० ॥ इणिपरे सेत्रुंजे सिद्धा अनंत, तेह तणो कुण पामे अंत ॥ ज्ञानहीण हुं बुं बद्मस्थ, पण जाणुं ए मोटो तीर्थ ॥३१॥ इसिपरे शिखर समेतगिरिंद, ज्यां सिद्धा श्री वीस जिणंद ॥ अष्टापद गिरुउ गिरनार, गिरिवर विपुल अने वैज्ञार ॥ ३२ ॥ जिनवर साधु मुक्तिनो ठाम, दीठे निर्मल मन परणाम ॥ आणी हियके तेहनुं नाम, त्रिकरण शुद्धे करुं प्रणाम ॥ ३३ ॥ डुहा ॥

अतिशय विणु नवि जाणीये, सिद्ध तणो ए ठाण ॥ राग तिणे प्रतिमा ठवी, भक्ति तणो अहि नाण ॥ ३४ ॥ कर्मयोगे शेत्रुंजो चडु, गणु सफल अवतार ॥ दर्शन देखी वीनवुं, वली वली नाभी मल्हार ॥ ३५ ॥ रिसह जिणेसर जगतिलो, जयो जयो जगदीस ॥ द्यो दरिसण करुणा करी, पूरो मनह जगीस ।३६।ढाल। स्वामी तुम दरिसण विना तो भमरली, भव भव भम्यो अनंत तो। वेरी विशय कसाय वसे तो भमरली, चउगति दुःख सहंत तो ॥ दश द्रष्टांते दोहिलो तो भमरली, लाध्यो नरभव सार तो ॥ आर्यदेशमां मुज हुवो तो भमरली, उत्तम कुळ अवतार तो ॥३७॥ सद्गुरु देशना सांभली तो भमरली, जाण्यो जिनवर धर्म तो । पूरो पाली नवि शकुं तो भमरली, पोते बहुला कर्म तो ॥ कर्मह गंजण जाणीये तो भमरली, भव भंजण जगनाथ तो । हुं तुम शरणे आवीयो तो भमरली, स्वामी ग्रहो मुज हाथ तो ॥ ३८ ॥ तुम पसाय पामीयो तो भमरली, दुस्तर भव दुःख पार तो । जो प्रभु तुमे उवेखशो तो भमरली, तो कुण करस्ये सार तो ॥ हुं प्रभु सेवक तुम तणो तो भमरली, उंलग करुं प्रसाद तो जाणु ते तुम मन धरुं तो भमरली, जन हुकह पसाद

तो ॥ ३ए ॥ सरवर तरुवर नहु करे तो जमरली, जल फलतणा अहार तो ॥ गिरुवा गुण संचे घणा तो जमरली, कारण परउपगार तो ॥ जिम जग जलधर वरसंत तो जमरली, सम विसम न गणेय तो ॥ ए गुण तुमने जोइये तो जमरली, गिरुवा करेसु होय तो, पुरो संयम नहुं पले तो जमरली, दुक्कर तप न कराय तो ॥ तहत्ति करी तुम जाखीये तो जमरली, सद्दहिये मनमांय तो ॥ अवर किंपि नहु मागीये तो जमरली, राजरमणी जंमार तो ॥ प्रजु एक सेवा ताहरी तो जमरली, होजो जव जव सार तो ॥ ४१ ॥ काव्यं ॥ पुंमरिकगिरि मंमन राया, करे सेव सुरनरवरराया, (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि चरणे लागे, बोधी लाज जिन मारग मागे ॥ ४२ ॥

॥ श्रीजिनाज्ञापालन स्वाध्यायः ॥

जिनवर देव सु साधु गुरु, केवली जाषित धर्म, सदा प्रतिवालो ॥ ए हियं जेहने वस्या, तिणे जाण्यो हो जिनमतनो मर्म ॥ सदा प्र० ॥ १ ॥ मनकेरो हो तुमे चतुरसुजाण, कदाग्रह टाळो॥ प्रजु सरिसो हो, किसो पराण के हिये संजाळो ॥ एक चित्ते हो श्री जिनवर आण,सदा

प्रतिपाळो ॥ आंकणी ॥ जे जिण आण विराधसे, ते लेस्ये हो दुर्गतिदंम ॥ सदा प्र० ॥ मस्तक धरी जे पाळस्ये, तसु महिमा हो जगमांहि अखंम ॥ सदा प्र०॥२॥ केइ प्रवाहे वाहीया, केइ माने हो कुळक्रम आचार ॥ सदा प्र० ॥ विणु जिन आगम उंळखे, किम लहियें हो दुत्तर नवपार ॥सदा प्र० ॥३॥ विधि मारग मुदलि करी, जे राचे हो कुळ लोकप्रवाह ॥ सदा प्र० ॥ लोहसिला उपर चमी किम तरस्ये हो ते उंमी नाइ ॥सदा प्र०॥ ४ ॥ सुगुरुवचन साचो सही, ॥ मत राचो हो तुम कुगुरु बोल ॥ सदा प्र०॥ विधि प्रवाहसम नहीं गणो,मत तोलो हो खम गुरु सम मोल ॥ सदा प्र०॥५॥ काच रत्न भ्रमे जग नम्यो, हीरागर हो बे विरले ठाण ॥ सदा प्र० ॥ जे नर होस्ये पारखी, ते लहिस्ये हो जगमांहे पिठाण ॥ सदा प्र० ॥ ६ ॥ आगम नाख्यो ते खरो, इम जाणो हो तुम हियमा मांह्य ॥ सदा प्र० ॥ तहत्त करीने आदरो, मत नूलो हो गामरीये प्रवाह ॥ सदा प्र० ॥ ७ ॥ सोनो सुगंधी जाणीये, जस कुळक्रम हो जिनवर आण ॥ सदा प्र० ॥ आगममति जसु चित्त वसे, त्रिहुं काले हो ते संघ प्रमाण ॥ सदा प्र० ॥ ८ ॥ मुज मन हठ कोइ नहीं, नवि

मंमयो हो कोइ नवो विनाण ॥ सदा प्र० ॥ (श्री) पार्श्वचंद्रसूरि वीनवे, मुज नवोनव हो जिन-
आण प्रमाण ॥ सदा प्र० ॥ ए ॥ इति श्रीजिनाज्ञापालनस्वाध्यायः ॥

अथ श्री एषणाशतक प्रकरणम् ॥

॥दुहा॥ श्री जिनसासन समवडे, अवर न सासन कोय॥ कहो किम हिरागर तुले, जग लवणागर होय ॥१॥ ते पामी त्रिहुं तत्व धुर, गुरुनो करो विचार॥ ते विण परख्ये नवि लहियें, देव धर्म व्यवहार ॥ २ ॥ आगम कस पहुंचे नहीं, जे जे दीसे जगमांहि ॥ वीरतीर्थ ज्यां छे छतां, एह वचन आराहि ॥ ३ ॥ ते दिन क्यारे आवशे, ज्यारे वंदिस्युं साध ॥ तेहनी साख खमावस्युं, आपणा अपराध ॥ ४ ॥ शुद्ध जिनागम सांभळसुं, लहिस्युं निर्मळ ज्ञान ॥ स्वहस्ते यदि प्रतिलाभस्युं, ते दिन गणीशुं प्रधान ॥ ५ ॥ पंच महाव्रत आदरी, आठे प्रवचन मात ॥ तेह विशे जयणा करुं, जे आगमे विख्यात ॥ ६ ॥ पूरो संयम नवि पले, इणे दुसम काल ॥ जेह जतन छंडे नहीं, तसु प्रणाम त्रिकाल ॥ ७ ॥ वळी विशेषे एसणा, शुद्धि विशुद्ध अहार ॥

दायक ग्राहक जो मळे, तो लाजे जवपार ॥७॥ सोल दोष दायक थकी, साधुथकी पण सोल ॥ दस मिश्रित साचा लही, टाळो मननी जोळ ॥ ए ॥ चोपाइ ॥ वंदिय वीर जिणेसरराय, पामी गुरुआ सुगुरु पसाय ॥ विवरण दोष बेंतालीस तणुं, लाज काज श्रुत जोइ जणुं ॥१०॥ आगममां ठे घणो विस्तार, ~~तेहनो में किम कहिये पार ॥ संक्षेपे कहीशुं तेहवा,~~ गुरुमुखे जाण्या ठे जेहवा ॥ ११ ॥ उद्गम उत्पादन एषणा, सोल सोल दस क्रम लेखणा ॥ सर्व मली थया बेंतालीस, परिहरवा मुनि करे जगीश ॥ १२ ॥ दुर्मति पथ वे पहेल प्रघोष, आधाकर्म उद्देसिक दोष ॥ पुंतिमिश्र ठवणा पाहुडी, एवं ठह दुर्गति पाउडी ॥ १३ ॥ प्रादुःकरण दोष सातमो, क्रीत जाणी आगम आठमो ॥ नवमो दुषण प्रामित्य नाम, परिवर्तित जण दसमे ठाम ॥ १४ ॥ अजिहड अगियारमो विचार, बारसमो उद्भिन्न निवार ॥ मालोहड तेरसमो जाण, चउदसमो आछिद्य वखाण ॥ १५ ॥ अनिसृष्ट कहिये पनरमो, अध्यवपूरक ठे सोलमो, ॥ नाम थकी ए सोलह जण्या, गुरुमुखे आगम वचने सुण्या ॥ १६ ॥ हिवे संक्षेपथकी विवरिये, प्रगट जाव जिम

संभारिये ॥ ते सांभली श्रावक खप करे, हेले जिम भवसायर तरे ॥ १७ ॥ साधु काज ज्यारे आहार, दीजे देहतणा आधार ॥ छयेकाय आरंभी जिहां, आधाकर्मिक कहीये तिहां ॥ १८ ॥ सहुअमांहि ए गुरुउं दोष, तेणे करे जे मुनि तनु पोष ॥ अष्टकर्म दृढ बंधण करे, चउगति काल अनंतो फरे ॥ १९ ॥ श्री जिनभाषित पंचम अंग, ते मांहि इम भएयो प्रसंग ॥ कारण विणु जे आपे मही, अल्प आयु ते बांधे सही ॥२०॥ आधाकर्मिक दुष्ट अहार, पर आण्यानो लेश आधार ॥ जे भुंजे तसु पडिसेवणा, चोर तणीपरे परिभव घणा ॥ २१ ॥ कर्मिक भक्तभणी संचरे, तेहने जे गुरु अंगि करे ॥ पडिसुणणा ते श्रुत जाणीये, नृप सुत न्याय तिहां आणीये ॥ २२ ॥ आधाकर्मिक जे भुंजंत, तेहनणो सहवास वसंत॥ जिणवर भाख्यो ते संवास, पल्ली जिम उधाको पास ॥ २३ ॥ आधाकर्म भोग जे करे, तासु प्रसंसे दोष न करे ॥ ते अनुमोदन जिनवर कही, राजदुष्ट जेम ते निग्रही ॥ २४ ॥ उपमा अशुचीलणी छे इहां, एहज विलगे पात्रे जीहां ॥ त्रण काप कारीसी घर्षिए, तो सुजे प्रवचन बोलिये ॥ २५ ॥ लहे शुद्ध वरते इणे भाइ, लोंगी

जिम ते तिणे बंधाइ ॥ शुद्ध गवेशक जे ते ढले, रूपक जेम अविचलपद मले ॥ २६ ॥ ए जिमतो शंका नवि करे, अवसर अवसर गुरुपद धरे ॥ जिनवरआण विमुख ते सही, इण कारण आराधक नहीं ॥ २७ ॥ धन्य तेह ए डुषण टालता, विचरे मुनिवर व्रत पालता ॥ मारो मन तसु चरणे रमे, कर्मयोगे ते टेमुं जिये ॥ २८ ॥ ॥ ढाल ग्यारमी ॥ वीरजिणेसर चरणकमल कमला कयवासा—ए देशी॥ मन संकल्पे इम गृहस्थ बहु नक्त कराविशुं, जे कोइ मुजघर आवस्ये ए तेहने आपिशुं ॥ साधुतणो संयोग मळे जइ ते वहोरावे, ते उद्देसिकदोष घणो संसार नमावे ॥२९॥ बहु आहार विशुद्धिमांहि जे मेले लगार, आधाकर्मीक अशुचि जिसो न करे सवि चार ॥ कुंकुम विणसें लसण लवें जिम कंजीय खीर, पुंतिकर्म तिम जाणी करी परिहरे ते धीर ॥ ३० ॥ कोइ मुनि कांइ आपनणी मिश्रित रंधावे, मिश्रजात ते दोष नएयो बहुकाळ संतावे ॥ थापी मुंके साधुकाज ते ठवणा जाणो, इणपरे देवातणो नाव सपरिछ म आणो ॥ ३१ ॥ आघो पाछो साधु नणी घर उछव जाणी, संखमीनो आरंन करे हणीने जे प्राणी ॥ ते पाहुडिया दोष

कह्यो बहु दुषण गाम, जाणी टाळे तास करे सुर नर गुणग्राम ॥३१॥ अंधारे उद्योत करी मुनिने प्रतिलाभे, ए प्रादुकृत दोष प्रगट मारग कीम लाभे ॥ लेइ मोलें साधुजणी मनराग अणावे, वस्त्र पात्र अहार वस्ति ते क्रीत कहावे, ॥३३॥ उजम आणी अंग अधन उधारे आणे, ते कहीये प्रामित्य दोष श्रीवीर वखाणे ॥ एहथकी बहु कर्मबंध मुनि वहेन दीठंते, उजा आण्या तेल तणे जाणो वर्तांते ॥३४॥ पालटी आणी निखर शखर जे मुनिने दीजे, ते परिवर्तित दोष जाणी जिनवरे कहीजे ॥ आगममते बिहुं वणिक बहिनने न्याये लाधे, नवि टाळे रसलोलपणे जिन-वचन विराधे ॥ ३५ ॥ निजघर बाहिर गामथकी मुनि सनमुख आणी, आपे अभीहरू तेथ दोष अभिहरू दुखखाणी ॥ तेल कठिये उदभीन्न जेय मुद्रित लेवाणी साधुजणी दे अपरिभोग उघाणी कवाणी ॥ ३६ ॥ उंचे ठामे चडीय पीढ दुःखे उतारी, आपे संयम घात करे मालोहरू नारी ॥ निर्बळ पासे जे सबळपणे आले उदाली, ते कहीये आछिद्य दोष लेजो संभाली ॥ ३७ ॥ बहु साधारण तेह तणी अनुमति विण एक, जे द्ये ते अनिसृष्ट दुष्ट गणि आणे विवेक ॥ मूळा

उद्देश धानमांही अधिकेरो उरे, साधु निमित्ते बांधयो ए ते अध्यव पूरे ॥ ३८ ॥ इण परे सो-
ळह दोष जणया मन स्मरण मात्र, टाळी जे अहार लिये तसु निर्मळ गात्र ॥ हवे
उत्पादन दोष सोळना जणीये नाम, सुगुरुप्रसादे संजळीये जे आगम ठाम ॥ ३९ ॥
॥दोहा॥ धाइ दोष इहां प्रथम, दुति नामे वे बीव ॥ निमित्त पिंड त्रीजो विषम, चोथो
जणी आजीव ॥ ४० ॥ पंचम दोष वणिमग्गह, उठो तिगिछा होय ॥ क्रोध मान माया लोज
करे, च्यार मळी दश जोय ॥ ४१ ॥ पहेलो पछे संस्तवन, इम अगियार विचार ॥ विद्यापिंड
ते बारमो, तेरमो मंत्र निवार ॥ ४२ ॥ चूर्णपिंड गणो चउदमो, जाणीक गिरवर टोल ॥ योग
पिंड पण पनरमो, मूळ कर्म मळी सोल ॥ ४३ ॥ एणे दोषे आजीविका, करे तिम गणे सुसाध
मोह्यो संजम निगमे, करे चिंतामणी लाध ॥ ४४ ॥ ॥ ढाळ ॥ राग मल्हार ॥ शील शोहावोरं
साजन सेवियें ॥ ए राग ॥ आश्रव परिहरे संजम मन धरे, जे पूरा व्रत पाळेरे ॥ ते मुनिवर
गोचरीये फरतां, ए दूषण सवि टाळेरे ॥ ४५ ॥ सुणो सुणो रे सुगुणनिधि सुंदर, मुनिवर जणे

सुगुरु उपगारिरे ॥ जे जे दोष सबळ तुम हुति लागे, ते परिहरो विचारीरे ॥टेक०॥४६॥ धात्रीदोष जे धायतणी परे, बाळ रमाडी लीजेरे ॥ पामी दुर्घट वाढीं अरहट, चतुर चरण न गमीजेरे ॥ सुणो० ॥ ४७ ॥ गुप्त प्रगट पूछी संदेसा, जे जण जण प्रते बोलेरे ॥ गाम नगर अहारतणे रस, ते मुनि दूते तोलेरे ॥ सुणो० ॥ ४८ ॥ लाभ अलाभ जीवन मृति सुख दुःख, त्रिहुं काळ जे भाखेरे॥ निमित्त पिंड ते अनरथ कारण, श्री वीरजिनेश्वर दाखेरे ॥ सुणो० ॥ ४९ ॥ उत्तम जाति कुळ धनवंत आगे, तिणसम आपण भाखीरे ॥ लीये अहार आजीव ते कहिये, इह ठे आगम साखीरे ॥ सुणो० ॥ ५० ॥ दीन दयालु देखी दरसावे, आपणपें अति दीणरे ॥ इणपरे मुनि अशनार्थिक बोले, बणिमग थाय गुणहीणरे ॥ सुणो० ॥ ५१ ॥ ओसड वेसड वमन वीरेचन, प्रमुख वैद्यकर्म करीयेरे ॥ भोजन काज तिगिछा दोष ए, पाप भंडारज भरीयेरे ॥ सुणो० ॥ ५२ ॥ अशन अलाभ शाप आपी जे, कोप चड्यो बिहाडेरे ॥ घेबर खपकतणी परे क्रोधे, आपे आप भमाडे रे ॥ सुणो० ॥ ५३ ॥ लब्धि प्रसंसा मानी ग्रहीने, दोष त्रिभुवण भंडीरे ॥

सेवे खुडुग जिम जे मागे, साधु लिह तिणे ढंकीरे ॥ सुणो० ॥ ५४ ॥ माया दोष विषम बहु बोल्या, बीजे अंग विचाररे ॥ मास मास तप पारणो पामे, मायाए अनंत संसाररे ॥ सुणो० ॥ ५५ ॥ माया फळे किल्बिशगति तेह वली, कीधो कर्म न सूझेरे ॥ बेरो मुंगो नरक तिर्यंच गति, दुर्लभ बोधे ते बूझेरे ॥ सु० ॥ ५६ ॥ लोभे मध्य मोदक लेतो, नाटक घर अहाररे ॥ चरमशरीरी आषाढभूति पडियो, अवर कवण आधाररे ॥ सुणो० ॥ ५७ ॥ रसनइंद्रीना पडियो लोभे, लोभ पींडे ते आणीरे ॥ टाला अहह लोभी मुनि केसरी, विहरतें रजनी न जाणीरे ॥ सुणो० ॥ ५८ ॥ दान थकी पहेलो वा पछे, दायक कीरति करीयेरे ॥ पुर्वि पच्छा संथव दोसे, भवसायर किम तरियेरे ॥ सुणो० ॥ ५९ ॥ सुर साधी भोजन जे साधे, विद्या पिंड ते भणीये रे ॥ कामण मोहन यंत्र मंत्र बहु, मंत्र दोष ते सुणियेरे ॥ सुणो० ॥ ६० ॥ एहवा नयणतणा छे अंजन, तेहने कोइ न देखेरे ॥ इणिपरे चूर्ण अनेक करंतो, भव भव बहु दुःख पेखेरे ॥सुणो० ॥ ६१ ॥ द्रव्य योग करी अंग विलेपन, मुग्धलोक जे रंजेरे ॥ जळ थळ तरणी सुभग दुर्भग

विधि, जिननी आण ते जंजेरे ॥ सुणो० ॥ ६१ ॥ गर्नतणा कारणने घातन, मूल नवण वि-
वाहरे ॥ इण उपदेसे मूळ कर्म लागे, ढंगी ल्यो नवलाहरे ॥ सुणो० ॥ ६२ ॥
वस्तु ढंद ॥ सुगुरु वयणे सुगुरु वयणे, सुण्या ए दोष, पंचमहाव्रत आदरी, करे जेय मुनि
लोन कारण ॥ तेय लोन नावे समा, किम समर्थ संसार तारण ॥ इम जाणी आदर करी, सुधो
लियो अहार ॥ दुस्तर नवसायरतणो, जिम तुम पामो पार ॥ ६४ ॥ ढाळ वेलीनी ॥ इम गवे-
षण एषणा दोष नण्या बत्तीस, हवे कहिस्युं ग्रहणेसणा वंदी जिण चौवीस ॥ नणे सुगुरु हित
मति नितु चित धरी, सीस प्रते जगीस ॥ ६५ ॥ शीख संनाळीये दोष सहित आहार दूरे
टाळीये, संयमनो आधार नपखे टीहालीये ॥ एसणा समिति आचार निरतो पाळीये ॥ सीख०
॥ ६६ ॥ संकेत पहेलो दोष सुणी बीजो मृक्षित जाणी, त्रीजो ठे निक्षेपनो चोथो पिहित वखा-
णी ॥ साहरिय पंचम नाम ठे, ढठो दायक ठेल पिठाणी ॥ सीख० ॥ ६७ ॥ उन्मीश्रित गणि
सातमो, अपरिणत अष्टम होइ ॥ लिप्त दोष नामे नवम, ठर्दित दसमो जोइ ॥ सुणो नाव हिवे

विरस तेण विणु, जिम विणु लवण रसोइ ॥ सीख० ॥६८॥ दायक देतो देखी करी, जेहनी आणे
संक, ते तेणे दोषे दुःखीये, ए जिन वचन निसंक ॥ लोलपणे ल्ये लोभी जाणीक, लूटी ति लहि
लंक ॥ सीख० ॥ ६९ ॥ म्रक्षित बिंदु भेदे भण्यो, खरड्यो सचित्त अचित्त ॥ वनस्पति पाणी
पृथवी, तेह जाण्यो सचित्त ॥ ~~अन्न सुक [illegible] पक्कन्न दूषित, म मूळे~~ तस गुण अचित्त ॥ सीख०
॥ ७० ॥ पाणी माटी अगनि वन, त्रस थिति थाप्यो जेय ॥ एक अणंतर निक्षेप्यो, अवर परंपर
जेय ॥ ए निक्षिप्त अचित्त छे, जो पण तो पुण परिहरे तेय ॥ सीख० ॥७१॥ जेह सचित्ते ढांकीयो,
अने अचित्त होय ॥ पीहित दोषनी इणी परे, श्रुत चउभंगी जोय ॥ त्रण भांगा तिह मुनि
परिहरिया, चोथे दोष न कोय ॥ सीख० ॥७२॥ जिण भाजन देवा तणे, वस्तु अयोग्य विचारी,
साधु काज देवा भणी, ते अनेथी उसारी ॥ तिणेज द्ये अशनादिक दायक, साहरिय दोष ति-
वार ॥ सीख० ॥ ७३ ॥ अप्रभु पंडक शिशु थविर, अंध मत्त उमत्त करी ॥ तापित तनु कंपतो,
निगडबद्ध हडि जुत्त ॥ गलित छिन्नकर चरण पाउडी, ए दातार अजुत्त ॥ सीख० ॥ ७४ ॥

चुल्ली अरहट्टियो घरट्ट, उसळ मूशळ निसाह, लोढण पिंजण सूपडो, सावरणी व्यवसाह ॥ एह तणो आरंभ करंता, उठे मनमां उछाह ॥ सीख०॥७५॥ जेह भोजन करतीयछे, पूरे गर्भ जे नारी, बेठी उठे उठी करी, बेसे जे अविचारी, धावत बाळ मेली रोवंतो, दीये अहार तिवारी ॥सीख०॥७६॥ छयेकाय संघट्टति, साधु देखी छंडेइ, अग्रपिंड उपर थको, लेइ पास ठवेइ ॥ एह दातार जे टाळे नहीं, दायक दोष हवेइ ॥ सीख० ॥७७॥ मेली युक्त अयुक्त बे, आपे जे अणाभोग, अल्प जाणी उत्सुकपणे, अथवा भाव वियोग ॥ इम लेतां उन्मिश्रित लागे, बिहुअतणे संयोग ॥ सीख० ॥७८॥ द्रव्यथकी वर्णादिके, अपरिणम्यो जे जाण, बिहुं जणमांहे एकने, देवाने परिणाम ॥ द्रव्यभाव बिहुं भेदे टालो, अपरिणत दोष पिछाण ॥ सीख० ॥ ७९ ॥ दहीं बाच भोजन रसे, भाजन कर खरडाय, पश्चाकर्म विशेष गणी, प्राय ते न लेवाय ॥ इणिपरे मुग्धपणे ले तेने, लिप्त दोष कहेवाय ॥ सीख० ॥ ८० ॥ अन्न सीथ रस बिंदु, जे देतां धरणी पडंत, छर्दित दोष ते परिहरो ॥ बहुळ जीव निवडंत, खीर खांड घृत बहु पडियो, जोवो तासु दिठंत ॥ सीख० ॥ ८१ ॥

चोपाइनी ढाळ ॥ मुह्तो धर्मघोष इण नामे, लेइ व्रत मनने परिणामे ॥ गुरु आदेशे करे विहार, पाळे संयम निरतीचार ॥ ७२ ॥ उग्र तपे तनु शोसे सदा, नयरी वारत्तें गयो एकदा ॥ राजा मंत्री तिहां ले वारत्त, उत्तम गुणगण करी पवित्त ॥ ७३ ॥ तसु घर पहोंत्यो भोजन काल, नारी हर्ष वधो नयण निहाळ ॥ भोजन आएयां देवा भणी, खीर खांरू घृत भक्ति घणी ॥ ७४ ॥ परूतो देखी तिहां रसबिंडु, अनेषणी यति गणीय मुणिंदु ॥ परिसाढित दोषे खळभळयो, त्रिणु लीधे ते पाछो वळ्यो ॥ ७५ ॥ बेठे गोखे देखी वारत्त, चिंते कांइ न लीधो भत्त ॥ मुज घर मुनिवर जाणुं नहीं, कांइ कारण एह छे सही ॥ ७६ ॥ इण अवसर तिहां जोवो वळी, तेणे बिंडु बहु मांखी मळी ॥ घरकोयल आवि तिण केरू, जाणे कर्म ते आणी तेरू ॥७७॥ काकीडो धाव्यो उछळी, जीव जीवने पारू छळी ॥ मछ गिलागिल इण संसार, ते देखी धावी मंजार ॥ ७८ ॥ तिहां श्वान आव्यो प्राहुणो, सहवासी मन मच्छर घणो ॥ जाति जातिना वैरी केव, इम वढवा लाग्या ते बेव ॥ ७९ ॥ बिहुं दिसि आव्या बिहुंना धणी, कलह करे ते

कूकर जणी ॥ मांहोमांहि थयो संग्राम, घणा जीवनी हींसा ताम ॥ ए० ॥ तिह वारत्त मंत्री चिंतवे, ए असमंजस इण किम हवे ॥ बिंदु पड्यानो कारण जाण, साधु प्रसंसे समरस आण ॥ ए१ ॥ धन धन उत्तम मुनिवर सही, इण कारण भिक्षा नवि ग्रही॥ एहवा नाना टाळे दोष, किम बुटस्युं अमे बहु दोष ॥ ए२ ॥ खूंच्या परिग्रहने आरंभ, वरतुं मोह लोह बहु दंभ ॥ इम चिंतता जाती संभरी, ततक्षण संयम नारी वरी ॥ए३॥ स्वयंबुद्ध ते साधु वखाण, मुक्ति गयो थइ केवळनाण ॥ अहनिस तेहनो समरो नाम, त्रिकरण शुद्धें करुं प्रणाम ॥ए४॥ दुहा ॥ ग्रहण गवे षण एषणा, बोली त्रिहुय प्रकार ॥ हिव कहिस्युं ग्रासेसणा, लेज्यो चतुर विचार ॥ ए५ ॥

॥ ढाळ ॥ वीर जिनेश्वर उपदेशे, सांभलज्यो चित्त लाइरे०॥ महावीर०—ए देशी ॥ मुनिवर गोचरी करी वळ्या, आव्या वसति मझाररे ॥ भोजन विधिस्युं तेह करे, ग्रासेसण मन धाररे ॥ ए६ ॥ मंफळी दूषण परिहरो, पंच प्रकास्या नाणीरे ॥ गोपय पय तुमे सुखे तरो, जलधि तर्यो भुज प्राणीरे ॥ मंफळी दू० ॥ ए७ ॥ लालचि रस लंपटपणे, सरस संयोग जे मेळेरे ॥

ते कहिये संयोजना, प्रथम दोष नवि नेलेरे ॥ मंगळी दू० ॥९८॥ प्रवचन जिनवरे जे नएयो, नोजन जेह प्रमाणरे ॥ अधिक भुंजे नहीं ते थकी, बीजो दोष ते जाणरे ॥ मंगळी दू० ॥९९॥ दायकने रस बहु गुणे, रागी प्रसंसा कीजेरे ॥ चारित्र दहन ते तीसरो, दोष इंगाल कहीजेरे ॥ मंगळी दू० ॥ १०० ॥ दोषि दाताने दूषतो, अरस विरस रस नाखेरे ॥ चोथो दोष ते धूमनो, जाणी जिनेश्वर दाखेरे ॥ मंगळी दू० ॥ १०१ ॥ कारण बह नोजनतणा, तिण विणु तनुबळ काजेरे ॥ करतां दूषण पंचमो, कारण जिनने राजेरे ॥ मंगळी दू० ॥१०२॥ धन्य ते दूषण टाळी जे, लीये सूजतो अहाररे ॥ असक ते निरतो सद्दहे, ते पण गुण नंमाररे ॥ मंगळी दू० ॥ १०३ ॥ ॥ वस्तु छंद ॥ जेह मुनिवर जेह मुनिवर पंच आचार, पाळे पंचिंद्रिय दमण, पंचबाण नमाण गंजण सुद्ध जिनागम पन्नवे, नविलोय नवन्नीक नंजण, साहु रयण तारणतरण, ते समरो निसदीस; श्री पार्श्वचंद्रसूरि वीनवे, तसु पाय नामुं सीस ॥ १०४ ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयबृहत्तपागछाधिराज वचनातिशयधारकयुगप्रधान श्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरविरचितमेषणाशतकप्रकरण संपूर्णम् ॥

॥ अथश्रीखंधकमुनिचरित्रशतकम् ॥

प्रन्नाति–राग ॥ आदि जिन रिषन्न श्रीवीर चोवीसमो, न्नावि न्नो न्नविय जगदीश चउ तुझ नमो ॥ हुं पण पणमिय न्नणीसु खंदगचरी, गुरु मुखे सांन्नळ्यो सुणो आदर करी॥ १॥ न्नाखियो न्नगवइ अंग सतत बीजए, पढम उद्देस गुण गहण तसु कीजए॥ साधु गुण गावंतां दूरिय दूरे टळे, साधु गुण गावतां चित्त वंछित फळे ॥ २ ॥ दुखनी अर्गला पूरिय कयंगला, दीस ए उढवे करिय बहु मंगला ॥ तत्थ ईसान कूणंमि गुण सुंदरे, छत्त पलासए चेइये मणहरे ॥ ३ ॥ वृक्ष अशोक तळे पुढवी सिलवट्टयं, कसिण घण मसिण किर जाण कसवट्टयं ॥तासु आकार सिंहासणं सोहए, विविध रूपे करी जण मणं मोहए ॥ ४ ॥ त्रिन्नुवन तारक वीर समोसर्या, तिहां प्रन्नु वंदवा बहु जण नीसर्या ॥ आवतां दुख संसारना वीसर्या, स्वामिपय सेवतां काज सहुए सर्या ॥५॥ ढाळ ॥ ॥ चोपाइ ॥ तिहांथकी नासन्न न दूर, सावत्थी नगरी गुणन्नूर ॥ गर्धन्नाल तापसनो शीष, गुरुपय सेव करे निसदीस ॥ ६ ॥ खंधक परिव्राजक इणे नाम, घणुं ते निवसे तेणे गाम ॥ रिगु

यजुसाम अथर्वण च्यार; पंचम वेद इतिहास विचार ॥७॥ छठो जाणेवो निग्घंट, तेहतणे जाणवे निघंट ॥ वेद चिहुंना छे छ अंग, वळी रहस्य ने अंग उवंग ॥ ८ ॥ सारे वारे धारे सही, पारग कांई कणो नहीं ॥ छंद निरुत्त जोईस संखाण, शिक्षा कल्प व्याकरण पुराण ॥ ए ॥ शष्टितंत्रनो जाणे भेद, भणवे गणवे सदा अखेद ॥ वळीय अनेरा ब्राह्मण तणा, शास्त्र विदीता छे जग घणा ॥ १० ॥ ते सघळानो कहीये जाण, कळा बहुत्तर तणो निधान ॥ सौचादिक निज धर्म पभावे, अवसर जाणी सभा साचवे ॥ ११ ॥ तिण ठामे पिंगलक निग्रंथ, जैनतणा जाणे बहु ग्रंथ ॥ एकदा आव्यो खंधक पास, पूछे प्रश्न हियफले विमास ॥ १२ ॥

॥ ढाळ ॥ वीर जिनेश्वर चरणकमल कमळा कयवासो. ॥ ए राग ॥ आवि तीहां आक्षेप सहित पींगल इम भाखे, श्री जिनसासनतणो भाव निरतो मन राखे ॥ लोक जीवने सिद्धि सिद्ध ए संत अनंत, ए चिहुंनो कही लहिय मर्म निरतो भतंत ॥ १३ ॥ केणे मरतो मरणे जीव वाध हुइ हीणो, पूछ्या पंचे प्रश्न एह तव ते थयो दीणो ॥ संकित कंखित कलुस सहित सुणी रह्यो अ-

बोल्यो, बे त्रण वार पूछतां तेह निज मतथी भोल्यो ॥१४॥ इणे अवसरे तेह पुरीयमांही बहुजन समवाय, जातो देखी कयंगला नगरी नरराय ॥ खंधक नीय चित्त चिंतवे ए आव्यो महावीर, जिनमत राजा कर्मवीरवर साहसधीर ॥१५॥ जाउ तिहां करी विनय बहु पुछुं प्रश्न विचार, इम जाणी निज वस्ति आवी उपगरण प्रकार ॥ त्रिदंड कमंडलु कंचणीया भिसिया केसरीय, छत्रा- लय अंकुस करोड पवित्रीय, गणेत्रीय ॥ १६ ॥ छत्र उपानह पादुका धातु रंग्या चीर, ए चउदह उपगरणे करी सोभीय सरीर ॥ लई चाल्यो जेटले मारगे आवेबो, प्रारंभ्यो तेटले स्वामी गोयम बोलाव्यो ॥ १७ ॥ देखसी पूरव संगतियो ते कुण कहो स्वाम, प्रभु पभणे गौतम संभार खंधक इण नाम ॥ ते आवेछे कवण काज मिलस्ये किणकाल, गौतम पूछे एह वचन कर मेलविशाल ॥ १८ ॥ वळतो स्वामी पूर्वचरित्र तसु भाखे सहुअ, आसन्नो छे आवीयो धरलंघिय बहुअ ॥ हिवडां देखिस एम सुणी वळी गौतम बोले चारित्र लेस्ये तुम समीप थास्ये मुनि तोले ॥१९॥ हंता गोयम जेटले ए अर्थ प्रकासे, स्वामी गौतम तेटले ते द्रष्टिये पासे ॥ देखी गौतम हर्ष धरी

तसु सन्मुख जावे, कहे अहो तुम मिलण एह मुज चित्त सुहावे ॥ २० ॥ भले आव्यो खंधका वळी वळी इम भाखे, पींगळ पसिण स्वरूप सहु तसु आगळ दाखे ॥ चित्त चमक्यो ए एम कहे कुण तपसी नाणी, तुम मिल्यो जेह थकीय मुज वसीए ते मति जाणी ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ चालती ॥ भाखे गोयम मुज गुरु केवळी, वीर जिन ~~स्सण~~ संसयमति टळी ॥ तेहने कहणे जाण्यो एटलो, खंधक तुजने वीत्यो जेटलो ॥ त्रुटक ॥ केटलो कहिये स्वामीनो गुण एक जीभे में सही, कहे वळतो परिव्राजक गौतमनो आदर लही ॥ चालो जइये तुम गुरुने वांदवा साथे करी, बे बेई आव्या वीर जिनवर पास दृष्टि सुधा भरी ॥ २२ ॥ चालती ॥ तिणे अवसरे स्वामी नितु जिमे, कर्म अघातीय खपिये नहु कीमे ॥ इणपरे पेखे तिण तनु सिरि भर्यो, लक्षण व्यंजन गुणहि अलंकर्यो ॥ त्रुटक ॥ अलंकर्यो देखी चित्त हरखी देई प्रदक्षणा वंदए, परिणाम सूधे भाव भावत डुरित कंद निकंदए ॥ तिणे काळे वीर खंधक प्रति प्रश्नति वागरें, पिंगळे पूछ्या पूछवा ते आव्यो इहां इम उचरें ॥२३॥ चालती ॥ रिजु ते जाणी भगवन वागरे,

प्रश्नह केरो निर्णय सहु करे, लोक चिहुं परे द्रव्यत क्षेत्रतो, काळत भावत तिहांगणे द्रव्यतो॥ त्रुटक ॥ लोक द्रव्यत एक भाख्यो क्षेत्रतो हिव जाणीये, जोयण कोडाकोडी असंख्य प्रथुळ दीह प्रमाणीये ॥ असंख कोडाकोडी जोयण परधी फरतां काळथी, लोकनां तुं जाण खंधक आदि अंत बेवड नथी ॥ २४ ॥ चालती ॥ भाव थकी सुणी गंध रस फास ए, वर्ण अनंता पर्यव पास ए ॥ काळ अनंते अनंता केवळी, तिणे अनुक्रमे भाखुं हुं वळी ॥ त्रुटक ॥ वळी द्रव्य क्षेत्र संत भणीये काळ भाव अनंतओ, जीव द्रव्यत एक चेतनतणे भाव विदीतओ ॥ अवगाढ असंख्य प्रदेश अंबर असंख्य प्रदेशात खित्तओ, काळथी जसु आदि अंत नहि तेही जाणो भावओ ॥ २५ ॥ चालती ॥ चारित्र दर्शन ज्ञानह पज्जवा, एह अनंता अगुरुलघु पज्जवा ॥ अंत बिहुं लहिये बिहुं करि ते नहीं, द्रव्यत सिद्धि एकज जिणे कही ॥ त्रुटक ॥ जिणे कही क्षेत्रत लाख जोयण पंचतालीसहि भणया, पिहुलीय लंबी वृत्त संठीत भाव ए गुरु मुखे सुणया ॥ एक कोडी लाख बयालत्रीसय सहसंबीसय पंचासए, (१४२३०२५०) एकडण जोयण किंचिसाधिक परधि एम

चोथे प्रकाशए ॥ २६ ॥ चालती ॥ काळंत भावत लोक तणी परे, संत बिहुकरी णंत बिहुंपरे ॥
प्रकाशए ॥ २६ ॥ चालती ॥ काळंत भावत लोक तणी परे, संत बिहुकरी णंत बिहुंपरे ॥ चोथे
प्रश्ने सिद्ध विचारीये, द्रव्यत एक गणी क्षेत्र संभारीये ॥ त्रुटक ॥ संभारिये ए जीवनी परे का-
ळथी इम भाखीये, सादि अप्पजवसिय भावत जीव जांमली दाखीये ॥ द्रव्यत क्षेत्रत संत
जाणो, काळ भावि अणंतर्ज, हिवे निसुणी पंचम प्रश्न खंधक हास्ये चित्त पसंतर्ज ॥ २७ ॥
चालती ॥ केणे मरणे मरतो प्राणीयो, वढई हायई ते इम जाणीयो, मरण बे भेदे खंधक में कह्यो,
बाळ एक पंमित बीजो संग्रह्यो ॥ त्रुटक ॥ संग्रह्यो पहिलो बार भेदे बाळमरण प्रसिद्धओ, वलय
मरणाति प्रथम जिनवर साधुने प्रतिसिद्धओ ॥ भूख तृषा बहु वाहि वेदन जेय वलवलतो मरे,
बीजो ते मरण वसट्ट इंदीय वसे जीव ते परिहरे ॥ २७ ॥ चालती ॥ मृग झख मधुकर नाग पतं-
गीया, पंचय इन्द्रितणे प्रसंगीया ॥ प्राण तजंता जग डुख बहु सहे, बीजो मरण ते स्वामी इम
कहे ॥ त्रुटक ॥ इम कहे त्रीजो सद्य राखी मरे तद्भव जाणवो, मरिय माणस भव लहंतो
एह चोथो आणवो ॥ गिरी वृक्षथी पमि मरे पंचम छठ्ठ सत्तम अठमो, जल जलण पेसी मरे

नवमो करे विषभक्षणतणो ॥ २९ ॥ चालती ॥ सत्थो वारूण शस्त्रे जे मरे, दसमो ए गणी जि-
नवर उच्चरे ॥ वेहाणस पासे ग्रहण इग्यारमो, ग्रीद्धपीठ मरण ते जाणीये बारमो ॥ त्रुटक ॥
बारमो जे गज कलेवरमांहि पेसीने रहे, श्वानादि भक्षण करे इणीपरे तेय दुस्सह दुख सहे ॥
ए मरण मरतो बाळ अनंता, मरण चिहुं गतिना लहे ॥ चउरंत भव कंतारि भमतो काळ अनं-
तो निरवहे ॥ ३० ॥ चालती ॥ पंडित मरण दुविध प्रकासीयो, पादोपगमन संवर वासियो ॥
भत्त परिन्ना बीजो जाणवो, बिहुमां पहेलो इम मन आणवो ॥ त्रुटक ॥ आणवो मन इम प्रथम
पादप डाल जिम धरणी धसे, लव मात्र उंची न नीची थाये आघीय पाछी नहु खसे ॥ इणीपरे
अंग उवंग राखे अडग संथारो करी, जिवंत मृत जिम रहे निश्चळ मोह माया परिहरी ॥ ३१ ॥
चालती ॥ तेह निहारीम निहरण जेहनो, बाहिर करवो ज्वालन देहनो ॥ ते अनिहारीम गिरी-
वर दरी रही, करे संथारो अवसर जे लही ॥ त्रुटक ॥ जेहथकी निहरण थाये नहु ते अनिहारीम
जाणीये, नियम हुंती अपडि चरणातणी अतीहि वखाणीये ॥ बीय पंडित मरण पच्चखी भात

पाणी संथरे, प्रथम जिम अनीहरण निहरण भेद बे जिन वागरे ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ नियमा ए सप्रतिचरण, सपडिकम्म कहेवाय ॥ प्राणी बिहुं मरणे मरत, परित संसारी थाय ॥ ३३ ॥ वृद्ध-तिहायति इण मरण, पंचय प्रश्न ते जाण ॥ संबुद्धो खंधक तिहां, सांभळी जिनवर वाण ॥३४॥ त्रण प्रदक्षणा देइ करी, वंदे गुरु मतिआणी ॥ मन इच्छुं छुं तुम कने, केवळ भाषित वाणी ॥ ३५ ॥ स्वामी धर्मकथा कही, पढमोवंग प्रसिद्ध ॥ सांभळी हियडे गहगह्यो, हरखे थयो समृद्ध ॥३६॥ चोपाइ ॥ उठी वंदे खंधक वळी, भगवन प्रते बोल्यो मन रळी ॥ निग्रंथनो प्रवचन सद्दहुं, आणी प्रतीति चित्त रोचवुं ॥ ३७ ॥ एह विशे उद्यम आदरुं, ए तहत्ति करी हियडे धरुं ॥ ए साचो इह नहु संदेह, रतन रेख जाणेवी एह ॥३८॥ इच्छयुं पडिछयुं ए में सही, साची वाणी जे तुमे कही ॥ इम भाखी वंदी जिन वीर, ईसाने गयो साहसधीर ॥३९॥ त्रिदंड कमंडलु प्रमुख एकंत, वस्त्रादिक सहुए एकंत ॥ पाछो आवे जिनवर पास, वंदी बोल्यो हिये विमास ॥ ४० ॥ जरा मरण जलथिं परजळे, ए संसारी लोक चलचले ॥ एहमांहि सकिये किम रही, ठरीये

वाणी पाणी लही ॥ ४१ ॥ जिम कोई गृहपति घरमांह, पेसे वहते दाह अगाह ॥ काढे वस्तु अल्प जे सार, घणो मूल जसु थोमो न्नार ॥ ४२ ॥ ए निस्तार्यो हित सुख गम, खम निश्रेयस वळी अनुगाम ॥ पच्छा पुरा हुस्ये मुजन्नणी, इस्युं जाणी काढे धन धणी ॥ ४३ ॥ इणपरे हुं पण करस्युं स्वाम, तनुघर आतम धनने गम ॥ ए काढ्यो परन्नव हितन्नणी, मुजने थास्ये सहु ए घणी ॥ ४४ ॥ तिण कारण इछा माहरी, पूरो न्नगवन करुणा करी ॥ स्वहस्ते दीक्षा द्यो तुमे, शिष्य करी सीखावो अमे ॥ ४५ ॥ आचार गोचर विनय विशेष, चरण करण जिन धर्म अशेष ॥ तासु वचने स्वामी सद्दुए करे, श्रीमुखे शिक्षा प्रन्नु सीखवे ॥ ४६ ॥ देवानुप्रिय इम चालवो, इणपरे तिम जन्नो तिष्ठवो ॥ इणिपरे आसन बेसवो, सुखो जमवो इम न्नाखवो ॥ ४७ ॥ प्राण न्नूत जीव सत्वहतणी, जीम जयणा हुवे अति घणी ॥ एक जीव डुहवाये नहीं, तिणीपरे किरीया करवी सही ॥ ४८ ॥ ए उपदेश सहु साधुने, काळ अनंते जिन इम कहे ॥ कहेस्ये वळी एहवो उपदेश, जिहां नहीं हींसा लवलेस ॥ ४९ ॥

॥ ढाळ ॥ चालती ॥ त्रिभुवन प्रभुनीरे वाणी तहत्ति करी आदरी, परिव्राजकरे खंधके संयम सिरीवरी ॥ अणगारतिरे गुणमणी रयणागर हुवा, पंच समितीरे त्रिहुं गुप्ति जण संथुवा ॥ त्रुटक ॥ संथुआ त्रिभुवन गुत्तेंद्रीय गुप्त ब्रह्मचरी धरे, आण सुधी स्वामी केरी जाणी तिमइज खप करे ॥ लाज आगर सर्व त्यागी खंती खमतो किं बहु, निग्रंथ प्रवचन करी आगळ आदरे मारग सहु ॥ ५० ॥ चालती ॥ वीर जिनवररे कयंगल नामे जे पुरी, तिह हुंतीरे बहिया विहरण मन धरी । संपत्तारे जणवय गामागर पुरे, मुनि खंधकरे स्वामी साथे संचरे ॥ त्रुटक ॥ संचरत साथे वीर-थेरा तसु समीपे अभ्यसे, ग्रहण आ सेवणा शिक्षा सीखतां मन उल्लसे । अग्यार अंग उवंग सूत्रत अर्थथी भणी संपदा, गीयथ्थ केरी लहिय मनधरी भाव उत्तम एकदा ॥ ५१ ॥ चालती ॥ प्रभु वंदीरे त्रण प्रदक्षणा देइ करी, इम भाखेरे संवेगी उद्यम धरी । भिक्खु पडिमारे बारह वहेवा वंछिये, तुम अनुमतिरे पामी निर्जर संचीये ॥ त्रुटक ॥ संचिये निर्जर एम सांभळी स्वामी आदेस दीयउं, जिम थाय सुख तिम तुम करजो तिण प्रमाणति किद्धउं । इकमास

लगी तिणे प्रथम प्रतिमा सूत्र मारग आदरी, दत्ती इक्के ज्ञातपाणी तणी कीधी गोचरी ॥ ५२ ॥ चालती ॥ दत्ती वधतीरें इक इक वृद्धियें मासनी, सात प्रतिमारे इणिपरे कीधि आसनी । सवि मलीरे मास अट्ठावीस ए हुवा, इह आगारे रे प्रतिमा मारग जुजुवा ॥ त्रुटक ॥ जुजूइ अठम नवम दसमी त्रिहुं दिन इक्वीस ए, नगर बाहिर जइ परीसह सहे बहु निसदीस ए । नीरवर्जित चउथ तप करी पडिमए प्रारंभी ए, उत्तान अथवा सपन पासे चित्त एक पद थंभीये ॥५३॥ चालती ॥ इम नवमी रे प्रतिमा वहतां बेसीये, उक्कडू आसन रे सयण लगडू विमासीये । वच्चे उंचोरे भूमि लाग्यो बिहुं दिसे, काठ वंकोरे करे शयन ते इम निसे ॥ त्रुटक ॥ निसे ते हुइ लगडूसाइ धरणी लग सिर पानही, अवर तनु राखंत उंचो भूमिका लागे नहीं । इम दसमी प्रतिमा वहत रहेतो वीरासणे गोदोहिया, बाजोठ बेठा पाउं नीचा तेण विणु ए आहिया ॥५४॥ चालती ॥ गाय दुहतां रे भुंइथी उंची पानि कहीं, अंगुलियारे आधारे बेसे सही । जानु उपर रे दोवा भाजन मुकीये, विणु दोहण रे एहथकी नहुं चुकीये ॥ त्रुटक ॥ चूकीये नहीं जिन मारग हुंती इणी परे इग्यारमी, छठ

न्नते दीवस रयणे लंब त्तुज उन्नो समी। एक रात्रीक एम बारम अठम न्नत्तिए मंफिये, अनि-
मेष लोचन रयणी त्रीजी काउसग्गज ढंकीए॥ ५५॥ चालती॥ इम बारह रे प्रतिमा न्निरखुनी वही,
फासी पाळीरे सोधी तीरी निरवही। तिम किट्टीरे आराधी आणं करी, वळी वंदे रे स्वामी प्रद-
क्षणा करी॥ त्रुटक॥ करी प्रदक्षणा वीर वंदी इसो आइस मग्गए, गुणरयण संवछर करेवा न्नाव
मुज मन जग्गए। ए तप कह्यो तुमे सोळमासी में विमासी हिव लही, तुम अनुमति करिय
तरिये वेगन्नवजळनिधि सही॥ ५६॥

॥ ढाळ॥ राग–गोडी॥ पहेले मासे एकेक सोलह सोलमें, मासे खंधकऋषि करे ए। ए उपवास
विवेक चउथ चोत्रीसम,तप दिन आळस परिहरे ए॥ सूरज साहमीदिट्ठि उरध बाहूय, दिवसे
काउसग्ग करि रहे ए। रयणि वीरासन मंफि अंगअवावरू, दिवस निसि परिसह सहे ए॥५७॥
इणिपरे तप पुरेवि वीर जिणंदह,पय वंदी इम विनवे ए। हियके हरख धरेवि निरुपम पामीय,

बहु गुण संथवि संथवे ए ॥ तुम पसाए लहेवि स्वामिय ए तप, वेगे प्रमाण चमावीयो ए । सिद्धि साधनने काज इण तप भावना, आतम रस इम भावियो ए ॥ ५७ ॥ चउथ छठ अठम नाम दसम डुवालस, पक्ख मासखमण करे ए । निरुपम मन परिणाम मनथी दमी समी, विषय कसाय समुद्धरे ए ॥ जिनवर साथे विहार विहरत क्रमे क्रमे, कर्म बहू मुनि निर्जरे ए । संवर पंच विचार अरू मद टाले ए, अढारसहस सीलंगधरे ए ॥ ५ए ॥ उत्तम उग्र उदार तिण तपे खंदक, रूषिवर अति कृश तनु हुवो ए । इणीपरे चित्त विचार जीवह अनेरमो, देह अनेरो जुजुवो ए ॥ निर्मम निरहंकार तसु तन शोणित, मंस लेश दिसे नहीं ए । अस्थि चर्म नस जाळ वेढित केवल, करू करू रव करतो सही ए ॥ ६० ॥ देहतणे बळ खीण चाले जीवस्युं, जीव एम उरध रहे ए । बोलिस्युं किम गिलाइ भाषिय भाषंतो, खिणेक मूर्छित जिम हुवे ए ॥ एवं गुल तिलकठ भंरू इंगालह, सगड जेम खरू खरू करे ए । तप उपचित सुविशाळ अपचित शोणित, मंसहिं गुणमणि तनु भरे ए ॥ ६१ ॥ भासरासि पलिछन्न हुतवह अंतर, तप तेजे ते

ऊन्नहले ए । मूरतमंतो धर्म जाणीक दीलए, कोइ सुर नहु तसु छळे ए ॥ तेणे काळ जिणंद राजगृह नगरीय; स्वामीय वीर समोसर्या ए । आव्या इंद नरिंद सांन्नळी वाणीय, बहु जण पारे उतर्या ए ॥ ६२ ॥ पुव्वरत्ता वरत्त काळे खंदक, मुनिवर चिंतवे एकदा ए । धर्मजागरी जागत स्वामी प्रसादेहिं, पामी चारित्र संपदा ए ॥ सकतिसीम में कीध तप तिणे माहरो, अंग थयो अति डुबळो ए । जाणीक साथे लीध संयम संवर, परन्नव कारण संबळो ए ॥ ६३ ॥

॥ ढाळ ॥ कायबळ मुज हिण पड्यो ए, तो पग पग पके ते अड्वड्यो ए ॥ काज सराके मुज चड्यो ए, जे चारित्र निर्मळ संपड्यो ए ॥ ६४ ॥ वीरीय जीवतणो यछे ए, क्रमे ते पुण हीण थास्ये पछे ए ॥ विजयवंत ज्यां स्वामि ए, जाये दूरे डुरित जसु नामि ए ॥ ६५ ॥ श्री जिनवर वर्द्धमान ए, जग महिमा जसु वर्धमान ए ॥ आत्मार्थता साधीये ए, श्री जिनवर आण आराधियें ए, ॥ ६६ ॥ कुशळे रयणि विहायस्ये ए, सुप्रन्नात किमें जइ आवस्ये ए ॥ प्रन्नु नमि अनुमति मागस्युं ए, जिनन्नाषित मारग लागस्युं ए ॥ ६७ ॥ पंच महाव्रत उचरी ए,

अतिचार विराहण परिहरी ए ॥ स्वामीय साहुति साहुणी ए, तप संयम जस कीरति घणी ए ॥ ६८ ॥ कह्माइ थिवर साथि करी ए, गुण विपुळ विपुळ गिरिवर चढी ए ॥ मेघ सरीखी सांमळी ए, पडिलेहिय पमज्जिय वळी वळी ए ॥ ६९ ॥ पुढवीसीला उपर कर्यो ए, कुश तृण संथारो संथर्यो ए ॥ पल्यंकासन संठियो ए, पूरव दिसि सन्मुख ते ठीउं ए ॥ ७० ॥ करतल बे एकठा करी ए, दस नख मळी मस्तक अंजळी ए ॥ सिरसावर्त्त करी भणे ए, शक्रस्तव संस्तवी संथुणे ए ॥ ७१ ॥ पंच महाव्रत उचर्या ए, श्रीवीर समोपे मन धर्या ए ॥ हिवडां पण तसु पासे ए, उच्चरस्युं वळीय विमासी ए ॥ ७२ ॥ संवर पंचे आदर्या ए, ए परभव संबळ जिम कर्या ए ॥ अढार पापना ठाण ए, तसु त्रिविध त्रिविध पचखाण ए ॥ ७३ ॥ असनादिक अहार ए, जाव जीव कर्यो परिहार ए ॥ देह इष्ट जे में धर्यो ए, ते चरम उसासे वोसर्यो ए ॥ ७४ ॥ ए काळ अणकंखतो ए, जग अध्रुवपणो चित्ते चिंततो ए ॥ मोह महाभडस्युं भीडे ए, क्रमे सुगुण तणी श्रेणी चढे ए ॥ ७५ ॥

॥ ढाळ ॥ राग सिंधु ॥ शुभ भावना मन भावतां, सुणतां अंग इग्यार, निर्यामक पासे भला, अहनिस करे विचार ॥ ७६ ॥ गुण गाइस्युं गिरुआ खंधक श्री अणगार ॥ ए आंकणी० ॥ महिमा मोटी जेहनी, सम दम संयम सार ॥ एकण भवने अंतरे, लहेस्ये भवनो पार ॥ गुण गा० ॥ ७७ ॥ श्रुतरस मांहे झीलता, पंक पखाळे अंग ॥ श्रुत चारित्र धर्म आदरी, टाळ्यो सकळनो संग ॥ गुण गु० ॥ ७८ ॥ इमं संयमगुण पाळीयो, पूरा बार वरीस ॥ मास एक संलेखणा, कीधी आण जगीस ॥ गुण गु० ॥ ७९ ॥ साठीभक्त अणसण कर्यो, पडिक्कमिने आलोइ ॥ लही समाधि त्रिधिसुं यती, आण आराधक होइ ॥ गुण गु० ॥ ८० ॥ वीर जिणेसर समरतां, पाळी तेहनी आण ॥ धरता ध्यान मन धर्मनो, छंडी नर दस प्राण ॥ गुण गा० ॥ ८१ ॥ तिण अवसर जाणी करी, काळ गयो ते साध ॥ वीर थविर उभा थइ, मरण हुवो निरबाध ॥ गुण गा० ॥ ८२ ॥ इम कही थइ उपरावठा, काउसग्ग सहुए करंत ॥ पात्र चिवर ग्रही तेहना, पाछा तेय वळंत ॥ गुण गा० ॥ ८३ ॥ विपुळशिखरथी उतरे ॥ आवे वीरजिण पास ॥

वंदिय करीय प्रदक्षणा, बोल्या वचन विमास ॥ गुण गा० ॥ ७४ ॥ स्वामी शिष्य तुमाहरो, खंधक नाम जयंत ॥ प्रकृति भद्रक भावीयो, सहजे जे उपसंत ॥ गुण गा० ॥ ७५ ॥ पंच महाव्रत आरुही, अणसण करी निकलंक ॥ आयु पुरी परभव गयो, परिहरि सहुए वंक ॥ गुण गा० ॥ ७६ ॥ धर्मोपगरण तेहनो, एह में आएयो स्वामि ॥ मनवंछित फळ पामीयो, जेणे तुमारे नामि ॥ गुण गा० ॥ ७७ ॥

॥ ढाळ ॥ चोपाइ-छंद ॥ इम सुणी गोयम गणधार, ज्ञानादिक गुण रयणभंडार । प्रश्न करे हवे अंजळी करी, खंधकना गुण हियडे धरी ॥७८॥ स्वामी एह तुमारो शीश, जसु गुण पुरा विश्वावीस ॥ काळ करी केइ गती गयो, परभवनो आराधक थयो ॥७९॥ गौतम प्रत्ये भाखे भगवंत, ए मुज शिष्य प्रकृति उवसंत ॥ नाण चरण सूधा प्रतिपाळ, चार कसाय विषय सवि टाळ ॥८०॥ आलोइ पडिक्कमि निसल्ल, लही समाधि थइ एकल्ल ॥ अच्युतदेवलोक बारमें, पहुंतो निरुपम सुखसिरिरमे ॥ ८१ ॥ आयु तासु सागर बावीस, समकित पाळे ते निसदीस ॥ भगवन ते खं-

धक देवता, देव अनेक अछे सेवता ॥ ९२ ॥ तिहां थकी जास्ये क्यां चवी, देवतणी नवस्थितिथी
चवी ॥ पुछयानंतर स्वामी कहे, तेह नात गौतम संग्रहे ॥ ९३ ॥ गौतम तिहांथी खंधक देव,
आयु नवस्थितिनो संक्षेव ॥ करी पूरुं ह्वि महाविदेह, क्षेत्र जइ शिवसुखने गेह ॥ ९४ ॥
पामी उत्तम कुळ अवतार, थविर संगे लही समकित सार ॥ आदरि संयम पूरो पाळी, ध्यान
जळे तप पंक पखाळी ॥ ९५ ॥ यथाख्यात चारित्रे करी, राग द्वेष बेउ परिहरी ॥ गुणठाणे
तेरमो सयोग, केवळनाणतणो संयोग ॥ ९६ ॥ कर्म च्यार जे छे घातीया, ते खपस्ये सवि तसु
जातीया ॥ लहेस्ये लोकालोक प्रकाश, करस्ये थास्ये लीलविलास ॥ ९७ ॥ अघातिया जे चारे
कर्म, खपस्ये सुखे तासु ए मर्म ॥ एम खपावीने सीजस्ये, जगनो तत्व सहु बुझस्ये ॥ ९८ ॥
करस्ये अंत सहु दुखतणो, पद लेस्ये श्री सिद्धज तणो ॥ खंधकतणो चरित्रज करी, पंचम अंग
थकी उद्धरी ॥ ९९ ॥ वडतपगछ गुणरत्न निधान, साधुरत्न पंडित सुप्रधान ॥ पार्श्वचंद्रसूरि
तसु शिष, तिणे कीधो मन आण जगीस ॥ १०० ॥ सूत्रथकी कांइ अधिको उण, तेह खमो

जिन वाणी नूण ॥ ख. ख. रस. चंद्र. (१६००) वरसे उजळी, वैसाख आठम मनरळी ॥ १०१ ॥ शुक्रवारे ए पुरो करीयो, महारुषीश्वर भवजळ तरीयो ॥ ते मुनिवरनो समरी नाम, त्रिकरण शुद्धे करुं प्रणाम ॥ १०२ ॥

इति श्री मन्नागपुरीय वृहत्तपागच्छाधिराज
शतार्थशक्तिधरसिद्धान्तवृत्त्यनुसारिबा
लावबोधविधायक श्रीयुगप्रवरश्वेतांबराचार्य
पार्श्वचन्द्रसूरिकृतं श्रीखंधकमुनिचरित्रशतकं संपूर्णम् ॥



॥ प्रश्नोत्तर पत्रम् ॥

बीकानेरनिवाशी श्रावक भव्यजीव मुलचंदभाइ रामपुरीयायें पूछेल प्रश्ननो उत्तर—

सिद्धान्तमां सर्व स्थले श्रीपर्व पंचमीनो कहेल छे. श्रीनिशीथचूर्णिमां पण पर्युषणा पंचमीनोज कहेल छे, चोथ करवानुं आदेश तेमां आपेल नथी. अने वली श्री कालकाचार्यें जे चोथ करी ते पण कारणेज करी छे अने ते चलावषा माटे नथी एम चूर्णिकार स्पष्ट रीते कहे छे. विवेकपूर्वक विचारी जोजो. तेनो पाठ नीचे प्रमाणे छे.

यतः—आसाढे पुन्निमाएठिया डगलादियं गेण्हंति, पज्जोसवणाकप्पंच कहेंति, पंचदिणा ततो सावणबहुलपंचमीए पज्जोसवेंति, खित्ताभावे कारणेण पणगेसु वुड्ढे

दसमीए पज्जोसवेंति, एवं पन्नरसीए, एवं पणगवुड्ढी ताव कव्वति—जाव सवीसति मा-
सोपुन्नो सोय सवीसति मासो भद्दवयसुद्ध पंचमीए पज्जोसवेंति. अह आसाढ सुद्ध
दसमीए वासाखित्ते पविठ्ठा, अहवा जत्थ आसाढमास कप्पोकउ, तं वासप्पाउग्गं
खेत्तं. असुंच णत्थि; ताहे तत्थेव पज्जोसवेंति. वासंच गाढं अणुवरयं आढत्तं ताहे त-
त्थेव पज्जोसवेंति, एक्कारसीए आढवेउ डगलादि तं गेण्हंति पज्जोसवणाकप्पं कहेंति,
ताहे आसाढ पुन्निमाए पज्जोसवेंति, एस उसग्गो. सेसकाल पज्जोसवेंताणं, अववातो
अववातेवि सवीसति-राय मासातो अतिक्कमेउं ण—वट्टति, सवीसति राते मासे पुन्ने
जति वासखेत्तं-ण-लब्भति, तो-रुक्ख हेठावि-पज्जोसवेयव्वं, तं-पुन्निमाए पंचमीए
एवमादि पव्वेसु पज्जोसवेयव्वं, णो-अपव्वेसु. सीसोपुच्छत्ति, इयाणिं कहं चउत्थीए अपव्वे
पज्जोसविज्जति? आयरिउ भणति, कारणिया चउत्थी अज्जकालगयारिएण पवत्तिया.

कहं भसतेकारणं? कालगायरिउ विहरंतो उज्जेणिगंतो, तत्थवासावासंतरंठिउ, तत्थ ण-
गरीए बलमित्तोराया, तस्सकणिठ्ठोभाया, भाणुमित्तो जुवराया, तेसिं भगिणी भाणु-
सिरीणाम, तस्सपुत्तो बलभाणुणाम, सोयपगतिभद्दविणीययाए साहूपज्जुवासति आ-
यरेहिं से धम्मोकहितो, पडिबुद्धो, पव्वावितोय. तेहिय बलमित्तभाणुमित्तेहिं कालगज्जो
पज्जोसविते णिव्विसतो कतो केति आयरिया भणंति, जहा-बलमित्त भाणुमित्ता का-
लग आरियाण भागेणिज्जाभवंति, माउलेत्तिकाउं महंतं आयरं करेंति अब्भुट्ठाणादि-
यं, तं च पुरोहियस्स अप्पत्तियं, भणति य एस सुद्द पासंडो वेत्तावि तोदिं रसा अ-
ग्गतो पुणोपुणो उल्लावेंतो आयरिएण णिप्पट्ठ प्पसिण वागरणो कतो, ताहे से पु-
रोहितो आयरियस्स पदुट्ठो रायाणं अणुलोमेहिं विप्परिणामेति एतेरिसतो महाणु-
भावा, एते जेणपहेणं गच्छंति तेण पहेणं जति रसागति एताणिक्का अकमति तोअ-

सिवंज्ञवति, ते ताहेणिग्गता एवमादियाण कारणाण अस्तमेण णिग्गता विहरंता पतिठाणं णगरं तेणपद्दिता. पतिठाण समणसंघस्सय अब्बकालगेहिंसंदिठं, जावाहं आगच्छामि ताव तुझेहिं णो पद्योसवियब्वं, तच्चय सयवाहणो राया, सोयकालगच्चं एतं सोउं णिग्गतो अज्ञिमुहो, समणसंघोय मह्याविज्नूतीए पविठो, कालगद्यो पविठेहि य ज्ञणियं ज्ञद्दवय सुद्धपंचमीए पद्योसविद्यति. समणसंघेण पम्विवन्नं, ताहे रसा ज्ञणियं, तद्दिवसं ममलोगाणुबत्तीए इंदो अणुजाएबाद्योदेहित्ति, साहूचेतिते ण-पज्जोवाणियं, तद्दिवसं ... सेस्स तो ठठीए पद्योसवणा कज्जउ, आयरिएहिं ज्ञणियं ण वट्टति अतिक्कामेउं, ताहे रसा ज्ञणियं, तो अणागयचउत्थीए पज्जोसविज्जति, आयरिएण ज्ञणियं, एवं ... होउ, ताहे, चउत्थीए पज्जोसवियं एवं. (इति निशीथचूर्णौ)

भावार्थः—आषाढ मासनी पूनमना दिवसे वर्षाकालसुधि वापरवायोग्य चीजो (उपकरण) तथा डगल, राख विगेरे ग्रहण करी चोमासीपडिक्कमणुं कर्याबाद, चोमासीलायक आ क्षेत्र छे के केम ? ते विचारमां कोइये पूछ्युं, तो ते साधु कहे के श्रावण वद पांचम सुधि बने तो खरुं, तेम करतां जणायुं के क्षेत्रमां योग्यता नथी, एम विचारी पांच पांच दिवसनी वृद्धि त्यांसुधि करे के यावत् एक मास अने वीस दिवस एटले भाद्रवा शुदि पंचमीये पर्युषणा करे. शिष्यशंका (प्रश्न) कोइ कहे छे के वीस दिवसे कल्प तथा पांच पांच दिवसनी वृद्धिवडे कल्पस्थापनरीति संघनी आज्ञावडे विछेद पामी ते केम ? उत्तर.—चूर्णिमां तो विछेदनी वातज जणाती नथी, विछेद एटले फरी तेनी उत्पत्ति संभवे नहि ते, अने अद्यापि क्षेत्रादिकनी योग्यता तथाविध न होवाथी तेम बनवा संभव छे, ने चूर्णिकार पण एज विधि लखीछे छतां विछेद थै एम कहे छे, परूपे छे, ते बाबत समीक्षकोये विचार करवो जोइये, जे कोइ आ बाबतमां तिछोगालीनुं नाम दे छे पण तेने लगती हकिकत तेमां नथी; माटे मध्यस्थ (तटस्थ) पुरुषोये यथार्थ चारे बाजु

विचारी सत्य स्वीकारवुं. माटे आषाढपूनमे रहेवुं ते मूल मार्ग छे, तथाविध योग्य क्षेत्र न मले तो अपवाद.

अपवादमां पण विहार करतां करतां वीस दिवस सहित महिनो (५० मो दिवस) उल्लंघाय नहि. जो के क्षेत्र न मले तोपण छेवट भाद्रवा शुद पांचमे तो अवश्य वृक्षहेठे पण पर्युषण करवुं. शिष्य प्रश्न. कइ तिथिये रहेवुं? उ० पूर्णातिथिये. प्रश्न–पूर्णातिथि पांचम तेमां काइ प्रमाण छे? उ० जुवो! निशीथसूत्र मूलमां,–पर्व ते पांचममांज कराय "पव्वेसुपज्जोसवेयव्वं णो अपव्वेसु" एटले पर्वमांज पजुसण कराय. अपर्वमां एटले 'चोथ' जे अपर्व तेमां पजुसण कराय नहि. करे तो श्यो दोष? आणाभंग विगेरे दोष. आणाभंग थवाथी प्रायश्चित्त "चउगुरु पच्छित्तं." त्यारे शिष्य पूछे छे के जेनुं प्रायश्चित लेवुं जोइये तो श्यामाटे ते करवुं जोइये. आ हमणां अपर्व जे चोथ कराय छे अने आप कहोछो के पर्व तो पर्वना दिवसेज थाय. ते पर्व दिवस तो पांचमनोज सिद्धांतमां कहेल छे ते मुकी अपर्व चोथ करवाथी आणाविराधक चारगुरुप्रायश्चित्त तो

चोथ थायज केम? गुरु कहे छे के भाइ! तहारी वात खरी छे, पण कारणथी सपजाय.-बीजो उपाय न जडे तो पुष्ट कारणे करवुं पडे. तेवुं शुं कारण अने ते कारण इया प्रसंगे बन्युं ते कहो. गुरु कहे छे कारणिया (एटले सकारणिक) जो होय तो कराय. जेम आर्यकालिकमहाराजे करी तेम. ते आ प्रमाणेः-कालकआर्यमहाराज विहार करता उज्जेणीनगरी पधारया, त्यां वर्षाकाल माटे रह्या. (चोमासामाटे रह्या) ते नगरीने विषे बलमित्र राजा तेनो कनिष्ट भ्राता (नानो-भाइ) युवराजपदनो धरनार भानुमित्र हतो. तेनी बहेन भानुश्री नामे हती, तेणीनो पुत्र बल-भानुनामे हतो. ते बलभानु स्वभावथी शरल अने विनयवान होवाथी साधुनी सेवा पर्युपासना करतो, ते जीव योग्य जाणी आदरपूर्वक ते प्रत्ये धर्म कह्यो अने प्रतिबोध पामवाथी दीक्षा ग्र-हण करावी. ते समय बलमित्रराजाने रीस चडवाथी जे कालकाचारज चोमासा माटे रहेला तेहने देशबहार (देशनिकालो) करयो. एहवा कोइपण सबल कारणथी ते बलमित्रराजाना राज्यमां चोमासी करी शक्या नहि ने त्यांथी विहार करी पइठाणनगर चाल्या. ते पइठाणनग-

रमां पोताना संघाडाना जे साधु हता तेने पण संदेशो कहेवराव्यो जे हुं आवुं बुं त्यां सुधी तमे रहेवा माटे नक्की करशो नहि. संदेशानुं कारण एज के एकेक राजाना संबंधथी (वली ती. सरुं पेदा थवाना संभवथी) हरकत पडे तो बीजा स्थानांतर जइ शकाय. ते नगरनो राजा जे सतवाहन तेणे सारुं मान आप्युं, ने ते पइठाणनगरना साधुये पण आवकारसाथे नगरमां प्रवेश कराव्यो, अने तेज समयें कालकआर्यें कह्युं के भाद्रवा शुद पांचमनाज श्रीपर्व बे, ने ते वात पइठाणनगरना साधुये कबूल करी. ते प्रसंगे राजाये कह्युं के ते दिवस तो माहरे इंद्रयाग थवानो तेथी साधुचैत्यनुं आराधन करी शकाशे नहीं, माटे बठनो दिवस राखो. आचार्यें कह्युं के पांचमनुं श्री पर्व उल्लंघाय नहीं. त्यारे राजाये कह्युं, चोथ करो. आवा कारणथी राजाना आग्रहवरू चोथ करी. परंतु चलावाने माटे करी नथी एम स्पष्टरीते चूर्णिकार कही बतावे बे अने जे कोइ लखे बे के चोथ आर्यकालकमहाराजनी आज्ञाथी करिये बिये, तो कालकसूरिये नगरमां प्रवेश करतांज केम कह्युं के भाद्रवाशुद पांचमनां पजुसण बे, ने साधुये पण ते वात मान्य

केमकरी. आ बाबतमां चूर्णिकार स्पष्टरीते लखे छे के, चोथनी बाबतनो आदेश राजाए कराव्यो छे, पण कालकाचार्यमहाराजनो आदेश तो चूर्णिकारे पांचमनोज लख्यो छे. चूर्णिकारे कार्तिक पूनमनी चोमासी कर्याबाद एकमना दिवसे विहार करवानी आज्ञा आपेली छे. आ उपरथी सार समजवानो के चूर्णिकार पोते चोथने अपर्व कहे छे, ने अपर्वमां पजुसण कराय नहि, अने करे तो प्रायश्चित्त कह्युं छे. माटे पर्वमांज श्रीपर्व कराय. एम खुल्लीरीते निशीथसूत्र १, निशीथ चूर्णि २, कल्पनिर्युक्ति तथा समवायांग टीका ३, कल्पचूर्णि ४, दशाश्रुतस्कंध ५, तथा तेनी चूर्णि ६, तथा पंचासक हरिभद्रसूरिकृत तेनी टीका ७. विगेरेमां पर्वना दिवसे पजुसण पांचमनांज कह्यां छे. वली चोथ कर्या पछी पांचम न थाय, एम जे कहे छे ते खोटुं छे. कारण के जो फरी न कराती होय तो, पंचांगीवालाये मनाइ केम करी नहि ? अने जे एक दिवस वधे एवी कुयुक्ति करी वमल (भ्रम) मां नांखेछे, ते पुरुषे पंचांगीना अक्षर बताववा जोइए. हवेथी चोथज करवी, एवा अक्षर कोइ स्थले छेज नहि, अने टीकाओ पण सर्वमान्य होय तेज सत्य जाणवी.

सुत्तं–जेभिक्कु पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेति इत्यादि ॥ जेभिक्कु अपज्जोसवणाए पज्जोसवेति इत्यादि ॥ दोसुत्ताजुगवं वचंति । इमो सुत्तथ्थो पज्जोसवणा गाहा ॥ जे-भिक्कुपज्जोसवणाकाले पत्ते ण पज्जोसवेति । अपज्जोसवणएत्ति अपत्तेमतीते वा जो पज्जोसवेति । तस्सआणादियादोसा चउगुरु पछित्तं, एससमच्छो ॥ इति निशीथचूर्णौ.

आ सूत्रनो सारांस ए छेके अपर्वमां पजुसण न थाय अने जो करे तो प्रायश्चित, अने पर्वमां न करे तो प्रायश्चित; माटे आगल न थाय, तेम पाछल न थाय, पजुसणना दिवसे पजुसण थाय; एटले भाद्रवा शुद पांचमना दिवसेज पजुसण करवां. न करे तो चार गुरु प्रायश्चित. आ आज्ञा तीर्थंकरदेवे तेमज आचार्यभगवाने पण आपेली छे.

प्रश्न १–पजुसणना दिवसोमां ज्यारे सभासमक्ष श्री आर्यकालिकसूरि महाराजे पोतानाज मुखथी श्री कल्पसूत्र वांची संभळाव्युं हतुं त्यारे ते श्री कल्पसूत्रमां केटलां व्याख्यान (वखाण)

कर्या हता ? अथवा तो ते व्याख्याननी मर्यादा चूर्णिकारे बतावी छे के केम ?

उत्तर १–आ बाबत संबंधी चूर्णिकारे श्री कालिकाचार्यजीने उद्देशीने कशी पण हकीकत दर्शावी नथी.

प्रश्न २–आर्यकालिकसूरिमहाराज एकज थया छे के जुदा जुदा थया छे ?

उत्तर २–ए नामावाळा आचार्य एकज नथी थया, परंतु जुदा जुदा थया छे, ते ए के–एक कालिकाचार्य दत्तपुरोहितना मामा तरीके ओळखमां आवे छे एम योगशास्त्रनो बीजो प्रकाश साबिती आपे छे, अने ते कालिकाचार्यना ज्ञाणेज दत्तपुरोहिते तेजआचार्यने पूछयुं के–'महाराजजी ! यज्ञनुं शुं फल मले छे ?' आना उत्तरमां गुरुए कह्युं के–'यज्ञना फलमां नरक मले छे !' इत्यादि इत्यादि.

वली पूर्वश्रुतसमृद्ध आर्यकालिकाचार्य के जे आर्यश्यामाचार्यना नामथी पण ओलखवामां

આવે છે અને તેમણેજ શ્રી પન્નવણા ઉદ્ધરેલ છે એમ શ્રી પન્નવણાની ટીકાજ સાબિતી આપી રહેલ છે !

વલી આર્યકાલિકાચાર્ય સૂક્ષ્મનિગોદ સંબંધી વ્યાખ્યા પ્રકાશક તરીકે ઉલ્લેખમાં આવે છે એમ શ્રી નિર્યુક્તિની ટીકા તેમની કથા સહિત સાક્ષી આપે છે !

વલી કાલિકાચાર્યજી ગર્દભીલરાજાના ઉચ્છેદક તરીકે ઉલ્લેખમાં આવે છે, એમ શ્રી નિશીથ-ચૂર્ણિ બતાવી રહેલ છે !

વલી બહુશ્રુત કાલિકાચાર્ય ઘણા શિષ્યના પરિવારવાલા છતાં પોતાના શિષ્યો અવિનીત હોવાને લીધે એક શય્યાતરને જણાવી પોતે એકલાજ વિહાર કરી બીજે સ્થલે પધાર્યા, એ વૃત્તાન્તથી ઉલ્લેખ આપે છે અને એની સાબિતી શ્રી ઉત્તરાધ્યયન બૃહદ્વૃત્તિ આપી રહેલ છે !

વલી શ્રી કાલિકાચાર્ય રાજાના આદેશને લીધે સકારણીક ચોથ કરનાર તરીકે ઉલ્લેખાય છે અને એ વિષેની સાબિતી શ્રી નિશીથચૂર્ણિમાં વિદ્યમાન છે !

प्रश्न ३–केटलाक महाशयो जाहेर करे छे के–वाचना तो श्री स्कंदिलाचार्यजीए शरु करी छे अने श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणजीए ते वाचनाने पुस्तकारूढ करेल छे, एम आत्मप्रबोध ग्रंथमां छे?

उत्तर ३–हा, ते वात तेमां छे!

प्रश्न ४–केटलाक कहे छे के–चोथना पजुसण करनारज सभासमक्ष श्री कल्पसूत्र वांची शके एवीज मर्यादा छे. जो चोथ न करे तो श्री कल्पसूत्र सभानी अंदर न वंचाय ए बाबतनो खुलासो केवी रीतिनो छे?

उत्तर ४–हे समीक्षक! तमारा कहेवा प्रमाणे श्री कल्पसूत्रनी व्याख्याउनी अंदर अने अंतरवाचनानी अंदर 'एगग्ग चित्ताजिणसासणंमि, पभावणा पूय परायणा जे ॥ तिसत्तवारं निसुणंति कप्पं, भवण्णवं गोयम ते तरंति ॥ १ ॥ एटले के श्री वीरप्रभुजी गौतमस्वामीप्रत्ये फरमावे छे के–'गौतम! जे प्राणी, आ कल्पसूत्रने पूजी अने प्रभावनायुक्त एकाग्रचित्तनी सावधानी सहित आ जिनशासनने विषे विधिपूर्वक श्री गुरुमहाराजनी पासे एकवीश वखत सां-

ભળે? તો તે પ્રાણી અવશ્ય આ સંસારસમુદ્ર તરીને મોક્ષને પામે.' એમ શ્રી જિનેશ્વરે પ્રથમ ગણધરદેવને કહ્યું. એ કથન તથા કલ્પસૂત્રની પૂર્ણાહુતી સમયનો આલાવો (કે જે અર્થસહિત આગળ કહેવામાં આવશે તે) તદ્દન ખંડિત થઇ જાય. માટે લક્ષપૂર્વક એ શંકાનું સમાધાન શ્રવણ કરઃ—જ્યારે શ્રી કલ્પસૂત્ર (શ્રી વીરપ્રભુ પછી ૯૮૦ વર્ષે) પુસ્તકારૂઢ કર્યાં, તે પછીથી એવો ઠરાવ કયા આચાર્યે કર્યો છે કે ચોથ કરે તેજ કલ્પસૂત્ર વાંચી શકે, અને તે શિવાય વાંચે તો વિરાધક થાય, તે તમારેજ વિચારવાનું છે. મતલબ કે ઉપર બતાવેલ ગાથાજ બીજાને સંભળાવવાની સાબિતી સ્પષ્ટપણે આપી રહેલ છે કે, શ્રી કલ્પસૂત્ર એકવીસવાર સાંભળે તેનું કલ્યાણ થાય. (એમ શ્રી જિનેશ્વરેજ પ્રથમ ગણધરપ્રત્યે ફરમાવેલું છે.)

પ્રશ્ન ૫—જ્યારે શ્રી ભદ્રબાહુસ્વામીએજ શ્રી કલ્પસૂત્ર રચ્યું છે ત્યારે તે પહેલાં પજુસણપર્વની અંદર (કલ્પસૂત્ર રચાયેલ ન હોવાથી) શું વાંચવામાં આવતું હતું?

ઉત્તર ૫—દેવાધિદેવ શ્રી મહાવીરસ્વામીજીએ શ્રી જિનેશ્વરોનાં ચરિત્ર તેમજ શ્રી વીરપ્રભુના

सत्तावीश भव जे पोतानुं ज चरित्र प्रकाश कर्युं छे तेज श्री गौतमादि गणधरोए रचेल छे अने तेज मुजब परंपरागमना आधारे श्रुतकेवली श्री भद्रबाहुस्वामीजीए कल्पसूत्रनी रचना करेल छे माटे गौतमस्वामीने उद्देशीनेज ते कल्पसूत्रनुं महात्म्य श्रीमुखे वर्णव्युं छे. ए वाक्यनी विशेष साबितीमां खुद श्री कल्पसूत्रना अंतिम आलावामांज पुरावो छे केः—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं मज्झगए चेव एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ पज्जोसवणाकप्पो नामं अज्झयणं सअठं सहेउयं सकारणं ससुत्तं सअट्ठं सउभयं सवागरणं भुज्जो भुज्जो उवदंसेत्तिबेमि." एटले के श्री भद्रबाहुस्वामी पोताना शिष्यमंडळने कहे छे के—में जे आ कल्पसूत्रनी अंदर त्रण अधिकार अर्थात् श्री जिनोनां चरित्र १. स्थविरावली २. अने साधुसमाचारीरूप वाचना प्ररूपेल छे, ते में मारी मनकल्पनाथी कहेल नथी; परंतु श्री तीर्थंकरदेवना उपदेशथी में अधिकार कहेल छे. मतलब के—ते काल चोथा आराना अंतने

विषे, राजगृहीनगरीना गुणशील चैत्यने विषे वीरप्रभु समोसर्या, ते समये घणा मुनिओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको, घणी श्राविकाओ, घणा देवो अने घणी देवीओ, अर्थात् चतुर्विधसंघनी सभा वच्चे जेवी रीते आ त्रण अधिकारवालुं पर्युषणाकल्प श्रीमुखथी प्ररूप्युं, तेवीज रीते हुं (भद्रबाहुस्वामी) पण तमो शिष्यवर्ग अने चतुर्विधसंघ अगाडी कहुं छुं. तात्पर्य एज के श्री वीरप्रभुए कंइ एकलाएज कोइ एकांत खुणानो आश्रय लइ आ त्रण वाचना वांची के कही नथी, परंतु चतुर्विधसंघ सम्यक्दृष्टिवंतनी सभामां बिराजमान थइ स्वयं वाणीवडे त्रण अधि-कार गौतमादि गणधरदेव प्रत्ये प्ररूपेल छे. तथा जेम ते गौतम तथा सुधर्मास्वामीए जेवी रीते ए त्रणे वाचनाओने अमलमां मूकी तेवीज रीते हुं (भद्रबाहुस्वामी) पण गुरुपरंपरा क्रमवडे ते त्रण अधिकार न्यूनाधिक कर्या विनाज कहुं छुं. ते त्रण अधिकारवालुं पर्युषणा कल्पनाम अध्य-यन 'सअट्ठं' कहेतां प्रयोजनयुक्त, परंतु निरर्थक नहीं. 'सहेउयं'---कहेतां हेतुसहित छे, एटले

१ आ व्याख्या टीकामां छे.

के जेम गुरुराजने अथवा वमीलोने, तथा जेनी निश्राये रह्या होय तेउश्रीने पूछया विना के ते-उश्रीना आदेश (हुकम--आज्ञा) विना कंइपण काम करवुं कल्पे नहीं. केमके आचार्य महा-राज ते संबंधी तपास करनार अथवा तेमनुं हित चाहनार होवाथी जेम आपणुं कल्याण थाय तेम करवाने समर्थ छे, माटेज तेउश्रीने पूछी, तेउश्रीनी आज्ञा मेळवी दरेक क्रिया--कार्य करवा-थीज लान्न छे. जो तेम करवामां आवे तो ते कार्य करनार दशविधिसाधु चक्रवाल समाचारीनो पण आराधक थाय छे. ' सकारणं '--कहेतां साधुने सुखे संयमयात्रानी आराधना तथा समाधिना लायक तथाविध योग्य क्षेत्र न मले तो अपवादे आषाढी पुनम वीत्याबाद पण बीजा क्षेत्रने माटे तपास करतां पांच पांच दिवसनी वृद्धि कहे. यावत् पर्वदिवस न्नाद्रवाशुदी पांचमें वस्ती न मले तो झाम नीचे रहेवुं, पण एक रुगलुं आगल न्नरवुं नहीं. ए विगेरे घणां कारण बताव्यां छे, तेनुं नाम सकारण, पुनः 'ससुत्तं सअत्थं सउन्नयं'--कहेतां सूत्रसहित, अर्थसहित, उन्नयसहित, 'सवागरणं'--कहेतां पूछेला अथवा अण पूछेला पदार्थनी व्याख्या तेणे करी सहित. 'न्नुज्जो न्नुज्जो

त्ति' कहेतां वारंवार, 'उवदंसेत्तिबेमि'--कहेतां श्रोताजनना हितने माटे उपदेश करे छे, तेमज जे प्रमाणे श्री तीर्थंकरदेवे त्रण अधिकार गणधर भणी (प्रत्ये) प्रकाश्या, अने ते श्री गणधरमहाराजे शिष्य प्रशिष्यने जे मुजब प्ररूप्या तेज मुजब हुं पण चतुर्विधसंघ समक्ष ते त्रण अधिकारज संभलावुं छुं. मतलब एज के आ परूपणा गुरुपरंपरावडे परंपरागमनी रीति प्रमाणे में परूपणा करी पण में मारी मतिकल्पनाथी परूपणा करी नथी.

प्रश्न ६--महावीरस्वामी पोतानुं चरित्र पोते कही शके ?

उत्तर ६--हा, कही शके. जो न कहे तो बीजा केम जाणी शके, किंतु पोताना मुखथी पोतानी प्रशंसा न करे पण चरित्र तो कही शकेज.

॥ जिज्ञासुये पूछेल–चातुर्मासी निर्णय ॥

चातुर्मासी पूर्णिमाने शास्त्रकारो कहे छे—

कोइ पण शास्त्रकारे चातुर्मासी चतुर्दशीने कहेल नथी. जो कोइ चातुर्मासी चतुर्दशीने कहे तो ते शब्दशास्त्रथी तथा धर्मशास्त्रथी विरुद्ध छे. कारण के शब्दशास्त्रमां शब्दशास्त्रकारे तथा धर्मशास्त्रमां धर्मशास्त्रकारे तेवी रीतनी हकीकत कोइ पण स्थलमां कोइ पण शास्त्रकारे बतावेली नथी. माटे चतुर्दशीने चातुर्मासी कहेवी ते शास्त्रसंमत नथी. परंतु चातुर्मासी पूर्णिमाने कहेल छे. ते आ प्रमाणे–आचार्य श्री हेमचंद्रसूरी विरचित सिद्धहेमचन्द्राभिधान स्वोपज्ञ शब्दानुशासन वृहद्वृत्तिने विषे प्रतिपादन करे छेः---

चतुर्मासान्नाम्नि । ६ । ३ । १३३ । चतुर्मासशब्दात्तत्र भवेडण् प्रत्ययो भवति नाम्नि–समुदायश्चेन्नाम भवति चतुर्षु मासेषु भवा चातुर्मासी---आषाढी कार्तिकी

फाल्गुनी च पौर्णमासी भण्यते ॥

भावार्थः—" चतुर्मासान्नाम्नि " ए छठा अध्यायना त्रीजा पादमध्ये एकशो तेत्रिशमुं सूत्र छे. तेनो अर्थ. " चतुर्मास शब्दात् " चतुर्मास जे शब्द तेथी " तत्रभवे " तिहां थाय ए अर्थमां " अण्प्रत्ययो भवति " अण्प्रत्यय थाय छे " नाम्नि—समुदायश्चेन्नामभवति—समुदायथी जो कोइनी संज्ञा थति होय तो " चतुर्षुमासेषु भवा चातुर्मासी " चार महीने थयेल तेने चातुर्मासी कहीयें. ते कोनी संज्ञा छे ते हवे आचार्य बतावे छे. " आषाढी, कार्तिकी, फाल्गुनीच पौर्णमासी भण्यते " ते चातुर्मासीने आषाढी, कार्त्तिकी, फाल्गुणनी पूर्णीमा (नी संज्ञा) कहेवाय छे; आ व्याख्या स्वसमयवर्त्ति आचार्ये कहेल छे.

हवे परसमयवर्ति आचार्यें कहेल (करेल) व्याख्या बतावियें छियें, पाणिनीय व्याकरणनी वृत्ति जे काशिका तेमां आ प्रमाणे व्याख्या लखेल छेः—

संज्ञायामण् वक्तव्यः ॥ चतुर्षु मासेषु भवा चातुर्मासी—पौर्णमासी आषाढी कार्तिकी फाल्गुनी. ॥

अर्थः—" संज्ञायामणवक्तव्यः " ए वार्तिक सूत्र छे एनो अर्थ आ प्रमाणे छे—चतुर्मास प्रातिपदिकथी अण्प्रत्यय थाय एम कहेवुं जोइयें. संज्ञा अर्थमां " चतुर्षुमासेषुभवा चातुर्मासी " चार महीने थयेली तेने चातुर्मासी कहिये. चातुर्मासी ए संज्ञामां थाय छे एम कहेल छे माटे शी अहीं संज्ञा छे ते बतावे छे. " पौर्णमासी " चातुर्मासी ए पूनमनी संज्ञा छे. ते पण कइ पूनम लेवी ते माटे कहे छे के—" आषाढी, कार्तिकी, फाल्गुनी " पूर्वाषाढा, अथवा उत्तराषाढा नक्षत्रयुक्त आषाढ महीनानी जे पूर्णिमा होय तेने आषाढी पौर्णमासी चातुर्मासी कहियें. (वृद्धि क्षय विनानी तिथी नक्षत्र सहचारिणी होय छे.) पूर्वाफाल्गुण अथवा उत्तराफाल्गुण नक्षत्रयुक्त फाल्गुण महिनानी जे पूर्णिमातिथी होय तेने फाल्गुणी पौर्णमासी चातुर्मासी

કહિયેં. અને કૃતિકાનક્ષત્ર યુક્ત જે કાર્તિક મહિનાની પૂર્ણિમા તેને કાર્તિકી પૌર્ણમાસી ચાતુર્માસી કહિયે. એવીજ રીતે કૌમુદીકારે પૃષ્ઠ ૧૫૬ તદ્ધિતાન્તર્ગત કાલાધિકાર મધ્યે પણ વ્યાખ્યા કરેલ છે તે આ પ્રમાણે—

"संज्ञायामण्" चतुर्षु मासेषु भवति सा चातुर्मासी-आषाढी आषाढनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासीत्यर्थः

અર્થઃ—ચતુર્માસ શબ્દથી સંજ્ઞામાં અણ્ પ્રત્યય થાય છે. ચાર મહિને થયેલી તેને ચાતુર્માસી કહિયેં અને તે પૌર્ણમાસીની સંજ્ઞા છે. માટે જે શબ્દશાસ્ત્રકારો થયેલ છે તેમણે તે ચાતુર્માસી ત્રણ પૂનમનીજ સિદ્ધ કરેલ છે પરંતુ ચઉદશની સિદ્ધ કરેલ નથી. અને ધર્મશાસ્ત્રકારો પણ ચાતુર્માસી ત્રણ પૂનમનેજ કહેછે તે આગળ બતાવવામાં આવે છે. હવે વિચારતો એ છે કે આવી રીતે શબ્દશાસ્ત્રથી અને ધર્મશાસ્ત્રથી સિદ્ધ થએલ ત્રણ પૂનમની ચતુર્માસી છે છતાં જે કોઇ સ્વમત

आग्रहमां पडी ते वातने कबुल नही करे-तो तेने पराणे कोण मनावी शके. जागतो सुइ रहेल तेने कोण जगाडवामां समर्थ थाय? आंखो छतां जे जोशे नही तेने पराणे कोण बतावबाने समर्थ थशे? माटे जेने तत्व ग्रहण करवानी इच्छा हशे अने खोज करनार भवभयभीरु जिनप्रणीत सूत्राराधक हशे, ते पुरुष आपो आप शोध करी सत्य अंगीकार करशे. एमां अमारे कांइ आग्रह करवानी जरूर नथी. कोइ पण जिज्ञासु थइ पूछे तेने शुद्ध रस्तो बताववो ए अमारुं काम छे पछे करो न करो ते एनी मरजी उपर छे. हवे धर्मशास्त्रमां बतावेल चातुर्मासी त्रण पूनमनी थायछे ते बतावीए छीए. श्री सुयगडांगसूत्र तथा तेनी वृहद्वृत्तिमां आ प्रमाणे फरमास करेल छेः—

“ चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु ” आ मूल सूत्र छे तेनी वृत्तिः—

तथा चतुर्दश्यष्टम्यादिषु तिथिषूपदिष्टासु महाकल्याणिकत्वेन प्रसिद्धासु तथा पौर्णमासीषु च तिसृष्वपि चतुर्मासकतिथिष्वित्यर्थः । एवंभूतेषु धर्मदिवसेषु सुष्ठतिरा-

येन प्रतिपूर्णोयःपौषधोव्रताभिग्रह विशेषस्तं, प्रतिपूर्णमाहारशरीरसंस्कारब्रह्मचर्या-
ऽव्यापाररूपं पौषधमनुपालयन् संपूर्णश्रावकधर्ममनुचरति.

भावार्थः—चउदश, आठम, पूनम एटले चोमासानी त्रण पूनम (आषाढी पूनम, कार्तिक पूनम, फाल्गुणनी पूनम) ए पर्व विगेरे पुण्यतिथीउने विषे, (इत्यादिक धर्मना दिवसोने विषे) अतिशय मनोहर अने संपूर्ण एवो जे पौषधव्रत अभिग्रह विशेष, तेने संपूर्ण रीते एटले आहारनो त्याग, अने शरीरसंस्कारनो त्याग, ब्रह्मचर्य पालन, व्यापारत्यागरूप पौषधव्रतने पालन करता संपूर्ण श्रावकधर्मने आचरण करे छे. एवी रीते चोमासी त्रण पूनमनी सूत्रकृतांग भगवती, उत्तराध्ययन आदि सूत्रोनी वृत्तिमां बतावेली छे. माटे उपर बतावेल (श्री हेमचन्द्राचार्यदिकनी) व्याख्याउना आधारथी भव्यजीवोए त्रण पूनेमनी चोमासीनुं अवश्य श्रद्धा न करवामां परायण थवुं. (इति जिज्ञा० पूछेल चातु० निर्णय)



उपदेश रहस्य.

"सिद्धचक्रपद वंदोरे नविका०" ए देशी. ॥ अथवा आगम वचन विचारी रुमा, क्रोध म करिश लगार--ए राग ॥ जे ढे जिनधर्म जाण शिरोमणी, जे हुइ पर उपगारी ॥ तोसुं संघ कुण एक म मूकीस, प्रवचन वचन विचारी ॥ रे जीवमा ॥ १ ॥ दृष्टिराग जे लागो, तेह सरिस तुं वाद म मंमिस, प्रवचन संशय नागो ॥ रे जी० ॥ २ ॥ श्री जीनशासन जयवंत जागे, प्राप्ति विणु कुण पावे ॥ लोक घणो परमारथ हीणो, नामे जैन कहावे ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ गरथ सहीत सारंनी दीसे, कहे अम्हे गुरु गिरुआ ॥ जे जग वरते नले आचारे, तेहने नांखे विरुआ ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ अर्थथकी जे जिणवरे नाख्यो, सूत्र ते सोहमस्वामि ॥ कहिये आगम तेह परंपर, अवर कहे तसु ठामि ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ पंचम अंगे पंच प्रकाश्या, जगनाथे व्यवहार ॥ आगम श्रुतने आणा धारण, जीत ते एह प्रकार ॥ रे जी० ॥ ६ ॥ प्रथम नही इण काले हवणां, बीजे

सहूए वरते ॥ ते उछेदी पंचमे लाग्या, ते किम मारग निरते ॥ रे जी० ॥ ७॥ जक्ति काजे आ-
रंज करावे, अनुमोदे वली कीधो ॥ सद्दहय करतां दूषण बोले, अवह पंथ ए लीधो ॥ रे जी०
॥ ८ ॥ पूजानी विधि जाख्या पाखे, मुगध लोक किम जाणे ॥ जोली मूल फल लाज ते वंछे,
पहुता पहेले ठाणे ॥ रे जी० ॥ ए ॥ गुरुगम गुरुगम करि करि वांचे, आगम जण जण आगे ॥
प्रगट अरथ तेह तारण समरथ, तोपण मूढ न जागे ॥ रे जी० ॥ १० ॥ श्रेणीक नरवै नंदन
दिन दिन, सहस आठ इक लाख ॥ वीर प्रवृत्ति जाणवा कारण, देतो केहनी जाख ॥ रे जी०॥
११ ॥ स्वामी आगमन संजली साढा, बारह लाख वधाइ ॥ आपी चतुरंग सेना मेलवी, वंदण
पहुता जाइ ॥ रे जी० ॥ १२ ॥ इणपरे बहुला राजा श्रावक, जे बारह व्रतधारी ॥ घणे महोछवे
वंदण आवे, कहणे कवण अधिकारी ॥ रे जी० ॥ १३ ॥ सूरियाजे जिन प्रतिमा पूजी, सतरह
जेद विशाल ॥ जक्ति कहीने नाटक मंक्यो, परदेशी दानशाल ॥ रे जी० ॥ १४ ॥ विजयादिक
सुर सोहमइंदे, दोवइ राजकुमारी ॥ केहतणे उपदेशे पूजी, प्रतिमा बहु विस्तारी ॥ रे जी० ॥

१५ ॥ मंत्री सुबुद्धिए निर्मल कीधो, फरहोदक धर्म काज ॥ चित्र सारथि हयदमन प्रकास्यो, परदेशी नृपराज ॥ रे जी० ॥ १६ ॥ संजली कृष्ण नेमीतणे मुख, द्वारमतीनो दाह ॥ घोषण कारवत नगरी मंरूयो, चारीत्रनो उछाह ॥ रे जी०॥१७॥ कुमर जमाली मेघकुमर वर, थावच्चादिक सुणीये ॥ एहने संजम लेवा अवसर, ओछव आगम जणीये ॥ रे जी० ॥ १८ ॥ लाखे लाखे ओघो परूघो, नापित लाख बुलावे ॥ सीस जणी दीखेवा कारण, गुरुने किम विहरावे ॥ रेजी० ॥ १९ ॥ संयम ग्राही कूण इशाने, ऊतारे सिंगार ॥ ते लेइ दढ चोयण आपे, माइ पमुह परिवार ॥ रेजी० ॥ २० ॥ चित्रे केशी अवग्रह काजे, आढवीयो वनमाली ॥ तिंडुकवासी यक्षे बंजण, कीधी अजक्ति टाली ॥ रेजी० ॥२१॥ सोवनमयि निजरूपे प्रतिमा, जालि घरंतर वासी ॥ धर्म हेत ओगणीसमो जिणवर, जो जो हीये विमासी ॥ रेजी० ॥ २२ ॥ सिंहो नामे साधु सिरोमणी, मोटी पोके रोयो ॥ रेवइ कीधो आधाकर्मिक, उंषध मुनिने ढोयो ॥ रेजी० ॥ २३ ॥ नागसिरि धर्मघोषे होली, केशीराय प्रदेशी ॥ विमलवाहनने साधु सुमंगल, क्रोधे जस्म करे-

सी ॥ रेजी० ॥ २४ ॥ वीरजिणंदे वार्या सुनखत्त, सर्वानुजुति अणगार, गोशालासुं सनमुख बो-
ल्या ॥ एह कीसो आचार ॥ रेजी० ॥ २५ ॥ सीतल तेजोलेश्या मूकी, आजीवक ऊगार्यो ॥
हणिए देखो साधु हणंतु, तेहज कांइ न वार्यो ॥ रेजी० ॥ २६ ॥ धर्मरुची करु तुंब आहार्यो,
आण ते केहनी राखी ॥ खंदक सामो उठी गोयम, आगति स्वागति जांखी ॥ रेजी० ॥ २७ ॥
ऋषी घातके रीसाणो केसव, श्री नेमिश्वर राख्यो ॥ धरणि आजोखी ते चंमाले, हरि वचने दूरि
नाख्यो ॥ रेजी० ॥ २८ ॥ ब्रह्मदत्तश्युं चित्रे कीधो, धर्म वचन आलाप ॥ जेह तेवारे कांइ न मा-
न्यो, तव कर्यो मोघ प्रलाप ॥ रेजी० ॥ २९ ॥ पर्वे पुख्खली श्रावक कीधो, साहमी जोजनरूप ॥
पोसहव्रत संखे उच्चरियो, स्यो उपदेश स्वरूप ॥ रेजी० ॥ ३० ॥ श्री वीर देखी विजयगाहा-
वइ, देइ (तिन्न) प्रदक्षिणा वंदे ॥ अशनादिक ते जावे आपे, हियडे अति आनंदे ॥ रेजी० ॥
३१ ॥ गौतमगणधरने अइमत्तो, बालक किम प्रतिलाजे ॥ साथे थइने वंदण आवे, कह्या वि-
ना किम लाजे ॥ रेजी० ॥ ३२ ॥ ए केहने उपदेशे कीधा, पूछी गीतारथ जाणी ॥ विधिरूपे

जिह सावद्य दीसे, ते नहु जिनवर वाणी ॥ रेजी० ॥ ३३ ॥ जे तप संजम मिलतो थव थुई, मंगलनो फल जाणो ॥ आगम बोल्यो अवर जे सारंभ, तेहनो कांइ न आणो ॥ रेजी० ॥ ३४ ॥ करे करावे ने अनुमोदे, जिनवरनो उपदेश ॥ तिण विणु जाणे किरिया कीजे, ते सवि कायकिलेश ॥ रेजी० ॥ ३५ ॥ हूउं कोइ किमे हूउं कोइ किमे, म करिस किही किणवार ॥ आपण आपणी कीधी करणी, उतरवो भवपार ॥ रेजी० ॥ ३६ ॥ अरिहंत साधु साहम्मी आगम, जिन प्रतीमादिक जाणी ॥ तेह तणे जे वंदन पूजन, भगतिति बिहु समाणी ॥ रेजी० ॥ ३७ ॥ जिन उपदेशे भगति म जाणीश, निश्चे ने व्यवहार ॥ जिहां सावद्यनो लवलेश लागे, (साधु) श्रावकने अधिकार ॥ रेजी० ॥ ३८ ॥ भक्ति भेलो जिह सावद्य हुए, तिह विधि निषेध म भांखो ॥ गुरु प्रशादिए डुल्लह लाधो, रतन जतन करी राखो ॥ रेजी० ॥ ३९ ॥ ए उपदेश रहस्य जे जाणे, जिनमतथी नवि डोले ॥ (जिनमति ते नवि डोले,) आपणी आतम शिक्षा कारण, श्री पार्श्वचंद्र (सूरि) इम बोले ॥ रे जीव० ॥ ४० ॥ इतिश्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराजयुग-

प्रवरन्यायचक्रवार्तिश्रीजैनश्वेतांवराचार्यश्रीपार्श्वचंद्रसूरीश्वरविरचितोपदेशरहस्यः समाप्तः ॥

दश महाश्रावक संवंधी.

पहेलो आणंद नामनो श्रीवीर प्रभुनो महाश्रावक वाणिज्य नामना गाममां हतो. तेनी स्त्रीनुं नाम शिवानंदा हतुं तथा तेनी पासे वार कोमी धन अने दश हजार गायोनुं एक गोकुळ एवां चार गोकुळनी संपदा हती.

बीजो कामदेव नामनो श्रावक हतो, ते चंपानगरीमां हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम जद्रा हतुं. तथा तेनी पासे १७ कोमी धन अने ० गोकुळनी संपदा हती.

त्रीजो चुलणीपिता नामनो श्रावक हतो ते वाराणसी (काशी)मां हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम

सोमा हतुं. तथा २४ कोटी धन अने आठ गोकुळनी संपदा हती.

चोथो सुरदेव नामनो श्रावक हतो ते पण वाराणसीमां हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम धन्ना हतुं, तथा २४ कोटि धन अने ६ गोकुळनी संपदा हती.

पांचमो चुल्लसतक नामनो श्रावक हतो ते आलंभिया नगरीमां हतो. अने तेनी स्त्रीनुं नाम बहुला हतुं, तथा तेनी पासे १८ कोटी धन अने ६ गोकुळनी संपदा हती.

छट्ठो कुंडकोळियो श्रावक हतो, ते कांपिल्यपुर नगरमां हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम पूसा हतुं, तथा तेनी पासे १८ कोटी धन अने ६ गोकुळनी संपदा हती.

सातमो सद्दालपुत्त नामनो श्रावक हतो, ते पोलासपुर नगरमां हतो, तेनी स्त्रीनुं नाम अग्निमित्ता हतुं, तथा तेमनी पासे ३ कोटि धन अने एक गोकुळनी संपदा हती.

आठमो महासतक नामनो श्रावक हतो, तेने रेवती वगेरे १३ स्त्रीओ हती. तथा २४ कोटी धन अने ८ गोकुळनी संपदा हती, तथा रेवती नामनी स्त्रीनी पदरमां स्त्रीधन

તરીકે ૮ કોટિ ધન અને ૮ ગોકુળ, તેમજ બીજી બત્રી (૧૨) સ્ત્રીઓની પાસે સ્ત્રીધન તરીકે ૧૨ કોટી ધન અને ૧૨ ગોકુળની સંપદા હતી. એ રાજગૃહીમાં રહેતો હતો.

નવમો નંદિણીપિયા નામનો શ્રાવક હતો તે સાવત્થી નગરીમાં હતો, તેની સ્ત્રીનું નામ અશ્વિની હતું, તથા તેની પાસે ૧૨ કોટી ધન અને ૪ ગોકુળની સંપદા હતી.

દશમો લંતિયાપિયા નામનો શ્રાવક હતો તે પણ સાવત્થીમાંજ હતો, તેની સ્ત્રીનું નામ ફાલ્ગુણી હતું, તથા તેની પાસે ૧૨ કોટી ધન અને ચાર ગોકુળની સંપદા હતી.

આ પ્રમાણે વિશાળ વૈભવવાળી સંપત્તિ હતી છતાં તે શુદ્ધ શ્રાવક--ગર્વ રહિત--એકવીશ ગુણથી શોભતા અને નમ્રતાઇવડે રત્નત્રયી તે આરાધતા હતા. એ દશ શ્રાવકોની સંપદા અને રીતભાત તથા અચલ શ્રદ્ધા વગેરેને ધ્યાનમાં લઇ પોતાના મનની ભાવનાઓને ઉચ્ચ આશયો સાથે ભેટાડી અગર્વપણે શ્રદ્ધાની દ્રઢતા સાથે સ્વધર્મને અજુઆળી ઉભયજન્મ સુધારવા આ લેખ લક્ષમાં રાખવા પુનઃ પુનઃ વીનતી છે.

चौराशी गच्छनां नाम.

वंदनीक १, धर्मघोषा २, संडेरा ३, किनरसा ४, नागपुरीयतपा ५, मलधारा ६, मधुकर ७, चित्रवाळ ८, उसवाळा ९, नाणावाला १०, आगमिया ११, पल्लिवाळा १२, बोकडिया १३, भिन्नवाळ १४, नागेंद्रा १५, सेवंतरिया १६, भंडारा १७, जयवन्नाळ १८, विद्याधरा १९, लहुडी पोषाल २०, भाणसोल्पा २१, वडगच्छ २२, भावडा २३, सूराणा २४, वडीपोसाळ २५, भरु-अच्छा २६, कुतबपुरा २७, शंखला, २८, जालडहरा २९, जाखडीआ ३०, कोरंटवाळ ३१, ब्रह्माणीआ ३२, मंडाहडा ३३, नीगमिया ३४, खेलाहरा ३५, उछितवाळ ३६, रूवोळिया ३७, छापरिया ३८, वघेरवाळ ३९, खेजडीआ ४०, वांछितवाळ ४१, जीराउलिया ४२, जेसळमेरा ४३, लल्लवाणिया ४४, तातहड ४५, छाजहड ४६, खंभायता ४७, शंखवाळिया ४८, कमळकळशा ४९, सोजतरीआ ५०, सोफतिया ५१, पिंपळिया ५२, खीमसरा ५३, चोरबेडिया ५४, प्रामेवा ५५,

वंन्नणिया ५६, गोञ्चलवा ५७, वघेरा ५७, नटेरा ५ए, नावरिया ६०, वाहामेरा ६१, कक्करिया ६२, रंकवाळ ६३, वोरसवा ६४, वेगम्रा ६५, वीशळपुरा ६६, संवाक्त्रिआ ६७, घुघुक्किया ६७, विद्याधरा ६ए, आयरिया ७०, हरसोरा ७१, कोटिकगणा चंद्र कुल वइरी शाखानो विरुद ७२, वाकियगण ७३, उत्रवाक्त्रियगण ७४, माणवगण ७५, उत्तरवाळशाह ७६, उदेहगण ७७, चारणगण ७७, आको-लिया ७ए, लूणिया ७०, साधु पुनमिया ७१, त्रागमीआ ७२, तिवलिया ७३, अने साचोरा ७४, आ प्रमाणे चोराशी गह्य हता.



श्रीसुन्नाषितश्लोकमालिका.



लघुर्जनो गौरवसंघसंगात्, करोति डुःसाध्यमपि सुसाध्यम् ॥ पुष्पाश्रयाह्ंजुशिरोधिरूढा-त्पिपीलिका चुंबति चन्द्रविम्बम् ॥ १ ॥ विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीमनाय॥

खलस्य साधोर्विपरीतमेतत्, दानाय मानाय च रक्षणाय ॥ २ ॥ आर्योऽपि दोषान् खलवत् परेषां,
वक्तुं च जानाति परं न वक्ति ॥ किंकाकवत्तीक्ष्णतराननोऽपि, कीरः करोत्यस्थिविघट्टनानि ॥ ३ ॥
आगमं आयरंतेण, अत्तणो हियकंखिणा ॥ तित्थनाहो गुरुधम्मो, सवे ते बहु मन्निया ॥ ४ ॥
तित्थयर समोसूरी, सम्मं जो जिणमयं पयासेई ॥ आणं अइक्कमंतो, सोकाउरिसो न सोपुरिसो
॥ ५ ॥ रक्तौ च पद्मप्रभवासुपूज्यौ, शुक्लौ च चंद्रप्रभपुष्पदन्तौ ॥ कृष्णौ पुनर्नेमिमुनी विनीलौ
श्रीमल्लिपार्श्वौ कनकत्विषोऽन्ये ॥ ६ ॥ इक्ष्वाकुकुलसंभूता स्याद्द्वाविंशतिरर्हताम् ॥ मुनि-
सुव्रतनेमी तु, हरिवंशसमुद्भवौ ॥ ७ ॥ वरं ज्वलदयःस्तंभपरिरंभो विधीयते ॥ न पुनर्नरकद्वार-
रामाजघनसेवनं ॥ ८ ॥ आवर्त्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानां, दोषाणां सन्नि-
धानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम् ॥ स्वर्गद्वारस्य विघ्नं नरकपुरमुखं सर्वमायाकरण्डं, स्त्री-
यंत्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनामेकपाशः ॥ ९ ॥ वृक्षं क्षीणफलं त्यजंति विहगाः शुष्कं
सरः सारसाः, पुष्पं पर्युषितं त्यजंति मधुपा दग्धं वनांतं मृगाः ॥ निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिका

भ्रष्टं नृपं सेवकाः, सर्वः स्वार्थवशाज्जनोऽभिरमते नो कस्य को वल्लभः ॥ १० ॥ मान्यम्लानिः कल्प-
वृक्षप्रकंपः, श्रीह्रीनाशो वाससां चोपरागः ॥ दैन्यं तन्द्रा कामरागांगभंगो, दृष्टेर्भ्रंशो वेपथु-
श्चारतिश्च ॥ ११ ॥ पापी रूपविवर्जितः परुषवाक् यो नारकादागत स्तिर्यग्योनिसमागतश्च
कपटी नित्यं बुभुक्षातुरः ॥ मानी ज्ञानविवेकबुद्धिकलितो यो मर्त्यलोकागतो, यस्तु स्वर्गपरि-
च्युतः स सुभगः प्राज्ञः कविः श्रीयुतः ॥ १२ ॥ शिष्टाय दुष्टो विरताय कामी, निसर्गतो जाग-
रूकाय चौरः ॥ धर्मार्थिने कुप्यति पापवृत्तिः, शूराय भीरुः कवये कविश्च ॥ १३ ॥ न सहंति इक्क-
मिक्कं, न विणा चिट्ठंति इक्कमिक्केण ॥ रासहसाणतुरंगा, जूयारिपंडियाभिन्ना ॥ १४ ॥
अनुचितकर्मारंभः स्वजनविरोधो बलीयसि स्पर्द्धा ॥ प्रमदाजनविश्वासो मृत्युद्वाराणि चत्वारि ॥१५॥
व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती, रोगाश्च शत्रव इव व्यथयन्ति देहम् । आयुः परिस्रवति भिन्न-
घटादिवाऽम्भो, लोकस्तथापि कुरुते न कदापि धर्मम् ॥१६॥ कामैत्री मरुता समं हुतभुजो भौमस्य
यद्वायुना, स्पृष्टः प्रज्वलति प्रतीपवलनां धत्ते च वैश्वानरः ॥ तथ्यं प्राणसमीरकोष्ठशिखिनोः

सख्यं यतस्ताविमौ, विश्वेषामुदरं सहैव विशतः काले सहोत्क्रामतः ॥ १७ ॥ गुणानगृह्णन्सुजनो न निर्वृतिं, प्रयाति दोषानवदन्न दुर्जनः । चिरन्तनाभ्यासनिबन्धनेरिता, गुणेषु दोषेषु च जायते मतिः ॥१८॥ निरीक्ष्य विद्युन्नयनैः पयोदो, मुखं निशायामभिसारिकायाः । धारानिपातैस्सह किं नु वान्त---श्चंद्रोयमित्यार्ततरं ररासे ॥ १९ ॥ अल्पीयसां पूर्वनिवासभूमित्यागाद्धिपत्तिर्महतां सुसंपत् । अब्धेरपेता मणयो वसंति, राज्ञां शिरः काकमुखेषु भेकाः ॥२०॥ सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता, अहं करोमीति वृथाभिमानः । परो ददातीति कुबुद्धिरेषा, स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः ॥ २१ ॥ जीवंतु मे शत्रुगणाः सदैव, येषां प्रसादेन विचक्षणोहम् । यदा यदा मे शिथिला च बुद्धि---स्तदा तदा ते प्रतिबोधयन्ति ॥२२॥ छिन्नोपि चंदनतरुर्न जहाति गंधं, वृद्धोपिवारणपतिर्न जहाति लीलाम् । यंत्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षु---र्क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणान् कुलीनः ॥ २३ ॥

इतिश्रीमज्जैनश्वेताम्बराचार्य श्रीसहजकलानिधिसूरीन्द्रविनेयाब्धिशशिना संगृहीता सुभाषितश्लोकमालिका संपूर्णा ॥

॥ श्रीक्रियागुप्तचतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

॥ मालिनीछन्दः ॥

जगति जडिमभाजि व्यञ्जितापूर्वनीते प्रथमजनिततीर्थाभ्युन्नते नाभिसूते ।
जिन व्रजिनवितानध्वंसिनी तावकीनक्रमकमलनमस्या कं जनस्याभिलाषम् ॥१॥

जगतीति–प्रथमं जनिता तीर्थस्याभ्युन्नतिर्येन तत्संबुद्धौ व्यञ्जिता प्रकटिताऽपूर्वाऽनिर्वचनीया नीतिर्न्यायो येन तत्संबुद्धौ हे जिन जडिमानमज्ञानं भजतीत्येवं शीले जगति संसारे व्रजिनानां पापानां वितानं समूहं ध्वंसयतीत्येतादृशी तव इमे क्रमौ कमले इव तयोर्नमस्या नमस्कारः जनस्य कमभिलाषं वाञ्छितं न अभिसूते न प्रसूते षूङ्प्राणि प्रसवे इत्यस्य लट् प्रथमैकवचनम् ॥१॥

शिखरिणीछन्दः

अपेतः कर्माब्धेरचलवरचर्यापरिचयात्
प्रतिष्ठामापन्नः शिवमजरमासाद्य परमम् ।

रजन्याःस्वामीव त्वमजित जिनास्मासु तमसः

समुच्छ्रायं छायाः दलिततपनीयाम्बुजरुचे ॥ २ ॥

अपेत इति–दलिता विदलिता तपनीयाम्बुजस्य तप्तहेमपद्मस्य रुचिः कान्तिर्येन तत्सम्बुद्धौ हे अजित हे जिन त्वं अस्मासु तमसः पापस्य समुच्छ्रायं समूहं छायाः छिन्द्याः। छो छेदनेइत्यस्याशीर्लुङो मध्यमपुरुषैकवचनम्। किंभूतस्त्वं कर्माब्धेः कर्मसमुद्रात् अपेतः निर्गतः पुनः किंविशिष्टः परमं प्रकृष्टं अजरं जरारहितं शिवं मोक्षमासाद्य प्राप्य अचला या वरा प्रधाना परिचर्या विहारक्रमः तस्याः परिचयात् संचारात् प्रतिष्ठां महत्त्वं प्राप्तः। क इव रजन्याः क्षणदायाः स्वामीव यथा चन्द्रः परमं श्रेष्ठं अजरं जराविहीनं शिवं ईश्वरमासाद्य प्राप्य प्रतिष्ठां ख्यातिमापन्नस्तमसोऽन्धकारस्य समुच्छ्रायं छिनत्ति ॥ २ ॥

वसन्ततिलकाछन्दः

श्रीसंभव त्रिभुवनाधिप तेरयेण-व्यालोलमिन्द्रियबलं बलवन्निगृह्य ।
निर्मूलितोच्चतममोहमहीरुहेण गम्भीर एष भवता भगवन् भवाब्धिः ॥ ३ ॥

श्रीसंभवेति—हे त्रयाणां भुवनानामधिपस्तत्सम्बुधौ हे भगवन् हे श्रीमांश्चासौ संभवश्च तत्सम्बुद्धौ। भवता त्वया हठेन इन्द्रियबलं निगृह्य भव एव अब्धिःतेरे ॥ तॄप्लवनतरणयोरिति भौवादिकस्य लिटः कर्मणि प्रथमैकवचनम् " तॄफलभजत्रपश्च " इत्यनेनैत्त्वाभ्यासलोपौ । कीदृशेन त्वया निःशेषं मूलितो नाशित अतिशयेन उच्चः मोह एव महीरुहो वृक्षो येन तेन कीदृशो भवाब्धिः एष प्रत्यक्षदृश्यमानः पुनःकीदृगम्भीरो दुस्तरः। किदृशमिन्द्रियबलम् । एणो मृगस्तद्वत् व्यालोलं चपलम् ॥

मञ्जुभाषिणीछन्दः

भवतः स्वभावसुभगाङ्गचङ्गिमव्यवधानभीरुमनसोऽभिनन्दन ।

मरुतां गिरौ जननमज्जनोत्तरं न बबन्धुराभरणडम्बरं सुराः ॥ ४ ॥

भवत इति-हे अभिनन्दन मरुतां देवानां गिरौ मेरुपर्वते जननमज्जनोत्तरं जन्माभिषेकानन्तरं सुरा इन्द्रादय आभरणानां डम्बरं अलंकरणं नबबन्धुः बन्ध बन्धन इत्येतस्य क्र्यादेरूपम् कीदृशाः सुराः भवतस्तव स्वभावेन निसर्गेण सुभगा या अङ्गस्य चङ्गिमा सौन्दर्यं तस्या व्यवधाने आच्छादने भीरूणि मनांसि येषां ते ॥ ४ ॥

त्रोटकछन्दः

यदि सिद्धवधूपरिरम्भविधौ त्वरितोसि ततःसुमते सुमतिम् ।
विनिबर्हणमुल्बणमोहतते स्तुहि नाम लसद्गुणकेलिगृहम् ॥ ५ ॥

यदीति ! सुष्टुमतिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ हे सुबुद्धे यदि सिद्धानां वधूरिव वधूः मुक्तिस्तस्याः परिरम्भस्य आश्लेषस्य विधौ त्वरितोऽसि सावधानोऽसि ततस्तर्हि सुमतिजिनं स्तुहि ष्टुञ् स्तुतावित्येतस्य लोटमध्यमैकवचनम् नाम इति संभावनायाम् कीदृशं सुमतिमुल्बणा वामा या

मोहस्यत तिर्विस्तारः तस्या विनिबर्हणं नाशनं पुनः की० लसन्तो भ्राजमाना गुणाः शान्त्यादयस्तेषां केलिगृहं क्रीडास्थानभूतम् ॥ ५ ॥

मन्दाक्रान्ताछन्दः

श्रीमन्पद्मप्रभजिन भवान् भव्यपद्मैकभानो
पादानस्मान्न पुनरितरान् दुर्गतिद्वारतो यत्
नैतच्चित्र्यं तव खलु जने दर्शितप्रातिकूल्ये
सौहार्दं वा दधति सदृशी विश्रुता चित्तवृत्तिः ॥ ६ ॥

श्रीमदिति–भव्या एव पद्मानि तेषामेकः केवलो भानुस्तत्सम्बुद्धौ ॥ श्रीमाँश्चासौ पद्मप्रभनामा जिनस्तत्सम्बुद्धौ । भवान् यत् आसमन्तादस्मान् भव्यान् प्राणिनो दुर्गतेर्नरकस्य द्वारं तस्मात् अपात् अरक्षत् पा रक्षणे इत्यादादिकस्य लङःप्रथमैकवचनम् पुनः इतरानभव्यान् नापात् नारक्षत्

एतत् भयथारक्षणं नन्याय्यम् नयोग्यम्। दर्शितं प्रातिकूल्यं विरुद्धभावो येन तस्मिन् जने वाथवा सुहृदो भावो तत् दधति जने तव चित्तवृत्तिः सदृशी तुल्या खलु निश्चयेन विश्रुता प्रसिद्धा ॥६॥

दोधकछन्दः

विश्वजनीन सुपार्श्वजिनेन्दो वारिनिधे करुणारसराशे।
त्वद्गुणभावनया मतिमान्यः स्वस्तिपरंपरयापि स तुल्यम् ॥ ७ ॥

विश्वेति विश्वस्मै जनाय हित स्तत्संबुद्धौ हेनिधे हे गुणसागर हे करुणारसराशे हे सुपार्श्वजिनेन्दो यो नरस्त्वद्गुणानां भावना चिन्तना तया मतिमान् स स्वस्तिपरंपरया कल्याणश्रेण्यापि तुल्यम् समकालं गुणचिन्तनसमय एव अवारि वृतः। वृञ् वरणे कर्मणि लुङः प्रथमैकवचनम् ॥ ७ ॥

भुजंङ्गप्रयातछंदः

तवान्तःसभं देशनारंभभाजः स्फुरन्त्या रदाभावितत्या समन्तात् ॥
जनःश्वेतिमानं चिरोपार्जितैनोमलेनेव चन्द्रप्रभ प्रोज्झितात्मा ॥ ८ ॥

तवेति-हे चन्द्रप्रभ चन्द्रवत्प्रभायस्यतत्संबुद्धौ। जनो मनुष्यः श्वेतिमानं उज्वलत्वं समन्तात् आरत् अगमत्॥ ऋ गतावित्येतस्य श्लुविकरणस्य लुङः प्रथमैकवचनम्। सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्चेत्यनेनाङ्। कथंभूतःजनः चिरं उपार्जितं संपादितं एनः पापं तदेव मलस्तेन यथा प्रोज्झितः परित्यक्त आत्मा देहो यस्य कया रीत्या अन्तःसभं सभामध्ये देशनाया आरंभः तं भजतीति तस्य तव समन्तात् सर्वतः स्फुरन्त्योल्लसन्त्या रदानां दन्तानामाभायाः कान्त्याः विततया श्रेण्या॥ ८॥

पुष्पिताग्राछन्दः

सुविधिजिन कदाचनापिपङ्कोद्भवसुभगौ सकलश्रियां निवासौ।
न हृदयविषयं त्वदीयपादौ नियतमतोहमभाजनं शुभानाम्॥ ९॥

सुविधिजिन इति-हे सुविधिजिन त्वदीयपादौ हृदयविषयं हृद्देशं कदाचनापि नापिपं नालभम् आप्लृ व्याप्तौ इत्यस्य ण्यन्तस्य कर्मकतरि लुङ्। किंभूतौत्वदी॰के पानीये उद्भवो यस्य तद्वत् कमल-

वत् सुभगौ सुन्दरौ पुनः किं० । सकला याः श्रियः संपदस्तासां निवासौ ॥ अतः हेतोरहं नियतं निश्चितंशुभानां मङ्गलानां अभाजनमपात्रं जातः ॥ ९ ॥

॥ द्रुतविलम्बितछन्दः ॥

खरतराघनिदाघभवक्लमप्रशमवारि ददे वनतात्मनाम् ।

भगवता भवता शुभमद्भुतं चरितपूतमहीतल शीतल ॥ १० ॥

खरेति–चरितेन पूतं पवित्रितं । महीतलं येन तत्सम्बुद्धौ हे शीतल भगवता पूज्येन भवता त्वयाऽवनतात्मनां नमस्कुर्वतां शुभं ददे दत्तम् । डुदाञ्दान इत्यस्य कर्मणिलिटेकवचनम् । कथंभूतं शुभम् खरतरं कर्कशं यद् अघ पापं तदेव निदाघो ग्रीष्मः तस्य भवक्लमः जन्मग्लानिः तस्य प्रशमे शान्तौ वारि जलं । पुनः किं० । अद्भुतमाश्चर्यजनकम् ॥

॥ उपेन्द्रवज्राछन्दः ॥

जलाञ्जलिं दातुमना जन त्वं बलीयसे चेद्भवशात्रवाय ।

वितीर्णलोकत्रयकं पनाय श्रेयांसमभ्रस्तरसस्तदानीम् ॥ ११ ॥

जलेति—हे जन संसारिन् बलीयसे बलिष्ठाय जव एव शात्रवःतस्मै संसाराररये चेद्यदि त्वं जलाञ्जलिं दातुं मनो यस्य तादृशः वर्तसे तदानीमभ्रस्तरसः सदानुरागःसन् श्रेयांसं जिनं पनाय स्तुहि पन व्यवहारे स्तुतौ च इत्येतस्य लोङ्मध्यमैकवचनम्। कथंभूतं श्रेयांसं वितीर्णं दत्तं लोकानां त्रयं तस्मै कं सुखं येन तं ॥ ११ ॥

॥ स्रग्विणीछन्दः॥

स्वामिनः किंनराणां नराणां च ये स्वर्गिणो येसुरैश्वर्यभ्राजश्च ये ।
प्राप्य सर्वेऽप्यहंपूर्विकां सर्वदा ते भवत्पूजने वासुपूज्यप्रभो ॥ १२ ॥

स्वामिन इति—हे वासुपूज्यप्रभो येकिन्नराणां च ये नराणां स्वामिनः च ये स्वर्गिणो देवा ये ऐश्वर्यं भ्रजन्ति ते सर्वेऽपि सर्वदा निरन्तरं भवतः पूजनं तस्मिन् अहंपूर्विकां प्राप्य येसुः उद्यमं चक्रुः यसी प्रयत्ने इत्यस्य लिटः प्रथमबहुवचनम् ॥ १२ ॥

॥ गुणमणिनिकरच्छन्दः ॥

निरुपधिपरहितवितरणनिरत त्वमसमशमधन निधनविरहित ।
विमल विमलतमगुणगणविभवैःसकलभुवनतलवदनतिलकताम् ॥१३॥

निरुपधीति—निर्गता उपधिर्यस्मिन् कर्मणि यथा परेषां हितं तस्य दाने निरतःतत्सम्बुद्धौ ॥ असमो गुरुतरःशमःशान्तिः सा धनं यस्य तत्सम्बुद्धौ॥ निधनं मरणं तेन विरहितःतत्सं०। अतिशयने विमला गुणास्तेषां गणःसमूहस्तस्य विभुः तत्सं०। हे विमलजिन त्वं सकलं यद् भुवनतलं तदेव वदनं तस्य तिलकतां विशेषतामैः आगाः। इण्गतावित्यस्य लङो मध्यमैकवचनम् ॥ १३ ॥

॥ स्वागताछन्दः ॥

शीतदीधितिकलारुचिरामा त्वद्गुणावलिरनन्तजिनेश ।
या न कृत्स्नजगतामपिकुक्षौ मादृशां कथमसौ कलनीया॥ १४ ॥

शीतेति—हेऽनन्तजिनेश या तव गुणानामावलिः श्रेणिः कृत्स्नजगतां समस्तजगतामपि कुक्षौ जठरे न अमात् न ममौ। मा माने इत्यस्य लुङःप्रथमैकवचनम्। कथंभूता त्वद्गुणा॰शीताःदीधितयो यस्य तस्य चन्द्रस्य कला तद्वत् रुचिरा। असौ त्वद्गुणावलिःमादृशां कथं कलनीया गणयितुं योग्या भवेदिति शेषः ॥ १४ ॥

॥ रुचिराछन्दः ॥

चिरार्जितासुचरितपित्तजन्मनागुरूष्मणा प्रतिकलमाकुलीकृता।
गिरं पयोमधुरतां निपीय ते शरीरिणो जिनवरधर्म निर्वृत्तिम् ॥१५॥

चिरेति—हे जिनवरधर्म हे धर्मजिनेन्द्र। शरीरिणो देहिनस्ते तव पयोदुग्धमिव मधुरता माधुर्यं यस्यास्तां गिरं वाणीं निपीय सादरं श्रुत्वा निर्वृत्तिं मोक्षमगुः। इण् गतावित्यस्य लुङः प्रथमबहुवचनम्। जग्मुः। कथं शरी॰चिरमार्जितमसुचरितं पापं तदेव पित्तं तापस्तस्मात् जन्म यस्य तेनोष्मणा घर्मणा प्रतिकलं प्रतिक्षणमाकुलीकृता विधुरतां प्रापिताः ॥ १५ ॥

॥ प्रहर्षणीछन्दः ॥

संसारे वन इव दुर्गतित्रियामाव्यापारस्खलितदृशा चिरं जनेन ।
प्रत्यूषे रविमिव सुक्षणे न वीक्ष्य त्वां शान्ते प्रकटितदुर्गमोक्षमार्गम् ॥ १६ ॥

संसार इति–हे शान्ते जनेन चिरं संसारे न प्रत्यूषे न स्थितम् वस् निवासे इत्यस्य भावे लिट् प्रथमैकवचनम् । कस्मिन्निव वने इव किंकृत्वा सुक्षणे प्रधानावसरे रविमित्र सूर्यमिव त्वां वीक्ष्य दृष्ट्वा कथं०जनेन दुर्गतिरेव त्रियामा रात्रिस्तस्या व्यापारे स्खलिता दृग् यस्य तेन कथं० त्वाम् प्रकटितो दुर्गो दुर्गमःमोक्षस्य मार्गो येन तम् ॥ १६ ॥

॥ प्रमिताक्षराछन्दः ॥

कृतकर्मनिर्मथन कुंथुजिन प्रयतस्त्वमुज्वलतपश्चरणे ।
अपि सार्वभौमविभवं तृणवन्नतनैकनाकजनराजगणः ॥ १७ ॥

कृतेति—हे कृतकर्मनिर्मथन नता न एके नाकजाः सुरा नराश्च यस्मिन् तत्सम्बुद्धौ हे कुंथुजिन त्वं सार्वभौमस्य चक्रवर्तिनः विभवं तृणवत् तृणमिवाजगणः गणयामासिथ। गण संख्याने इत्यस्य लुङ्मध्यमैकवचनम्। कथं० त्वं उज्ज्वलं तपस्तस्य चरणं तत्र प्रयतः सावधानः ॥ १७ ॥

॥ शालिनीछन्दः ॥

क्षान्त्याधार ध्वस्तदुर्वारमार ज्ञानोदार प्राप्तसंसारपार ।
मुक्तेर्द्वार व्यक्तधर्माव तारस्वर्णाकार प्राणिजातं जिनार ॥ १८ ॥

क्षान्तीति—क्षान्त्या आधारः तत्सम्बुद्धौ ध्वस्तो दुर्वारो मारः कामो येन तत्सं० ज्ञानेनोदार स्तत्सम्बुद्धौ प्राप्तः संसारस्य पार अन्तो येन तत्सं० मुक्तेर्मोक्षस्य द्वारं यस्मात् तत्सं० व्यक्तो-धर्मोयस्य तत्सं० तारं यत् स्वर्णं तद्वत् आकारो यस्य तत्सं० हे अरजिन प्राणिनां जातं समूहं अव रक्ष। अव रक्षणे इत्यस्यलोट्मध्यमैकवचनम् ॥ १८ ॥

॥ वैश्वदेवीछन्दः ॥

गीर्वाणश्रेणीमुक्तमन्दारमालास्रस्तं किंजल्कं सर्वतोविस्फुरन्तम् ।
एतस्मिन्नीले मल्लिनाथ त्वदङ्गे प्रातस्त्यं भानोर्व्योमनीव प्रतापम् ॥१९॥

गीर्वाणेति—हे मल्लिनाथ एतस्मिन् तवाङ्गे सर्वतो निखिलाङ्गोपाङ्गेषु विस्फुरन्तं किंजल्कम् परागं ईले स्तुवे अहमितिशेषः ईड् स्तुतावित्यस्यलडुत्तमैकवचनम् डलयोरभेद इति डकारस्थाने लकारः किम्भूतं किंजल्कम् गीर्वाणानां देवानां श्रेणी राजिस्तया मुक्ता मन्दाराणां कल्पतरूणां माला स्रक् तस्यास्स्रस्तं पतितम् कस्मिन्निव नीले व्योमनि आकाशे कमिव प्रातस्त्यं प्रातःकालीनं भानोः प्रतापमिव ॥ १९ ॥

॥ प्रबोधिताछन्दः ॥

मृगनाभिसनाभितां रुचा वपुषस्त्वं यदि सुव्रत प्रभो ।
ननु निर्मम निर्मलात्मना मुपमानत्वमुपागतःकथम् ॥ २० ॥

मृगेति—हे निर्मम सुव्रत प्रभो मुनिसुव्रत जिन यदि त्वं रुचौ कान्त्यां मृगनाभेः कस्तूरिकायाः सनाभितां साम्यं अपुषः पुष्टिमकार्षीत् । पुष्पुष्टावित्यस्य लुङ्मध्यमैकवचनम् । ननु निश्चितं निर्मलः आत्मा वपु र्येषां तेषामुपमानत्वमधिकगुणत्वं कथमुपागतः प्राप्तः ॥ २० ॥

॥ वैतालिकाछन्दः ॥

भवतःक्रमाङ्गुलिनखावलीनिर्गतैरजनीश्वरोज्वलतरैःप्रभाजालकैः ।
भगवन्नमे नमनशालिनां मौलिषु स्मितमालतीकुसुममालिकालङ्कृतिः ॥२१॥

भवत इति—हे भगवन्नमे नमिजिन नमनेन शालन्ते शोभन्ते तेषां मौलिषु भवतस्तव क्रमयोः पादयोरङ्गुलयस्तेषां नखावली तस्या निर्गतानि तैः प्रभायाः जालकानि समूहाः तैः स्मितानि विकसितानि मालत्याः कुसुमानि तेषां मालिका श्रेणिः तस्या अलङ्कृतिरजनि। जनी प्रादुर्भावे इत्यस्य लुङ्प्रथमैकवचनम् । कथं० प्रभा० ईश्वरः शंभुः तद्वत् उज्वलतरैः विशदैः ॥ २१ ॥

॥ हरिणीछन्दः ॥

नियतमिति नो मिथ्यावादाः स्मरं सह तृष्णया
यदसि विमुखो राजीमत्यामथापि नृपश्रियाम् ।
कथमिव ततःस्वामिन्नेमे रतो विरतिस्त्रियाम्
शिवपदपुरीसाम्राज्याप्तौ भृशं च समुत्सुकः ॥ २२ ॥

नियतमिति–हेस्वामिन्नेमे नियतं निश्चितमिति नो मिथ्या नासत्यं यद् असि त्वं राजीमत्यां अथापि नृपश्रियां विमुखः पराङ्मुखःसन् तृष्णया सह स्मरं काममवादाःअखण्डयः दो अवखण्डने इत्यस्य लुङः मध्यमैकवचनम् । ततस्तर्हि शिवपदपुरीसाम्राज्यस्य मोक्षस्थानपुरीचक्रवर्तित्वस्याप्तौ प्राप्तौ भृशमत्यर्थं समुत्सुकः सन् विरतिरेव स्त्री तस्यां कथमिव रतः ॥ २२ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

भर्ता भोगभृतां मणिप्रणयवान् यन्मूर्धभागे शुभ-
ध्यानाग्नेःकलयन् स्फुलिङ्गशवलं धूमोऽमाडम्बरम्
स त्वं पार्श्व विशुद्धवैभवनिधेऽव्याधूतभूतग्रह
ग्रामस्थाम सुनामधेय भगवन् विघ्नौघनिघ्नं जनम् ॥२३॥

भर्तेति—हे विशुद्धवैभवनिधे धूताःभूतग्रहा येन तत्सम्बुद्धौ हे ग्रामस्थाम समग्रबल हे सुनाम-धेय हे भगवन् पार्श्व सः त्वं विघ्नानामोघः समूहस्तस्य निघ्नःपरवशस्तं जनमव्याः पालय अव रक्षण इत्यस्याशिर्लिङ्मध्यमैकवचनम्। यस्य मूर्ध्नो भागे मणौ प्रणयोऽस्ति यस्य स भोगभृतां सर्पाणां भर्ता धरणेन्द्रोऽशुभत्। किंकुर्वन् धूमोऽमस्याडम्बरो यस्मिन् तं ध्यानाग्नेः स्फुलिङ्गानां शवलं कलयन् तुलयन् ॥ २३ ॥

॥ स्रग्धराछन्दः ॥

आत्मन्युद्भूतरागे ऽविशदतरलसद्ज्ञानलक्ष्मीर्यदीये
यस्मिन् कल्पद्रुरूपे प्रणयमुपगतैः स्वेषु वेश्माङ्गणेषु ।
यः पादाग्रेण मेरुं क्षितिधरमधुना देव देवं पुमांसोऽ
न्नीतत्राणैकतानं व्यसनशतविनाशाय तं वर्धमानम् ॥ २४ ॥

आत्मनीति—हे पुमांसः व्यसनानां दुःखानां शतं तस्य विनाशाय त्राणे रक्षणे एकतानः एक तत्परस्तं देवं वर्धमानमन्नीत स्तुत एव निश्चितं यो वर्धमानःपादाग्रेण मेरुं क्षितेर्धरमधुनात् यदीये वर्धमानसम्बन्धिनि उद्भूतरागे आत्मनि देहे न तरला सद्ज्ञानस्य लक्ष्मीः अविशत् यस्मिन् वर्धमाने प्रणयं स्नेहमुपगतै नरैः स्वेषु वेश्मनामङ्गणेषु कल्पद्रुः रूपे रूपः। अत्र चतस्रः क्रिया गुप्ताः ताश्च- यथा अन्नीत अन्नि उपसर्गपूर्वक इक् स्मरणे इत्यस्य लोट् मध्यमबहुवचनम् । अधुनात् धुञ् क-

स्पने इत्यस्य क्र्यादेर्लङ् प्रथमैकवचनम्। अविशत् विश् प्रवेशने इत्यस्य तुदादेर्लङ्प्रथमैकवचनम्। ऊपे टुवप् बीजसन्ताने इत्यस्य कर्मणिलिट्प्रथमैकवचनम् ॥ २४ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

इत्थं तीर्थकृतां ततेस्त्रिभुवनश्रीमौलिलीलास्रजो
विद्वान् सागरचन्द्र इत्यभिधया लब्धप्रसिद्धिः स्तुतिम् ॥
सर्वाङ्गं परितन्वतीं सुमनसा मानन्दरोमोद्गमं
नानावृत्तनिवेशपेशलतरैर्युक्तां क्रियागुप्तकैः ॥ २५ ॥

इत्थमिति । विद्वान् इत्थं पूर्वोक्तप्रकारेण तीर्थकृतां तीर्थकराणां ततेः श्रेण्याः स्तुतिमानन्द चकार। अति अदि बन्धने इत्यर्थस्य लिट्प्रथमैकवचनम् । कथं० विद्वान् सागरचन्द्र इत्यभिधया नाम्ना लब्धा प्रसिद्धिर्येन । कथं० स्ततेस्त्रिभुवनश्रीमौलिलीलास्रजः कथं० स्तुतिम् सुमनसां विदुषां

सर्वाङ्गं रोम्णामुद्गमस्तं परितन्वतीं विस्तारयन्तीं पुनः कथं० नानावृत्तानां निवेशस्तेन पेशलतराणि रम्यतराणि तैः छन्दोभिरितिशेषः कथंभूतैः गुप्ता क्रिया येषु तानि तैः युक्ताम् ॥ २५ ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागछाधिराजयुगप्रवरप्रखरपण्डितसमाराधिताचार्यश्रीपार्श्वविधुसूरीश्वरसंतानीयमहामहोपाध्यायश्रीसागरचन्द्रमुनिराजेन कृता क्रियागुप्तवृत्तैः श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तुतयस्समाप्ताः ॥

॥ श्रीमहावीरस्तुतिः ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

जगत्कल्पना कल्पवृक्षोपमानं लसत्केवलज्ञानलक्ष्मीनिधानम् ॥ महानन्दशोभाकरं स्वर्णदेहं सदा श्रीमहावीरदेवं स्तुवेऽहम् ॥ १ ॥ तपोलब्धिसंप्राप्तसंसारपारं हतानेकदुर्वाररत्नावारिवारम् ॥ शुक्लध्यानतेजोजितानङ्गदेहं सदा श्रीमहावीरदेवं स्तुवेऽहम् ॥ २ ॥ सुराणामधीशै रलं

सेव्यमानं त्रिलोके भवं भूरिविस्तीर्णदानम् ॥ नमन्नाकिनागेन्द्रसंपूज्यदेहं सदा श्रीमहावीरदेवं स्तुवेऽहम् ॥ ३ ॥ विषव्यालवेतालदोषैरजेयं सदाभोगसौभाग्यभागैरमेयम् ॥ कृताशेषभव्यालिमाङ्गल्यगेहं सदा श्रीमहावीरदेवं स्तुवेहम् ॥ ४ ॥ एवं महावीरजिनाधिराजं भक्त्यानिशं ये भविनः स्तुवन्ति ॥ कल्याणमालाकलितं त्रिलोके ते शाश्वतं सौख्यभरं लभन्ते ॥ ५ ॥ इति श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपागच्छाधिराज श्रीपार्श्वेन्दुसूरिकृता श्रीमहावीरस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः ॥

॥ भुजङ्गप्रयातम् ॥

जगन्मण्डले भव्यमालाभिधाने प्रधाने सुदेशेऽवतीर्णः सुरद्रुः ॥ कृपालुः स्थितो जाल्हपादे पुरेऽस्मिन् मनोवांछितार्थप्रदः पार्श्वनाथः ॥ १ ॥ प्रभुस्त्वं मया वीक्षितो भक्तिभाजाधुनालोचनानन्दराकेयराजा ॥ विजेजीयसे तीर्थनाथः सुपाथस्तमःपङ्कसंहारिणे शुद्धगाथः ॥ २ ॥ जिनाधीश ते मूर्तिरेषेन्दुरेखा यशःशालिनी पन्नताशेषलेखा ॥ प्रमोदं विधत्तेऽनिशं नाथ चेतश्चकोरस्य मे-

ऽत्यद्भुतं दृष्टमेतत् ॥ ३ ॥ प्रभुस्त्वं गुरुस्त्वं पिता त्वं त्वमम्बा सखा त्वं सुबन्धुः शरण्यो वरेण्यः ॥ भवात्तारको वारकोऽमित्रभीते स्त्वमेव त्वमेव त्वमेव त्वमेव ॥ ४ ॥ जनोयं तवादेशवर्ती पुरस्थो नियोज्य स्ततो नो वियोज्यः कदापि ॥ सदा किंकरस्ते प्रभो पार्श्वचन्द्रः करोतीतिविज्ञप्तिमेतां वितन्द्रः ॥ ५ ॥ इति श्रीजैनश्वेताम्बराचार्य श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिकृता श्रीपार्श्वनाथस्तुतिः समाप्ता ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रप्रारम्भः ॥

प्रणम्य परमात्मानं श्रीपार्श्व तव दर्शनात्
पवित्रयामि सद्योहं म्लानवासो जलादिव ॥१॥

प्रणम्येति–प्रकर्षेण नम्यते इति तत्सम्बुद्धौ परा प्रधाना मा लक्ष्मीर्यस्य तत्सम्बुद्धौ हे श्रीपार्श्व अहं सद्यः म्लानवस्त्रं जलादिव तव दर्शनात् आत्मानं पवित्रयामि निर्मलं करोमि॥ अनुष्टुप् ॥१॥

चरीकृति नमस्कारं बाल धीवृद्धिसिद्ध ये
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्राय तेषां जन्म फलेग्रहि ॥ २ ॥

चरीकृतीति—हे बाल हे मूर्ख धियोबुध्या वृद्धिराधिक्यं तयासिद्धस्तत्सम्बुद्धौ हे पण्डित ये पुरुषा श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्राय नमस्कारं चरीकृति अतिशयेन भूयोभूयः प्रणामं कुर्वन्ति तेषां जन्म फलेग्रहि सफलम् तत्रमूर्खपण्डितविवक्षा न कर्तव्येत्यर्थः ॥ २ ॥

उत्थितस्तव घाताय श्रीवामानन्दनो जिनः
सारस्वतीमृजुं कुर्वे गतिं त्रस्ते सतां न सा ॥३॥

उत्थित इति—इः कामस्तत्संबुद्धौ हे काम श्रीवामानन्दनो जिनः पार्श्वनाथस्तव घाताय विनाशाय उत्थितः। अत ऋजुं सरलां सारस्वतीं समुद्रसंबन्धिनीं गतिं कुरु विधेहि यतःसतां सज्जनानां त्रस्ते जने सा गतिर्नभवति इति विचिन्त्य समुद्रे प्रविशेत्यर्थः ॥ ३ ॥

हे आश्वसेने सिद्धान्ताराधनं तावकं विना
विदधानोपि ना सिद्धयेत् प्रक्रियां नातिविस्तराम् ॥४॥

हे आश्वसेने इति-अश्वसेनस्यापत्यमाश्वसेनिस्तत्संम्बुद्धौ हे श्रीपार्श्व तावकं त्वदीयं सिद्धान्ताराधनमागमपर्युपासनं विना ना पुरुषोऽतिविस्तरां महतीमुत्कृष्टां क्रियां विदधानोपि कुर्वाणोऽपि न सिद्धयेत् मुक्तिं न याति ॥ ४ ॥

इन्द्रादयोपि यस्यान्तं फणिनां त्वमनुग्रहात्
कृतवानुत्तमं तस्य युक्तं क्रमचणो भव ॥ ५ ॥

इन्द्रेति-फणिनां सर्पाणामिन्द्र हे धरणेन्द्र त्वमदयोपि निर्दयोऽपि यस्य श्रीपार्श्वस्यानुग्रहात् प्रसादात् अन्तं मरण(मुत्तमं देवगतिं प्राप्य) कृतवान् तस्य श्रीपार्श्वस्य क्रमचणः चरणसेवको भव इति युक्तं सांप्रतम् ॥ ५ ॥

प

पारदृश्वा शुभोदर्को नययुः शब्दवारिधेः
ऋद्धिवृद्धिनिधिःसिद्धिं भजते पार्श्वसेवकः ॥ ६ ॥

पारदृश्वेति—पार्श्वस्यसेवकः श्रीपार्श्वनाथस्योपासकः सिद्धिं इहभवेऽणिमादिकं परभवे मुक्तिं भजते प्राप्नोतीत्यर्थः । कीदृशः शब्दवारिधेः शब्दसमुद्रस्य व्याकरणस्य उपलक्षणत्वात् सर्व· शास्त्रस्य पारदृश्वा पारगामी भवति पुनः की० शुभः उदर्कः उत्तरकालो यस्य पुनः की० नययुः नयंयातीति नयवत्सलः पुनःकी० ऋद्धिवृद्धिनिधिः ऋद्धिवृध्योःसमद्रः ॥ ६ ॥

पादप्रसाद पार्श्व स्य श्रीमतो हि ममैनस:
प्रक्रियां तस्य कृत्स्नस्य यस्मात् क्लेशो भवे भवे ॥ ७ ॥

पादेति—हे पार्श्व हे पादप्रसाद हि निश्चितं श्रीमतो विद्यमानस्य कृत्स्नस्य तस्य ममैनसः मम पापस्य प्रक्रियां दुःखोत्पादनरूपां क्रियां स्य अन्तंकुरु । षोन्तकर्मणीत्यस्य दैवादिकस्य लो-

द्मध्यमैकवचनम्---यस्मादेनसः पापात् नवे नवे क्लेशो नवतीतिशेषः ॥ ७ ॥

सुधान्धसां गुरुःपारं येषां नाप समायुषा

तान् गुणान् पार्श्वदेवस्य क्रमो वक्तुं नरः कथम् ॥ ८ ॥

सुधेति—सुधाऽमृतमन्धोऽन्नं येषां तेषां देवानां गुरुः बृहस्पतिः येषां गुणानां पारं तीरं समायुषा संपूर्णेन जीवितेन न आप न लेने तान् पार्श्वदेवस्य गुणान् वक्तुं नरः कथं क्रमः शक्तः नवेदितिशेषः ॥ ८ ॥

इति श्रीमान् जिनःपार्श्वो जीरावलीपुरीप्रनुः ॥

फणितः पार्श्वचन्द्रेण नूयाद् नूरिविनूतये ॥ ए ॥

इतीति—स्पष्टार्थः नवरं फणितः स्तुतः इति ॥ ए ॥

इतिश्री जैनाचार्य श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिराजकृतं पार्श्वनाथस्तोत्रं संपूर्णम्

॥ श्रीपुद्गलपरावर्तस्तवः ॥

श्रीवीतराग भगवंस्तव समयालोकनं विना ऽभूवन् ॥
द्रव्ये क्षेत्रे काले भावे मे पुद्गलावर्ताः ॥ १ ॥

श्रीवीतरागेति–हे श्रीवीतराग हे भगवन् मे मम पुद्गलानामावर्ताः परावर्ता अभूवन् कस्मिन् विषये द्रव्ये द्रव्यविषये क्षेत्रे क्षेत्रविषये काले कालविषये भावे भावविषये कथमभूवन् तव समयस्य सिद्धान्तस्यावलोकनं विचारणं विना ॥ आर्याछन्दः ॥ १ ॥

मोहप्ररोहरोहान्नट इव भवरङ्गसङ्गतः स्वामिन् ॥
कालमनन्तानन्तं भ्रान्तः षट्कायकृतकायः ॥ २ ॥

मोहेति–हे स्वामिन् (अहं) भ्रान्त एकस्माद्भवाद् द्वितीयादिषु प्राप्तः भवः संसार एव

रङ्गो नाट्यस्थानं तत्र संगतः स्थितः कस्मात् मोहोऽज्ञानं सएव प्ररोहोऽङ्कुरस्तस्य रोहो वृद्धि स्तस्मात् कइव नटइव कियन्तं कालं भ्रान्तमनन्तानन्तं कालं सिद्धान्तभाषया सर्वत्रचतुःपल्यदृष्टान्तेनानन्तं ज्ञेयम्। किंभूतः षट्सु पृथ्व्यादिषु कायेषु कृतः कायं शरीरं येन सः ॥ १ ॥

औदारिकवैक्रियतैजसभाषाप्राणचित्तकर्मतया ॥
सर्वाणुपरिणतो मे स्थूलोऽभूत् पुद्गलावर्तः ॥ २ ॥

औदारिकेति—औदारिकपुद्गलपरावर्तश्चतुर्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः, कालतो भावतश्च एकैकोपि द्विधा सूक्ष्मबादरभेदतः । औदारिकशरीरेण वैक्रियशरीरेण कार्मणशरीरेण वा भाषान्नप्राणचित्तैर्वा सर्वान् चतुर्दशरज्जूगतपरमाणून् परिणतः। औदारिके दिनसप्तकेन स्पृशति तदा मे मम पुद्गलावर्तः स्थूलः द्रव्यस्थूलोऽभूत् ॥ २ ॥

तत्सप्तकैकैकेन समस्तपरमाणुपरिणतेर्यस्य ॥
संसारे संसरतः सूक्ष्मो मे जिन तदावर्तः ॥ ४ ॥

तदिति–तस्यौदारिकादेः सप्तकं तस्य एकैकेन संसारे संसरतो गच्छतो यस्य समस्तानां परमाणूनां परिणतिर्व्याप्तिस्तस्याः (सर्वान् परमाणून् आत्मा संस्पृश्य २ मुञ्चति प्रकारान्तरेण प्रस्तावापन्नत्वात् शरीरादिचतुष्टयेन सर्वान् लोकाकाशपरमाणून् क्रमाक्रमाभ्यां संस्पृष्ट्वा २ मुञ्चति तदा) हे जिन मे तेषां पुद्गलानामावर्तः द्रव्यपुद्गलपरावर्तं सूक्ष्मः ॥ ४ ॥

निःशेषलोकदेशान् भवे भवे पूर्वसंभवैर्मरणैः ॥
स्पृशतः क्रमाक्रमाभ्यां क्षेत्रे स्थूल स्तदावर्तः ॥ ५ ॥

निःशेषेति–निःशेषा लोके चतुर्दशरज्ज्वात्मके देशा प्रदेशा स्तान् भवे भवे पूर्वसंभवै मरणैः कृत्वा क्रमोऽनुक्रमोऽक्रमो व्यतिक्रमस्ताभ्यां स्पृशतः (स्पृशति तदा) क्षेत्रे स्थूलस्तेषामावर्तः

क्षेत्रस्थूलपुद्गलपरावर्तः स्यात् ॥ ५ ॥

प्राग् मृत्युभिः क्रमेण च लोकाकाशप्रदेशसंस्पर्शः
मम यो जनि स स्वामिन् क्षेत्रे सूक्ष्मस्तदावर्तः ॥ ६ ॥

प्रागिति-(यदात्मा) लोके आकाशप्रदेशाः तेषां संस्पर्शः क्रमेण प्रागमृत्युभिर्वा भवतीतिशेषः (यावता कालेन स्पृशति) तत्र मम योऽजनि जातः सः हे स्वामिन् क्षेत्रे सूक्ष्मस्तेषामावर्तः क्षेत्रसूक्ष्मपुद्गलपरावर्तः स्यात् ॥ ६ ॥

मम सकलकालसमयान् संस्पृशतोऽतीतमृत्युभिर्नाथ ॥
अक्रमतःक्रमतश्च स्थूलः काले तदावर्तः ॥ ७ ॥

ममेति-हे नाथ सकलाः कालस्योत्सर्पिण्यवसर्पिण्योः समयास्तान् अतीतमृत्युभि मरणैः क्रमाक्रमाभ्यां संस्पृशतो मम (जीवस्य) स्थूलः कालपुद्गलपरावर्तः स्यात् ॥ ७ ॥

क्रमतस्तानेव समयान् प्राग्भूतै मृत्युभिः प्रभूतै र्मे ॥
संस्पृशतः सूक्ष्मोऽर्हन् कालगतः पुद्गलावर्तः ॥ ८ ॥

क्रमत इति--(कश्चन जीवोऽवसर्पिण्याः प्रथमसमये मृतस्तत्सदृशावसर्पिण्या अनन्तरे द्वितीये समये यावता कालेन म्रियते स समयो लेखकै र्गण्यते नान्यःएवम्) तानेव समयान् अवसर्पिण्यु-त्सर्पिण्यो र्द्वयोरपि समयान् जीवस्य क्रमेण प्राग्भूतैः प्रभूतै र्मरणैः संस्पृशतः मे मम हे अर्हन् सूक्ष्मः कालपुद्गलपरावर्तः स्यात् ॥ ८ ॥

अनुभागबंधहेतून् समस्तलोकाप्रदेशपरिसंख्यान् ॥
म्रियतःक्रमाक्रमाभ्यां भावे स्थूलस्तदावर्तः ॥९॥

अनुभागेति--पूर्वं सूक्ष्माग्निकायेषु ये पृथिव्यादयो जीवाः प्रविश्यमाना एकस्मिन् समये सन्ति ते ऽसंख्याता क इव चतुर्दशरज्जुगताकाशप्रदेशतुल्या इव ते जीवा ज्ञेया यतः "एगसमयम्मि-

लोए सुहुमजीवा जे पविस्सन्ति। ते हुंतसंखलोए पएस तुल्ला असंखिज्जा ” एकस्मिन् अङ्गुल-भूमिस्थाने असंख्याता आकाशप्रदेशा ज्ञेयाः यतः “सुहुमोअ होइकालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं अंगुलसेढीमित्ते उसप्पिणिउ असंखिज्जा ” तेभ्योपि पृथिव्यादिजीवेभ्यः सूक्ष्माग्निदेहे पूर्वप्रविष्टा पृथिव्यादयः सन्ति ये जीवास्तेजीवा प्रविश्यमानजीवेभ्यः पूर्वप्रविष्टा असंख्यातगुणेनाधिकाः। पूर्वप्रविष्टेभ्योपि जीवेभ्योसंख्यात गुणेनाधिकाः सूक्ष्माग्निकायिकानां कायस्थितिः असंख्यातं कालं यावद्वन्हिकाये उत्पद्यते पुनर्मृत्युः पुनरुत्पत्तिरेवमसंख्यातं कालं यावत्ज्ञेयम् अग्निकायिकेभ्योऽ संख्यातगुणेनाधिकानि संयमस्थानानि तेभ्योपि नानाजीवानाश्रित्य वा संयमपरिणामाःसंयमभेदाः। समस्तलोकाकाशप्रदेशपरिसंख्यान् अनुभागबंधहेतून् क्रमाक्रमाभ्यां म्रियतो भावस्थूलपुद्गलपरावर्तःस्यात्। अनुभागबन्धस्थानानिच प्रत्येकं २ असंख्यातगुणेनाधिकानि संयमपरिणामा अनुभागबन्धाश्च तत्तुल्या भवन्ति अष्टानां कर्मपरमाणूनां ये रसा भेदास्ते असंख्याता वर्तन्ते तान् कर्मपुद्गलान् रसविशेषान् निबध्य २ स्पृष्ट्वा २ मुञ्चति तदा बादरभावपुद्गलपरावर्तःस्यात्

प्राङ्मरणैः सर्वैषामपि तेषां यः क्रमाक्रमेण संश्लेषः
भावे सूक्ष्मः सोऽभूज्जिनेश विश्वत्रयाधीश ॥ १० ॥

प्राङिति---एकैकं कर्मपुद्गलरसभेदं स्पृष्ट्वा तदनु द्वितीयम् इतिक्रमेणाष्टरसकर्मपुद्गलान् सर्वान् क्रमेण स्पृष्ट्वा मुञ्चति तदा हेत्रिश्वत्रयाधीश जिनेश सूक्ष्मो भावतःपुद्गलपरावर्तःस्यात् ॥१० ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितम् ॥

नानापुद्गलपुद्गलावलिपरावर्तानन्तानहं ।
पूरं पूरमियच्चिरं कियदशं बाढं दृढं नोढवान् ॥
दृष्ट्वा दृष्टचरं भवन्तमधुना भक्त्यार्थयामि प्रभो ।
तस्मान्मोचय रोचय स्वचरणं श्रेयःश्रियं प्रापय ॥११॥

नाना--हे नाथ अशं असुखं कियत् बाढं न ऊढवान् न प्राप्तवान् किंकृत्वा नाना अनेके

पुद्गलाःकालविशेषास्तेषां पुद्गलानां परमाणूनामावलयस्तासां श्रेणीनां परावर्ता गृहीतपूर्वमोचनानि तान् पुनः किंः अनन्तान् अनन्तसंख्यान् इयत् एततूपरिमाणं चिरकालं पूरयित्वा २ हे प्रभो अधुना भवन्तं दृष्ट्वा भक्त्याऽर्थयामि प्रार्थयामि किंवि० पूर्वं दृष्टो दृष्टचरस्तं किं प्रार्थयामि तदेवाह तस्मादसुखात् मोचय स्वचरणं रोचय श्रेयसो मोक्षस्य श्रियं प्रापय ॥ ११ ॥ इतिश्री बृहत्तपागच्छाचार्ययुगप्रधान सूरीश्वरकृतः पुद्गलपरावर्तस्तवः संपूर्णः ॥

॥ आदिजिनचैत्यवन्दनम् ॥

जयत्यादिमतीर्थेश त्रिलोकीमङ्गलद्रुमः ॥ श्रेयःफलं सदालोका यथा लोकाद्रुपासते ॥ १ ॥

श्रीमन्नाभिकुलादित्यमरुदेव्यङ्गज प्रभो ॥ संसाराब्धिमहापोत जय त्वं वृषभध्वज ॥ २ ॥ नमस्ते जगदानन्द मोक्षमार्गविधायक ॥ जैनेन्द्र विदिताशेषभाव तद्भावनायक ॥ ३ ॥ प्रक्षीणाशेषसंस्कारविस्तार परमेश्वर ॥ नमस्ते वाक्पथातीत त्रिलोकनरशेखर ॥ ४ ॥ भवाब्धिपतितानन्तसत्वसंसारतारक ॥ घोरसंसारकान्तारसार्थवाह नमोस्तु ते ॥ ५ ॥ इत्यादिजिनचैत्यवन्दनम् ॥

॥ श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथस्तुतिः ॥

(त्रिभङ्गी छन्दः) शिवसुखदातारं विश्वाधारं सौख्याकारं नेतारं जितमदनविकारं करुणागारं हतरिपुवारं जेतारम् ॥ कृतभवनिस्तारं परमोदारं स्तवनापारं त्रातारं, गुणपारावारं कीर्तिस्फारं केवलधारं धातारम् ॥ १॥ आनन्दासक्तं तोषितभक्तं छद्मवियुक्तं सुव्यक्तं, मदमत्सरमुक्तं तारणसक्तं विषयविरक्तं शिवरक्तम्॥अव्याहतभद्रं धैर्यगिरीन्द्रं क्षमासमुद्रं सन्मुद्रं, मुखनिर्जितचन्द्रं प्रणतसुरेन्द्रं महामुनीन्द्रं निस्तन्द्रम् ॥ २ ॥ सुखदायिस्मरणं दुःखितशरणं वन्दितचरणं विगतरणं, कृतदानोध्धरणं कलिमलहरणं विमलीकरणं प्रवरपदम् ॥ प्रकटीकृतविनयं दर्शितसुनयं प्रवचननिलयं सुगुणमयं ह्यगणितगुणनिचयं मुनिजनहृदयं पार्श्वजिनं जय क्षपितभयम् ॥ ३ ॥ इतिश्रीशंखेश्वरस्तुतिः ॥

॥ श्री पार्श्वचन्द्रसूरीश्वरशक्रस्तवाष्टकम् ॥

चतुरशीतिगणाधिकविश्रुता दलितवादिकदम्बकपण्डिताः । निबिडसंयमसाधनतत्परा गुरुतपोगणभारधुरंधराः ॥ १ ॥ अमरमानवदानववासव प्रकरगीतगुणा विशदाशयाः ॥ अनु-

चरेप्सितदानसुरद्रुमा विजयिनो गुरवश्च भवन्तु मे ॥ २ ॥ वाक्यं यदीयं प्रथितं प्रधानं चारुत्व-माधुर्यसुधासमानम् ॥ नानाविधग्रन्थरसाभिरामं पादौ तदीयौ प्रणमामि कामम् ॥ ३ ॥ ग्रामे श्रीपुरभेदने जलनिधौ कान्तारदुर्गे वटे, संग्रामेऽरिगणे बिलेशयमुखे शार्दूलनीराग्निषु ॥ इत्येवं विषमस्थलेषु पुरुषा ध्यायन्ति ये भावतस्तेषां सौख्यकरा भवन्ति गुरवः श्रीपार्श्वचन्द्रा वराः ॥४॥ रोगाम्भोवन्हिनागाहवकरिमृगपाबन्धमातङ्गसख्यक्रूराघातङ्कवर्गाः स्मरणसुकरणान्नामधेयस्य साधोः ॥ श्रीमत्पार्श्वेन्दुसूरेर्दिनकरकिरणाभ्रान्तवारा यथोग्राः सर्वे यान्त्याशु नाशं शिवसुख-निवहाः सुन्दराः संभवन्ति ॥ ५ ॥ आराधितो देवमणिर्ददाति चित्तेष्टसिद्धिं खलु सेवकानाम्, त-स्मादलं श्रीगुरुपार्श्वचन्द्रः स्वान्तेप्सितं पूरयतीह सद्यः ॥६॥ मुष्णाति दुःखानि शिवं तनोति पुष्णाति शर्माणि रमां चिनोति ॥ कीर्तिं प्रसूते विदधाति धर्मं श्रीपार्श्वचन्द्रामलसूरिनाम ॥ ७॥ कल्याण राजीवनतोयदाभान् भव्यात्मनां वाञ्छितदत्तलाभान् ॥ श्रीसाधुरत्नोदितशिष्यशिष्टान् संस्तौमि भक्त्या मुनिप्रेमचन्द्रः ॥ ८ ॥ इति श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीश्वरशक्रगुरुस्तवाष्टकं संपूर्णम् ॥

आशिर्वाद.

जगत्मां रहेला तमाम जीवो सुख पामो, तेमना तमाम दुःख दूर थाओ, अने तेओमां सत्यज्ञाननो प्रकाश थाओ,

धर्मशास्त्र अने सायन्स (सिद्धपदार्थ विज्ञानशास्त्र)नो ज्या परस्पर विरोध पडतो होय, तेवा स्थळे धर्म शास्त्रोमां वपरायली गुप्त (सांकेतिक) भाषा लक्षमां लइ तेना सम्यक् अर्थ करवा माटे खरेखरा बुद्धिमान् महापुरुषो आभूमंडळपर अवतरो, जेओ आंधळी श्रद्धाए न दोरातां खरुं सत्य शोधीने सत्यनेज कायम राखवा दरेक धर्मशास्त्रनी गुप्त वाणीना ने ते देशकाळने अनुसरता घटित अर्थ बतावीने जनमंडळमां व्यापी रहेला मिथ्यात्व (जूठ अने व्हेम)नो उच्छेदन करो,

धर्मविरोध दूर थाओ, सघळा धर्मोमां दयानो महिमा दृढमूळ थाओ, सघळा धर्मोमां सत्यनां मूळ शोधाओ, अने ते रीते सघळा धर्मो दया अने सत्यना मजबूत पायापर स्थापित

थइ धर्मैक्यता कायम थाउ,

जूदा जूदा धर्मानुयायिउमां अरसपरस देखतो धर्मद्वेष दूर थाउ, भ्रातृभाव स्थापित थाउ, सम्राह्संप कायम रहो अने दुर्गुणो दूर थइ सद्गुणोनो संचार थाउ,

दूनियाभरमां आलस्यनो नाश थाउ, उद्यमनी वृद्धि थाउ, विद्यानो विकाश थाउ, सत्यनो प्रकाश थाउ, अने ए रीते धर्मनो जय थाउ,

भविष्यनी प्रजा आपणा करतां आगळ वधो, आपणा करतां वधु ज्ञान मेळवो, आपणा करतां वधु सत्य शोधन करो, किं बहुना, आपणा करतां बळ–बुद्धि, विद्या–कळा, विज्ञान-वैभव, सुख-संपत्ति, रंग-रूप, होंस-हिम्मत वगेरे तमाम रूडी बाबतोमां आगल आगल वधीने आपणा करतां वधु आयुष्य भोगवो, अने आपणां मूकेलां अधूरां कामोने परिपूर्ण करो तथा आपणे स्वप्ने पण नहि जोयेली अजब शोधो करीने जगद्-विख्यात थाउ,

वीर ! वीर ! वीर !